अपना मातृभाषा के पत्रिका आ साहित्य के पढ़े-पढ़ावे के ऊ भूखि ना रह गइल, जवन बीस-पचीस बरिस पहिले रहे। लोगन के रुचि ...मोबाइल पर,फेसबुक-वाट्सैप पर बा। अधिकाँश लोग मोबाइल ऐप पर धड़ाधड़ भोजपुरी में लिखत बा, बाकिर राजनीति आ मनपसन पार्टी का समर्थन-बिरोध का जोश में, साहित्य कहीं लम्मा -पाछा छूट गइल बा। जदि साहित्य का प्रति रुझान लउकतो बा, त नया पत्रिका, किताब का छपला आ ओकरा प्रचार पर ...ना त, अलग-अलग गोलधखेमा आ ओकरा शक्तिप्रदर्शन में। पुरस्कार आ सम्मान में। अपना समय सन्दर्भ में रचल जा रहल साहित्य पर चर्चा-परिचर्चा त दूर, ओपर पढ़ला का बाद प्रतिक्रिया दिहल लउकत नइखे। खुद कवि-लेखक लोग पढ़े-पढ़ावे का गम्हीर-संस्कार से बिलग होत जा रहल बा। बुझला अब पढ़ल-पढ़ावल, कोर्स आ टेक्स्टबुक ले संकुचित हो जाई, ना त मास्टर-विद्यार्थी ले रह जाई ।

शुभ संकेत अतने बा कि भोजपुरी में नीक आ सार्थक लिखेवालन क अकाल नइखे पड़ल। साहित्यिक पत्रिका के सम्पादक भइला के नाते हमके बिशेष खुशी तबे मिलेला, जब कवनो नया सिरजनशील-प्रतिभा वाला कवि -लेखक, अचके भेंटा जाला। साँच कहीं त ओघरी मन के सकून भेंटाला कि सार्थक लिखे-पढ़े वालन के अगिला दस्ता आ रहल बा। अइसहीं नया गम्हीर पाठको मिलला पर हर्ष होला।

एह अंक में, पुरनका-अंकन के छपल पत्र-प्रतिक्रिया आ चर्चित कहानियन के, फेर से प्रकाशित कइला का पाछा हमार इहे मंशा बा कि लोग ई जानो, कि पहिले के लिखल बहुत कुछ आजुओ, नीक आ प्रेरक-पठनीय बा।

पिछला अंक में ''अस्सी-नब्बे का दशक के चर्चित भोजपुरी-कहानी का श्रृंख्ला क सुरूआत दण्डिस्वामी विमलानन्द जी के कहानी ''परमपद'' का साथ-नौ कहानियन से भइल रहे। एह बेरी ओही कड़ी में दस कहानी अउर दिहल बाड़ी स, जवन ओह कालखण्ड के सशक्त भोजपुरी कथा लेखन के दृष्टान्त बा। हो सकत बा, पत्र-पत्रिकन से छँटइला में, केहू महान कथाकार छूट गइल होखे। ओकरा खातिर सम्पादक क्षमाप्रार्थी बा आ भरोस देत बा कि भोजपुरी कहानी के विकसमान धारा के ऊ उजियार करत रही।

अशोक द्विवेदी

''राउर पन्ना''
में, ''पाती'' का नाँवें पाती ...
(बरिस-1994-96)

•• 'पाती' का अंक ६ पत्रिका का स्तर उत्तरोत्तर ऊँचा उठ रहा है और एक स्तरीय गंभीर रूप निखर रहा है।

•• डा० विवेकी राय, गाजीपुर

रग देखलीं हँ आज 'पाती' के ।
ढंग देखलीं हँ आज 'पाती' के ।
स्तर साहित्य के बढ़ावे के-
जंग देखलीं हँ आज 'पाती' के ।

अभिभो होता अपने के प्रयास देख के । पत्र-पत्रिकन के बिक्री के जवन स्थिति बा, नीमन रचनन के जोगाड़ में जवन जहमत बा; केहू से छिपल नइखे। ई सब झेलत 'पाती' के जवन नियमितता आ स्तर रउवा देत जा रहल बानी स्तुत्य बा ।

राह नीमन बा सराहे के जोग संपादन
कलम अशोक द्विवेदी के बड़ा दमदार बा ।

•• जगन्नाथ, साधनापुरी, रोड नं० ६ डी, गर्दनीबाग, पटना ।

•• आपकी 'पाती' को बार-बार प्रशंसा करना अच्छा नहीं लगता। मुझे तो यही कहना है- क्या भूलूँ क्या याद करूँ? आप इसमें जितना परिश्रम कर रहे हैं, उतना यदि खड़ी बोलो के क्षेत्र में करते तो निश्चित ही कुछ और परितोष मिलता, क्योंकि उसके पाठक अधिक हैं फिर भी अपनी भाषा के प्रति यह सेवा आपके भाषाप्रेम और मातृ-संस्कृति के लगाव की परिचायिका है।

•• डा० शालीग्राम शुक्ल 'नीर' आजमगढ़

•• 'पाती' क नउवां अंक बड़ा निम्मन आ सजल-धजल बा । राउर परिश्रम साफे झलकत बा । (ई) भोजपुरी क सचहूँ दिशाबोधक पत्रिका बा ।

•• डा० श्रीमति राजेश्वरी शांडिल्य, लखनऊ

•• 'पाती' के प्रकाशन के नयका दौर में विशेषांकन के जे अभियान रउवा शुरू कइले बानी, ऊ हर तरह से सपन्न, उपयोगी, सुरुचिसंपन्न आ ऐतिहासिक साबित हो रहल बा । अंक ६ खातिर कवनो विशेषांक के विशपण ल रउवा नइखी देले बाकिर अशोक द्विवेदी, सूर्यदेव पाठक 'पराग' आ आनन्द 'सन्धिदूत' के ललित निबन्ध पढ़ि के हम एह अंक के 'ललित निबन्ध अंक' के विशेषण देत बानी ।... अइसे त सभे विशेषांक अपना आप में अनूठा उतरल बा, बाकिर 'समकालीन कविता अंक' के जोड़ नइखे । अतना छोट काया में समकालीन भोजपुरी कविता के स्वरुप उजागर कइल रउरा संपादन कौशल के कमाल बा ।

•• पाण्डेय कपिल 'संपादक' भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना

•• 'राउर ललित निबन्ध' 'फूलहिं फरहिं न बेंत' आ सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 'संपादकी के चक्कर' मन झकझोर देलस... भोजपुरी में अपना पसेना के कमाई से अइसन दमदार पत्रिका निकालि के रावाँ

एगो जीवट के काम करत बानी ।

•• विजेन्द्र अनिल, बगेन, बक्सर (बिहार)

•• 'पाती' मिली....भोजपुरी के लिए आप इतना कर रहे हैं। विज्ञापन और प्रचार-प्रसार से दूर 'पाती' का यह भोजपुरी-प्रेम सराहनीय है ।

•• शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी, नन्दना, बरहज, देवरिया

•• आपके प्रयास की अपनी सार्थकता है, इस ताजा अंक के मुख पृष्ठ पर आदरणीय विद्यानिवास मिश्र ने इसे रेखांकित भी किया है ।

•• हस्तीमल 'हस्ती' संपादक 'काब्या', मुम्बई

•• 'पाती' के इस अंक की तारीफ करता हूँ। रचनाओं का स्तर पाठकीय स्तर से कैसे प्रभावित होता है, यह 'अँजोर', के संपादन-अनुभवों से जानता हूँ ।

•• अविनाशचंद्र विद्यार्थी, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना

•• अंक के रूप-सज्जा आ सामग्रियन के चयन देखि के मन गद्गद हो गइल एह अंक में एगो कहानी तीनगो लघुकथा, दूगो निबन्ध, दूगो समीक्षात्मक आलेख आ एगारह गो कविता बा...भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार रामनाथ पांडेय के कहानी आदर्शोन्मुख यथार्थ के अच्छा नमूना बा । एह कहानी के हमनी का प्रेमचन्द-वर्ग के कहानी मान सकीला । पाठकजी वैयक्तिक निबंध 'संपादकी के चक्कर' निराला बा । बाकि मैथिली लेखक हरिमोहन झा के बहुचर्चित कहानी 'प्रेम क भूत' से प्रभावित बुझाता.... राउर निबन्ध 'फलहिं फरहिं न बेंत' बड़ा गंभीर बा, एसे भोजपुरी संस्कृति के समझे बूझे के अच्छा अवसर मिलत बा । 'गाय पर एगो लेख' लिखे का बहाये संधिदूत जी वैज्ञानिक....सूचनाप्रद आ आकर्षक समीक्षा कइले बाड़े । कविता के दृष्टि से डा० विश्वरंजन सरिता 'शिवम' पो० उमाकन्त वर्मा के गीत उत्कृष्ट बा । 'आगे ना थ ना पाछे पगहा' के रसास्वादन पहिलहीं क चुकल बानी जा एकरा के जूठन बयना कहल जा सकेला। निलय उपाध्याय के कविता क्रांतिकारी बिचारधारा के बा ।

•• हरिशचन्द्र साहित्यालंकार, मोतिहारी, जिला-पूर्वी चम्पारन

'पाती' भीतर पाती पवलीं । ओके अपना हिये लगवलीं ।
गहँकी हमहूँ जोहत बानी । पाती के हम राखबि पानी ।
'पाती' भोजपुरी के थाती । बाँचे खातिर बेटा-नाती ।
ढम कतना ले करी बड़ाई । राउर कर्म कह लना जाई ।
जइसे गूँगा कचरे भेली । भीतर सगरी मजवे ले ली ।
चाहे कहल ऊ कहि ना पावे । मनही मन ओकर गुन गावे ।

•• कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', भाटपार रानी, देवरिया

•• ई अंक विशुद्ध साहित्यिक-दिशाबोधक बा । पेट प्रधान भौतिवादी जुग में, बुद्धि के तल प आदमी बदहवास भाग रहल बा । पश्छिमी सभ्यता के चकाचौंध ओकरा के भारतीय संस्कृति के राह से भटका रहल बा । मानवीय मूल्यन में दिनोदिन ह्रास हो रहल बा । अइसन भयावह स्थिति में राउर लेख 'फूलहिं फरहिं न बेंत' बड़ा सटीक आ सार्थक बा....विश्वरंजन सरिता 'शिवम् के गीत पसंद परल' । शिल्प आ भाषा के दिसाई रामनाथ पाण्डेय के कहनी "तब चान खिलखिलात रहे" एगो सशक्त कहानी बिया ।

•• कन्हैया सिंह 'सदय', खड़ंगाकार लुवावासा, इन्द्रनगर, जमशेदपुर

•• रउरा तरह-तरह के सामग्री एकट्ठा क के ए महँगी का जुग में नियमित पत्रिका निकाल रहल बानी- ई काम बहुत परिश्रम आ जीवट के बा ।

•• गणेश चौबे, बंगरी, वायापिपराकोठी, पूर्ववीचंपारन

•• 'पाती' के आवरण हमके बड़ा निक लागल । बुझाता, 'पाती' एगो साहित्यिक पत्रिका ह.... अतना लमहर कहानी छपला खातिर हम आभारी बानी ।

•• रामनाथ पाण्डेय, छपरा

•• अपना 'फुलहिं फरहिं न बेंत' पढ़ कर मन प्रफुल्लित हो गया। इस को कई बार मैंने पढ़ा.... सभी/रचनाएँ रोचक है भोजपुरी की यह अपने ढंग को अनुठी पत्रिका है ।

•• दयाशंकर तिवारी, विद्युत कालोनी, अकबरपुर, फैजाबाद

•• 'पाती' के सामग्री बड़ा अच्छा बा । चाहें कविता हो चाहें लेख सबमें बिचार के एगो साफा राह दिखाई पड़त बा, समाज में फईलल बिकृति आ ओकरा निवारण के जुगुति 'पाती' के अच्छा उपहार बा । 'फूलहिं फरहिं न बेंत आपके मजबूत लेखन के सबूत बा त भाई आनन्द 'सन्धिदूत' का कलम के कमाल उनका ललित लेख में देखे के मिलल । पाण्डेय जी के कहानी आ सूर्य देव पाठक 'पराग' के लेखो प्रशंसनीय बा ।

•• जगदीश 'पंथी' सगंज राबर्ट्, सोनभद्र

•• श्री रामनाथ पाण्डेय का कहानी ग्राम संवेदना का प्रतिनिधि कहानी है। डा० राधासिंह की कविता पाठक मन को स्पर्श करती हैं....पत्रिका की संपूर्ण सामग्री अत्यन्त रोचक एवं स्तरीय हैं

•• डा० यतीन्द्र तिवारी, प्राचार्य, अर्मापुर पोस्तग्रेजुएट कालेज, कानपुर

•• फूलहिं फरहिं न बेंत में तथाकथित प्रगतिशील कहाये बालन पर करारा चोट बा । सबेदना के अभाव आ के समाज के सच्चाई बा । एह अंक में प्रकाशित सभ किछु स्तरीय बा जवना निष्ठा-लगन से पाती के नियमित निकालत बानी भोजपुरी भाषा समृद्धि खातिर महत्वपूर्ण होई।

•• जितेन्द्र 'धीर' क्यू० २८३, मुदियाली रोड, गार्डेनरिच कलकत्ता

•• भोजपुरी के पत राखे वाला पत्रिका 'पाती' खातिर साधुवाद । अपने का लेख का साथ पराग जी के लेख आ पाण्डेय जी के कहानी बड़ नीक लागल ।

•• रवीन्द्र 'रवि' सिसवाखरार, पूर्वीचंपारन

•• समालोचना अंक....भोजपुरी में हमरा देखे से अब तक कवनो पत्रिका ना मिलल जवन खाली समालोचना, ऊ भी सब अंग पऽ एके साथे एके अंक में छपले होखे। राउर इ प्रयास सराहे जोग बा। 'रचना आलोचना से निकलल समीक्षा का सरूप पर जरूरी बतकही' पढ़ि के हमरा ई बुझाइल कि डा० जितराम पाठक १९९२ में भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका में अपना छीछालेदर के बादो चेतल नइखन । कुछ अइसन आदमी होले जवन...में भी हद क देले । ....सुनील कुमार पाठक के नवकीपीढ़ी कविता मेहनत से तेयार कइल निबंधबा

•• स्वामीफन्दोत्तीर्णानन्द पुरी, अद्वैत आश्रम, रामडिहरा, रोहतास

•• जब जब 'पाती' आवेले, लाजे गड़ि जाइले कि एगो महज लेख हमरा से ना भेजा सकल । मई के अंक 'मैटर का खेयाल से अतना सजधज के स्तरीय उतरल बा कि जीव लिखे खातिर ललचि के रहि जाता । का कहीं अफसोस दिल गड़हे में । विश्वरंजन जी हमरा फेवरिट कवि हवे । उनकर कविता पहिलहीं लउकल....राउर 'पाती' आवेले त हरदम हमरा दिमाग में भिखारी ठाकुर के एगो पाँती उभरि जाले, 'पाती ना आइले कुछु लिखि के वयनबा रे साजनवाँ । हरदम बरसत बा मनवा रे साजनवा ।'

•• महेश्वराचार्य, भरौली, शाहपुर पट्टी, आरा

•• 'पाती' पत्रिका आ ओकर उभरत विविर्द्धित निखार कवने ससुरा के नीक ना लागी त बूझि जइहऽ

ऊ तहार ससुरे ह ! हम त ए बाबू पाती जबले ना पाइले तबले बेहाल रहीले, पाइले त निहाल हो जाईले ।

•• मोती बी०ए० बरहज, देवरिया

•• 'पाती' सचहूँ हिरदय के बाति अनुभव का कागज पर उकेरे के माध्यम हममनी के देले । एमे प्रकाशित लेख, कविता, कहानी, समालोचना में लिखवइयन क सहजता, साहस आ अपना माटी ज सनेह का संगे-संगे, वर्तमान जुग क सोच ला चिन्ता साफ लउकत बा ।

•• डा० श्रीमति प्रतिभा पाण्डेय, डा० हरी सिंह गौर

•• दिवंगत महेश्वर पर अपना पन्ना बूँद में समुद्र सा उद्वेलित कर मर्म को छूता है । लालित्यपूर्ण लेख 'फूलहिं फरहिं न बेंत' का लालित्य तथा विचारोत्तेजकता गहरे प्रभावित करती है । 'माती के महक' के बहाने दयाशंकर तिवारी के भोजपुरी काब्य पर अपना आलेख सही मायने में समीक्षा के प्रति मानों पर खरा उतरता है ।

•• भगवती प्रसाद द्विवेदी पो०बा०११५, पटना

•• हमरा पूरा विश्वास बा कि रउवा निःस्वार्थ भाव से जे आपन श्रम आ पइसा 'पाती' में झोंकि रहल बानी ऊ ब्यर्थ ना जाई ।

•• बरमेश्वर सिंह धनडीहा, भोजपुर (बिहार)

•• महेश्वर जी को याद करते हुए अपना संपादकीय उनके प्रति आपके स्नेह/सान्निध्य का दस्तावेज है ।

•• इरफान, समकालीन 'जनमत', ३०२ इलीट हाउस, ३६ अमरुदपुर, नई दिल्ली

•• अपना माटी कऽ लोकरिन चुकावे क काम 'पाती' का सहारे; खूब मनसायन शैली में रउवा करत हईं । भोजपुरी गजल वाला अंक के इंतजार रहो हमनी के...

•• डा० वेदप्रकाश अमिताभ; संपादक, 'प्रसंगवश', अलीगढ़

•• 'समालोचना अंक' में जिस ऊँचे स्तर की कसौटियाँ प्रस्तुत की गई हैं और जो तर्कसंगत विचार प्रस्तुत किए गए हैं वे बस आशा से अधित हैं जो किसी आंचलिक भाषा से की जा सकती है। यह सब आपकी सतर्क और दूरगामी दृष्टि का फल है । भाषा से अधिक साहित्य पर अपना अधिकार प्रतीत 'फूलहिं फरहिं न बेंत' 'माटी के महक' की समीक्षा में उसी संवेदनशीलता का परिचय मिलता है ।

•• चतुर्वेदी प्रतिभामिश्र, संपादक, 'संकल्य' सिकन्दराबाद

•• 'पाती' आपन स्थान समय का छाती पर बना चुकल बिया । रउरा जइसन प्रतिभाशाली, सुरुचिसंपन्न आ दक्ष संपादक के संपादकत्व में पत्रिका निकले आ अरूचि दूनो दू ध्रुव के चीझु बा । असल में रउरा सभे में प्रतिभा आ सक्रियता देखि लोग चकचउन्हिया जाता ।

•• डा० शंभूशरण, पटना

•• 'पाती' अंक ६ के सजावट; सामग्री, संपादन सब अँखियान कइला पर ई चउतरफा बढ़ोत्तरी से हिया जुड़ा गइल...जे भोजपुरी-महतारी-भाषा के सेवा सतकार रउरा हाथे हो रहल बा ।....हमरा शुभकामना बा कि अइसहीं भोजपुरी के झंडा आसमान के ऊँचाई छुवो ।

•• सतीश्वरसहाय वर्मा 'सतीश' अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय

•• मीडिया पर केन्द्रित विशेष अंक का जरिये बेवस्था पर कुठारे चोट कइले बानी, धन्यवाद ! 'पाती' के ई अंक दस्तावेज लेखा सहेज के राखे लायक बा । 'भैरोनाथ के अखबार' आ 'कच्चा चिट्ठा' क लेखक

लोक मीडिया का दोसरा पहलू के उधारि देले बा लोग...पाती आपने स्तर बनवले बिया । एक दिन ई जरूरे आन्हर आ बहिर भोजपुरिहन के आँख कान खोलो !...

•• सत्येन्द्र पति त्रिपाठी, संपादक 'भोजपुरी के बानी' लखनऊ

•• आधुनिक युगबोध आ मीडिया का प्रतीक रूप में शशिभूषण पांडेय 'पूर्णेन्दु' के भावपूर्ण रेखाचित्र से सज्जित आवरन वाला 'पाती' मिलल...रउरा संपादन कला के चमत्कार कहल जा सकेला । रउवा सामग्रियन के एकट्ठा करे आ परोसे में कतना श्रम कइले बानी एकर एहसास देखले-पढ़ले पर होत बा । संपादकीय मन मोह लेत बा । ठेठ भोजपुरी में लिखल गंभीर चिन्तन वाला विषयन के रउवा बोधगम्य बना दिहले बानी । आद्या प्रसाद द्विवेदी के लेख निराला बा । कहानी 'कच्चा चिट्ठा' आ 'भैरोनाथ के अखबार' विषय आ कला का दिसाई सराहे जोग बा । बिनोद द्विवेदी क लघुकथा 'घाटा क सउदा' आधुनिक सरकारी बेवस्था पर करारा चोट करत बा....

•• हरिश्चन्द्र साहित्यालकार, ठाकुरबाड़ी, मोतिहारी पूर्वी, चंपारन

•• मीडिया पर केन्द्रित ई अंक भोजपुरी भाषा में सोच के एगो अछूता विषय के सोझा ले आइल बा । राउर सराहे जोग इ प्रयास ना खाली दृश्य, श्रव्य आ प्रिंट मीडिया के खुलासा करत बा बलुक उन्हनी का दिशा का ओरी इसारा करत बा ।

•• बरमेश्वर सिंह, धनडीहा, भोजपुर (बिहार)

•• मीडिया पर केन्द्रित होने के चलते इस अंक में कुछ खास ही निखार देखने को मिला । यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज का दृश्य-श्रव्य मीडिया सरकते तकियों और उभरती चोलियों के भँवर में फँस कर रह गया है । मनोरंजन के बहाने इसकी घुसपैठ हमारे बेडरूम तक होने लगी है । सेंसर वाले बाबू पता नहीं कौन सा चश्मा लगाए बैठे हैं । ऐसे में 'पाती' की रचनाएँ हमें आश्वस्त करती हैं । आशा है भोजपुरी ध्वज को आप रंगमंच पर लहराएँगे ।'पाती' जैसी पत्रिका की भोजपुरी में वाकई कमी थी ।

•• सुनील कुमार 'सुमन' संपादक 'आहर्टे' अरेराजधाम (बिहार)

•• एकश्चन्द्र : तमो हन्ति....बाकि हमरा इहे बुझाइल जे रउवा ढेर खा चान सिरजे बदे 'पाती' नियर पत्रिका निकलले बानी । भोजपुरी भाषा में सौ चान लिखि जइहें त अइसही ओषधि-बनस्पती गहगहा जइहें स । जतना सेवा रउरा महतारी भाषा खातिर करतानी, सभका खातिर अनुकरनीय बा ।

•• विष्णुदेव तिवारी, तिवारीपुर, दहिवर, बक्सर ८०२११६

•• एऽऽ अंक के संतुलित कइल जाव त अच्छा होई । काहे कि प्रायः हर बिधा के छुवल गइल बा । कविता, कहानी, समीक्षा कूल्हि नीमन बा । ई सबके मौलिकता भोजपुरी साहित्य के एगो प्राकृतिक सांस्कृतिक आ बैचारिक उर्जा प्रदान करत बा । कवनो भोजपुरी पत्रिका द्वारा मीडिया संबंधी अंक के प्रकाशन के ई पहिला प्रयास सार्थक होखो ।

•• शशिभूषण पांडेय 'पूर्णेन्दु' बोकारो, बिहार

•• पत्रिका पढ़ले से एकर विजन साफे साफ जाहिर हो जात हऽ । विषय क मजबूती ए भोजपुरी दिशाबोध क पत्रिका पढ़ले से अपने आप हो जात बा ।

•• डा० रामाश्रय मिश्र 'उज्जवल' लालगंज आजमगढ़

•• विचारात्मक लेखन आ नया भावना आ सोच से अनुप्राणित रचनन के रउवा पत्रिका में जगह दे रहल बानी । ई शुभ लक्षन बाटे आ स्तुत्य प्रयास । भोजपुरी के कहावत हऽ- 'लीखि छोड़ि तीनों चले, सायर सिंह सपूत ।'

•• गणेश चौबे, बंगरी वाया, पिपराकोठी, पूर्वी चंपारन

•• राउर कविता आ कहानियन के चयन अतना सुन्दर बा कि पढ़ि के मन गदगद हो गइल । बिनय बिहारी सिंह के लमहर कहानी 'भैरोनाथ के अखबार' हमरा के प्रभावित कइलस ।

•• डा० चंद्रधर पाण्डेय 'कमल' संपादक 'भोजपुरी लहर', बक्सर

•• 'पाती' एक साँस में पढ़ि गइलीं ।...किशनलाल पर बड़ी सुग्धर समीक्षा आइल बा । सीकम भर पीये भर मीठ आ बिना बेवधान के । कवनो पोथी के हीर पकड़े के रउरा में गजब के क्षमता बा पं० चंद्रविनोद के गीत साइत लंबा समय बाद अइसन गीत रहे कि पढ़ि के गुनगुना उठलीं । भोजपुरी के जवन फूहर प्रस्तुति सरकारी तंत्र आ मीडिया से होता ओकर कस के विरोध होखे के चाहीं ।

•• आनन्द 'संधिदूत', इलाहाबाद बैंक, मिर्जापुर

•• आपकी 'पाती' ने सर्वत्र तहलका मचा दिया है । लघु आकार सोधी सादी सज्जा में इतना जोरदार मझाला कहाँ मिल पाएगा? 'पाती' के गजल अंक की हमें प्रतीक्षा रहेगी ।

•• प्रो० कृपा नारायन मिश्र, पोस्टग्रेजुएट कालेज, बरहज, देवरिया

•• 'भैरोनाथ के अखबार' आ 'कच्चा चिट्ठा' में करारा बाकि मार्मिक व्यंग बा । रारउ लेख 'मीडिया आ जनचेतना' में राजनीतिज्ञ, दूरदर्शन आ आकाशवाणी के क्रिया कलाप के विश्लेषन करत बा । लघुकथा 'घाटा क सउदा' बढ़िया लागल । छपाई आ प्रूफ पर अउरी धयान जाए के चाहीं ।

•• रामाशीष प्रसाद, दौलतगंज, छपरा

•• 'पाती' के अंक सितम्बर अंक पढ़ि के अइसन लागल कि ई पत्रिका अब अपना के अन्य भषन में प्रकाशित पत्रिकन के सोझा सगर्ब ठाढ़ हो सकेला । राउर 'मीडिया आ जनचेतना' आ युग बोध का मंच से पश्चिमी सभ्यता के धुरियाइल आन्ही का खिलाफ मोर्चा लेबे के बैचारिक शंखनाद कर रहल बा । आपन लघु कलेवर में 'पाती' क हर सामग्री उच्चस्तरीय लगली सन ।

•• अनिरूद्ध तिवारी 'अशेष' टेल्को कालोनी, जमशेदपुर

•• हमार पत्रा में राउर आवाहन सगरी भोजपुरी समाज के झकझोर के जगावत बा । अश्लील गीतन आ फूहर गायकी के जरत लुआठ से झऊँसल बहुत जरूरी बा । राउर लेख 'मीडिया आ जन चेतना' वस्तुस्थिति के निखोरि के देखावत बा । प्रकाश उदय के 'डोन्टवरी' बहुते गहिर अरथ वाला लेख बा ।

•• ज्योति शंकर पाण्डेय 'अंजोर' लालीपार डुमरी स्वांगी पडरौना

'पाती' देखनी त कहे के पड़ि गहल कि
'इस तरह से गर नदी बहती रही तो देखना
तय समंदर तक का इक दिन फासला होगा जरूर ।'

•• अजय कुमार पाण्डेय, देवकली, नवानगर बलिया

•• 'पाती' अंक १० मिलल । पत्रिका का स्तर के ग्राफ लगातार ऊपर भागल जा रहल बा । राउर आ प्रकाश उदय के लेख बहुते नीमन उतरल बाड़ ऽ सन । बिनय बिहारी आ भगवती प्रसाद द्विवेदी के कहानी सराहे जोग बाड़ी सन ।...पत्रिका का पन्ना-पन्ना में भोजपुरी साहित्य के प्रति राउर जे दर्द बा' एकरा के सभुन्नत बनावे के जवन लगन बा, साफ झलक रहल बा ।

ई जे लागल लगन वा उ लागल रहो
दर्द मन में जे जागल बा जागल रहो
एह तरे रंग 'पाती' के निरखत रहो
लोग पाती के प्रेमी आ पागल रहो

•• जगन्नाथ, साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-१

•• 'पाती' के ६ आ १० दूनो अंक बेजोड़ बा । बहुते उपयोगी; भावोत्तेजक, विचारणीय, साजसज्जा आ शुद्धता का लेहाज से सराहनीय बा । 'पाती' भोजपुरी पत्रिकन में निराले स्थान बना लेले बा । एसे भोजपुरी के प्रचार-प्रसार विकास त होते बा । भोजपुरी के मानक एगो के गठन ही रहल बा ।

•• श्रीराम सिंह 'उदय' बाँसडीह, बलिया

'पाती' के मार्च ९५ के अंक पर प्रतिक्रिया

•• जगन्नाथ त्रिपाठी

ई अंक हमके २७.३.९५ के मिल गयल रहे, बाकिर हम पहुँच क सूचना आ आपन प्रतिक्रिया आज ले ना भेजे पवलीं- एकर हार्दिक खेद ह ।

सचको पूछीं, त 'पाती' के स्तर क कवनो अउरी पत्रिका हमके भोजपुरी में लउकति नइखे । ई खड़ी बोली क छाया-पत्रिका ना ह । एम्में भोजपुरी अपना सहज प्रकृत रूप में प्रकट होले (सामान्य बोलचाल आ साहित्यिक, दूनू, रूपन सहित), एकर मुहाबिरा, कहावत, शब्दन क प्रयोग, एकदम टठ क्रिया-पद देखे के मिलेले । अइसन-अइसन प्रयोग कि ओकर खड़ी बोली में का, कवनहूँ भाषा में, अनुवाद कयल मुसकिल हो जाय ।

'पाती' क ई अंक भोजपुरी गजल पर केन्द्रित ह ऽ । गजल पर लिखल चारो लेख सारगर्भित हवें । गजल क इतिहास, परम्परा, विकास-क्रम, एकर हिन्दी रूप आ फिर भोजपुरी रूप आ आगे क सम्भावना, सबके कई तरह से देखल-परखल गइल ह । कहल गइल कुछ बातन पर मतभेद हो सकेला, जवन होखहूँ क चाहीं । ओपर चर्चा कय के समाधान करे क चाहीं, काहें कि 'नाऽसौ मुनिर्यस्य मर्मिर्न भिन्ना' आ 'वादे वादे जायते तत्त्बोधः' ।

भोजपुरी गजलन क सम्पादन बड़ा कठिन काम ह । भले ई सौ बरिस पहिले अँखुवाइल होखे, बाकिर ओकरे डार-पात क विकास अब्बे हाल ले रूकल रहल ह । हिन्दी गजल के मश्क करत-करत जब भोजपुरी गजल पर हाथ लगावल जात ह, त सुरू-सुरू में कुछ कचाई रहबे करी ।

तब्बो एह अंक में भोजपुरी गजल क बड़ा अच्छा रूप सामने आयल ह । कवनो-कवनो गजल क छन्द-मात्रा-लय से एकदम दुरुस्त आ कथ्य से भरपूर हई आ ऊ हिन्दी-उर्दू के अच्छी-अच्छी गजलन से टक्कर ले सकेलीं । भोजपुरी गजलन क ई स्तर देखि के सुखद आश्चर्य क अनुभूति होत बा ।

बाकिर कुछ गजलन में जवन-जवन बाति हमके खटकलिन, उनके बड़ा संक्षेप में हम कहत चाहत बानी, ना त बाति अधुरिए रहि जाई ।

कुछ गजलन में उर्दू के अइसन शब्दन क प्रयोग खटकेला, जवन भोजपुरी में छपल नइखें; जइसे-तर्जे अदा, रुसवाई, खूं, कत्ल, दुश्वार, अंगेज, कुछ शब्दन में खड़ी बोली क अस्वाभाविक प्रभाव झलकेला; जइसे- निकलो (निकरो), दिल (मन), अभी तक, नाम (नाँव), मानो (माने), मगर (बाकिर), छिनाए (छोराए), हालात, कर (कय), डरे लगे (डेंराए लगे); कहीं-कहीं बरिअई से समास कयल गयल ह; जइसे-'संगीन नोक' (बरछा क नोक)

मात्रा आ लय क धचका कहीं-कहीं लउकत ह । एह दोष से बचे खातिर बड़े अभ्यास क जरूरत ह, काहें कि कुछ नामी-गिरामी कवियन के गजलन में ई स्खलन हो गइल ह । उर्दू गजल क रगड़ाई-मँजाई सैकड़न साल ले भइल, तब ओकर रूप निखरल ह । हिन्दी गजल में उर्दू गजल वाला लोग बहर (छन्द) सम्बन्धी कई गो खोट निकारेला । भोजपुरी में ए पर विशेष ध्यान दिहले क जरूरत ह, काहें कि ई खड़ी बोलियो से भिन्न भाषा ह ।

कहीं-कहीं वर्तनी के कारण कुछ त्रुटि आ गइलि हईं । एक जगह 'बर' के 'बडर' लिखात त छनद ठीक बहठ जाता । 'रु' आ 'रू' के लिखाई में आजुकाल्हि बड़ी अराजकता बा, एप्पर ध्यान देवे के चाहीं ।

व्याकरणगत कुछ दोष आ गयल हवें, असावधानीवश । पुल्लिग आ स्त्रीलिंग के प्रयोग में गलती हईं; जइसे- पुल्लिग कर्त्ता के साथ 'होला' 'आवेला' क्रिया होखे के चाही आ स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ 'होले',

'आवेले' होखे के चाहीं । गजलन में इहो गलती हो गइलि ह ।

हँ 'हमार पन्ना' में 'भाषा' क बहुबचन 'भषन' देखि के हमके बड़ा अड़बड़ बुझाइल । एके त 'भाषन' होखे के चाहीं । जो 'भषवन' बहुवचन बनावल जात, तब चाहे ठीक होत; जइसे- 'कागज' के 'कगजन' आ 'ताखा' से 'तखवन', चाहे 'ताखन' । हो सकेला कि ई छापा क भूल होखे ।

अन्त में हमार निवेदन ह कि हम जवन ई कुल लिखली हँ, ओके छिद्रान्वेषण भले कहल जाय, बाकी ओमें कवनो दुर्भावना ना ह । ई कुल हम खाली एही उद्देश्य से लिखिले हईं कि एह तरह क त्रुटि भोजपुरी गजलन में न होखे पावे । एसे हमार स्तर अउरो ऊँच हो जाई ।

अंक के सराहना में कहे लायक त बहुत कुछ बा । ओके लोग कहबे-लिखबे करिहें, हमहन का अनुमान ना क सकीले कि केतना पइया छाँटि के पोढ़ दाना छँटायल होई आ सम्पादन के पहिले का रूप रहल होई । सम्पादन क दायित्व बहुते कठिन ह ।

'पाती' के माध्यम से भोजपुरी गजलन क जवन स्वरूप सामने आयल ह तवन एगो मील क पत्थर साबित होई । हम आशा करत हईं कि भोजपुरी गजलन क अउरी-अउरी बढ़िया संकलन देखे के मिली ।

अन्त में, सम्पादक आ सह-सम्पादक के मन से धन्यवाद आ साधुवाद आ बधाई ।

•• संपर्क : सेवा-निवृत्त वनाधिकारी, पंतनगर, गोंडा
जगन्नाथ त्रिपाठी

•• भोजपुरी भासा में पहिली बार कवनो पत्रिका क अइसन अंक मिलल बा, जेकरा स्तर क तुलना कवनो राष्ट्रीय स्तर के पत्रिकन से कइल जा सकेला। गजल का दिसाई 'पाती' क काम 'मील क पत्थर' मतिन लागत बा । अंक क सराहना खातिर शब्द नइखे मिलत ।

•• कुमार शैलेन्द्र, किशुनीपुर, जमानियाँ, गाजीपुर

•• गजल अंक मिलल । एकरा पहिलहूँ 'मीडिया' पर आधारित अंक मिलल रहे । 'पाती' का प्रति अपना मोह का सीमा तक रुझान बा । 'पाती' में का ना मिले, अपना माटी के गंध, हृदय के सीधा-सादा भाव क अनुगूँज चिन्तन के वैचारिक ऊर्जा, आधुनिक युगबोध अउर अपना संस्कृति के चलन-पहल ।.. ..एह अंक में एके साथ भोजपुरी का अनेक गजलकारन से परिचे कराके रउरा अपना पाठकन पर बड़ा उपकार कइले बानी । "छोटे काया बड़हन बात" (जगन्नाथ) में गजल के इतिहास आ भावभूमि के जरिये परिचे करावे में काफी सहायक बा । 'गजल : अंदाजे बयान क असर' निबंध महत्व के बा । मोती बी०ए० जी के गजल से काफी निराशा बा, मन कइसन दो हो गइल । पांडेय कपिल, जगन्नाथ, भगवती प्रसाद द्विवेदी, मुफलिस, सूर्यदेव पाठक, 'पराग' के गजल अच्छा लागल । अशोक द्विवेदी के गजल में आजु के बेवस्था पर करारा चोट बा...गजल भा गीत भा कवनो विधा में जबले रचनाकार रचि-बसि ना जाई, तबले ओमें ऊ धार, ऊ तेवर आ मन बान्हे क क्षमता ना होई, जवन होखे के चाहीं ।

•• विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, बेली रोड, पटना

•• 'पाती' का गजल अंक मिला । इस ऐतिहासिक सारस्वत यज्ञ के सफल आयोजन के लिए मेरी बधाइयाँ । चयन में निर्ममता बरती गई है, इसीलिए स्तरीय रचनाएँ आ सकी हैं । वर्त्तमान भोजपुरी गजल का मानक रूप इसमें उभरा है ।....आपके और जगन्नाथजी के आलेख इसकी विराटता और संभावनाओं की ओर संकेत करते हैं । तीनों आलेखों को अंक के प्रारंभ में ही एक साथ होना चाहिए था ।

•• डा० आसिफ रोहतासवी, कुदरा, जिला- कैमूर (बिहार)

•• गजल -अंक मिलल । साँच कहीं त हमके अचरज ना भइल, काहेकि रउवाँ एसे नीमनो क सकत रहलीं हँ। नाँव ना लेके एकातना त कही सकेली कि भरती क रउवाँ अधिका धेयान देले बानी । रउरे क्षमता आ सामरथ से परिचित लोगन के कवनो अजगुत ना लागो ।

•• डा० शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी, संपादक, 'सरयूधारा', देवरिया

•• गजल अंक बड़ा सुन्दर बन पड़ा है । छात्रों के बीच 'पाती' की चर्चा करता हूँ, पर अब अभियान चलाना है कि वे इसके ग्राहक भी बनें ।

•• रामेश्वर नाथ तिवारी, नया शिवगंज, आरा (भोजपुर)

•• 'पाती' का गजल अंक अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । उसमें गजलों का लेकर जो बिचार प्रस्तुत किए गए हैं, उन पर मनन करने की आवश्यकता के साथ गजलों के अंतर्तम में पैठकर उसके विभिन्न स्वरूपों का दर्शन करा पाना महत्वपूर्ण कार्य है, जिसकी ओर आपका चिन्ता-मिश्रित ध्यान गया है, वह परम श्लाध्य है ।

•• मोती बी०ए०, बरहज, देवरिया

•• 'पाती' के एह अंक के ऐतिहासिक महत्व मानल जाई । मेहनत आ योजना सराहे लायक बा । 'इन डिफेन्स आफ गजल' एगो सुन्दर आयोजन भइल । आवरण पर ऋचा के बनावल चित्र सचहूँ दिशा-बोध बतावत बा । बधाई । आदरणीय जगन्नाथ जी के लेख मेहनत से लिखाइल बा आ ज्ञानवर्द्धक बा । दूसर लेख 'अंदाजे बयान क असर' (अशोक द्विवेदी) असरदार बा । लेखक के विचार- "संवाद आ आपुसी बातचीत खातिर एकरा नियर पनिगर आ असरदार माध्यम साइते कवनो होई ।" मंचीय कमाल के प्रभाव से जनमल बुझाता । दिया सलाई के काठी नियर भक से बर के अँजोर क के आँख चोन्हिया दहल, जइसन कमाल गजल के शेर बखूबी करेला । त अइसना में संवाद आ आपुसी बातचीत के माध्यम बने में ऊ सक्षम होइबे करी । डा० आसिफ के लेख में 'गजल पहिले एगो 'फार्म' ह बाद में सब्जेक्ट' गजल के औकात कम कर देता । 'फार्म' प जोर रचना के साथ मजाक कइल ह । अइसन दृष्टिकोन के तरजीह ना देबे के चाहीं....

•• डा० विश्वरंजन, गंगा सिंह महाविद्यालय, छपरा

•• ई अंक बड़ा सार्थक भइल बा । गजल पर जे लोग काम करे चाहऽता ओकरा एह अंक से बड़ा लाभ होखी । अब तक अइसन लागत रहल ह कि जे गजल के पहचानत न रहल हऽ, ऊहो गजल खाली लिखते ना रहल, मंच से गावतो रहल हऽ । 'पाती' के ई अंक गजल के पहिचान कराई आ दिग्भ्रमित ना होखे दी । अपने के एह काम खातिर जेतना बधाई दिहल जाय, कमे कहाई । ए अंक में भोजपुरी के लगभग सभ प्रसिद्ध गजलदाँ के गजल देके संग्रह के रूप में पाठक का सोफा रख के अपना संपादकीय गुन के जवन परिचय देले बानी, सराहनीय बा ।

•• रामनाथ पांडेय, रतनपुरा, छपरा

•• गजल विधा पर ई ऐतिहासिक काम अपने जइसन सुधी आ विद्वान का हाथे भइल, जेसे पहिला बेर भोजपुरिहा गजलकार लोगन के कुछ सोचे खातिर मजबूर होखे के परी । अपने के आलेख काफी नीमन आ स्तरीय बन पड़ल बा । संधिदूत, पी० चन्द्रविनोद, मधुर नज्मी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, 'पराग', रामेश्वर प्रसार सिन्हा 'पीयूष', सुधीर रंजन 'प्रवीर', विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, वरमेश्वर सिंह, माहेश्वर तिवारी, अशोक द्विवेदी के गजल गहिर अनुभूति जगावऽता । प्रकाश उदय के गजल टटका आ छाँय-छाँय दागऽता ।

•• कुमार 'विरल', माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर

•• गजल क इतिहास, रचनाशीलता आ खूबी का ह, एकरा सहित रचना आ रचनाकार के सभे बिन्दु ए अंक में उजागर हो गइल बा । ई विशेषांक भरपूर सामग्री आ समरथाइ राखत बा ।

•• प्राध्यापक 'अचल', हरिहरपुर, गाजीपुर

•• 'पाती' के गजल विशेषांक पढ़ि के मन लहालोट हो गइल । एक संग्रह के देखि के केहू ई कहे के साहस ना करी, जे भोजपुरी भाषा गजल के प्रकृति के अनुकूल नइखे । अंक संग्रहणीय आ संरक्षणीय बा ।

•• रामसबिहारी पाण्डेय, भगवानपुर, भभुआ, बिहार-८२११०२

•• अंक १२ के लिए आप बधाई के पात्र हैं । गजल विधा में रचना-रत युवा हस्ताक्षरों के लिए यह अंक निश्चित तौर पर उपयोगी है । समसामयिक तेवर की बानगी प्रस्तुत करता यह अंक निश्चित तौर पर 'छोट काया बड़हन बात' के अनुरूप है । श्री जगन्नाथ का आलेख जानकारियाँ देता है । डा० रोहतासवी का आलेख भोजपुरी में कही जा रही गजलों का परिदृश्य उपस्थित करता है, वैसे यह आलेख लेखक से और अधिक मेहनत की अपेक्षा रखता था । डा० द्विवेदी गजल के बारे में ठोस ढंग से अपनी बात रखते हैं । यकीनन इस अंक की गजलें पाठक पर गहराई तक असर छोड़नेवाली हैं । अपवाद स्वरूप कुछ एक गजलों में दोहराव और सपाट बयानी है ।

•• जितेन्द्र 'धीर', क्यू २८३, मुदियाली रोड, गार्डनरीच, कलकत्ता

•• गजल और उसकी भावभूमि पर केन्द्रित 'पाती' मुझे और मेरे परिवार को बेहद पसंद आई । आपकी कलम का जादू और सशक्त संपादकीय से पत्रिका दीप्तिमान है । जगन्नाथजी और आपके लेख में गजल के इतिहास और दशा पर अच्छा विचार किया गया है । आनन्द संधिदूत, पाण्डेय कपिल, जगन्नाथ, 'किल' जी के गजलें बहुत पसंद आईं ।

•• श्रीमति शुभानती पाण्डेय, गोरखपुर

•• चार-पाँच आलेखन का साथे पाँच दर्जन गजलगो लोगन के सम्मेलन बढ़िया लागल । एम्में अर्जुन सिंह 'अशान्त', डा० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, गंगा प्रसाद 'अरुण', जवाहरलाल 'बेकस' आ दिनेश भ्रमर के उपस्थित से अउरू निखार आ जाइत । 'सतीश जी से अउर बढ़िया गजल पावल जा सकत रहे ।

•• डा० ब्रजभूषण मिश्र, काँटी थर्मल पावर, मुजफ्फरपुर

•• गजलन के आछा संग्रह प्रकाशित करे खातिर धन्यवाद देत बानी । डा० रोहतासवीजी के निबन्ध भोजपुरी गजल के दिसा आ संभावना के अनेक तथ्य के ओर इसारा करत बा ।

•• रासबिहारी पाण्डेय, संपा०, 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका', देवघर

•• कुछ गजल में कवनो मार्मिकता आ असर ना बुझाइल, बाकी ई विशेषांक भोजपुरी पत्रिकन में सर्वश्रेष्ठ विशेषांक मानल जाई । ई साधना सराहे जोग बा ।

•• डा० रामशीष प्रसाद, दौलतगंज, छपरा

•• आनंद संधिदूत, मोती बी०ए० आ रोहतासवी के गजल नीक लागल ।....भोजपुरी गजल अभी टिकदम-टिकदम चलऽता ।

•• स्वामी फंदोत्तीर्णानंद, रोहतास

•• गजल की भावभूमि पर यह ज्ञानवर्द्धक विशेषांक पठनीय और संग्रहणीय है ।

•• डा० अनिल कुमार आजंनेय, उजियार, बलिया

•• 'पाती' आइल, पाती आइल, जोगवल-अर्जल थाती आइल ।
माटी का बोली में सिरजलि, मटिये के सिंगार बा एकर
माटी में जनमे वालन के सहज सुघर व्यवहार बा एकर
चातक के जस बूँद सेवाती, 'पाती' के इ अंक बुझाइल ।
प्यार मधुरजी के एहमा बा, अउर द्विवेदी के सिंगार
गजल अंक बा अतना मर्मी, बाँचीला हम बारम्बार
रंग-बिरंगा रचना एहमाँ, ऋतु बसन्त जइसे गदराइल ।
तर्ज-बयानी लेख समीक्षा, सभ अद्भुत आ सुघर बाटे
अबकी अंक लगेला हमके, सभका ले सर्वोपरि बाटे,
भोजपुरी क रूप-अदा बा, पन्ना-पन्ना में छितराइल ।

•• मासूम बैरागी, अलाउद्दीनपुर, मऊ

•• 'पाती' के ई अंक दस्तावेजी बनि गइल बा । राउर मेहनत साफ झलकत बा । गजल के सताब्दी बरिस में एकर प्रकासन बहुत गरुआर काम बा । उमेद बा 'पाती' भोजपुरी भासा के सेवा अइसहीं स्तरीय ढंग से करत रही ।

•• माहेश्वर तिवारी, पो०बा० ५६८, मुरादाबाद

•• इस अंक ने साबित कर दिया है कि भोजपुरी में भी वह खूबी है, जिसके लिए उर्दूवाले ऐंठे घूमते थे । 'पाती' के कुछ गजलकारों ने विशेष आकर्षित किया संधिदूत, मोती बी०ए० जनन्नाथ, पाण्डेय कपिल, गणेशदत्त किरण, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', पंकज, सूर्यदेव पाठक 'पराग', आसिफ रोहतासवी, वशिष्ठ अनूप, मासूम वैरागी, कृष्णानन्द 'कृष्ण', मुफलिस, घायल, अनीश श्रीवास्तव, दिनेश गर्ग आदि के कुछ शेर मन को छू लेते हैं । लेख सभी सारगर्भित हैं । डा० रोहतासवी ने खास प्रभाव डाला । 'क्वान्टिटी के बजाय 'क्वालिटी' की बात चिन्तन योग्य है ।....मेरी गजलों में आपने कुछ ज्यादा ही हस्तक्षेप कर दिया है....बन्द हटा दिया तथा शब्द बदल दिए । खैर...

•• डा० शालिग्राम शुक्ल 'नीर' एलवल, आजमगढ़

•• भोजपुरी भाषा की समृद्धि के लिए आप निस्सन्देह बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं । मेरी शुभकामनाएँ ।

•• हस्तीमल 'हस्ती', सम्पादक, 'काव्या', सांताक्रुज, बुम्बई

•• ई अंक गजल के ओह स्वरूप पर प्रकाश डालऽता, जवना से गजल के मरम समझे में लिखनिहार-पढ़निहार दूनो के मदद मिली ।....जगन्नाथजी स्तरीय गजलकार के साथ स्तरीय समीक्षको हुईं उनकर निबन्ध एकर खुलासा करत बा । अशोक द्विवेदी आ आसिफ रोहतासवी के निबन्ध एह विशेषांक में चार चाँद लगावत बाड़े स । गजल पर अतना सामग्री हमके कवनो भोजपुरी पत्रिका में देख के ना मिलल । ...ऐतिहासिक आ धरोहर-अंक बन परल बा । ई अंक (भोजपुरी) गजल के पहचान दी ।

•• रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' सिविल लाइन, बक्सर

•• धन्यवाद बा रउरा संग्राहक आ संपादन-कौशल के । 'पाती' के ई बरियार अंक बतावत बा कि भोजपुरी गजल क सोरि पताले खिलल बा । हिन्दी के हिमायती आ कथित बिद्वान लोग कतनो कूद-फान करी, भोजपुरी गजल आपन अनोखा स्थान बनाइये के रही ।

•• अक्षयबर दीक्षित, निरालानगर, सीवान

पत्रिका कवनों जीवंत समाज, संस्कृति, भाषा, राष्ट्र भा मानव समुदाय के निरंतर गतिमानता आ बिकास के चिन्हाँसी ह। पल-पल बदलत दुनिया के दरसन एकरे जरिए होला। सशक्त जनभाषा के सरूप, बोलेवालन के संख्या, इलाकाई फैलाव, उत्प्रवासन आदि ओजह से संसारब्यापी प्रसार, बौद्धिक समृद्धि के बावजूद क्षेत्रीय-भाषायी हमताबोध में कमी आ राजनैतिक कारन से भोजपुरी आन समतुल भाषा के बनिस्बत उपेक्षित रहि गइल।

पहिचान आ पठनीयता के संकट के हेह माहौल में भोजपुरी में बेगर कवनों सहायता के चालीसहन बरिस अबिचल आ अविरल साहित्यिक पत्रिका निकालल अचरजे के बात बाई काम आदरणीय अशोक द्वि वेदी जी 'पाती' के जरिए क रहल बानीं। डिजिटल संसाधन के प्रसार के आधुनिक काल में चुनौती अउर अधिका बा। 'पाती', अंक - ९४, सितंबर २०१९ के संपादकीय में उठान काल के जुनूनी आ भाउक परिवेश के चरचा करत उहाँ का सब्द में झाँकत बेचैनी साफ नजर आवत बा, जवना में कुछ असहमति, कुछ खीझ, कुछ चिंता, कुछ उद्‌बोधन के सुर बा- ष्ऊ समय, 'ऊ जमाना चल गइल।' ई कवनो पुश्तांतर

सोच के परिनाम ना बलु साधना के अनुभव से उपजल बोध ह। संवेदना के ओह स्तर से गुजरले बिना तेकर गहराई के महसूसल ना जा सके।

'पाती' कबो आपन स्तरीयता से समझौता ना कइलसि ई एह अंक में आइल हर विधा के सामग्री के देखले बुझाई। गोस्वामी तुलसीदासजी के रचनाकर्म के भोजपुरी प असर के आँकत डा० अर्जुन तिवारी जी के 'सामयिकी' होखे, परिचय दास जी के धरनीदास के काव्य पर प्रस्तुत चिंतन होखे, मालवीयजी के व्यक्तित्व के स्मरन करत विजयशंकर पाण्डेय जी के आलेख होखे, भोजपुरी के आदर्श लेखन के नमूना बाड़े। एह अंक में जुगावल अस्सी-नब्बे के दशक के चर्चित भोजपुरी कहानियन के 'बेसकीमती सौगात' कहल जा सकेला। कृष्णकुमारजी के कहानी 'पाती' में अदिमी के भीतर बाँचल संवेदना, विजय मिश्रजी के कहानी 'घरवे मठिया बन गइल' में आधुनिकता के दबाव से परिवार संस्था में आ रहल बिखराव का हालत में एकसरुआ होत अदिमी के उजबुजहट, प्रेमशीला शुक्लजी के कहानी 'कचहरी' में कचहरी के आसपास पलत दुनिया, तिकड़म आ तनिका एनहूँ-ओनहूँ के रंग-ढंग उभर आइल बाड़ें। आशारानी लालजी के कहानी 'माई के जीउ' में संतान बदे माई-मन के सनातन चिंता के उकेरन प्रमुख बा।

कैलाश गौतमजी के कविता में कवनों नैतिक मोल के दबाव के फिकिर से बेपरवाह अदिमी के सोच के लेके धारदार व्यंग्य बा, गंगाप्रसाद अरुणजी के गीतन में दाव-पेंच, रूप-रुपैया आ रंगदारी के पनपत आदर्श के लेके चिंता के सुर बा। शारदा पाण्डेयजी के 'हँसुआ-खुरपी के गीत' में वर्तमान में पसरल लमेरा वैचारिक गंदगी से बजबजात देश, समाज आ बिचार-छद्म के सामने राखल गइल बा जवन कि अब जहरबाद में तब्दील भइल जाता। प्रबुद्ध वर्ग के चुप्पी भविष्य खातिर भारी पड़ी एसे जबान खोले के साहस करे पड़ी।

ई उदाहरन बानगी के तौर प बाड़ें सऽ बाकी रचनन के अहमियत कम नइखे। 'पाती' बेसक अगिला पाँती में ठाड़ बिया।

दिनेश पाण्डेय, रोड नं०२, राजवंशीनगर, पटना-८०००२३

डोण्ट वरी
(संदर्भ : 'फूलहिं-फरहिं न बेंत' -
अशोक द्विवेदी ('पाती' अंक-9, मई 94)

प्रकाश उदय

बेंत त भइया हो, नाहिंए फुलाई, नाहिंए फरी, बाकी राउर लेख पढ़ के लागल कि 'सुधा' जवन कहाला तवनो अपना आदत से बाज ना आई, बरसबे करी जब–ना–तब अद–बद के, बेंत–वन प' त बुला अवस के। बलुक 'विरंचो' लोग त कबो–कबो 'मूरख–हृदय' में 'चेत' करावे खाती, एही–एही बेंत से आ अइन पिठाँसे प 'फूल–फर' बनावे लागेला। रउरो व्यंग्य के बेंत उठवले बानी, बाकी जादे बढ़िया लागल कि व्यंग्य एह लेख के भीतर से झाँकत बा बहरिए से डाकत नइखे। ऊ लेखक के चिन्ता के चटक करे के कामे आवत बा।

रउरा चन्द्रकला त्रिपाठी, रीडर, हिंदी विभाग, बी.एच.यू. के जानत होखब। हाले–फिलहाल उनुकर कविता के एगो किताब आइल हा– 'बसन्त के चुपचाप गुजर जाने पर'। बड़ा भरोस भइल कि बसन्त के ना महसूस भइला भा कइला प कम–से–कम कवि–लेखक लोग के आजो अनगँव बुझाता। जेकरा ई अनगँव ना होखे ओकरे के बुला 'घोंघा बसन्त' कहल जाला। घोंघा लोग अइसन सन्त होला जिनिका कुछुओं ना बेयापे, इहाँ तक कि बसन्तो। सन्त कहीं चाहे सन्ट। सम्पादक भइला के नाते अइसन लोग के अन्ट–सन्ट से, राउर त रोजे के नेवता–बउरहँत रहत होई।

ई कहल त अनेर लेखा बा कि रोजे कुँइया खन के पानी पीए वाला जन के बसन्त के आइल–गइल बुझइबे ना करी। हमरा त बुझाता कि ओकरा पेट–भरूआ लोगन से जादहीं बुझाई। बुझइला के माने, जतना बसन्ती बयार में 'बहकल' होला, ओकरा से जादहीं बसन्तो बयार के 'अहवल' होला। देखल जाय कि जेकरा के 'सुतहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़' ओकरो अँजोरिया, तरई, चान–सब कुछ कइसे लउकत बा आ कतना टहकार–

काम बाटे कतना लें बीने के बरावे के
रतिया बिछावे के अंजोरिया सुखावे के
हाँके के बा तरई उड़ावे के बा चान....

(आनंद संधिदूत)

बसन्त के माने, असल में प्रकृति के तरफ से दूगो तै–तापर महीना भर ना भइल। बसन्त त आदमी के एगो अहसास के नाम ह, जवना के ओरिअइला के माने भइल हमहन के भीतर से ओह चीज के ओरिआइल जवना के कुछ छू देला, जवन कोइलर के बोली से कुहुँक उठेला। अदमिन के करेजा अइसन काठ–कुकाठ आ निसोठ भइल जात बा कि ना कवनो बात से जुड़ाता ना खँखोराता। चाय ठण्ढाय मत, एही चरम चिन्ता के साथे आदमी सामूहिक नरसंहार आ बीच बाजार बलात्कार वाला अखबारन के चाट–चटखार लेता।

संवेदना कइसे धीरे–धीरे सोंपह होत जाला एकर एगो उदाहरण

हमरा तब देखे में आइल जब पढ़े–लिखे के परोजन से बबुआ सालिक चन्द गाँव छोड़ के शहर बनारस अइले। इहाँ हमरा इयाद बा कि चलती सड़क के किनारे सँउसे–सँउसे गो बकरा काट के लटकावल देख के पहिले–पहिल त सालिक चन्द रो देले रहन। कुछ दिन ले ऊ रस्ता छोड़ देले, कुछ दिन आँख तोप के निकल जासु आ अब त खैर उनुका ई दृश्य लउकबे ना करे। असहीं सालिकचन्द शुरुआती दिन में बड़ा खुश भइले कि इहाँ अन्हरिया ना बुझाय कि कब आइल आ कब बीत गइल; गाँव त एको घरी के अन्हरिया करेजा तक ले उतरि आवेला। बाकी थोरहीं दिन बाद सालिकचन्द के जब ई बुझाइल कि इहाँ अँजोरिया ना बुझाय कि कब आइल कब गइल न उनुकर मुँह देखे लायक रहे। धीरे–धीरे उनुका एह अन्हरिया अँजोरिया के 'नाहियों बुझाइल, नाहिए' बुझाव लागल। शहर तनाय लागल भीतरे भीतर।

हमरा कहे के मतलब इहे रहे कि आन बे नाटक ओटक में जवन 'वध वगैरह के दृश्य वर्जित रहे ऊ अनेरे के बुढ़भस ना रहे। ऊ आदमी के संवेदना के बचवले राखे के उपाय लेखा रहे। आज काल्ह त सिनेमा वाला ईहे सोचे में सप्तिसान (सतपिसान–सतुआ पिसान) रहलन स कि फलनवा फिलिम में हँइसे–हंइसे हतल–कतल देखावल गइल त हम कइसे कइसे देखाईं कि ओकरो से भड़कदार' लागे। असहीं वेदप्रकाश शर्मा जी के कवनो 'वेद' उठा लीं, अतना रस लेले के उहाँ के खून टपकावत लउकब, लाशन के लंगटे नचावत कि अचरज होई कि काहे गीध नइखन स जुमि जात, कुकुर काहे नइखन झंझ करत, काहे किताब खोलते माछी नइखी स भिनुके लागत। अखबार वाला लोग के त कहहीं के नइखे, बुला ताकते–सुनावत रहेला लोग कि कवनो 'मुख–पृष्ठाइन' हत्यारो हाथे लागो आ छूह उड़ जाय। संवेदना के सोंपह करे खाती ई सिनेमा–शर्मा–समाचार पत्र जइसन जिनिस जो लोग जहरवार मतिन समर्थ बेरामी बा।

अइसना में रउरा बसन्त के ना बुझइला प बतिआवत बहुतन के एक्शन शू'के जमाना में चमरौधा के चर्चा नियर लाग सकेला। लागी त लागो। जाने ऊ लोग, जाने ओह लोग के माथा। के बाथा।

असल में बसन्त के ना बुझइला के चिन्ता ठेठ हिन्दुस्तानी मन–मिजाज से उपजल बा। ई पाप–रॉक के पीछे, भाया– टी0वी0, पछिमाहुत होत जात नवका पीढ़ी के पोंछिटा में झूमर, कजरी, फगुआ बान्ह के फेरु पुरुबाहुत क लेबे के कोशिश लेखा बा।

ध्यान देबे के बात बा कि एकरा खाती, तनी दोसरा देने से एगो अउरू कोशिश चल रहल बा। ऊ कोशिश 'चोली के पीछे क्या है', 'खरकाय लो खटिया', 'अटरिया पे लोटन कबूतर', 'तू चीज बड़ी है मस्त मस्त', 'कच्चा सुपारी कटत नाहीं बा', 'कतनो देखाई हरियरी बोकवा बोलते नइखे' – जइसन गदहगोतन के जरिये सोझा आ रहल बा। एह कूल्ह में ऊ हहुआइल हिन्दीयत बा (हाय हो राम) जवन अंग्रेजियत ओरे घसकत जात छोरा–छोरिन के घीच–घसेट के अपना देने क लेवे। कहे के माने कि ए बाबू–भइया लोग, तोहनी के डूबे–धँसे खाती बिलाइत से बड़हन दलदल हमनी के अपना ढेरों में बना सकत बानी जा, एहरे आ जा लोग ओहर कहाँ जइबऽ जा, झुटठे हलकानी होई।

आ तनी ठीक से सोचल जाय त बिछिलहर के जबाब में बिछलहर

वाला ई रस्ता कवनो नया नइखे। रीतिकाल के इयाद पारीं। ओहू घरी अइसने संकट रहे। खान–पान, रहन–सहन सब प फारसी रंग–ढंग छवले जात रहे। ई रंग जब हिन्दी के साहित्यिकता आइयो के ढकेले प परल त कवि लोग बड़ा अकबकाइल। उहन लोग लगे ऊ 'लगता है जैसे कमर हो नहीं है न जाने वो नाड़ा कहाँ बाँधतीं है' वाली नायिका ना रहे जवन लम्पट राजा–नबाबन क मन मनावस। फेर त ऊहो लोग अपना कवित्त–सवैया के सरसावे प पर गइल आ कतना सरमावल ई त शुक्लोजी जइसन रीतिकाल से खार खइले समीक्षक से बेहिचक पूछल जा सकेला।

त हो सकेला कि 'जब कोई खटिया बोले' भा 'रात में लेती हूँ, दिन में....' टाइप गीतन में लोगन के पच्छिम से पलटे खाती ओइसने कवनो पूरब प्रयास होत होखे (अनभावते सही)। सुने में त आवेला कि इतिहास अपना के दोहरिआवेला बाकी इतिहास अपना के हतना निहुर के दोहरिआवे लागी ई त काने सुनलहूँ ना रहीं, एह गीतन के दया–दुआ से आँखी देखहूँ के मिल गइल।

ओइसे ईहो कोशिश कवनो कम कारगर नइखे। बलुक जादहीं। नचवा सलभतार के रिझावे खाती, घरनिए, घरहीं में घुँघरू बान्ह लेबे त केहू बेजाँय ना कही बाकी ईहो डर कम नइखे कि घुंघरू के छूम–छनन–छन सुन के कहीं अड़ोसियो–पड़ोसी, राहियो–बटोही घर में मत घुस आवस, गजरा लपेटले, कि 'बड़ी दूर से चल के आए है तो जलवा दिखाना होगा....।'

एगो खतरा अवरू बा। ओइसे त खतरे खतरा बा बाकी अवरू सभ छोड़ियो दिंआय त ई कुल्ह गीत मरद–मेहरारू के भा एह दूनो जाति के परस्पर के जवना तरे उबार करत जा तारे स, ओह से तय बा कि दूनों के एक दूसरा खाती जवन 'सहज' आकर्षण बा तवना में कमी आई। कुछ दिन त ऊ बर्बर हो के बनल रही फेर हो सकेला कि एकदम्मे मर जाय। एकदम्मे त खैर नाहिंए मरी, भूख, पैखाना पेशाब लेखा सेक्सों के रोजनामचा बनले रही बाकी ओकरा आगा–पीछा के जवन लमहर व्यापार बा, जवना के मोटा मोटी 'प्रेम' कहाला, तवन त नाहिए रहि जाई। कहे के चाहीं कि 'काम' रह जाई, 'कामाध्यात्म' ना रह पाई। ई कामाध्यात्म का ह? जहाँ तक हमरा बुझाला मरद–मेहरारू के बीचे, काम के काम तमाम भइला के बादो जवानी वाला देह के झुरा गइला के बादो एक दूसरा खाती जवन चाहत रह जाला अन्त–अन्तले तवने कामाध्यात्म कहाला। अब दिनकर जी भा उनुकर पुरुखा भा उर्वशी कतनो दर्शन छाँटस, गंधमादन पर्वत प उठ–बइठ–पसर के हमरा त कामाध्यात्म च्यवन आ सुकन्या के जुगल जोड़ी में लउकेला, उर्वशी–पुरुरवा के तिल के ताड़ बना के ओकरी प चढ़े उतरे वाला बतंगड़ई में तनिको ना।

माफ करीं, बाते ह बढ़त बहक गइल हा। बहकहीं में मुँह से निकल गइल हा कि एह कुल्ह गीतन के मारे ई हो सकेला कि एक दिन फलना–फलनी कहाय वाला लोग खाली नर मादा हो के रह जास। ई कुल्ह नइखे होखे वाला जी। असंभव बा कि दुनिया रहे आ नेह–छोह–प्रेम ना रहे। एह गीतन के दौर अइसन दौर कतने आइल कतने गइल। 'ये दिन भी जाएँगे, गुजर गुजर गए हजार दिन।'

खुद पाप म्यूजिक में अश्लीलता अपना चरम प चढ़ के अब अपनेसे अपने उतरे लागल बा। 'पंक राँक' के जवन दौर चलले रहे, जवना में एगो, नया नशेड़ी पीढ़ी अपना जादे से जादे अनगराहित देखावे खाती संउसे देह छेदवा

गोदवा के मउवत मनावे लागल रहे, ओकरे गीत गावे लागल रहे आ ओकर गायकन के आत्महत्या के एगो सिलसिला चल देले रहे– तवनो ओराइल। लगभग। पॉप में 'ब्लूस' (एगो धारा) ह जवना में लगभग ऊहे–ऊहे दुख–दरद के गवनई होला जवन इहाँ के झूमर कजरी बारहमासा में अक्सरहा गवाला। ईहो ध्यान देबे के चाहीं कि पॉप के कानफाड़ संगीत करकरहट, चिचियहट के खुद पच्छिमें में कवनो कम विरोध ना भइल। इहाँ तक कि 'सैक्सुअल हीलिंग' जइसन गीत (कम ऑन–कम ऑन–कम ऑन–कम ऑन) के गवैया 'मार्विन गे' त अपना कुल्ह हरकतन के चलते बापे के हाथे मारल गइले। इहो कम सुखद नइखे कि औद्योगिक क्रान्ति के लह–चह में जवन 'फोक साँग' मरला मतिन हो गइल रहे तवन फेर से साँस लेबे लागल बा आ 'कान्टी' लेखा देहाती उच्चारण आ खुसी के गीतन से भरल म्यूजिक भी पच्छिमी संगीत में आपन एगो खास जगह रखले बा।

आने कि माने असल में असल लड़ाई पुरब–पच्छिम के नइखे। अपने घर खाए–पीए के चाहीं, ठीक बा, बाकिर बायनो पेहान के एगो सवाद होला, एगो संस्कार आ बात व्यवहार होला। बायन पेहान से भड़के वाला लोग भा ई माने वाला लोग कि ओप भूत बइठावल बा– अपने आप में अकड़ल होला भड़कल आ भुलाइल होला आ ओझइती के कामे आवेला। पूरुब बायन दी पच्छिम के, पच्छिम दी पुरुब के। भरत नाट्यम् जाईं, बेले आई। ई कवन माने मतलब ह कि कवनो अंग्रेजिन भरतनाट्यम नाचस त आँख पसार के निरेखीं आ कवनो हिन्दुस्तानिन बेले करस त नाक बटोर के चल दी कि के देखो देसी सभ्यता–संस्कृति–कला के बिलाइल?

अतने बा कि आपन पहचान मत मिटिक जाय। पॉप म्यूजिक नीक लागत बा त लागो बाकि फगुआ सुन के छींक बरे लागे त अइसन नाक के तनी रगराइये जाये के चाहीं। ई जरुर जानल जाय कि माई के अंग्रेजी मदर कहला, बलुक सँपरे त कहियो लेल जाय 'खदेरन को मदर' बाकि ओह अंगरे–जिआइल बबुआ से त भगवाने बचावस जिन्हि बाप से लड़ बइठेले कि हे हो तू 'माई' से बियाह काहे कइलऽ, 'मदर' से काहे ना कइलऽ? बायन–पेहान पसन पर गइला के माने ई ना भइल कि अपना चुल्हा में पानी झोंक के पड़ोसी के चुहानी के चउकठ प कटोरा ले ले ठाढ़ हो जाई। कटोरा उठावते आदमी मनमोहनाइन भा नरसिहाइन भा नेताइन महके लागेला। ई महक बड़ा अश्लील होला बड़ा फजिहताह।

एह अश्लीलता आ फजिहत कि अहसास होखे के चाहीं। ई अहसास राउर लेख जगावत बा।

– रउरे, प्रकाश उदय

पुनश्च : लेख पढ़त–पढ़त मन (बड़ा पापी) एगो डिस्को साँग देने लपकल.... हरी हरी .... पानी परी .... डोन्ट वरी... धरती फुलाई–फरी.... दाल–भात भुजिया, बरी.... थरिया में आके परी.... दुअरा प' तोसक–दरी.... (करी से हरी तक के बीच के बाकी तुकन के तहियावे के प्रार्थना श्रोता लोग से कइल जाई... उषा उत्थप लेखा)।

– "पाती", अंक–10, सितं.–94

फूलहिं फरहिं न बेंत

डॉ. अशोक द्विवेदी

गोसाईं जी सचहूँ भविष्य के जथारथ रूप पहिलहीं देख लेले रहनी तब नू ई सारगर्भित चउपाई लिखनी कि "फूलहिं फरहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहि जलद....।" माने मेघ केतनो अमृत बरसावे, बेंत ना फूल, ना फरी। ओइसहीं आज बसन्त भा फागुन कतनो साज सिंगार कइके रस–बरिसावत; गंध लुटावत आवो : लोग कठुअइले रही। 'प्रोग्रेसिव थिंकिंग' आ 'एक्टिविटी' में बसन्त का अइला–गइला से कवनो फरक नइखे पड़े वाला।

एह बुद्धिवादी जुग में अपना, भौतिक उन्नति खातिर एक–दुसरा के कान्ह छीलत; दरेरा देत, आगा निकले वाला लोगन के आगा–पीछा, ओकर स्वार्थ, निजीपन, परायापन आ अजनबियत बा। प्रकृति आ समाज से जुड़ला आ ओकरा में घुल–मिल गइला के ललक गुम हो गइल बा, आ ओकर जगह औपचारिकता ले लेले बा। प्रकृति आ ओकरा अपनत्व से कटल लोगन में 'हृदय' आ 'संवेदना' दूनों अतना दबि गइल कि ऊ मशीनी आ कठोर होत चल गइल। एही काठपन का चलते उ कवनो परब, उत्सव में गइबो कइल त ओकर कूल्हि कइल–धइल बनावटी स्वाँग लेखा हो गइल।

अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष में से अब खाली 'अर्थ' आ 'काम' दुइये पर जिनिगी के 'अथ' से 'इति' हो जात बा। आधुनिक कहाए वाला लोगन के एह पछाहीं सोचावट के चलते, आदमी अपना माटी, प्रकृति सामाजिक संवेदनशीलता कूल्हि से कटल चलल जाता। ऊ उत्पादक आ उपभोक्ता बनि के रहि गइल बा। अर्थ आ ओसे जुड़ल अनेक समस्या गरीब आ अति निर्धन लोगन के स्वार्थी, छुद्र आ असहिष्णु बनवले चलल जातिया। हमार एगो प्रगतिशील दोस्त कामरेड 'क' एक दिन कहलन कि रोजी–रोटी से जूझे वाला लोगन के आत्मिक उन्नति आ अध्यात्मिक चिन्तन के राह देखावल, असल राह से, उन्हनी के भटकावल हऽ।

उनकर कहनाम हमके इचिको नया आ क्रांतिकारी ना लागल। स्वामी विवेकानंद बहुत पहिले भारत के अशिक्षित–गरीब आ दुखी जनता के बारे में अइसने उद्‌गार प्रगट कइले रहलन। उनकर कहनाम ई रहे कि पहिले ए वर्ग के नीन से जगावल जरुरी बा। जीविकोपार्जन खातिर पढ़ल पहिले जरुरी बा, अध्यात्मक खातिर बाद में बाकि स्वामी जी ई ना कहलन कि जब नीन टूट जाव आ जीविका मिल जाव त हमनी का अर्थपिशाच आ नर पशु बन जाईं जा। ऊ ई ना कहलन कि हमनी का 'बौद्धिक' बनला का चक्कर में भावशून्य संवेदनाहीन मशीन हो जाईं जा।

भारत के संस्कृति गँवई–संस्कृति रहल बिया। निश्छल भावनामय आ अटूट। उत्सव एकरा भावना के अभिव्यक्ति देत रहल बाड़न स। एही से एकरा के उत्सवधर्मी संस्कृति कहल गइल। परब त्यौहार आ उत्सव के जीये आ ओकरा में पूरा रागात्मक होके रमि जाए के प्रवृत्ति गँवई समाज के उत्सवधर्मी बनवले रहे। प्रकृति से उल्लसित, उन्मादित आ तृप्त होखे वाला गँवइन के निश्छल समरपन वाला भाव–रूप पर नागरी–संस्कृति बेर–बेर रीझल।

दरसल संस्कृति हमनी के जिये के कुछ 'मूल्य' आ 'प्रतिमान' देले। सोचे–बिचारे महसूस करे आ विश्वास के साथ आगा बढ़े के आधार आ ऊर्जा देले। 'सहिष्णुता' आ 'सह अस्तित्व' के ई नायाब गँवई–संस्कृति, भारतीय चेतना के धुरी रहल बिया। अपना संस्कृति आ परम्परा पर नया सिरा से विचार क के हमनी के ओकर पुनर्निर्माण करे के चाहीं। वंचना के महल खाड़ करे वाला कथित आधुनिक आ प्रगतिशील लोग ए महत्वपूर्ण तथ्य के नजरअंदाज करे के आदी हो गइल बा।

आज के भौतिक–यांत्रिक जुग में संस्कृति–गँवई–संस्कृति आ ओकरा मौलिक रचनात्मकता के सोझे लीलि रहल बिया। गँवई नवहन के रुझान शहरी आधुनिकता आ बिकृत–बुद्धिवाद का ओर हो रहल बा। ऊ आपन सरबस भावसंपदा लुटा के, जीन्स पहिरले कपड़ा से धनी आ भीतर से कंगाल होत जा रहल बा। एही कारन अब बसंत आ फागुन रोम–रोम हुलसाये का रमावे वाला उत्सव ना रहि के, 'परम्परा के इयाद दियावे वाला मौसम बन गइल बा आ हमनी का 'रस्म' लेखा ओके निपटावत बानी जा।'

फगुनहट के जवना बतास आ रुप–रस–माधुरी प गँवई संस्कृति के पक्षधर आ संवेदनशील, सहृदय रीझत–डोलत रहलें, ओमे फेंड़–पौधा से युवक–युवती आ नर–नारी के उल्लास डोलत रहे। एही हुलसन के सगुनी–अनुभूति ओह लोगन का होत रहे। इहे उल्लास कबो अशोक आ टेसू का ललाई से दहकत रहे, आ कबो आम–मंजरियन आ कटहरी–गंध से मादक हो जात रहे, बाकिर रसानुभूति के आनन्द लेखा। उत्तेजित करे वाला मादकता के वर्णन कुछ कवि लोग अतिरेक में भले कइले होखे, बाकि बसन्त के सोभाव त हुलास आ आहलाद के रहल।

"कुसुमजन्य ततोनवपल्लवास्तदनुषट्पद कोकिल कूजितम्" का जरिये कालिदास के बसन्त धरती पर आवे आ अपना गाढ़–छुवन (सान्द्र स्पर्श) से भीतर उल्लास आ अनुराग के फुहेरा जगा जाव। कालिदास बसन्त के सघन मधुरता के 'सगुनी अनुभूति' कइले रहलें। 'परायापन' आ 'अजनबियत' से ग्रसित आधुनिक बुद्धिबिलासियन आ प्रगतिशील मित्रन के कर्कशता में एह 'सान्द मधुरता' के दर्शन कइसे होई? ओकरा भीतर ना कुछ टुसियाई ना कोंढ़ियाई। ना पल्लवित होई ना फुलाई ना फरी। ना त ओमें समरसता जागी ना सहअस्तित्व, आ ना समर्पन। उल्लास आ शिवत्व वाला सुघराई के बोध से परहेज राखे वाला संस्कृति भारत के ना हऽ। पश्छिमी संस्कृति में कबो सौन्दर्य के पाप मानल गइल, कबो पुन्य। ओके देह से जोरल गइल, आत्मा से ना। तबे नू ऊ वासनामय आ पाप हो गइल।

बसन्त अब्बो राजा लेखा सदल–बल आवेला आ अमीर–गरीब के बिना भेदभाव कइले अपना रूप–रस–गंध के खजाना सभका खातिर खोल देला। जब जेकर जइसन नेत होखे बरकत ओइसहीं नु होई। ईहां त ई हाल बा कि चाहे अमरिते काहें ना बरिसो, बेंत राम ना फुलिहें ना फरिहें। ऊ अपना नरमाहटो में हुलसिहें त देहीं रेघारी डलिहें आ मन पर दहशत पैदा करिहें। ओइसे 'कैक्टस' का ए जुग में एही किसिम के चीजु के शोभा आ महातम बा। अब ई बात दोसर बा कि कँटवनों में फूल आवेला आ बड़ टहकार बाकि निर्गन्ध।

बसन्त के मन्मथ आ मदन के सँघतिया कहल गइल बा। 'राग' के अनुराग वाली लाली देवे वाला एह महराज के नाँव प पहिले खूब उत्सव आ जलसा होखे, जेके 'मदनोत्सव' कहल जाव। अशोक का गाँछ के नीचे कलसा, ओमे आम के पल्लो आ ओपर चाउर से भरल दियरी धराव। फूल आ चन्नन छिरकाव। उखि के रस धराव आ पल्लो गूंथल बन्दनवार सजल मंडप बना के, ओमे कामदेव आ रति के मूर्ति पूजन होखे, धूप, चन्नन, इत्र का सुवासित माहौल में पहिले पूजा होखे, फेर रात भर नाच–गाना, हास–विलास। ए जलसा में जनता के जोरे खातिर कवनो सार्वजनिक बगइचा भा फुलवारी में आयोजन कइल जाव। सगरी प्रजा ओमे भाग लेव। बसन्त के साधारणीकरण में जवन राग–रंग–रस रहे ओसे सभकर मन भींज उठे। प्रेम, मद आ उन्माद से जुड़ल बसन्त के जिकिर पौराणिक आ इतिहास प्रसंगन में भरल बा। काम के रिझावे आ ओकरा जरिये दोसर प आपन प्रभाव डाले के प्रसंग पौराणिक कहानियन में आइल बा। शिव–पार्वती, राधा–कृष्ण तक के एह प्रसंग में चर्चा बा। दुष्यन्त शकुन्तला आ महाराज उदयन का प्रेम आ परिणय के सूत बसंते बन्हलस। अमीर खुसरो के मस्ती में डुबावे आ आनन्दानुभूति करावे वाला इहे बसंत हऽ।

धरती के सिंगार प्रकृति आ प्रकृति के सिंगार बसन्ते करेला। प्रकृति के अनन्त सुघराई, ओकरा 'आभ्यन्तर प्रस्फुटन' आ यौवन के सूचना बसन्ते देला। दूर–दूर ले लहलह हरियर खेत में पीयर आँचर

फइलावत सरसों, सूरुज का सोनहुली किरिन जाल का लालिमा से सजि के, ओकर अगवानी करेले। तीसी अपना हरियरी आ नीला रंग के असंख फूलन से ओकर सुघराई के दुगुना करेले। मटर छिमियाए लागेले। सेमर लाल टहकार फूलन के छतरी तानि देला। आम बउराये लागेले स आ ओकरा मादक गंध से मस्ती छलकि आवेले। कोइल के कुहुकल सुनाए लागेला बाकिर ई सब हम का सोचि रहल बानी? एह भीड़–भाड़ से भरल धुआँ से दम घोंटत, अउँजाइल, हकाइल बेचैन मन पर एकर का असर बा? अतने नू कि कलेन्डर का तारीख का मोताबिक एगो बसन्त पंचमी के दिन होला। एप्पर पहिले के कवि–साहित्यकार बहुत–बहुत लिख चुकल बाड़े। नवहा संस्कृति आ आचार–विचार में आज ओके पढ़े आ बसंत के रूपश्री पर लट्टू भइला से का लाभ? भक्खर परसु बसन्त ससुर, बेलाभ के रोजिगार फालतू लोग करेला।

'लाभ', 'फायदा' भा 'मुनाफा' एह औद्योगिक जुग के सभसे महत्वपूर्ण आ प्रमुख तत्व हो गइल बा। शुभ लाभ पहिले बनिया महाजन भाई लोग अपना दोकान में लिखत रहल हा आ लक्ष्मी के पूजि के आपन रोजिगार साधत रहल हा, अब देश का आर्थिक नीति में अइसन भूचाल आ गइल बा कि ओम्मे भावना, मानवी करुणा, सेवा, दया आ इमानदारी शब्द के 'बदबूदार' के टाइटिल मिल गइल बा। एही से बेमार आ घाटा वाला उद्योग–ध्न्धा के जल्दी से जल्दी बन्न करेके आदेश भइल बा। मोनाफा का नीति पर देश चलावल ठीके बा बाकि इहो विचार करे वाला प्रश्न बा कि एकरा पर का का कुर्बान करे के परी?

समस्या बड़ी विकट बा। पश्छिमी संस्कृति, विचारधारा, औद्योगिक–भौतिक समृद्धि का ओरी भारतीयन के झुकाव आत्मसमर्पन में बदल गइल बा। धरती पर 'डंकल' आ अकास में जी0टी0वी0, एम0टी0वी0 के मालिक 'रूपर्ट मरडोक' बाड़न। विदेशी लोग हमनी का लइकन के दिमाग बदले में तत्पर आ तल्लीन बा आ हमनी के घरेलू ममिला में अमेरिका के धउँस बा। एह दीन–हीन स्थिति के जिम्मेवार के बा? स्वतंत्रता आन्दोलन के जुझारू पुरोधन के जादुई शब्द 'भारतीय', 'सुराज', 'स्वेदशी' आ 'स्वभाषा' के जबान पर लियावल जोखिम के काम हो गइल बा। प्रगतिशील दोस्त, लोग भाजपाई कहि दी। राष्ट्रीय स्वाभिमान में अइसन गिरावट आ जाई, हम ना सोचले रहनी अपना से विमुख भइला आ चकाचौंध में भटकला के नतीजा सोझा बा।

बसन्त का अइला पर कम्प्यूटरी आ मशीनी लोग भलहीं मत हिलो–डुलो, प्रकृति आपन चोला बसन्ती कइए ली। नीरस, एकरस दिनचर्या वाला साहेब आ बाबू लोग पर आम मोजरइला आ महुवा कोंचइला के असर भले मत परो, बाकि स्कूली लइकन के सरस्वती जी इयाद परि जइहन। उनका पूजन का उछाह में चंदा के रसीद लेके रोड पर ठावाँ ठईं खाड़ हो जइहन स। बड़ बड़ अकडू आ जोमियाह लोगन के साइकिल, मोटर साइकिल आ मोटर रोकत त देरिये नइखे त भला बाजार करे जात भा आवत रकटू आ नकटू के का औकात? ना दिहें त गमछी आ साइकिल से हाथ धो दिहें।

बसन्त आ 'बसन्ती चोला' भारतीय संस्कृति में रचल–बसल बा। बसन्ती चोला प्रेम में, आत्म बलिदान आ उत्सर्ग के तत्परता के प्रतीक बा। हरियर, लाल, पीयर, केसरिया कूल्हि रँगवे अलग–अलग भावना के प्रतीक बाड़न सऽ। एह देश का पछिला इतिहास में 'बसंती चोला' के गौरव–गाथा सोनहुला अक्षर में लिखल बा। बसन्त के जवन रोमानी छवि बा ओकरा के क्रांतिधर्मिता आ आत्म बलिदान से जोरे वाली संस्कृतिये भारतीय संस्कृति हऽ।

हर बेरी लेखा एहू बेर बसन्त पंचमी आ सरस्वती पूजा होइबे करी। केरा के फेंड़ गड़ाई, अशोक आ आम के पल्लो से बंदनवार बनी। सरस्वती जी के मूर्ति धराई आ लाउडस्पीकर पर धूम धड़का वाला डिस्को संगीत बाजी। 'पाप' आ 'रॉक' त एह जीन्स युग के मन पसंद चीझु बा। मेडोना आ माइक जैक्सन के दीवाना रात भर नचिहन गइहन स आ बिहान भइला गुलाल आ रोरी के लमछर टीका लगा के ट्रक आ टेक्टर पर चढ़ि के, अबीर उड़ावत, धुमगज्जर करत, अगिला साल तक खातिर सरस्वती जी के कवनो गड़हा, पोखरा आ नदी में भसा अइहन सऽ। बसन्त महराज कइसहूँ आवसु, लइकन में केतनों हुड़दंग होखे, महल्ला में कतनो लउडस्पीकर बाजो, शहर के समझदार आ शरीफ लोग किरिया खइले बा कि ऊ लोग मन एकाग्र क के मोनाफा कमाए खातिर प्रगतिशील ढंग से काम करी। भलहीं कविजी ओह लोगन के "बेंत" के उपमा देहल करसु।

– (पाती–9, मई 94) ●●

बकसऽ हो बिलार

गंगा प्रसाद 'अरुण'

पिछला अतवार के बंटाधार हो गइल 'खुजली पार्क' के गेटे पर। आ होखो काहें ना, मुठभेंड जे हो गइल रहे कविकुल विदूषण जोगाड़ी भाई से अचक्के। अब का मजाल कि एको डेग आगे बढ़े देसु– 'भाई साहेब, एगो भयंकर बा खुशखबरी। अभी काल्हुए त वापस अइलीं तेलमारगंज से। एगो साहित्यिक आयोजन रहे। आउर–आउर लोगन, ना–ना, विद्वानन संगे हमरो के सम्मानित कइल गइल। देखीं ना, अखबर में फोटो के साथ छपल बा हमार नाँव।' हमरा घोर अचम्हो भइल, आखिर जोगड़िया से फत्ते कइसे भइल ई किला! जरूरे अपना नाँव के अनुरूप कवनो जोगाड़ बइठवले होई, ओह समाज के मुखिया के अपना इहाँ सम्मानित करावे के चारा डाल के। अबहीं एकरा बारे में कुछ पुछहीं जात रहीं कि कविवर जोगाड़ी प्रसाद 'विप्लवी' के दर्दनाक निहोरा हमरा कान के नाजुक परदा से टकराइल– 'भाई साहेब, अइसे त हमरा अनेक मंचन से सम्मानित होखे के चांस मिलल बा, बाकिर ई सम्मान त अभी–अभी ताई–कराही से निकलल गरमागरम जिलेबी–समोसा अइसन बा। तनी अपनो अखबरवा में छपवा दीं ना, कुछ नून–मसाला दे के! कहीं त अपनहीं 'वाइफ' के नाँव से लिख के हमहीं दे दीं, बेकार में रउरा मेहनत करे के का जरूरत!'

अब जाके हमरा दिमाग में कब से चकरिआत शंका के समाधान भइल। जोगाड़ी भाई के गुन–गान में एने–ओने जतना चिट्ठी–चपाठी छपत रहेला, सब इनकरे खुराफाती दिमाग के कमाल ह। सभे त देखत–समुझत बा इनकर माँग–मूँग के खाइल–पीअल आ माँग–मूँग के सम्मान। इनकर खाली दिमाग बस तिकड़म के गढ़। हर सही–गलत हवा में इनकर स्वारथी गंध। हमार चिंतन के चक्कर अबहीं चार बाँस, चौबीस गज दूरे रहे कि मुस्की के पाग में गोताइल इनकर सुर–लहरी दादुर अस खुशामदी लहजा में गूँजल– 'भाई–साहेब, पहिले त हम सिरिफ जमपुर के साहित्यिक जलसा के नेवता बाँटे के ठीका बिना पइसे के हथिया लेत रहलीं। आयोजक चिंतामुक्त। ई बात दोसर रहे कि भलहीं उनका कार्यक्रम के किरियाकरम हो जाय, नेवता त खाली अपने छतरछाँही लोग के मिलत रहे।' अब जइसे हमरा चिंतन में कुछ चमत्कारिक विस्तार भइल– 'भला अकवन–धतूरा के बीच कवन पौध पनपी! हमहीं रेड़ परधान।' फिर चालू भइलें जोगाड़ी भाई– 'अब त हम अपना परिचित–प्रभावशाली लोगन के बिआहो–सराध में नेवतहरी के चुनाव आ नेवता बाँटे के काम हँथवस लिहले बानी, जवना काम में पूछ–पइसा, ओकरा से परहेज कइसा? एके टिकठ पर एक से पाँच तक के कचरमकूटी परोगराम त हमरा लतरी हाथ के खेल बा। संबंध आ सोहरत के हिसाब से खाली बहूभोज, बरात आ बहूभोज, तिलक–बरात आ बहूभोज में नेवता–हँकारी के सलाही आ अपने मलिकाइन के साथे सत–संझा के जोगाड़, किरिया–करम में हाथ बँटावे के नाँव पर। हमार त संस्कारे–सुभाव हऽ– पूछा ना आँछा, हम दुलहा के चाचा।'

हमार मन–मिजाज टनके लागल। सोंचलीं– 'चल रे भाई, जोगाड़ी जीव के एगो इंटरव्यू लेइये लिआव, अपनो बुध–गेआन त कुछ बढ़बे करी, से बोल गइलीं– 'भाई जी, अगिला मंगर के हम हाजिर हो रहल बानी रउरा दरबार में, राउर साक्षात्कार लेबे। खाये–पीये के तनी टंच बेवस्था राखबि।' – "आखिर अलाय–बलाय टारे के त पूरबिज लोग अतवारे–मंगर के दिन नू सहेजले बा।" गुरुजी के जय हो– कहत साष्टाँग लोट गइलें जोगाड़ी भाई।

मंगरो आइये गइल। जोगाड़ी भाई भोरहीं से बेआकुल। आदतन पेट पर हाथ फेरत एह कोना से ओह कोना तक चक्कर काटत इंतजारी में। पता ना, उनकर पेट पर हाथ फेरल तृप्ति के परिचायक रहे कि अतृप्ति के। तपाक से मिललें आ अँकवारी बन्हले धकियावत ले गइलें अपना ड्राइंग रूप में। हदस–डर रहे कि जाल में बाझल मछरी फानि–फरार जन हो जाव। भीतरे एक कोना में भात–दाल–तीयन से दागदार अखबार–पत्रिका के अंबार आ हिलत–ढकचत टेबुल पर गरहित–गिरिहिनी अस फाटल–पुरान दू–चार गो फोटो–अलबम उनका किरिया–करम के अलम। आने कि पूरा तइयारी के साथ। फिर चालू हो गइले जोगाड़ी भाई– "हमार स्तंभन–शक्ति मजबूत बा, से इहाँ के एगो प्रतिष्ठित अखबार में स्तम्भ–लेखन कर रहल बानीं, साहित्यिक से जादे वाहित्यिके। अपने लिखल पढ़ल आ उत्कृष्ट मान के मगन रहल। संपादक जी के फुरसते कहाँ बा पढ़े के? अपने हीत–बिरादरी के बानी।" एने हम तिरपित आ ओने ऊ – 'अखबार के पन्ना भरे खातिर कुछ त मिल जाता फोकटे में।'

हमार नजर छान–बीन करत रहे कमरा के। देवाल पर किसिम–किसिम के प्रमाण– अभिनन्दन–पत्र, सम्मानी चद्दर, आ जाने कतना–कतना दिन के सूखल फूल माला–गुलदस्ता के बेहतरीन–बेतरतीब प्रदर्शनी। हम चकचिहाइल–चमत्कृत। एही बीच भाई जी एगो पुरान पत्रिका में छपल आपन नएका सिंगार–बोध के कविता पर अँगुरी रखत अपना फँटवासी सुर में गावल–रेघावल शुरू कइले– "तोहार बासी–ठंढा पापड़ अस नरम ओठ, कई–कई बरसात झेलल 'प्लाईवुड' जइसन उकठल देह–धजा, दुमकट्टा कुक्कुर अइसन केश–विन्यास, बइसाख–जेठ के तपिश में सूखल आहर–पोखर के तली में फाटल दरार अइसन एँड़ी के बिवाई, हमरा जइसन नख–दंत बिहीन हितोपदेश के बाघ से ना त भोगल जाये, ना अँकवारिये में बन्हाये। तबो, हे हमरा मन के नीलम परी, तोहरा से अबहियों बा ओतने प्यार, जतना कि बिआह से पहिले कबो दोसर–तीसर से रहे हमार–तोहार।"

हमरा महमंड पर जइसे हथउरा परत रहे, से हम सवाल के तोप दाग दिहली, – जोगाड़ी जी, साहित्त में राउर रुचि कइसे भइल? आ काहे लिखीले रउरा कविता? – "भाई जी, साहित्य–सेवा में नाम–दाम दूनो मिलेला। दाम के नाँव पर छेदामों ना, त नाम खातिर त हम कुछऊ करे के तइयार बानी।" – 'जोगाड़ी भाई, पत्र–पत्रिका में छपल राउर आ चेला–चाटुकार लोग के चिट्ठी से पता चलेला कि राउर घर त सम्मान–सामग्री से ठकचल बा। आज एहनी से दीदारो भइल। कइसे जोगाड़ कइलीं इहनी के रउरा?' – "भाई साहेब, अब दाई से पेट का छिपाईं। खाली रउरे ना, कुल्हि लोग जानेला कि ई सब सम्मान–पुरस्कार 'मैनेज्ड' आ 'मार्केटेड' हवें सऽ। आज बड़–छोट सब नगर–महानगर में चाट–गोलगप्पा के ठेला अस सम्मान बाँटू संस्था खुल गइल बाड़ी सऽ। साहित्य से कम आ वाहित्ये से जादे लगाव के साथ। पइसा लगाईं आ 'गारंटिड' सम्मान पाईं – एह संस्थन के आप्त वाक्य हऽ।"

हमरा से रहल ना गइल, से पूछ बइठलीं, – "ई लोग रउरा अस वसंतक के खोज के सम्मान–नेहान से पक्तिर कइसे करेला? हमरो गंगाजली में गेयान के कुछ बून चुआईं!" – भाई साहेब, एकरा खातिर त दू गो जंतर–मंतर अपनावल जाला! पहिला त ई कि एह आशय के विज्ञापनानुसार आत्म सम्मानार्थ हजार–पाँच सइ भेज के अपने खेवा–खरचे नियत तिथि पर अपना फोटोग्राफर के साथ सदेह हाजिर हो के सम्मान पर गरहन लगाइला, ओ दोसर ई कि हम उनका के टोपी पहिराईं, त जरूरे हमरा के पग्गर पहिनइहें ऊ। आने तू हमरा के महान बनाव, हम तोहरा के विराट बनाइब। आ भाई साहेब तीसर इहो कि कवना नगर में अपने कुल–खानदान, हीत–मीत, जाति–जोगाड़ के लोग नइखन? अइसन सम्मान क्रिया–करम से त उनकरो कद–रुतबा बढ़ेला!

हमरा कबीर साहेब मन पर गइले– 'कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो।' बाकिर जोगाड़ी भाई सी.डी. –डी.वी.डी. अस बाजत गइलन– "भाई साहेब, सही के ठेलत–धकियावत फोटो–सेशन में मुँहकुरिये भहराइयो के अगिला पाँत में टेंढ़–सोझ ठाढ़ रहिये के नू फोटो में झलकी कोई? अनकर सम्मान–हक झटक लिहल एगो

राज जीतला के बरोबर होखेला।" कहले, "अब त हमार ई आदत व्यसन में बदल चुकल बा आ एह तिकड़मबाजी में अब आनन्दो आवेला।"

अब हमार हिम्मत जबाब दे गइल एह साक्षात्कार के विस्तार देबे में। से हमार आखिरी सवाल – "राउर कुनाम 'डॉ0' उपसर्ग के बिना अधूरा काहें? राउर शिक्षा–दीक्षा?" 'देखीं, बहुत पहिलहीं हमार कुल्हि 'साटिकफिटिक' कतहीं गुम हो गइल, से हमरा अपनहीं पता नइखे कि हम कतना पढ़ल–लिखल बानी। रहल बात 'डॉ0' उपसर्ग के, त एगो राज के बात रउरा के बतावत बानीं। हम एगो उपाधिबाँटू बड़का संस्थाध्यक्ष के पटिअवले बानी विद्या वाचस्पति के मानद उपाधि खातिर। अइसहूँ अपना नाम के पहिले हम डॉ0 जोड़िये लीं त हमार कोई का करिहें!'

अब हमरा सामने भावी डॉ0 जोगाड़ी आ उनकर श्रीमतीजी के हाथ के बनल घोंटाय लाएक, चाह–जलपान खातिर बधाई आ धन्यवादज्ञापन के अलावा अउर कवनो चारा ना रहे, जइसे कि मुरगा के जान बकसले होई बिलार!

जमशेदपुर, झारखण्ड ●●

गजल

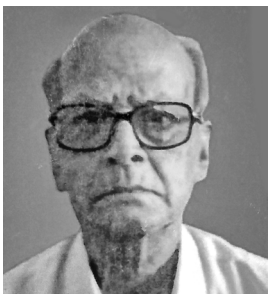

जगन्नाथ

करे आ गइल बा ,धरे आ गइल बा ।
मरे का किनारे जिये आ गइल बा ।

सतावे में माहिर ऊ बाड़न ,त हमरो
सहत ही सहत अब लड़े आ गइल बा ।

पवन मन्द होखे भा आन्ही चलो ना
दिया के जरे आ बरे आ गइल बा ।

रहत अब कहाँ गाँव बा,गाँव अइसन
शहर अस त ओकरो रहे आ गइल बा ।

कहत बानी अइसे ,मगर कइसे कह दीं
गजल ,लोग लायक कहे आ गइल बा ।

–ए–21 ,साधनापुरी,गरदनीबाग,पटना–800001

अशोक कुमार तिवारी

पूछ बा सगरो अब रंग चटकार के।
नेट के जुग में के पूछे अखबार के।

झूठ में सांच फेंटे ना आइल कबो,
कइसे शोभा बनित जाके दरबार के।

हम समुझनी कि सुख–दुख के संगी बनी,
यार निकलल ऊ बस अपना दरकार के।

चाहे दंगा करे भा करे अगजनी,
ऊ करे सब सही दोष सरकार के।

बात के सार बूझल कठिन बा बहुत,
जे समझदार होखऽ धरऽ सार के।

–सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया

गंवई गंध के गुलाब
डॉ. विवेकी राय

अनिल ओझा नीरद

गंवई गंध के गुलाव के सीधा–सीधा मतलब त इहे होता कि ऊ गुलाब जवना में गंवई गंध होखे आ ई गंध तबे होई, जब ऊ गुलाब कवनो गांव का माटी में होखे यानी ओकर रचना गांव के माटी, पानी, हवा के संगम से भइल होखे, जवना से कि ओकरा रोंआँ–रोंआँ से गांव के माटी के सोन्ह गंध, सूरुज के तेज लेखा पल–पल फूटत होखे आ जवन अपना के ओह माटी के करजदार मानत होखे आ ई करजा उतारे खातिर अन्तिम साँस तक उतारू होखे।

डॉ. विवेकी राय जिनिका खून में, अंतिम साँस तक अपना गंवई माटी के गंध–रस रचल–बसल रहे आ अपना के एह माटी के करजदार मानत, जिनिगी भरि, यानी जबले हाथ में कलम चलावे के ताकत रहे तब तक, अपना एह करज के उतारे के चेष्टा अपना लेखन में उहाँ का करत रहि गइनी। अब पता ना, उहाँ के ई करजा पूरा–पूरा उतरल कि ना, लेकिन एगो बात त जरूर भइल कि एकरे बल पर, एक दिन उहाँ का, एह गंवई रस–गंध से सराबोर साहित्यकार का रूप में, जइसे हिमालय के सबसे ऊँच चोटी पर पहुंचि गइनी आ साहित्य के हर विधा में आपन झंडा गाड़ि दिहनी, चाहे कहानी होखे, उपन्यास होखे, निबन्ध–रिपोर्ताज होखे, समीक्षा–आलोचना होखे भा सम्पादन होखे, एक–एक कइके सब विधा में। बस एगो खाली नाटक विधा के छोड़ि के।

ई कवनो कहाउति ना, एकदम साँच बात ह कि, जवना आदिमी के जिनिगी में, संघर्ष ना होखे ओकरा जिनिगी में, निखार ना आवे आ एह कसौटी पर अगर राय साहब के जिनिगी कसल जाउ त ई साफ लउकी कि उहाँ के जिनिगी में त, डेगे–डेगे संघर्ष रहे। हम लइकांई में, अपना गाँव में ई शब्द सुनले रहनी 'टूअर'। आ जब एकर मतलब मालुम भइल त पता चलल कि टूअर ओह लइका के कहल जाला, जवना के बाप ना होखे। आ आजु जब हम डॉ. विवेकी राय के जिनगी पर नजर दउरावत बानी त पता चलऽता कि इहाँ का त जनम से पहिलहीं टूअर हो गइल रहनी। राय साहब के जनम भइल 19 नवम्बर 1924 के, लेकिन अपना गांव घर में नाहीं, बलुक अपना ननिअउरा गाँव भरौली, जिला बलिया उ0प्र0 में। इहाँ के जनम से करीब डेढ़ महीना पहिलहीं, इहाँ के बाबूजी श्री शिवपति राय के मउवति, प्लेग जइसन महामारी के चपेट में आ के हो गइल रहे। घर में महतारी श्रीमती सविता देवी के अलावा अउर केहू रहे ना, त, जाहिर बा, अइसना हालत में, इहाँ के मामा श्री बसाऊ राय, अपना बहिनि के सहारा बनल होइहें, अपना घरे उनुका के ले गइल होइहें, जहां इहां के जनम भइल होई, आ इहँवें से शुरू भइल होई इहाँ के जिनिगी के संघर्ष के कथा।

कहल जाला कि इहाँ के लइकाईं अपना मामा, बसाउवे राय के देखरेख में बीतल रहे। बाकी जब पढ़े–लिखे के उमिरि भइल त पता चलेला कि इहाँ के शुरूआती शिक्षा अपना पुस्तैनी गाँव सोनवानी, जिला गाजीपुर, उ0प्र0 में भइल, जवन बिना कवनो बाधा के मिडिल स्कूल (यानी तबके दर्जा आठ) तक चलल। अपना गांव के निगिचे के गाँव महेन्द से इहां के 1940 में मिडिल आ 1941 में उर्दू मिडिल कइला के बाद इहाँ के पढ़ाई छोड़ि दिहनी आ अपना पुश्तैनी काम–धाम, यानी खेती–बारी में जुटि गइनी। अब आगे के पढ़ाई के बारे में ना त केहू राय–सलाह देबे वाला रहे, ना एकर कवनो सुविधा रहे। बिआह पहिलहीं हो गइल रहे, से अब घर–गृहस्थी से उबरे के कवनो उपायो ना रहे। सच्चाई ई कि इहां के ओह समय में, अपना गाँव में मिडिल पास करे वाला पहिला अदिमी रहनीं, ऊहो प्रथम श्रेणी में।

"मोरे मन कुछ और छै विधना के कुछ और" के कहाउति एकदिन अपने आप चरितार्थ भइल। अब विवेकी राय के खाली खेती–बारी में आपन जिनिगी त बितावे के रहे ना, कुछ अउर बने के रहे, काहें कि विधना अइसन विधान रचि के उनुका के एह धरती पर भेजले रहले, से एकर संयोगो ऊहे जुटवले।

सन् 1942 में अइसन संयोग जुटल कि इहां के अपने गांव के लोअर प्राइमरी स्कूल में पढ़ावे खातिर, मास्टर के नोकरी मिलि गइल। बस इहंवे से, इहां के जिनिगी के दिशा बदलि गइल, दिन में मास्टरी आ सबेरे–सांझि, खेतीबारी आ घर गृहस्थी के दुर्बह काम के बीच, पहिलहीं से मन में अंकुरत–धधकत रचना–लेखन कर्म के काम, जवन कि इहां में, मिडिल स्कूल के पढ़ाइये के बरे से फूटे लागल रहे, अब जइसे अंखिफोर होखे लागल। पहिले कविता रचाइल, कुछ तब के नामी गिरामी पत्र–पत्रिको में भेंजाइल, बाकी बाल–मन में प्रौढ़ता के कमी के कारण, बार–बार लवटि आइल। राय साहब हार ना मननी। एही बीच अपना मास्टरी के योग्यता लायक कुछ अउरी डिग्रियों बढ़ावे के मन कइल, लेकिन एगो समस्या मसाने मुँह बवले खड़ा रहे। अंग्रेजी से परहेज रहे, काहें कि, इहां के नजर में, ई भाषा गुलामी के प्रतीक रहे। से इहाँ का, पहिले 1943 में व्यक्तिगत रूप से, हिन्दी में विशेष योग्यता के परीक्षा पास कइनी आ फेर एही स्तर पर 1944 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'विशारद' आ फेर ओही संस्था से 1946 में 'साहित्यरत्न' आ 1951 में 'साहिल्यालंकार' के पास कइनी आ एही बीच 1948 में नार्मल स्कूल, गोरखपुर से 'हिन्दुस्तानी टीचर्स सर्टिफिकेट' नामक ट्रेनिंग परीक्षा पास कइ लिहले रहनी, जवना के आधार पर इहाँ के 'खड़िया' गांव के 'सर्वोदय हाईस्कूल' में, हिन्दी अध्यापक के पद पर नौकरी मिलि चुकल रहे।

लेखन के काम निरन्तर जारी रहे। लेखन में, प्रौढ़तो आ चुकल रहे। पत्र–पत्रिकन में छपे लागल रहनी। साहित्य आ साहित्यकार जग में चर्चा के विषय बनि चुकल रहनी। 1951 में पहिला हिन्दी काव्य पुस्तक 'अर्गला' आ चुकल रहे। पहिला हिन्दी कथा–संग्रह 'जीवन परिधि' 1952 में छपि चुकल रहे। यानी तपस्या अनवरत जारी रहे। साहित्यकार लोगन के, सम्पादक लोगन के आ सबसे बेसी पाठक, लोगन के प्रसंस्नात्मक चिट्ठी आइल शुरू हो गइल रहे। इहों के अपना ओरि से तब के बड़े–बड़े साहित्यकार लोगन से आपन पत्र–व्यवहार शुरू क देले रहनी। अब चूँकि इहाँ के हिन्दी भाषा के लेखक रहनी त जाहिर बा कि पत्र–व्यवहार वाला साहित्यकारो हिन्दिये के रहल होइहें। इहाँ का भोजपुरी भाषा के लेखक के रूप ना उतरल रहनी ना चर्चा में रहनी। भोजपुरी में इहाँ का आपन कलम चलावल शुरू कइनी 1965–66 के बीच या बाद में, जवना के फल खिलल 1968 में, भोजपुरी के पहिला ललित निबन्ध संग्रह – 'के कहल चुनरी रंगा लऽ'। भोजपुरी संसद, वाराणसी से, 1968 में प्रकाशित होके हमनी का बीच आइल।

राय साहब के हिन्दी में स्थापित करे के पहिला श्रेय वाराणसी से निकले वाला प्रतिष्ठित आ चर्चित हिन्दी दैनिक अखबार 'आज' के जाला। राय साहब एह से पहिलहूँ अलग–अलग पत्र–पत्रिकन में छपत रहनी बाकी, इहाँ के लेखन के प्रमाणिक आरम्भ सन् 1945 से मानल जाई, जब इहाँ के एगो हिन्दी कहानी 'पाकिस्तानी', 'आज' में प्रकाशित भइल, लोगन के नजर एह कहानी आ एकरा लेखक पर बाड़ल आ एकरा बाद त एह पत्र में लगातार कविता, कहानी आ निबंधन के एगो सिलसिला चलि पड़ल। लेकिन सबसे बेसी इहाँ के लेखन चर्चा में तब आइल, जब एही दैनिक अखबार में इहां के एगो डायरी, साप्ताहिक रूप से,

1958 से छपल शुरू भइल, जवना में गंवई गंध–रस से भरल निबंध, ललित निबंध आ रिपोर्ताज शैली के एगो अनोखा रूप पेश कइनी आ जवन गांव–गांव तक में चर्चा के विषय बन गइल। डायरी के नांव धराइल रहे 'मनबोध मास्टर के डायरी' ई लेखन इहां के सबसे बेसी लोकप्रिय बनवलस।

एकरा बारे में एगो रोचक कहानी बा, जवना के पता इहाँ पर आ इहाँ के लिखल एगो किताबि के सम्पादित क के पंडित रामचन्द्र शर्मा जी सन् 2003 में प्रकाशित कइले। ओही में हमरा ई भेद पता चलल कि सन 1957 से इहाँ के डायरी लिखल शुरू कइ देले रहनी, जवना के बारे में, तब के समय के, "आज" के सम्पादक भा साहित्य सम्पादक श्री ईश्वर चन्द सिन्हा से कइ दिहनी आ सिन्हा जी ओकरा के देखे खातिर अपना किहाँ मगँवा लिहनी। सिन्हा जी का ऊ विधा अतना पसन्द आ गइल कि 11 अगस्त 1958 के आपन पत्र में, उहाँ का, राय साहब के सूचित कइनी कि– "डायरी का प्रकाशन शुरू किया जा रहा है। डायरी का पहला पृष्ठ आपको बुधवार दिनांक 13 अगस्त 1958 के 'आज' के अंक में मिलेगा। शीर्षक 'मनबोध मास्टर की डायरी' रख दिया गया है। डायरी प्रत्येक बुधवार के अंक में, साप्ताहिक रूप से प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायेगा। आशा है आप सानन्द होंगे।" एकरा बाद त ई क्रम 1970 तक ओह पत्र में लगातार छपल आ जवना के किताबि रूप में प्रकाशन 1984 में, किताब घर दिल्ली से भइल। ई डायरी इहाँ के जिनिगी के लेखन में मील के पत्थर साबित भइल आ इहाँ का हिन्दी साहित्य में अपना ललित निबंध, रेखाचित्र आ रिपोर्ताज के बादशाहन का श्रेणी में पहुँचि गइनी। आगे चलि के इहाँ के लेखन पर, मुम्बई में डॉ. धर्मवीर भारती के नजर पड़ल आ तवना के बाद त इहाँ के 'धर्मयुग' के चर्चित रिपोर्ताज लेखक बनि गइनीं, जवना के सिलसिला बरिसन चलल। ई सिलसिला शुरू भइल सन् 1964 के बाद, जब इहाँ का स्नातकोतर महाविद्यालय, माजीपुर के हिन्दी विभाग में अध्यापक बनि के आ गइनी। देश के हर स्तरीय आ चोटी के पत्र–पत्रिकन, जइसे कि – 'कल्पना', 'ज्ञानोदय', 'कहानी', 'धर्मयुग', 'सप्ताहिक हिन्दुस्तार', 'सारिका', 'नवनीत' आ 'कादम्बिनी' जइसन पत्र–पत्रिकन में कविता, कहानी, निबंध, ललित निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, समीक्षा, सबका माध्यम से छा गइनी। बहुत बाद में कोलकाता से निकले वाला साप्ताहिक हिन्दी पत्रिका 'रविवार' (सम्पादक श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह) में, 'गांव' स्तम्भ के अन्तर्गत अपना ललित निबन्धन से, बरिसन तक, गाँवन के पहिचान प्रस्तुत करत रहलीं।

साहित्यरत्न के डिग्री के बल पर, एगो गंवई हाईस्कूल के हिन्दी अध्यापक से, स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी अध्यापक बनल एतना आसान थोड़े रहे। आ एहू बात के जबाब उहाँ के ओही किताबि 'पत्रों की छाँव' में मिलऽता, जवना के भूमिका लिखत खा खुद उहां के स्वीकार कइले बानी, आ जवना के जबाब में ऊ चिट्ठियों ओह में छापल गइल बा, जवना के चलते अतना कुल्हि सम्भव भइल बा।

बात 1958 के ह। जइसन कि पहिले चर्चा कइल गइल बा कि उहाँ के पत्र–व्यवहार, ओह समय के तमाम बड़हन आ चर्चित साहित्यकार लोगन से भइल शुरू हो गइल रहे। एही सिलसिला में 20.12.1957 के उहाँ का राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के एगो चिट्ठी लिखले रहनी जवना के जबाब में 01.01.1958 के लिखल दिनकर जी के चिट्ठी उहाँ के मिलल। हालांकि, ई कवनो बड़ बात ना रहे कि दिनकर जी जबाब लिखले, बड़ बात ई भइल कि ओह चिट्ठी का लिफाफा पर, जवन पता दिनकर जी लिखले रहले, ओह में उहाँ के नाँव का आगे एम0ए0 लिखि देले रहले यानी श्री विवेकी राय, अपना भूमिका में आगे लिखत बानीं कि अपना नाँव के आगे लिखल एम0ए0 देखि के हम सन्न रहि गइनी। यानी दिनकर जी के दिमाग में कहीं ई बात जरूर बइठल होई कि एगो हाईसकूल के हिन्दी अध्यापक, कम से कम एम0ए0 त होइबे करी, आ इहे शब्द उहाँ के भीतर एगो गम्भीर चोट कइलसि। कहेके जरूरत नइखे कि ई शब्द उहाँ के जिनिगी के टर्निंग प्वाइन्ट सिद्ध भइल। फेर त ओही दिन से नियमित रूप से अंगरेजी के पढ़ाई शुरू भइल आगे के पढ़ाई यानी हाईस्कूल से ले के एम.ए. तक के व्यक्तिगत परीक्षा पास करे के जे क्रम चलल ऊ 1964 में एम0ए0 कइ के खाली ना थमल। 1964 में स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अइला का बाद पी–एच.डी. के काम शुरू भइल जवन कि काशी विद्यापीठ से 1970 में पूरा भइल। विषय रहे 'स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य और ग्राम्य जीवन', यानी खाली लेखन में ना अपना थिसिस तक में, राय साहब

गंवई जीवन से अलग होत नइखन लउकत। ताजिनिगी उनुका लेखन के हर विधा में, गाँव जरूर बा। चाहे 'ऊ गँवई परिवेश होखे, खेतीबारी से लेके, पर–पंचायत, गंवई राजनीति, शादी बिआह कुछुओ काहें ना होखे, गांव हर जगह बा, आ सबसे बड़ बात कि कवनो रचना में, एक दोसरा के पुनरावृत्ति नइखें, अब ऊ लेखन चाहें हिन्दी में होखे भा भोजुपरी में। एही से हम बड़ा सोचि समझि के शायद एह आलेख के नाँव, उहेंके एगो हिन्दी निबन्ध–संग्रह के शीर्षक 'गंवई गंध गुलाब' से सीधा सीधा ले लिहनी।' एह में हमार आपन कवनो चाल्हाँकी नइखे।

डॉ. विवेकी राय, मूल रूप से त गँवई जमीन से जुड़ल, हिन्दी के लेखक, रचनाकार रहले, बाकी बीच–बीच में ऊ भोजपुरियों में लिखत रचत रहले आ अन्त ले त अतना लिखले कि, अपना समय से लेके, आजु तक के, कवनो भोजपुरी लेखक–रचनाकार से, ना कम लिखले ना कमजोर लिखले। कमजोर लेखक त ऊ कबो ना साबित भइले। हिन्दी के धुँवाधार लेखन में, चाहें ऊ जवना विधा के होखे, गंवई परिवेश आ शब्दन के सटीक प्रयोग कइले, उहँवें जब ऊ भोजपुरी में लिखले तब त गंवई माटी के सोन्ह रस गन्ध, परिवेश से लेके, भोजपुरी के ठेठ से ठेठ आ घराऊँ से घराऊँ शब्दन के अइसने ना रचा–पचा दिहले कि आजु के पढ़वइया त कतने शब्द सुनलहीं ना होइहें। कम से कम ऊ पढ़वइया जेकरा गांव से कबों कवनो सम्बन्ध ना रहल होई आ जेकरा लइकाईं में, भा बीच–बीच में गांवे, आवे जाये के संयोग जुटत होई, ऊहो एक बेर भकुआ जाई, ओह शब्दन के सुनिके, काहें कि आजु के गांवों त अब ऊ गांव नइखे रहि गइल, जवन आजु से चालिसो–पचास साल पहिले रहे। अब ओहिजो के नया पीढ़ी कहाँ अइसन ठेठ शब्दन के प्रयोग कइ पावता। आजु के गांवों पर शहर हावी हो चुकल बा, लोगन के शब्द भुला गइल बा, आधुनिकता का होड़ में, हिन्दी–अंग्रेजी का चक्की में। आ जे आदमी भोजपुरिया भा गँवई भइला का बादो आजु ले कबो गांव गइले ना होई, माने कई पीढ़ी से शहरे में रहि गइल होई, एहिजे जनम करम भइल होई, भोजपुरी का जगह खाली हिन्दिये अंग्रेजी जानत–बोलत होई, ओकरा खातिर त ई कुल्हि शब्द कवनो अजूबा से कम होइये ना सकी। एही से, विषय से तनी हटि के हम अइसना लोगन के सलाह दीहल चाहब कि अगर ओह लोग के भोजपुरी के ठेठ शब्दन के जाने के होखे, त ऊ अउर कवनो भोजपुरी साहित्यकार के पढ़े भा मति पढ़े, कम से कम दू आदिमी के जरूर पढ़ि लीही, एगो नाटककार भिखारी ठाकुर के आ दोसरका एह महान गँवई लेखक डॉ. विवेकी राय के।

डॉ. विवेकी राय के गिनती हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान आ शीर्षस्थ लेखकन में होला। इहाँ के हिन्दी में एतना किताबि रचले आ लिखले बानी, जेतना, या त बहुत कम लोग रचले–लिखले बा भा फेरु कुछुवे लोग एह संख्या के छुवले भा पार कइले होई। ई हमार अनुमान बा, अपवाद हो सकेला। हमार ई आलेख, चूंकि इहां के व्यक्तिगत जीवन पर आधारित बा, एह से हम इहाँ के हर किताबि के चर्चा ओकरा लेखन शैली, विषय–वस्तु भा ओह पर समीक्षात्मक टिप्पणी ना कइ पाइबि, आ ई, इहंवाँ संभवो नइखे, काहें कि ओतना लिखे खातिर एगो अदना सा लेख के ना, एगो पूरा के पूरा किताबि के जरूरत पड़ी, बाकी आपन बात साबित करे खातिर ओकर गिनती जरूर बता दे तानी, ताकी अगर रउआ सभे भुला गइल होईं त इयादि परि जाव। राय साहब के हिन्दी कविता संग्रह के कुल्हि किताबनि के संख्या पाँच गो बा, जवना में 'अर्गला' (1951), 'रजनीगंधा' (1964), 'यह जो है गायत्री' (1991) आ 'दीक्षा' (1997) विशेष चर्चा में रहल बा। कुल्हि हिन्दी उपन्यासन के संख्या दस गो बा, जवना में पहिलका ह 'बबूल' (1967) फेर 'पुरुष–पुराण' (1975), 'लोकऋण' (1977), 'श्वेत–पत्र' (1976), 'सोनामाटी' (1983), 'मंगल भवन' (1994), 'नमामि ग्रामम्' (1996), 'अमंगलहारी' (1998) विशेष चर्चा में रहल बा। अमंगलहारी एकमात्र उहाँ के अइसन उपन्यास ह जवन पहिले इहाँ का भोजपुरी भाषा में लिखले रहनी आ जवना के हिन्दी अनुवाद खुद (1999) में कइले रहनी। कहानी के किताबनि के कुल्हि संख्या नव गो बा जवना में 'जीवन परिधि' (1952), 'नयी कोयल' (1975), 'गंगा जहाज' (1977),'बेटे की बिक्री' (1977) आ 'कालातीत' (1982) खूब चर्चा में रहल बा। ललित निबन्धन के कुल्हि किताबनि के संख्या दस गो बा। हालांकि कुल्हि के कुल्हि चर्चा में रहल किताबि हईं स, तबो– 'फिर बैतलवा डाल पर' (1962), 'जुलूस रूका है' (1977), 'गंवई गंध गुलाब' (1980), 'मनबोध

मास्टर के डायरी' (आरम्भ 1958, प्रकाशन 1984), 'नया गाँवनामा' (1984), 'आम रास्ता नहीं है' (1988), 'जगत तपोवन सो कियो' (1995)। मनबोध मास्टर के डायरी से इहाँ का ललित निबन्धन के शुरुआत कइले रहनी आ इहे लेखन, इहाँ के ललित निबन्ध लेखन में स्थापित कइले रहे। एकरा बाद एगो नजर डालि लेत बानी इहाँ के खालिस निबन्ध, शोध समीक्षा आ अन्य तरह के किताबन पर, जवना के कुल्हि संख्या लगभग सोरह गो बा जवना में इहाँ के पी–एच.डी. वाला शोध ग्रन्थ– 'स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य और ग्राम्य जीवन' शामिल बा, जवन पूरा त भइल रहे 1970 में बाकी जवना के प्रकाशन 1974 में भइल रहे। एकरा अलावा प्रमुख किताबि बाड़ी स– 'त्रिधारा' (1958), 'गांवों की दुनियां' (1957), 'किसानों का देश' (1957), 'अध्ययन आलोक' (1964) से लेके 'गुरु गृह गयऊ पढ़न रघुराई' (1990) आ 'अप्रतिम कथाकार – नरेन्द्र कोहली' आदि प्रमुख बाड़ी स। एकरा अलावे इहा'त्रिधारा' (1958), का ओरि से संपादित किताबि तीनि गो बाड़ी स– 'वन्देमातरम्' (1981), 'पवहारी बाबा' (1982) आ 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – रचना और दृष्टि' (1988)।

सबसे यादगार बाति जवना के चर्चा बिना इहाँ के कृतित्व के चर्चा परूरा ना हो सके, ऊ ई कि इहां के कई गो कहानियन के उर्दू में अनुवाद हो चुकल बा, जवननि के अनुवादक बाड़े–मुहम्मद इसराइल अंसारी (कलकत्ता) मूल निवासी बलिया, उ0प्र0। कुछु कहानियन के अनुवाद पंजाबी भाषा में, चंडीगढ़ के श्री फूलचन्द मानव कइले बाड़े आ कुछु कहानियन के मराठी भाषा में अनुवाद सतारा (महाराष्ट्र) के श्री प्रकाश बाबू कांबले कइले बाड़े। एह कड़ी में, एगो सबसे बड़ काम ई भइल बा कि इहाँ के एगो पूरा उपन्यास 'श्वेत–पत्र' के अनुवाद, उड़िया भाषा में कटक के रहे वाली श्रीमती शैलबाला दास कान्तावनियां कइले बाड़ी। इहाँ के सम्पूर्ण व्यक्तित्व–कृतित्व पर इहाँ के जीवने काल में, करीब सातगो समीक्षात्मक किताबि आ चुकल बाड़ी स, जवन इहाँ के लेखक जीवन के विराटता के दर्शन करावे में बहुत हद तक मददगार बाड़ी स। सम्मान–पुरस्कार के संख्या बीस गो से ऊपर बा, जवना में सबसे बड़ सम्मान ई बा कि इहाँ के जियते जिनिगी, गाजीपुर नगर पालिका का ओरि से, गाजीपुर के ऊ इलाका बड़ीबाग, जहाँ इहाँ के निवास बा, ओहिजा के सड़क के नाँव डॉ0 विवेकी राय मार्ग (1983) राखि के, इहाँ के व्यक्तित्व के स्थाई सम्मान प्रदान कइ देले रहे। राय साहब का लेखन विधा पर अब तक करीब पचास के आस–पास लोग, शोध कइ चुकल बा आ डाक्टरेट के डिग्री ले चुकल बा। सन् 1999 में प्रकाशित इहाँ पर किताबि, 'अर्धशती–सृजन यात्रा' में आंजनेय जी छत्तीस गो अइसन शोधार्थी लोगन के नाँव त गिनवा चुकल बानी, जब इहाँ के अपना जिनिगी के पचहरत्तरवां बरिस में प्रवेश कइले रहनी। एकरा बाद से आजु तक ई संख्या पचास के पार त कइये चुकल होई, अइसन हमार अनुमान बा।

विवेकी राय जी जेतना हिन्दी में कलम चलवले बानीं ओतना भोजपुरी में त नइखीं चलवले बाकी तबो जेतना चलवले बानी ओकर मोल आजु तक के कवनो भोजपुरी साहित्यकार से कमतर ना आँकल जा सके। सन् 1968 में, जब इहाँ के पहिला भोजपुरी ललित निबन्ध संग्रह, 'के कहल चुनरी रंगा ल' प्रकाशित होके, हमनी का बीच आवता। पूरा के पूरा गंवई रस गंध से भरल गुलाब लेखा गमकत। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय जइसन विद्वान साहित्यकार जवना के पढ़ला के बाद, अपना मशहूर कृति 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' में लिखत बानीं कि – "एह निबंध संग्रह का भोजपुरी के पहिला ललित निबन्ध संग्रह होखे के गौरव हासिल बा।" उहाँ के आगे लिखत बानी कि– "हिन्दी के निबन्ध लेखन क्षेत्र में, जवन स्थान पं0 बालकृष्ण भट्ट के हासिल भइल बा, ऊहे स्थान भोजपुरी में डॉ. विवेकी राय के बा।" (पृ.सं.–364)। डॉ0 रामदरस मिश्र त इहाँ के पूरा के पूरा एगो किसान लेखक के रूप में याद कइले बाड़ें। अब रउआ सभे अन्दाज लगा सकींले कि ई एगो, एकही निबन्ध संग्रह उहाँ के भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में, केतना ऊँच आसन पर बइठा दिलसि।

एकरा बहुत दिन बाद, इहाँ के कहानी संग्रह 1981 में छपि के आइल "ओझइती"। जवना के हर कहानी, कवनो भोजपुरिया गाँव के हू–ब–हू चित्र उकेरत मिलि जाई। एकर एगो कहानी "गोहरडर" त जइसे पूरा के पूरा भारत देश (चाहें ऊ आजुवे के गांव काहें ना होखो) के दशा, दिशा, मानसिकता, राजनीति कुल्हि के चित्र खड़ा करत बिया। एकरा बाद आइल एगो काव्य–संग्रह "जनता के पोखरा" नाँव से 1984 में। एकरो में गाँव कहीं छूटत नइखे लउकत। 1992 में,

इहाँ के तीनि गो किताबि भोजपुरी में प्रकाशित होके अइली स। एगो समीक्षा विधा के किताबी, नाँव रहे "भोजपुरी कथा साहित्य के विकास"। दोसरकी रहे एगो विविध विधा के किताबि "गंगा यमुना सरस्वती" जवना में कहानी, ललित निबन्ध आ रिपोर्ताज के स्वाद मिली आ तिसरकी किताबि रहे, एगो फीचर संग्रह जवना के नाँव रहे "राम झरोखा बइठि के"। भोजपुरी उपन्यास "अमंगलहारी" छपल। जवना के बारे में हम पहिलहूँ चर्चा कइ चुकल बानी।

"भोजपुरी निबन्ध निकुंज" नाँव के भोजपुरी निबन्ध संग्रह के सम्पादन, जवन कि 1977 में, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना से छपि के आइल। एकरा में दूगो संपादक के नाँव छपल बा, जवना में पहिलका त इहें के नाँव बा यानी डॉ0 विवेकी राय आ दुसरका नाँव बा श्री सिपाही सिंह श्रीमन्त के, बाकी मुख्य भूमिका जवन इहाँ के लिखले बानी, जवन कि पूरा बारह पृष्ठ के बा, ओकरा में हिन्दी निबन्ध के उत्पत्ति से लेके अंग्रेजी, संस्कृत के चर्चा करत अन्त में भोजपुरी निबन्ध के दशा–दिशा के जवन रूप प्रस्तुत कइले बानी, हमरा हिसाब से ऊ सउँसे निबन्ध शास्त्र के एगो समीक्षात्मक विश्लेषण के कम नइखे।

अन्त में बस एतना, कि डॉ0 विवेकी राय एगो निष्ठावान, विद्याव्रती, एकान्तप्रिय आ सम्पूर्ण साहित्य साधक रहनी। इहाँ का स्वभाव से, सभाभीरु, यत्राभीरु, प्रचार–प्रसार से सर्वथा दूर रहे वाला, युक्ति उपाय से उदासीन, चाटुकारिता के व्यापार–व्यवहार से पूरा–पूरा अनजान आ धर्मभीरु ई लेखक खाली अपना साधना के फल के विश्वासी रहल। होश सम्हरला से लेके अन्त–अन्त तक अपना घर–गृहस्थी के जिम्मेवारी के बोझा से दबल–दबल आपन लेखन कार्य चलावत रहे खातिर हमेशा विवश रहल। इनिकर आधा जिनिगी अपना छोटहन, संचार साधनहीन, विकासविहीन, धुर देहाती गाँव में, एगो स्कूल मास्टर आ खाँटी किसान का रूप में बीतल जवना के छाप इनिका लेखपन में अन्त–अन्त तक छूटत रहल। बाद के जिनिगी में, एगो शहर में जाये के मोका मिलबो कइल, त संयोग से ऊ शहर पूर्वी उत्तर प्रदेश के अति पिछड़ा शहर निकलल, जवन इहें के एह जिला के मुख्यालय पर रहल यानी खुद गाजीपुर शहर।

एह लेखक के संबलहीन जीवन यात्रा से ई प्रत्यक्ष प्रमाणित हो रहल बा कि, स्थान–बल, परिवार–बल, परिवेश–बल, पद–बल, परिचय–बल, सहयोग–बल, राजनीतिक–बल, सहधर्मी लेखक के दल भा खेमा के बल आ एह तरह के लेखन के काम में कवनो तरह के दक्षिणा–बल के सौभाग्य इनिका ना मिलल। अगर कुछु मिलल त निदारुण उपेक्षा, जवना का बारे में, ई लेखक बहुत उदारता से ई संकारत लउकत बा, कि एही सब उपेक्षा आ ओकरा से निरन्तर मिलत अन्तःप्रेरणा के अक्षय शक्ति से उनुका लेखन के अनन्त–अनन्त बल, सदा सर्वदा मिलत रहल। एह विवेकी आस्थावान, निस्पृह कर्मयोगी के सर्जन यज्ञ भारतीय जनजीवन के योग–क्षेम चाहें लोकमंगल के उद्देश्य से, घमण्डहीन भाव से, बिना कवनो विराम के अनवरत चलत रहल। अपना धरती से ऊर्जा प्राप्त करत उनुकर गंभीर, सरल–सहज, मौलिक आ विविध विधा सब के मानक कृति कुल्हि, एक एक क के प्रकाश में आवत चलि गइली स। धरती राग में लपिटाइल इनिकर अनवरत साधना आ नितान्त एकान्ते निष्ठा के ई फल भइल कि अतना–अतना अलग–अलग विधा आ क्षेत्र सब में एह लेखक के अवदान, मूल्यवान आ ऐतिहासिक भइल।

हमरा गर्व बा कि हिन्दी भोजपुरी भाषा के अइसन विद्वान साहित्यकार, हमरा पहिला भोजपुरी गीत संग्रह "माटी के दीया" के भूमिका लिखले बा, जवन कि 1977 में प्रकाशित भइल रहे। सन् 1988 में इहाँ का स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर से अवकाश ग्रहण कइनी आ तब से लेके अपना अन्तिम समय तक ओही गाजीपुर के अपना 'बड़ी–बाग' वाला निवास पर अनवरत साहित्य–साधनारत रहनीं। 22 नवम्बर 2016 के करीब 92 बरिस दू दिन के जीवन, एह धरती पर बितवला का बाद, हमनी सभ के छोड़ि के, एह असार संसार से विदा ले लिहनी। हालांकि इहाँ के आपन अन्तिम सांस बाबा भोलेनाथ के नगरी काशी में लिहनी, जेकरा बारे में ई प्रसिद्ध हऽ कि मानव जीवन खातिर ई मोक्षदायिनी नगरी ह। बाकी तसल्ली बा कि ई "गवंई गंध के गुलाब" आपन सुगन्ध फइलावत रहे खातिर आजुओ अक्षर बा....।

– 28/4, भैरवदत्ता लेन, नन्दीबगान, सलकिया, हावड़ा–711106 ●●

लोकतन्त्र अझुराइल जाता

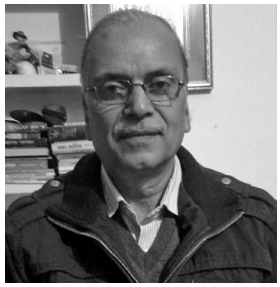

हीरालाल 'हीरा'

लोकतन्त्र अझुराइल जाता

देस के बिगड़ल हाल न पूछीं
लोकतन्त्र के चाल न पूछीं
जतने ई सझुरावल जाता
ओतने ई अझुराइल जाता ।

बेबस बाटे नेह के डोरी
सभ खींचत बा अपने ओरी
रोज नया अझुरा आ झगरा
दिन पर दिन उपराइल जाता ।

नेता सब गलथेथ करत बा
ओकरे लेसले, नगर जरत बा
आगि बुतावे में, अब जनता-
पाँकी में सउनाइल जाता ।

कउवा लेके कान पराइल
सोर भइल, जनता बटुराइल
आगा-पाछा बिना समुझले
देखीं सभ अन्हुआइल जाता ।

झूठे आगि लगावल जाता
सभका के बहकावल जाता
जाड़ा-पाला सितलहरी में
रजधानी अगिआइल जाता ।

कवनो नेता आगि लगावे
फिर कवनो कोहराम मचावे
दूनो के पिछलगुआ देखीं
अपुसे में तरनाइल जाता ।

एक्के घर में भाई-भाई
पाटी खातिर करे लड़ाई
कतने शकुनी लागल बाड़ें
सगरो जहर घोराइल जाता ।

देस से ऊपर जाति-धरम बा
माने वाला लोग अधम बा
राजनीति के बिछिली बाटे
सब ओमे बिछिलाइल जाता ।

अपना मन के बीया-छीटी
ज्ञान के मंदिर-इनवरसीटी
कहाँ ज्ञान के फसल कटाइत
घास-फूस बढ़िआइल जाता ।

आपन-आपन परिभाषा बा
जवने लहे, उहे भाषा बा
सुन के रोज कुकुरहो, बाबू
दुनों कान घवदाइल जाता ।
लोकतन्त्र अझुराइल जाता ।

❑ नई बस्ती, रामपुर उदयभान, बलिया

सुनऽ ए संघतिया

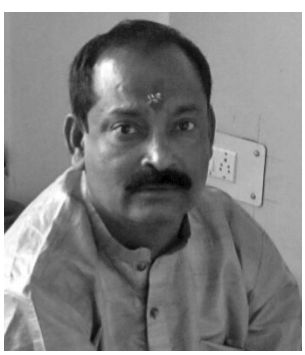

गुरविन्द्र सिंह

सगरी उलटि गइल रीतिया
सुनऽ ए संघतिया
कहले ओराइ नाहीं बतिया
सुनऽ ए संघतिया

खेत खरिहानी में छवलसि उदासी
भइये प' भाई बा पिजवत गड़ाँसी
जहर घोराइल बाटे मतिया
सुनऽ ए संघतिया

तनिको बुझाय ना तीज तिउहरवा
लागे मसान अस घरवो दुअरवा
दिनवे में लागे अधि रतिया
सुनऽ ए संघतिया

चलऽ ताटे नन्हको ले देहिंया दरेर के
नीको बात कहला प' ताके गुरेर के
कहवाँ हेराइल पिरितिया
सुनऽ ए संघतिया।

❑ आर० के० पुरम, नई दिल्ली

कमलेश राय
के
पाँच गीत

(एक) सूरुज किरिन जगाईं

हम गीत के बहाने से
पीर गुनगुनाईं
खन में दिया जराईं
खन में दिया बुताईं

जब-जब ढरेला कवनों
कातर नयन से पानी
अचके में गीत छलके
बनके कबीर-बानी
हम तऽ सबद-सबद में
मन कऽ व्यथा सुनाई।

पलकन के पांखुरी पर
सपना हजार लेके
कल कल बहत नदी से
जिनगी उधार लेके
हम त हिया-हिया में
असरा नया जगाईं ।

कारी रइनि के छांहे
दुबकल अंजोर खातिर
हर गांव घर गली
हर आंगन में भोर खातिर
हम त हरफ-हरफ में
सूरुज किरिन जोगाईं ।

(दू) पूछे आज तिरंगा

लेके लोर आँखि में अपना
पूछे आज तिरंगा
हमके हाथ में लेके
काहें देस में होता दंगा ।

नाहीं हिन्दू-मुसलमान हम
नाहीं सिख-ईसाई
सबसे बा भाईचारा
सबही हमार हऽ भाई
जब केहू कऽ चीर खिंचाला
हमहीं होईं नंगा ।

एक रंग आजाद भगत
छूसरा रंग असफाकुल्ला
तीसर रंग सबही हमार
ना केहू पंडित-मुल्ला
सबकर हवे हिमालय ओतने
जमुना ओतने गंगा ।

जब कवनो सुहाग उजरेला
हमहीं माथ धुनीलां
छाती पर पाथर धइके
हमहीं चित्कार सुनीलां

दुनिया लुटे केहू कऽ हमहीं
होईं निपट निहंगा ।

पांखि कबूतर कऽ टूटे तऽ
हमहीं कांपी-सिहरीं
टपके लहू माथ से हमरे
हमहीं टूटी-बिखरीं
कवनों जतन न घाव हिया कऽ
हमरा होला चंगा ।

बेर-बेर सबका से एतने
मोर अरज बिनती बा
अइसन क्रूर-करम से थर-थर
कांपि रहल धरती बा
अब तऽ पढ़ऽ नेह कऽ पाती
छोड़ऽ झगरा पंगा ।

(तीन) परनवां की नाईं रखिहऽ

ए आजादी के परनवां की नाईं रखिहऽ
एके सुघर सपनवां की नाईं रखिहऽ ।

नील गगन में केतनों चमकी सुरुज चन्दा तारा
एकरा बिना कबों ना होई घर-आंगन उजियारा
एके अंचरे दियनवा की नाईं रखिहऽ ।

एकरा बिना बयार बसंती लागी जेठ तवारी
हरियर पात झरी पियरा के दहकी फूल कियारी
एके रिमझिम सवनवां की नाईं रखिहऽ ।

आजादी की खातिर जे हंसिके दीहल कुरबानी
कफन बान्हि के माथे अपना बनल वीर बलिदानी
ओकर सुधिया सुदिनवां की नाई रखिहऽ ।

ना केहू कऽ नजर लगे ना लागे जादू टोना
आजादी के माथे हरदम चमकत रहे डिठौना
एपर नेहिया ललनवां की नाईं रखिहऽ ।

(चार) फागुन आइल का

अचके नैन हंसे मन थिरके
फागुन आइल का ।
पोरे-पोरे सगुन अंग फरके
फागुन आइल का ।

सोना जड़ल बिहान
दुपहरी हीरा जड़ल लगे
सेनुर साजल सांझि
राति चानी में मढ़ल जले
घर-घर चान अंजोरिया छिरके
फागुन आइल का ।

फूल कली कचनार
ताल संग पुरइन पात हँसे
लेके दरपन हाथ
कहीं केहूं बेबात हंसे
कंगना कहीं अनासे खनके
फागुन आइल का ।

बइठ मुड़ेर सगुन पंछी
जाने का उचरि गइल
फिर कुछ पाछिल बात
हिया के अंगने उतरि गइल
सुधियन क अमराई मंहके
फागुन आइल का ।

(पाँच) मनवे आदि अनन्त

मन के भीतर फागुन जागे
मन में उठे तरंग
मन में फूटे प्रेम-पांखुरी
मन बूड़े खुषरंग ।

मनवे हऽ मानस तुलसी कऽ
मनवे बैन फकीरा
मनवे नाचे मीरा बनिके
मनवे बने कबीरा
मनवे बनि रैदास उतारे
काठ-कठौती गंग ।

मनवे सगरी धरती नापे
मनवे नापे अम्बर
मनवे दर्शन, ज्ञान बुद्ध कऽ
मनवे बने दिगम्बर
मन से बहरा संत न साधू
हाजी पीर मलंग ।

258/ई-1 सहादतपुरा, मऊनाथ भंजन-मऊ,
उ.प्र. पिन-275101

अस्सी-नब्बे का दशक के कुछ चर्चित कहानी

खण्ड - दू

- बाजलि बैरिन रे बँसुरिया/गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'
- सतवन्ती/रामनाथ पाण्डेय
- झिरहिरी/विवेकी राय
- सुखिया/उमाकान्त वर्मा
- देवाल/सुधा वर्मा
- दरबा/वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय
- मिरिगजल/कन्हैया सिंह 'सदय'
- पोसुआ/अशोक द्विवेदी
- चूल्हा सुनुग गइल रहे/भगवती प्रसाद द्विवेदी
- भैरोनाथ के अखबार/विनय बिहारी सिंह

बाजलि बैरिन रे बँसुरिया

गिरिजाशंकर राय
'गिरिजेश'

पाकिस्तान के मारि के हमार सिपाही ओकर छक्का छोड़ा दिहलन सऽ। चीन के कुल्हि चल्हाँकी भुला गइल। मिठाई खाइब.... हो .... हो। ईहें हई नगरी, जहाँ बाड़ी बनरी, लइकन क धइ–धइ खींचेली टँगरी। एगो बीड़ी बाबू साहेब.... ना सिगरेट पियला से करेजा जरेला। हो... हो... बेईमान.... हमरा के लूटि के कंगाल बना दिहलन सऽ। राधा तोहरा पर हम खुनसाइल ना रहलीं। हमके माफ क द राधा.... तोहरा खातिर जिनगी एही तरे बिता देइब। सेवक आ चाकर हम हईं राधा रानी के... बम बम भोले.... या अली तोड़ पाकिस्तान की नली। अयूब खाँ क एगो दाल ना गली। बम.... बम.... भोले..... हा.... ही..... ही.....–

बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर के ध्यान,
केथुवा चढ़ल सिकसंकर आवे, केथु चढल भगवान,
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया.....

हा.... हा.... हा.... हो..... हो..... संसार में सभी लोग चोर हैं.... आई मीन आल आर थीफ सम आर स्माल एण्ड सम आर बिग..... हा.... हा.... माई डियर मास्टर साहेब..... गुडमार्निंग।

हम चकचिहा गइलीं। लइकन के झुण्ड लिहले ऊ पागल हमरा कीहें आके बइठ गइल। दाँत का पीरा से परेसान रहलीं। कवनों खोढ़रा ना हमरा बुद्धि क दाँत जामत रहे एह बुढ़ौती में। सरकार रबी अभियान मनावे के आदेस देले रहे। एही में गाँव–गाँव घूमि के लइकन से खेती करावे के रहे। पचोखर में सिकुमार का दुआरे बइठल रहलीं। गाँव में केहू का दुआरे साइति सँजोगे कवनो मास्टर चलि जालें त ओनकर खूब आदर होला, ओहू में जब लइका राम कवनो गलती में पकड़ा जासु त का पूछे के। सिकुमार ओही गलती में पकड़ाइल रहलें। सब खेत पर काम करे गइल रहे, ऊ रेडियो पर फिल्मी गाना सुनत रहलन। महतारी सुनलसि त गरम हलुआ भेजलसि कि मास्टर बबुआ के कम मरिहन। बाप पान के बीड़ा थम्हवलन। अबहीं खाये के तइयारी करत रहलीं तबले पागल आके बइठ गइल। आसनाई में एकर ई दसा हो गइल। एकर दसा देखत बानीं– ईहे न ईसर क मरजी हऽ कमाला केहू खाला केहू। इनकरा कमाई पर भाई रंग लेत बाड़े स आ ई गली–गली क बहार लूटत बाड़न। ना त पचोखर में एक दिन मदन साह क तूती बोलति रहे।

"ई राधा के ह?" हम टोकलीं।

"पानी पी लेईं त कुल्हि कहत बानीं।"

"पानी पी के हम अहथिर भइलीं त सिकुमार क बाबू कहे लगलन।"

"ना..... ना..... ना..... अइसन मति करीं.... हम मेहरारू हईं.... रउरा के छोड़ि के हमार एह संसार में के बा? रउरा खातिर घर छोड़लीं... माई–बाप छोड़लीं। अब हम कहाँ जाइब सरग से नरक में हमें फेनु मति ढकेली। हमके जेतना चाहीं मारि लीं बाकिर हमके छोड़ के जाईं मति। हम अपना कहला–सुनल क माफी माँगत बानीं। राधा, मरदन के गोड़ छानि लिहली। आँखि क लोर गंगा–जमुना की धारा नीयर मदन क गोड़ बाधे लागल।

मदन पत्थर नीयर खड़ा रहलन। उनुका बुझाय कि अब ढेर देरी ले खिनुसाइल ना रहि सकेलन बाकिर बेटी क सून माँगि, आँखि में लोर भरलि सूरति नाचि जा ....ना ....ना बाप के कइल बेटी ना भोगी.... बाप अपना प्यार के बलिदान क देई। उनकरा ना बुझाव कि राधा के सनेहि के कइसे झटकि के चलि जाईं। एक ओर भरल–पुरहर परिवार दूसरी ओरि राधा क लोर भरलि आँखि। राधा के लेके कइसे जा सकेलन। एगो मेहरारू रहते ई दूसर अनरथ? प्रेम उनुकरा आँखि पर पट्टी बान्हि देले रहल। .....पतोखर क बच्चा–बच्चा उनुकरा पर थूके लागी। बड़की लड़की सयान भइलि बा। ओकर हाथ पीयर करे के बा। के करी बिआह? सब कही– एकर बाप कुजाति ह.... पतुरिया रखले ह। ई बात जेवन कुल्हि आज बा ऊ राधा क दिहल ह बाकिर ऊ त कुल्हि छोड़ि के जात बानीं खाली अपना मेहनति क कीमत ले ले बानीं। राधा क जिनगी कटि सकेले। मदन क आँखि पर ऊ दिन आके अटकल जेवना घरी गाँव से एगो लोटा आ कमरा ले के, झरिया टीसन पर उतरल रहलन। ओघरी मदन क गोड़ छनले राधा क आँखि क लोर बीतल दिन क परछाहीं हो गइल।

झरिया में राधा बाई क चललि रहे। कोयलरी क कुल्हि मनेजर राधा बाई के मुँह माँगल धन देसुँ। आजु धनबाद.... काल्हु कतरास गढ़.... परसों सिन्दरी.... राधा क रोज परोगराम बनले रहे। ओह दिन कोयलरी में नाचे गइल रहली। नाचि खूब जमलि। नोट से राधा तोपा गइली। खूस होके एगो कजरी कढ़वली–

बाजलि बैरिनि हो बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर के ध्यान,
कथुवा चढ़ल सिकसंकर आवें, केथुआ चढल भगवान,
केकर जियरा हुलसल लागे, केकर जिया मसान।
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया.....

गाना खतम होत–होत कोयलरी क एगो मनेजर उठलन आ कहे लगलन– "राधा बाई के गाना सुनि के हमार कोयलरी क मिठाई वाला मदन साहु एतना खुस बाटे कि आजु दिन भर क कमाई राधा बाई के भेंट करि रहल बा। एकरा अलावे ई एक महीना तक रोज क कमाई राधा बाई के देबे के निसचय कइले बा। गड़.... गड़.... गड़ ताली बजली सऽ अवाजि उठली स.... साबस जवान... बाड़े तें कलाप्रेमी.... रण्डी का नाचि के सुरच्छा कोष बना लिहले। बाह रे राधा बाई.... एक नजर में कमाल करतारू।

राधा बाई सोचली कि एगो बेवकूफ फँसल। बाकिर ओह राति मदन का नीनि ना परलि। पलकि पर राधा खुमारी नीयर छवले रहली। सोचसु त बुझा कि राधा क कुल्हि हाव–भाव उनहीं खातिर रहल ह। ऊ मुसिकयाइल, ऊ दूध क धोवल दाँत.... राधा इनरासन क परी ले कम मदन के ना बुझासु। रोज राधा का घरे जाये लगलन। दिनभर क कमाई हाथ पर ध के चलि आवसु। राधा बड़ा हरान भइली। कवनों कहानी नीयर उनकर ई बुझा। भला ई कवन लति ह कि आवत बा आ पइसा थम्हा के चलि जात बा... ना गाना सुने के न कुछ। विचित्र अदिमी बा। पूरा बेवकूफ ई बा। पहिले त राधा बेवकूफ पर टारि दिहली बाकिर एही तरे पनरह दिन बीतल त मन क दया उभरि आइल। ए राधा तोहके केहू के दिन भर के मजूरी सेतिहाँ लिहला के का अधिकार? का अधिकार? राधा कान मूँदि लिहली। सोमार क दिन रहे। आजु घरे केहू ना रहे। छोटकी बहिन गीता एगो कोयलरी में गोमो नाचे गइल रहली। अम्मा ओकरा साथे गइल रहे। बुढ़वा बाबा रहलन ऊ बजारे गइल रहलन। राधा के दिन भर उदासी घेरले रहे। अकेल बितावे के परेला त दिन पहाड़ हो जाला। मन क उदासी तोरे खातिर उनकी ओठ पर गीत फूटल–

बैल चढ़ल सिकसंकर आवें, गरुड़ चढल भगवान,
पिया संग जियरा हुलसल लागे, पिया बिन जिया मसान।
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया.....

राधा चिहुँकली....केहू क गोड़ क आहट पाछे पवली। देखली मदन हाथ बढ़वले खड़ा रहलन। हथोरी पर दिन भर क कमाई हँसति रहे।

"ले जा रुपया हम ना लेइब। हम खटि के खाये जानींला ई हराम क रुपया हम ना लेइब। हमरा के बेवकूफ बनावे के अच्छा उपाय सोचले बाड़ऽ।"

"गलत समुझत बानीं.... ई हराम क ना ह.... ई सुघराई के कीमत है। .... एही बहाने कम से कम एक बेर देखि त लेत बानीं। ई बहुत बा.... ई पूजा क फूल भगवती का मंदिर में चढ़ावत आवत बानीं बड़ा साधि से आईं ला" – मदन मिनती कइलन।

"जा... जा... ई कुल्हि बेवकूफी हम ना करबि। अब मत कबों अइह। घरे मेहरारू लइका खइला बिना मरत होइहन एहिजा दिन के कमाई। रण्डी के लूटावत बाड़े... जा बाबू साहेब... जा मरद–मेहरारू क नाता बड़ा पवित्र होखेला ओके एहतरे ना तोरल जाला।" राधा घर में चलि गइली। ना जाने काहें राधा का अपना जवार की ओर के लोगन के मोहि लागे ले। अम्मा एह काम में ढीठ परेले। कहेले–

मोह कइसन बेटी! पतुरिया केहू क न जोरू न तबलची केहू क बाप। बाकिर राधा के ना जानी काहें ई कुल्हि ठीक ना लागे। अम्मा का सोझा कुछ ना बोलति रहली। आजु बड़ा नीक मोका मिलल रहे। घर में जाके केवाड़ी बन क लिहली। मदन भारी मन से लवटि गइलन।

साँझि क बेरा राधा क मन अउरी भारी हो गइल। सुनले रहली बिहार टाकीज में भोजपुरी खेल लागल बा। सोचली चलीं देखि आईं तबले त दस बजे वाली गाड़ी से अम्मा चलि अइहन। पहिर–ओढ़ि के तइयार होके जइसहीं घर से निकलल चहली तब ले कोयलरी क मनेजर सोझा खड़ा हो गइलन।

"बाबू साहेब एह घरी त फुरसत नइखे फिर कबों आइब" – राधा कहली।

"राधा हम नाच देखे नइखीं आइल। हम बहुत जरूरी बात तोहसे कहल चाहत बानीं। मदन मिठाई वाला आज सवेरे से बेहोस बा। जब ऊ थोड़ी देर खातिर होस में आवत बा त तहार नाम लेके गीत गावे के विनती करे लागत बा। तूँ जल्दी चलि के ओकर जान बचा लऽ। हम तोहके मुँह माँगल ईनाम देइब।" मनेजर साहब क चेहरा पर बदहवासी नाचत रहे।

राधा क जीव धक से हो गइल... एतना मदन उनुकरा के चाहत बाड़न। राधा ई कब्बो ना सोचले रहली। अब ले जानत रहली बेसवा से परेम कम, खेले अधिक लोग जानेलन। एकरा खातिर न कवनों दुख न सुख.... राधा कुछ कहि ना सकलीं। अइसन बुझा कि करेजा के केहू खींचत बा.... मदन क सबेरे वाला चेहरा आँखि पर नाचल। चूप–चाप आके मोटर में बइठ गइली।

मजूरन क भीड़ि लागलि रहे, हाथे–मुँहे करिखा पोतले। मनेजर आ राधा के गाड़ी से उतरते सब हटि के रहता दिहल। एगो छोटीमुकी कोठरी में मदन सुतल रहलन। ओहिजे बगल में कुरसी पर कोयलरी क डाक्टर बइठल रहलन। डाक्टर बतवलन कि रोगी के कवनों बाति क अइसन सदमा पहुँचल बा जेवना से ओकर दिमाग पर असर पड़ल बा। जदि ठीक से इलाज ना भइल त हो सकेला ऊ पागल हो जाय.... राधा....राधा.... गीत ऊ चिचिआत बा। राधा सोकता हो गइली। ई ना जानति रहली कि एह गरीब आदिमी का मन में एतना उनुकरा खातिर प्यार बा। करेजा मिमोरा उठल।

मदन बड़बड़इलन.... राधा....राधा.... ऊ गीतिया सुना द... राधा। राधा बेहोस मदन की ओर देखली.... लिलार पर हाथ धइली तावा नीयर जरत रहे। धीरे से गोहरवली... मदन... मदन.... हम तोहार राधा गोहरावत बानीं, बोल..... बोल.....। रोगी आँखि बन कइले सुतल रहे। राधा का लाज से गाल लाल हो उठलन स। लिलार पर पसीना चुहचुहा आइल। कुरसी पास में खींच के ले गइली... कान कीहें मुँह ले जाके धीरे से कढ़वली–

के रामा जेंवे सोने क थारी, के खा मगहीं पान,
पियवा जेंवे सोने क थारी, धनिया कचरे पान,
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया, छूटल...।

गीत जादू नीयर असर कइलस। मदन क आँखि खुललि। राधा के टुकुर–टुकुर देखे लगलन... फेनु कुछ खियाल पारि के चकचिया गइलन "तूँ.... राधा....।" राधा चुप करवली– "बोलीं मत, हम राउर राधा हईं आपके जवन कुछ कहले रहलीं ओहके माफ करीं.... आप रोज हमरा कीहाँ आइल करबि" – राधा क आँखि लोर में ना जाने काहें डूबि गइली स।

"राधा!" मदन राधा क हाथ ध लिहलन 'राधा' हम तोहरा बिना जी ना सकीं। ई साँच बा कि हमरा मेहरारू लइका कुल्हि बा बाकिर तोहरा के छोड़ि हमरा ओंठन के मुस्कुराहट केहू ना दे सके.... दिनभर क थकावट केहू ना हर सबके.... हम गरीब बानी बाकिर मन से ना.... देखिहऽ जइसे जिअवलू ओइसे निबहिहऽ। मदन का आँखि का लोर खरकि के गाल पर आ गइल। ई सब बात–चीत सुनि के डाक्टर, मनेजर साहब का साथे भीतर अइलन। मदन क नाड़ी देख के डाक्टर साहेब कहलन– अब कवनो खतरा क डर नइखे।"

मदन त नीक हो गइलन बाकिर राधा उनुकरा प्यार में बेमार हो गइली। दिन–राति क गाड़ी अपना गति पर रहे। दूनों एक–दूसरा का पँजरा अइसन आ गइलन कि एगो का बिना दुसरका क जिनगी बेकार रहे। अम्मा से जब राधा मदन से बिआह करे क बाति कहलस त खिनिस से ऊ लाल हो गइली– "सादी त हमनी क एगो मरद से होले.... ऊ मरद ह रुपया.... दूसर कवनों मरद पतुरिया क बाँहिं ना थाम्हि सके। एही से हमनी का सदा सुहागिन हईं जा। तूँ छोकरी बाडू। तूँ अबहीं का जनबू की कइसन धोखा ई समाज आ ई मरद हमनी के देलन स।"

बाकिर राधा अपना कहला पर टस से मस ना भइली। कमरा में आके उदासी तोरे खातिर रेडियो पर हाथ गइल त गीत क आखिरी लाइन कमरा में गूँज गइल–

आली रे मोरे नयनन बानि परी मोरे नयनन बानि परी
मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कहे बिगरी
मोरे नयनन बानि परी।

राधा रेडियो बन्द क दिहली। आँखि गंगा–जमुना हो गइली स। ओही दिन राधा मन में निसचय कइली–

"मदन क संग ना छूटी।" राति के मदन का घरे चलि गइली। नाँवें बंक में पचास हजार रुपया रहे। जिनिगी क नाव खेवे खातिर काफी रहे। अम्मा सुनलसि त राधा का नाँव पर थूक के गोड़ से दरि दिहलसि।

झरिया में मदन लाल क लकड़ी क गोला मसहूर हो गइल। राधा त उनका के मिलबे कइली साथे एगो मोट संपति उनुकरा के मिलि गइल जेवन उनुकर गरीबी तोपि दिहलसि। पचोखर में हवेली उठि गइल। धूरि लपेटले जवन लइका उनुकर घूमें स ऊ चिकन–चाकन लउके लगलन स। जवना घरी कमा के मदन पचोखर में गोड़ धइलन लोग माला फूल से उनुकरा के लादि दिहल। गाँव क बड़कवा लोग उनकरा धन का आगे आँखि मूँदि ले। उमा साहु अँकवार दिहलन। गंगा साहू पीठि ठोकलन। मुनीर मियाँ जयहिन्द कहलन। लाखन क कारबार एह से गाँव में तूती बोले लागलि। मदन राधा वाली बात के मन में रखलन। केहू से ना बतवलन न ओके संगे ले अइलन। बाकिर दुसमन जे रहे ऊ दाँव खोजे। दूसरी बेर झरिया से जब गाँवे अइलन ओकरा ले पहिलहीं एगो गाँव के आदिमी झरिया कमात रहे ऊ आके कुल्हि बाति कहि देले रहे। बिरादरी क कान खड़ा हो गइल काहें से कि एगो मोट आसामी भेंटाइल रहे। कन्हई मास्टर मोंछि पर हाथ फेरलन– अब बच्चू पकड़इलन। लइकी सयान भइल रहे। भाई मदन के समुझवलन स भइया! ई का कइलऽ ह.... बबुनी क बिआह कइसे होई? बिरादरी कुजाति निकाले के सोचति बा.... आ मदन साहू का आँखि का सोझ फूल नीयर बेटी माला क लोर से डूबल चेहरा नाचि गइल। मदन साहू के आपन इज्जति धूरि में मिलति लउके लागलि। प्रेम क भूत उतरि गइल। समाज का आगे घुटना टेके के परल। लोग के समुझवलन– पंच बिसवास करो हम अइसन काम नइखीं कइले... ई झूठ हऽ... हमरा माला क बिआह होखे देईं जा। बाकिर पंच ना मानल निरनय भइल– अगर तूँ नइख कइले त सफाई खातिर गाँव पर आकें कारबार करऽ। झरिया छोड़ द अब। मदन कपार पीटि लिहलन।

मदन साहु बदलि गइलन। राधा के ना बुझाव कि बाति–बाति पर काहें मदन अब खिनुसात बाड़ें। आजु त मारि दिहलन ह जवन कबों ना कइले रहलन ह। राधा का ना बरदास भइल ह ऊ जबाब दिहली। एह पर मदन साहु झरिया छोड़ि के जात बाड़न। राधा कहाँ जासु। बंक क कुल्हि रुपया बैपार में लागि गइल। आजु ले बेसवा सबके ठगलीसऽ आजु ऊहे ठगा गइल.... राधा का सोझा अम्मा क मुसकियात चेहरा नाचि गइल। राधा मदन साहु क गोड़ छानि लिहली– 'दया करीं.... हम जेवन कहि देहलीं ओकरा खातिर माफी माँगत बानीं.... हमरा अब के बा..... खियाल करीं हम रउरा के कइसे अपनवलीं.... रउरा के हम जिअवलीं। हमरा के मारीं मति।' मदन क करेजा मिमोरात रहे, बाकिर पत्थर बनल रहलन। आँखि का सोझा पंचन क आ माला क मुँह पारी–पारी से घूमि जा। जाके समान बान्हे लगलन। सबेरे गाड़ी जाति रहे। तय कइलन इहिजा क कुल्हि संपति छोड़ि दीहें। लोटा कमरा के बान्हि के ध दिहलन। राधा कमरा में जाके रोवति रहली।

सवेरे मदन हाथ–मुँह धो के जाये के तइयार होत रहलन तबले नोकर दउड़ल आइल आ कहलसि– "बाबूजी, मलकिन पागल हो गइल बाड़ी। मदन भीतर गइलन देखि के जीव धक्क से हो गइल। राधा कुल्हि सिंगार ओइसने कइले रहली जइसन क के कोयलरी में पहिली बेर नाचे आइल रहली।" मदन के देखते नाचि के कढ़वली–

बैल चढ़ल सिकसंकर आवें, गरुड़ चढल भगवान,
पिया संग जियरा हुलसल लागे, पिया बिन जिया मसान।
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया.....

राधा.... राधा.... मदन क मन क बान्ह टूटि गइल। हम ना जाइब राधा.... हम ना जाइब। राधा रुकि गइली आ धाँय से गिरि पड़ली। मदन दउरि के उठा लिहलन। राधा.... राधा.... आँखि खोल राधा! हम तोहरा बिना ना जी सकीं। सावन भादों नीयर आँखि चूवे लगली स।

राधा आँखि खोललली आ कहली– "खियाल करीं एक बेर आप हमरा खातिर मरत रहलीं बाकिर हम आप के जिया लेहलीं बाकिर आज आप खातिर हम मरत बानीं हो सके त जिया लेईं।" राधा क मूँड़ी एक ओर लटकि गइलि। माहुर क करियई ओंठ पर हँसे लागलि। मदन चिचिआये लगलन– राधा.... राधा.... अवाज कमरा से लवटि आइल। के जबाब दे। जबाब देवे वाली राधा, मदन क रास्ता दूर जाके खोजति रहे।

सिकुमार बाबू क आँखि पोंछलन। फेनु कहे लगलन। ओहिजा क लोग मदन के घरे पहुँचावल काहें से कि मदन क दिमाग ओही दिन फेल हो गइल। आजु देखते बानीं गाँव की गली–गली में घूमि के राधा के गोहरावत बाड़न.... घर क भाई जेवन इनहीं की कमाई पर धनी भइलन स आजु बाति नइखन स पूछत।

पागल उठल। भागि चलल.... हा.... हा.... संसार में सब धोखा.... बिसवासघात.... बाबू दूधनाथ क जय.... सिपाही भइया राजनरायन भाखन द..... राधा कीहें, जाइब लकड़ी बेचब.... हा....हा....ही....ही.... गावे लागल–
बाजलि बैरिनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर क ध्यान....●●

सतवन्ती

रामनाथ पाण्डेय

आज चउथा दिन रहे। पेट में अनाज के एको दाना पड़ला। भूखे आँत अँइठात रहलीसन। कान लगे झन झन झिनझिनाहट सुनात रहे। आँखि में भक भक धैधोक नियर कबो धधके त कबो चट चट लूती नियर चटके। आँखि के जोत ओराइल जात रहे। चले फिर के हियाव ना करत रहे। बुझात रहे देहि के बल बिला गइल होखे।

एतना भइलो पर मनबोध अपना मन के अबो बोधले रहस। सावन भादो के झमझम झमरत बरखा में निम्मन निम्मन उधार पइँचा देवे वालन के हियाव फाट जाला। गरीबन के किछ देने में त केहू इचको भर सुगवगइबो ना करे। सावन भादों में गरीबन के जवन दसा होखेले तवन आज ले भगवानों के पता ना चलल ह। ना त ऊ ओकनी खातिर कतनों बेंवत जरूरे बइठावे के जोगाड़ लगवतन।

ना जाने केतना जुग बीत गइल।

सतयुग, द्वापर, त्रेता आ कलयुग के पहिया ना जाने केतना बेरी घूम चूकल बाकिर गरीबन के गरीबी जस के तस बनल रहल। ओकनी के दशा ना सुधरल। आज ले गरीबन के भूख से कुलकुलात पेट कुलकुलाते रह गइल, ना भर सकल।

बुझाता जब ले भगवान के राज रही अइसने चलत रही।

गरीब मुअत रहिहें।

अन्न बिना।

दवा बिना।

मनबोध सोचस। मने मने विचारस। आ पेट के अँतरी जब अधिका अकुलाये लगे त भगवान के राज पलटे के उपायो सोचे लागस। ना रही बांस ना बाजी बँसुरी। ना अमीर गुलछरा उड़इहें। ना गरीब के भूखे मउअत होई।

धरती के लोग अनेरे समाजवाद, समाजवाद के चिचिअहट पर मोहता। भला लाख करोड़के हिसाब जोड़े वाला धरती पर समाजवाद ले अइहन सन? पाला आ गरमी के दुख से दूर रहे वालन के गिरोह भला गरीबन खातिर धरती पर सरग उतारी। कवनो पागले मन एह बात पर भरोसा करी। बिसवास करी। पतिआई।

गरीबन खातिर सरग धरती पर उतरे के चाहीं। कहीं, सभे। खाली कहे खातिर। उतारे खातिर ना।

आ एह चाहीं के चक्कर में परल गरीब पिसा रहल बा पिसात रही। ओकरा के हुलका के, बहका के, हुदका के आगि में कुदावल जाई। ऊ कुदत रही। जरत रही। धनकत रही। झउँसात रहीं। मुअत रही। बाकिर ओकरा पेट के भूख ना मेटाई। मनबोध के मन आज उनका बोधला से ना बोधात रहे, ओकर सोचल बन्न ना होखत रहे।

सावन भादो।

कड़ कड़ कडकत, चम चम चमकत बिजुरी। घहरात मेड़रात झमा झम झमक

झमक बरसत बदरी। नदी के उभरल उमकल जवानी त आपन सिवाना लाँघ के अराड़ के ऐड़िया के गाँव के बंड़ेरी ठेकल चाहे खातिर उछिलत रहे। जब नदी नेवर भइली त घास फूस के सड़ला से गाँव में नरकवाहिन भ जात रहे। बसाये लागत रहे। गोड़ हच हच ठेहुना ले पाँक धंस जात रहे। गरीब मउवत से जूझत रहे लोग बाकिर अमीरन के त आठो पहर मउजे रहे। सावन भादों उनका लोगिन खातिर फागुन चइत रहे।

उनकर मन सोचत सोचत जब उबिया जाय, उजबिजा जाय, अकुता जाय त ऊ भगवान के दु चार गो खट–मीठ सुनावे लागस। बिना जाँगर चलवले मेवा मिसठान भकोसत भकोसत पेट भर गइल बा। पेट भरला पर सभे आकासे ठेकेला। कर ल मउज। जबले लोग आँखि बन क के तोहरा के गोहरावता। फूल माला पहिनावता तबले तुहूँ चउल क लऽ धरती के लइकन के दुध के दरस दुलभ भइल बा आ तू दूध के समुंदर में नागबाबा के पीठी पर अपना मेहर जोरे चउल कइले बाड़ऽ।

गरीबन के गोहार तोहरा नइखे सुनात। लाज लेहाज कुल्हि घोर के पी घलले बाड़ऽ।

नाग बाबा आपन पोंछ पटकताड़न, डोलावताड़न, हिला हिला खेलवाड़ करताड़न त तोहरा निमन लागता। मउज बुझाता। दूध के समुंदर में हलफा उठता, हिलकोरा उठला से जब मखन निकसत बा त तू चट दे चाट जाताड़ऽ। मखन चाटत चाटत तोहरा पेट के भूख के आगि बुता गइल बा। भूख के पीड़ा नइखे बुझात त समुझताड़ऽ सभे तोहरे अइसन अघाइल बा, ना त भूख से तड़पत लोगन के रोआई तोहरा जरुरे सुनाइत।

लोग नाहके रवना के दोस देला। ऊ बड़ा निमन कइले रहे देवता लोगिन के भूखे उलटा टाँग के। जब मुसुक बांध के टंगले रहे। होम जाप बन कइल रहे त मुख के दरद बुझात रहे। मउगी के लेके जब भागल रहे त कइसन बने–बने फेंकरत राम चलत रहन। बाप घर से निकसले रहन त कोल–भील, केवट आ किराती के अँकवारी धड़त चलत रहन। भीलनी के जूठो इमरीत नियर लागत रहे। ओह घड़ी तो गिधो के अँकवारी में धरे में लाज ना लागत रहे। बाकिर पेंच से छुटते कुल्हि बिसर गइल।

मनबोध ठेहुना भर पानी में छीप धइले ठाड़ सोचत रहलन। नदी के तेज धार में ना जाने केतना चीज बहत रहली सन। भगवान। घबरा जन।

एक दिन भूखे मुये वालन के आह ऊपर चहुँपी। ऊपरो तूफान उठी। सरग के आसन डोली। सरग उजरी। धरती के भाग जागी। समय पलटी।

गरीबन के खून से ललिआइल धनिकन के भगवान के एक दिन जरूरे ठेकाना लागी। ऊँ सरग से पटक के धरती पर गिरावल जइहें। उनकर विधान बदली।

अब एगो गरीबे के भगवान बनावे के पड़ी।

ना त दुनिया आ राम से ना रहे पाई।

सुख चयन से ना रहे पाई।

मनबोध के बंसी के डोर तना गइल। उनकर धेयान पानी पर उतराइल करेना कावरी खींचा गइल। जवना के एगो छोर रह–रह के पानी में बुड़ि–बुड़ि जात रहे। मनबोध के आस हरिहरा गइल। घंटा भर से पानी में ठार रहला के फल मिले के चाह उनका आँखि के सोझा नाच उठल। बुझाता अबकी दमगर मछरी बाझल बिया। ऊ छीप अपना हाथ में कस के ध लेलन। गते–गते उठावे लगलन। उनकर करेजा धक–धक धड़के लागल।

ऊ तनी अउरो पानी में बढ़ गइलन। उनकर गोर पाँक में थोड़का धंस गइल।

"हे भगवान सेरो भर के बाझ जाइत त रात कट जाइत। दुनो परानी खा के अघा जइती सन। बझा द भगवान। तोहरा के सबसे बड़का गुरिया भोग लगा देब।"

".... मनबोध मनेमने भगवान के गोहरवलन आ छीप के डोरी के तनिका ढील देलन। ढील देला पर मछरी के गलफर में बंसी आउरो अंटक जाले। मछरी भाग न पावे। मनबोध के करेजा के धुक–धुकी आउरो बढ़े लागल।"

"कहीं, फेनु सरक जन जाव। मछरी के भागे के डर उनका के बेचैन कइले रहे। मछरी भागे के माने आजो उजासे रही। ऊ गते–गते डोरी खींचे लगलन।"

भारी लागत रहे। उनकर मन मुसका उठल। आज रात राम से कट जाई। भारी बिया। सेर भर से अधिका के बुझा तिया। उनकर पेट के भुख मेटात बुझाये लागल। ऊ गते–गते डोरी खींचत रहन।

डोरी तन गइल। अब भार खूबे बुझाये लागल।

'हे भगवान छुटे ना पावे। दूगो गुरिया चढ़ायेब....।' मनबोध फेरू दोबारा भारा भाखत भगवान के गोहरवलन। बाकिर उनकर धेयान आधा डूबल करेना पर रहे। ऊ कबो–कबो पूरा डूब जात रहे।

उनका पेट के आगि अब बुता गइल रहे।

डोरी पुरा खींचा गइल रहे। हाथ भर बादे बंसी में फंसल पानी में मछरी के छपिटाइला के भान उनका साफ बुझात रहे।

सेर भर से अधिका के जरूरे बिया।

मनबोध अपना मन के बोधलन।

बाकी घरे त तेलों ना होखी.... ऊ मने मन सोचलन।

फिकिर के करिया बदरी उनके के चारों अलँग से तोप लेलख।

उनकर हाथ डोरी गते–गते खींचत रहे।

उनकर मन घर में के कोना कोनी ढूँढ़त रहे। कतो मरीचा भा हरदी के एको टूसी ना भेंटाइल। ऊ मने मने झुझुआये लगलन।

दू सेर के होखित त निमन होखित। सेर भर बेच देला पर चाउर, नून, तेल आ मसाला किना जाइत।

उनकर मन फेरू हरिया गइल। आस के किरिन फुटल। उनका चारो अलंग अंजोर छिटके लागल।

"हे भगवान दया करऽ। तू दयवन्त हव। तीन गुरिया चढ़ायेब....। .... हूँ..... कहत मनबोध एक बेरी अपना देहिके पुरा जोर हाथ में समेट के छीप झटकवलन।"

सुरूज के अँजोर में चाँदी के पेटी नियर रोहू के पेटी चमकल। मनबोध के हिरदया मारे खुसी से लहालोट भ गइल। आरे ई त तीन सेर से अधिका के बिया।

मनबोध के नस नस मुसुका उठल।

उनका भाग के केवाड़ी फट फट खुलत बुझाइल।

चट दे एगो आवाज भइल। फट दे डोरी टूटल आ गप दे मछरी पानी में ढूक गइल।

मनबोध छपाक दे पानी में कूद पड़लन आ मछरी धरे के चहलन बाकिर पानी के जीव धरती के जीव से धराव। अगारी के पोरसल थरिया खींचा गइल। उनकरा मुख के आग अतना तेज धनके लागल जे छाती भर पानी में रहलो पर उनका बुझात रहे उनकर सगरी देह धाँय धाँय धधकत होखे।

हाथ के छीप छूट के पानी में गिर गइल रहे। जिनगी में कबो साथ देवे वाली आखिरी आसो पानी में बह चलल।

मनबोध अपना के तनी सँभरलन आ पानी में बहत छीप के लपक के लेलन। किनारा आके दोसर बंसी बँधलन। बचल आखिरी जियना के ओकरा में नाथ के बंसी पानी में जोर से घूमा के फेंक देलन।

उनकर धेयान करेना पर रहे। आस लगवले टूकटुक ताकत ठेहूना भर पानी में ठार भ गइलन। फेंरू कवनो बाझी। पेट भरी। नदी अपन जावानी के जोम में उमड़ल अइठत बइठत रहीं। धार तेज रहे।

मनबोध के मन फेरु झुझुआये लागल।

भगवान बगवान किछ ना ह। मन के भरम ह। ना त तीन सेर के बाझता मछरी हाथ में आवत आवत हाथ से निकस जाइत? पेज के मुख उनका से चिचिया चिचिया के कहे सगल। ई कुल्हि मटियामेट करे के पड़ी। भगवान के मानेवालन पर उनकर खीस बढ़ गइल।

कमाई से खाई।

मउज करी।

बइठ के खायेवालन के मास जबले ना होखी। मेहनत क के खायेवालन के पेट ना भरी। ऊ कबो अदमी नीयर ना रहे पइहे लोग धनिकन के घेरा तुड़ल जरुरी बा ना त गरीबवन के संसरी टंगाइले रही। ससुरा ना कामे दहेसन ना खाये के। जांगर सड़ा सड़ा के गरीब मुओ। ओकनी के का? ओकनी के त पांचो अंगुरी घीवे में रही।

भगवान। मनबोध के अपन मन फेरु भगवान कावरी खींचा गइल। लोग कहेला ऊ हयमन्त हवन। उनका राज में कबो अन्हेर ना होखे। फेरु अइसन काहे होखता हम चार दिन से भूखे छपिटात बानी। केहू पूछवइया नइखे। एगो मछरीयो बाझल त डोरी टूट गइल। हम गोहरावत रह गइनी। कहबो कइनी अकेले ना खाएब तोहरो के खियायेव। बाकिर भगवान के दया ना लागल।

भगवान गरीबन खातिर नइखन।

पानी कावरी टूकुर टुकुर ताकत मनबोध सोचत रहन। जब कबो करेजा के छोड़ हिले त उनका मन में आस के किरिन फुटे बाकिर करेजा के सोझ होखते अलोप भ जाय।

करेना चुपचाप पानी में दहाये लागे। हिलत। डोलत। गते गते गदवेर भ गइल। चारो अलंग भकसावन अन्हरिया आपन घेरा घेरे लागल। झुड के झुंड बदी ना जाने केने से देखते देखत उमड़ पड़ल। बुना बुनी पड़े लागल मनबोध अपन मन मारत छीप उठववलन आ पानी कावरी तकलन। मने मन कहलन– आज इहो संधातिन ना भइली। ऊ आपन मुड़ीं गड़ले चुपचाप घर कावरी चल देलन। उनकर मेहर रुपिया आस लगवले चउकठ पर बइठल रहे। आज पेट भरे के कवनो जोगाड़ लगा के जरुरे अइहें।

रुपिया।

मनबोध के मेहर। जवना के जवानी छहलत चलत रहे। ओकरा के पकड़े के ना जाने केतना लोग चहलख। बाकिर ऊ छहल गइल, बिछला गइल, पकड़ा ना सकल। लोग टूकटुक देखते रह गइल।

ऊहे रुपिया मुख के आदा में झंउसात रहे अपना

मदद के खाली हाथ आवत देख के ओकरा आस पर पानी फेरा गइल। ओकर आँख डबडबा गइल। दुआरी के नियरा भइला पर ऊ डबडबाइच आँखि से अपना मरद कावरी तकलख।

"का देखऽ ताड़े? आजो चूल्हि नेवार बा। ससुर बनेला भगवान। गरीबन के नेवाज। बाकिर निकलल निठाह अमीर नेवाज। गरीब के डहकत देख के उहो चउल करेला। न त तीन सेर से अधिका के बाझल रोहू ना भागित।.... मनबोध अपना मेहर के अपना ओरी तक त देख के कहलन।"

"तीन सेर के?...." रुपिया चकचिहा के पूछलस "हँ, रे। डोरी ना टुटित त भाग जाग जाइत। अब त आजो नियर लिपे रहे के पड़ी।"

"अब हमरा से नइखे अड़ात। .....रुपिया कहलस। ..... तू काम धाम त करबऽ ना। खाली मछरी के फेर में रहबऽ।...."

"कवन ससुरा काम देता जे हम नइखीं करत। बुनी बरखा में कुल्हि काम ठप पड़ गइल बा। कवनो काम मिले तब न करीं। ..... मनबोध कहलन।"

"तूं जाँगरचोर भइल जा तारऽ। ना त हमनी के भूखे ना रहे के पड़ित उपासे ना सुते के पड़ित।....." रुपिया के आँखि उमड़ पड़ल।

"चुप हरामजादी। तोर आँखि फूट गइल बा। देखत नइखिस दिन भर पांक पानी में ठाड़ भइल आवतानी। तें कवन पहाड़ ढ़ाहत रहले हऽ। बइठल बइठल अँड़चत बाडू। ..... मनबोध झुझुंया के कहलन।"

"अधिका गरमा नत। मरद होके हाथ दुमावत चल अइलऽ। खाये के कवनो जोगाड़ ना जुटा सकलऽ। हम मेहरारू होके का करीं?..... रुपिया कहलस।....."

"हमरा सोझा अधिका पिंगल जन छाँटऽ। ते तं तनी कवनो से आँखियो लड़वले होखते त चना चबेना खातिर किछ मिल गइल रहित। ....मनबोध बेकाबू होके कहलन।"

"अ भागु, तोरा लाज नइखे लागत।"... रुपिया गरमा गइल.... "हम कवनो रंडी पतुरिया हईं जे आँखि लड़ा के तोर पेट भरब।...."

"अधिका सतवन्ती जन बन। हम कुल्हि जानिला. ..." मनबोध कहलन।

"का जानताडू? रुपिया खीसे काँपे लागल।"

"उगिलाव जन। पेट में के पेटे में रहे दे।....." मनबोध कहलन।

"भगवान झूठ अछरंग लगावे वाला के जीभ गला दीहें...." रुपिया कहलस।

"झूठ होखीं तब नू। रात रात भर ना जाने कतना के गर में लपिटात चलत रहस। हम का नइखीं जानत। तोर बाप कवना कमाई पर सेर सेर भर गोस्त ले आवस आ रात रात भर दारु पिअस। अंगना में कवनो नोट के गांछ जामल रहे। ....मनबोध कहलन "भगवान गवाह बाड़न। तोर देह छोड़ के कवनो दोसर मरद के देह छुवले होखब त हमरा देह में घून लाग जाई। हमार देह गल जाई। ना त भगवान तोरा के उठा लीहें....।" रुपिया कह के रोवे लागल।

"दुइये झांपड़ में तोर सभ तिरिया चरितर निकास देब। हमरा अगारी छहंतर जन कर।...." मनबोध ओकर झोंटा ध के खींचत रहलन– "हम मर जायेब त तोरा मउज करे के मिल जाई। इयार लोग त ताक लगवलहीं बा....।" रुपिया जोर जोर से रोव लागल।

"भगवान उठा लेस अभागा के हमरा पर हाथ छोड़ता। खायेक जुटावे के बेरी अभागू के जाँगर सड़ता। मारे के बेरी बल जुट जाता। हे भगवान एकर हाथ गल जाय...।" रुपिया रोवत कहलस। मनबोध के मन तनी नरम पड़ गइल। रुपिया कावरी ताकत ऊ कहलन– "ते नाहके खीस बढ़ा देले। सासतर पुरान के बात तें ना जानतारे। जान बचावे खातिर कइल कवनो काम पाप ना होखे। पेट भरे खातिर एक बेरी नारदो बाबा कुकुर के गोस खइले रहन। पापी पेट खातिर कइल कवनो काम पाप ना होला। चुप रह।....." मनबोध रुपिया के बोधलन।

रुपिया चुपा गइल।

"रुपिया दुनिया में किछु झूठ साँच ना ह। सभ समे के फेर ह कबो साँच झूठ कहाला त कबो झूठ साँच। अदमी के आपन जिनगी बचावे खातिर सभ किछ करे के पड़ेला। देह रहला पर नू पाप पुन्न होखी। पराने ना बाँची त देह रह के का करी। दूसरे दिन में त बसा उठी।.... मनबोध कहलन।"

"तू ठीक कहताड़ऽ। पेट पापी ह। एकरा खातिर सभ किछ करें के पड़ेला।"... रुपिया कहलस।

"त तें हमरा बात पर उखड़ काहे गइले हऽ।".... मनबोध कहलन।

"....." रुपिया किछ बोललस ना।

"त एगो काम करबे। ना करबे त अब हमार परान ना बचे पाई। अब नइखे अड़ात। दू दिन त अपने उपासे रह के तोर जोगार लगवनी। आज चउथे दिन अइसहीं काटे के

अब हमरा में दम नइखे रह गइल।....." मनबोध कहलन।

"का करीं....?" रुपिया पुछलस।

"सुरेश बाबू त एक दिन तोर हाथ गते से सुहरवले रहन नू। आ जब हमार नजर पड़ल त गते से खिसक गइलन।....." मनबोध कहलन।

"हँ"..... रुपिया कहलस।

"हमरा बुझाला ऊ आजो तोरा के चाहेलन।....." मनबोध कहलन।

"हम का जानी।...." रुपिया कहलस।

"ना, रे उ तोरा के चाहेलन। तें एगो काम कर।.. ..." मनबोध कहलन।

"का....?" रुपिया पुछलस।

"तें उनका पँजरा जो। ना त आज रात हमार काटल मुसिकल बा।....." मनबोध के लटपटाये लागल।

"अइसन कुभाखा जन बोलऽ। भगवान तोहरा पहिले हमरा के उठा लेस।...." रुपिया के आँखि डबडबा गइल। उ मनबोध के पंजरा सट गइल।

"रुपिया।...." मनबोध ओकरा ओरी ताकत कहलन।

"तू इ का कहताड़? पाप लागी।....." रुपिया सकुचाइल।

"ना रे पुन होखी। अदमी के परान बचावला से लम्हर कवनो दोसर पुन ना होखे। परान बंची तबे त धरम होखी। पाप पुन के झमेला पर हमनी दूनों के परान चल जाई। परान बच जाई त तोरा के गंगा नहवा देब। कासी घुमा देब। पापे नू काटे के। पाप काटें के सतहतर गो उपाय हमनी के धरम सासतर में बा।...." मनबोध कहलन।

"बाकिर!...." रुपिया कुछ कहे के चहलस।

"किछ ना रे। जनले गरीब अइसन ना करी आ केसेना उठी। देखत नइखस। देवतो लोग सरग में बइठल इहे करता। अमीरन के जाल से निकसे खातिर ओकनी के राह पर चले के पड़ी। पाप से डरे ना पड़ी। भगवान से डरे के ना पड़ी। ना त गरीब हमनीये अहसन भूख से तड़प तड़प के मुअत रही। ओकर दुख कबो ना मेंटाई।....." मनबोध कहलन।

"त ओह दिन तू आँखि काहे तरेरले रहऽ।...." रुपिया पुछलस।

"ओह दिन पेट भरल रहे। चारो अलंग हरिअरी छवले रहे। कवनो कमी ना रहे।...." मनबोध कहलन।

"जायेद आजो रात काट लेवे के।....." रुपिया कहलस– "काहे हमनी आपन अकबद बिगाड़ीसन।"

"रुपिया हम आपन पेट काट के तोरा के खिआवत अइनी हँऽ। अब हमरा देह में बल नइखे। ना त हम आज कवनो के जाने मार के किछ ले अइती आ तोर पेट भरतीं। दिन भर पानी में ठार भइल भइल देंह के नस जमक गइल बा अब तनिको हिलेडूले के मन नइखे करत। तें हमरा खातिर ना जे। हम तोरा के अपना सोझा मुख से छपिटात ना देख सकब। तें जो हम कहतानी। हम तोर मरद हईं। अपना मरद के बात मानल सतवन्ती नार के धरम ह....।" मनबोध कहलन। रुपिया किछ बोलल ना। चुपचाप उठके एक ओरी चल गइल।

"रुपिया।....." मनबोध पुकरलन।

"का ह?....." उ पूछलस।

"तोरा दूगो काम करे के पड़ी।...." मनबोध कहलन।

"कह...!" रुपिया कहलस।

"तें अधिका देर उनका लगे मत रहिये। आ उनका से इहोजन कहिये जे हम तोरा के भेजनी हँ।..." मनबोध कहलन।

"आछा।....." रुपिया कहलस आ चल गइल।

"मनबोध दुआरिये पर बइठ गइलन। उनका माथा झुकल रहे। उ सोचत रहन।"

देह में तनी बल आवे त किछ करे पड़ी। अब सहला से काम ना चली। पेड़ा... पुजारी.... भगवान... सभन के पछारे के होखी। पाप पुन के झमेला हमेसा खातिर मेटावे के होखी। जब ले इ ना होखी तबले धरती खुसहाल ना होखी सरग के देवता अपसरा जोरे हमनी के कपार पर मउज करस त पुन आ हमनी अपना परान बचावे खातिर किछ करीं त पाप। ई विधान अब ना चली।

अबेर होखत देखि के मनबोध बेकल होके दुअरा से उतर के कबो कबों नीचे ठाड़ होखस आ अन्हरिया ओरी ताकस।

ससुरा भर अँकवारी के हमरा रुपिया के धइले होखी।

छोड़त ना होखी। ना त बेचारी कबे आ गइल होखित।

बेचारी केतना निमन बिया।

रात आधा बितला पर रुपिया अपना जोरे एगो कठोरा में रोटी तरकारी लेके आइल आ मनबोध के हाथ में पाँच रुपेया के नोट धरवलस त मनबोध के बुझाइल सरग धरती पर लोटऽता।

ऊ अपना कमजोर हाथ से रुपिया के खींचलन। ओंकरा के अंकवारी में कस के ओकर मुँह चुमलन आ कहलन–रुपिया हमरा आज बुझाइल हऽ तें साँचो सतवन्ती हइस। ●●

झिरिहिरी

डॉ. विवेकी राय

"झिरिहिरी" खातिर लेंहड़ा भर बटुराइल नाव आगे बढ़ली स। बाढ़ि का राहत कार्य में सरकार से मिलल जवन बड़की पटहुआ नाव रहे ओह पर 'दुलहा' रहे ओहर से सभका से आगे कर दीहल गइल। ओह पर दू जोड़ी पेट्रोमेक्स बरत रहे। खूब अँजोर भइल रहे, जवना में बुढ़ऊ राम विलास बाबा साफें चिन्हात रहलन कि साफा बन्हले समधी बनल बाड़न। देखला पर केतना नीक लागे?

अइसन हँसी–खुशी क ई दिन गाँव में आ गइल। केहू सोचलहूँ ना होई कि अइसन होई। अब त अइसन हो गइल कि सनातन से चलि आइल झिरिहिरी के जलसा लोगन का भिसभोर परि गइल। तब कइसे एह सत्यानाश बाढ़ि में फेरु नया सिरे ई उपटि गइल? कठिन कहानी बा। कइसे लोग विलास बाबा के राजी कर लिहले? कहाउति कहल जाले कि बे झगरू के झूमरि ना होई। तवन बाति ठीके बा। बिना विलास बाबा के; के भूप बा, जे झिरिहिरी के ठाट ठटी? के बा जे समधी बनित? अइसना बेहाल में सिवनइत गाँव शिवपुर में के एह जोम से बराति ले जाइत? आ के ओह गाँव का सीनियर किसान चउधुरी काली बाबू का दुअरा का सोझा नाव भिड़ा के फटही–फटही गारी देइत? दूनों गाँव के लोग अलगा–अलगा कुलगोत्र के हवन आ रिश्तेदार परेलन एह से बोली–बानी आ हँसी–दिलग्गी चलेले बाकी एह रूप में हंगामा बान्हि के मुँह खोले के हिम्मति भला अउरी के करित? लोग ठीके कहेंलन कि झिरिहिरी के जलसा माने विलास बाबा।

बाकी ई बाढ़ि त अस मरलसि कि चँपि के विलास बाबा एकदम सन्न हो गइलन। अकेले गुमसुम पीपर का फेंड़तर बँसखट डालि के ढहल रहेलन। अइसन जनाला कि भीतर से हीर बुझा गइल बा। केहू कुछु कहेला त संक्षेप में उत्तर देलन कि– "अब का करीं? कुल्हि काम खतम हो गइल।" फेरु चुप हो जालन। ओह चुप का गहिराई में कुल्हि बात बूड़ि जाली स। ओह चुप में खेत–खरिहान, लोग बाग, आसरा–निआसरा सभ किछु बूड़ि जाला। सचहूँ किसान के करेजा बहुत पोढ़ होला। सरबस गँवा के ऊ जीअत रहेला। अब ईहे देखल जाव। अब त थारी आगे परोसा गइलि रहलि ह। अब धान छूटि गइल रहल ह। कुआरी गंध फूटि–फइलि रहलि ह। अंगहनिया रेंड़ा गइलि रहलि ह। दइब खूब देले रहलन ह।

हँ भाई, कहल जात रहल ह कि खूब देले बाड़न। जहान बसि गइल। परजा परानी के भागि जागल। जागलि गाँव के सूतलि किस्मत। अब गनल–गनावल दिन बा। अंगुरी पर गनि ल। उत्तरा, हथिया फेरु चित्रा। उत्तरा का बाद बरखा उत्तरायन, शरद ऋतु शुरू, अति सुन्दर, सुहासित। बोले बजरंग बली की जै! अब जागलि रामलीला के परती। जागलि सीवान के अनजही बखरी... .... बाकी अफसोस। ऊ ना जागलि। उलटे पानी क कफन ओढ़ि के सूति गइलि। सरबस गारक हो गइल। .... उत्तरा में बूँदाबाँदी सुरु भइलि त लोग सोचलि कि ई साँझि–बिहान के अबर–डबर ह। बाकी जब गहिरा के पानी बजड़ गइल तब माथा ठनकल। कहीं भट्ठा बइठि मति जाव! बाप रे बाप, नौ दिन– नौ राति ऊ

बरखा, ऊ बरखा कि ठेलि दीहलसि नाकि तलक ले। अब गाँव ऊभ–चुभ में परल। धान का ऊपर पोरसा–भर पानी। बौनी पद्मा–जया का कपार पर लाठी भर बढ़ियाइल पानी। रहरि, तिल का पटुआ क पता कहाँ बा? जुआर का रेंड़ा में पानी पइठि गइल। पानी खेत–पात खाके गाँव में ढुकल। पहिले धक्का में ढेर जना के पीटि दीहलसि घर के, घोंसला के! मचलि तराहि–तराहि।

राम विलास बाबा कुछु भागिगर बाड़न। उनकर हवेली बा त नदी का तीरे बाकी अरार बहुत ऊँच बा। उनकरा घर का पुश्ता पर नदी के फँफाइलि धार आ–आ के बजड़ेले। बाकी बेकार, लट्ठा भरि नीचे पोख्ता पुश्ता जुनुस ना खाला। बाबा के ढहले बा ई फसली नागहानी। गाँव का इतिहास में ईहो एगो नइये बाति बा कि विलास बाबा के दुख बिआपि गइल बा। लोग त सोचेला कि ई मनमउजी का दुखरा–धन्धा से नियारे शुद्ध हुस्नीजीव हवन। जोतला खेत में कबो लात ना डललन। माघ में कबो घासि ले आवे के सउख जागल त बरियाती जोम में घर से बहरा भइलन। दामी अंगरेजी बूट, टटके पालिस कइल, सेनगुप्ता के मेंही धोती, कुल्हि अउअल लम्मर के। गदह पचीसी में एक बेर कलकत्ता भागि के गइल रहलन आ तब क सिअवावल एगो खूबसूरत करिया बास्केट बा। घांसि के चललन त कोटि का नीचे ओहू के डटि लीहलन। का सीध ो खेत पर चोंहपि गइलन? ना, अड्डे–अड्डा दम लागत गइल, नंगा–निहंगा लोगन के सुर्ती–बीड़ी बटति गइलि। तिजहरिया टरत में जब सायकिल का कैरियर पर गलाबंद में चारि मूट्ठी गदरा बान्हि के धइले लवटल तले गाँव में चारू ओरि चर्चा लायक ई बाति हो गइलि रहे।

तब गाँव में खाली बबवे का पास सायकिल रहे आ जवना के नाम 'शौक' ह ऊ कुल्हिये उनकरा पास रहे। कातिक आ चइत का भीरि वाला दिनन में भी निस राति ले दुआर पर तबला ठनकल रहे। भजन, कीर्तन, गायन, डोल, फगुआ आ जन्माष्टिमी खातिर पागल! एक से एक सनकी आ अक्खड़ गवैया दुआर पर परल बाड़न। भाँग–बदाम आ नसा–पानी चलत बा, मजमा जमल बा, दुआर हँसत बा! बस, केहू रोवत बा त चरन पर चुपचाप खड़ा दू जोड़ी बैल आ गाइ महरानी! अच्छा अच्छा दामी माल ले आके चरवाह पर छोड़ि दीहल जाई। एक पानी चलि के बैल खँगड़ हो जइहें स। चढ़ते असाढ़ भुसहुल खाली हो जाई। सावन–भादों में मची चिल्ल–फिल्ल। चरवाह गली–गली मँगनी भूसा के जोगाड़ में घूमे लागी। ओने मालिक झिरिहिरी के 'जोगीड़ा' नाधे लगिहें। आसपास का गाँवन में एगो कहाउति बहुत चलेले–

'रामपुर सनकी गावे भादो में फगुआ।
बाढ़ि का झिरिहिरी में विलास बाबा अगुआ।'

जइसहीं रामपुर गाँव के बाढ़ि के पानी चारु ओरि से धरि लेला तइसहीं झिरिहिरी के नौका–विहार गाँव वालन का भीतर कसमसा के झुरुके लागेला। अइसने लोगन के संस्कार हो गइल बा। बाढ़ि का बरबादी के झंखत कतहीं केहू लउकि गइल त विलास बाबा दुलार झिड़की देबे लगिहें, 'धत्त् मरदवा की नाहीं, जिमदार जाति कतहीं मन थोर करेले? फसिल गइलि त का भइल? खेत बनल बा त फेरु फसिल आई, सूदि–मूर जोरि के आई, देखिहऽ रेखा खींचि के कहत बानी! चलऽ गावल बजावल जाव नाम जुटावल जाव, धन्नि भाग कि गंगिया दुआर पर आइलि!'

बाकी एह साल के बाढ़ि क बाति कुछु, अउर बा। ई त धइके तूरि देले बा। असल में पछिला सात–आठ बरिस से बड़ बाढ़ ना आइलि आ एह बीच गांव केतना बदलि गइल। बबओ बहुत बदलल। केहू सोचियो ना सकेला कि सगरे जिनिगी मउज–मस्ती में काटि के जब लइका कमासुत भइले स त एह चौथापन में एह तरे माया में फँसि जइहें। राति दिन हाय गेहूँ, हाय धान कइले रहत बाड़न। दुआर पर के रहाइसि छूटि गइलि। गाँव का बहरी अलंग पपिंग सेट बा आ ओही जगह उनकर घिसल–पिटल तेजंसी काया डोलति रहेले। अब खुरपा हाथ से कबो नइखे छूटति। हरमुनिया का रीड पर नाचे वाली, सरगम काढ़े वाली, तबला से टाँकी निकाले वाली अंगुरी खेत से घासि काढे में लागलि बा। अब नयकी खेती का संगीत में डूबलि बा। भुलाइल–भटकल कबो सुधि आइलि त साज–बाज पर से गर्दा झारि–पोंछि दीहलन बस। अइसन भइल कि एह पट्टी से मनसायन बिला गइल। भा ई कहल जा सकेला कि सात पट्टी वाला गाँव रामपुर में कतहीं अब गावे–बजावे के उछाह ना रहि गइल। पता ना का हो गइल? पैसा बढ़ल बा आ अउँजाहटि बढ़लि बा। उदासी आके जमि गइलि बा। बहुत जोर पर बा आपसी तनाव आ मनमुटाव। साँझ के गवनई गाँव से बिदा हो गइलि। चौपाल में सुनहट छवले रहेला, लोग धीरे–धीरे भुला गइल कि बिलास बाबा जिअत बाड़न। अइसना हालि में आ गइलि असों फेरु ई महाबाढ़ि। जब एह बाढ़ि का पानी में बूड़ि के गाँव क चिन्हारी मेटा गइलि तब जरूर बिलास बाबा होस परलन।

त का हवे रामपुर गाँव के ऊ चिन्हारी? आ चारू ओरि से बूढ़ि के एह समुद्र का बीचे टापू का छत्ता नियर

उतराइल एह गाँव के कवन चिन्हारी बाँचलि बा? अब त बस एगही चिन्हारी बाकी बाँचलि बा कि कवनो दिन राति में झिरिहिरी के जलूस लिहले चढ़ि चलल जाव शिवपुर गाँव में। नावन के जगरमगर जमघट लागो, गाना गूँजे लागो आ चिहुँकि उठसु सिवनइत गाँवन के लोग, कहे लागसु, "अरे हई देख जा भाई, फेरु एह साल रामपुरहवा सनकि गइलन स!" बाकी गाँव अलचार परल बा। एह सनक के अगुआ ढहि गइल बा। ओके के उठाओ? आठ बिगहा नयकी खेती के धान कसि के लागल रहल ह। ई कम ना होला। चकबन्दी में उनकर ई अठबिगहिया चक बनल त सगरे गाँव थू–थू करे लागल। गाँव के एगो चलनसार सज्जन बिलास बाबा के धकिया के एह उसरा–टाँड़ पर बइठा दिहलन। एक त गवैया दूसरे गंजेड़ी आ तवनो पर किसान सरदार! अपील का जगह सन्तोष कइ लिहलन। कहलन, पैदावार माटी पर ना होले लिलार पर होले। फेरू नयी खेती आइलि आ लइका लायक निकललन स त सचहूँ जिमदार के लिलार चमके लागल। खेत में हून बरिसे लागल। फेरू एह साल त गजब पैदावार उपटलि। अपना हाथे खाद–पानी देके भरपूर पसेवा भइलि। किसिम–किसिम के दवाई से ओकर जतन कइल गइल। एक–एक कियारी के नाहीं, एक–एक गो पौध ान के समाचार बिलास बाबा से सुनि लेईं। बाकी कुल्हि अकारथ गइल। तब का कहि के अब उनके केहू अकसावे? उमिरि में सभका से जेठ बाड़न। 'धत्त मरदवा' का भाखा में उनकरा के केहू लेलकारे वाला नइखे। बाकी एक दिन राय बात कइ के कुछु लोग जुटलें कि छेड़ल जाव।

बाढ़ि अब सम पर आ गइलि रहे। पानी न घटत रहे आ न बढ़त रहे। बरखा बन्द हो गइलि रहे! अब केहू का कच्चा घर के चरमरा के बइठे के भा खपरेल के खड़खड़ाये–भड़भड़ाये के आ दुखिया लोगन का छाती पीटि के रोवे के आवाज थम्हि गइलि रहे। दिन में माहुर घाम उगे लागल रहे। बाकी राति के अँजोरिया बहुते भकसावन लागे। मामूली बाढ़ि रहिति त अँजोरिया राति के झुरुकत पुरवइया में बिलास बाबा का दुआर के रौनक कुछु अउरे रहिति। बाकी अब त एह फँफाइल पानी का झिलमिल सुघराई पर केहू के धियाने नइखे जात। लोग दुख के अंगेजि लेले बा बाकी चेहरा बहुत मुरझाइल सुखाइल बा। पानी में कई–कई दिन से बूड़ि–बूढ़ि के चारे छाने के परल ह। एह बेढंगा घाम–पानी के खाके देहि झाँवर हो गइलि बा। लोग हँसत–बोलत जरूर बा बाकी पानी में घेरइला के साँसति अइसनि कड़ेर बाटे कि बोली थरथरा जाति बा। अइसना हालि में बिलास बाबा के छेड़ल कठिन रहे। लोग कुछऊ कहे, कवनो जबाब ना। बबवा गूंगी साधि के गमछा ओढ़ले खटिया पर सुतले–सुतल सुर्ती–चूना के बटुआ लोगन के थम्हा देत बा। छोड़े वाला लोगन के मन सई मुट्ठी के एक मुट्ठी हो गइल। अब का कहि के बाति उठावल जाव? उनकरा से बतकही के कवनो गँव–धान ना बइठल त लोग अपने में हारि के गाँव–घर के चरचा करे लगलन।

एकजना सुनवलन कि कइसे दीहल आ उनका बेटा का बीचे ठेंगा चले लागल ह। दीहल के बेजाँइ बस एतने रहल ह कि गगिया का दुआर पर आ गइला से खुशी मनावत रहल ह। दूसर जना सुनवलन कि कइँसे धान बहि गइला से एने किरपलवा का करिहाँइ के डोरा टूटि गइल बा, आ ओने पट्टीदार अगरा के लमहर–लमहर बाति हाँकत बाड़न। तीसर जना सुनवलन कि खर्ची के तंगी में रामधारी पांडे बखारि खोलि के बोआई के अनाज त गाजर–मुरई का भावे बेचि दीहलन ह। चउथ जना कोनिला आम पर फों–फों करत साँप के हालि सुना के कहलन कि कइसे अब पतई–पतई पर साँप–बिच्छी देखि के रोवाँ गनगना जात बा। बाकी झिरिहिरी के बात केहू ना उठावल। कुछ देर ले चुप्पी परल रहे। फेरु एक बेरि सुर्ती ठोकाइलि आ गत्ते–गत्ते लोग जइसे आइल रहे ओइसे टसकि गइल। बाबा ओइसहीं गुमसुम बसखट पर परल रहलन।

दूसरा दिने पता ना का बाति रहे कि शिवपुर गाँव में साँझि होते रेकार्डिंग शुरु हो गइलि। बाढ़ि आइल पानी का छाती पर लता मंगेशकर आ मुकेश गूँजि के छलछलाये लगलन। रामपुर गाँव के कान खड़ा हो गइल। बिलास बाबा का दुहरा जमल बइठकी में बतकही बन्द हो गइलि। बहुत रोसिया के जगेसर कहलन, "शिवपुर वाला लोग बहुत बदमाश हो गइल बाड़न। मन बढ़ि गइल बा। ओह साल बच्चू लोग बाजी मारि ले गइल। यादि बा न भइया, ऊ बुढ़वा गुरुबकसा आठ दिन ले पिअरी धोती आ लाल कुर्त्ता पहिरले, हाथ में कजरौटा लिहले सगरे गाँव घूमि–घूमि के सलाम करत रहे कि अबहीं कक्कन नइखे छूटल?"

तनी ऊहो किस्सा सुनीं। सात–आठ बरिस पहिले जवन बड़की बाढ़ि आइलि ओह में ओह साल झिरिहिरी के नसा पहिले शिवपुर वालन का कपार पर चढ़ल आ चुपे–चुपे तेयारी कइके एकदिन राति बेला में बरिआति लेले चढ़ि अइलन स। एह बरिआति में गाँव के गरीब ऊधमत बूढ़ बनिया गुरू बकसा दुलहा बनावल रहे। पचास–साठि नाव के ई नाचत–गावत जमघट गाँव का चारू ओर चगोठे लागल। बोली बानी सुरु भइल। एगो नाव पर बिआह के गीति गवाइल, "ओरी तरे, ओरी तरे बइठे बरनेतिया

काढ़ऽ रामपुरहा बाबा अपनी पुतरिया" आ लोग देखल कि ओही नाव पर माथ पर मउरी धइले गुरूबकसा कुर्सी पर बइठावल बा। आँखि में भरपूर काजर चभोराइल बा। रहि–रहि के मटकी मारत बा, रँगल दाढ़ी हिलावत बा, पूरा तमासा बनल बा आ एतना अगरा गइल बा कि.... बाद में त रामपुरहन का हाथे ऊ पिटात–पिटात ले बाँचल। इहाँ के लोग ओह झिरिहिरी के जबाब देबे खातिर कसमसा के रहि गइलन। बाकी अचके में बाढ़ि के पानी उतरि गइल आ दूसरि बाति ई रहे कि बिलास बाबा बुखार से खजमजा गइल रहलन। ईहे बाति रहे कि जगेसर रेकार्डिंग सुनि के छनछना गइल रहलन। अपना बाति पर एगो अउरी जबरदस्त लोना धइके ऊ कहलन, "आ देख भइया, ऊ बुढ़वा साला अबो अपना के अइसन लगावेला जइसे साँचो ऊ रामपुर के दमाद ह! झिरिहिरी के जबाब ना नू दियाइल, ईहे बाति बा! मन बढ़ि गइल बा।"

अनजाने में तीर काम कइ गइल। सुतले–सुतल बिलास बाबा फाटि परलन, "त का बिलास मरि गइल बाड़न? उहाँ गदहा के दुलहा बना के झिरिहिरी जाई।"

लोग केतना अगरा गइलन? मन जुड़ा गइल।

"तब त बाबा बस हुकुम के देरी बा" जगेसर कहलन, "रउआँ नाँव पर झिरिहिरी का नावन के जुटान त साँझि बिहान में हो जाई।"

"गाँव त अपनहीं अफनाइल बा। बस सरकारे के मुँह जोहात रहल ह। फसिल गइलि त का भइल। उत्साह कम नइखे।" नारायण प्रसाद बोललन।

बाकी, राम बिलास बाबा चुप, एकदम चुप।

"घरे के सवाँग गुजरि जात बा, जगेसर अब गभीर होके कहे सुरु कइलन, "त रोवल–धोवल जाला, किरिया–करम कइल जाला। ओइसहीं रामपुर में बाढ़ि के बरबादी आइलि। एह बाढ़ि का बरबादी के किरिया–करम परम्परा से झिरिहिरी का रूप में चलि आवत बा। त बाबा का जिअते–जीव एह साल काहे नाहीं झिरिहिरी होई?"

"अरे हँ जगेसर भइया, ठीक कहत बाड़ऽ। अपना–अपना पहरा के लाज होले। बस, बँसखटि पर परल एह पुरनकी ठट्री के जिनिगी मनावऽ कि ई जलसा हो जाला।" नारायण प्रसाद बाति के आगे बढ़वलन।

"अउर का? जिमदार नक्षत्री ह। ना रही तहिया गाँव झिरिहिरी खातिर तरिस के रहि जाई।"

बाकी, बाबा चुप। लोग बोलि रहल बाड़न आ आँखि–कान ओनिये लागल बा। बाबा के चुप्पी टूटति नइखे। एक बाति बोलि के चुप्प! एह के का समुझल जाव?

"त हुकुम हो रहल बा न बाबा?" आखिर में हिम्मति कइ के लोग पूछत बाड़न।

मगर, अबहियों बाबा चुप।

अचानक लोग देखत बाड़न कि चुपे–चुपे बाबा उठत बाड़न। खड़ाऊँ चट–चटावत कोठरी में जात बाड़न आ लवटत बाड़न त उनकरा हाथ में तबला के जोड़ी होति बा। आ ओइसहीं चुपेचाप चउकी पर बइठि के टिन्न–फिन्न शुरू कइ देत बाड़न। धागे–धागे धिन, तागे तागे तिन. .. .... ओने तबला के बोल फूटत बा आ एने जगेसर हाथ भाँजि के हल्ला सुरू करत बाड़न, "बहुत फिल्मी उड़ावत बा लोग। अब शिवपुर वाला लोग बूझो कि रामोपुर जिअत बा।.... मार तनी सधल तान तबला पर बबवा कि पानी पर छलछला के करेजा बेधि देउ!"

सुरताल ठीक कइ के बाबा एगो झपताल उठवलन–

"आनंदमयि आज गोकुल विराजति,
प्रभु अवतरेउ आज कमलधनी रे!
धागे–धागे धिन तागे–तागे तिन्।"

हवा थरथरा उठलि! मन का ऊपर काई नियर जमलि उदासी फाटि गइलि। अँजोरिया में झलमल–झलमल करहि पीपर के पतई–पतई नाचे लगली स। बूढ़ हाथ आ बूढ़ सुर के अइसन उठानि रहे कि उदास होके गिरल–ढहल समय जवान होके जइसे खड़ा हो गइल। ऊ पूरा गाँव के एगो अदेख भाव रहे, जवन पानी से बूड़ल सीवन पर गूँजे लागल। एगो भुलाइल भटकल कीमती वक्त बड़ा मोका पर लवटल रहे। लोगन के जनाये लागल कि जिअल खाइल अकारथ नइखे। अगाड़ी के शंका चलि ना गइलि रहे बाकी तबला का ताल का धक्का से तनिक देर खातिर फेंका जरुर गइल।

अकेले–अकेले, कुछ ठाड़े ठंड़ा दू तीन गो गीति चलली स। लोग जबरदस्ती बिस्वास करे कि ऊहे बिलास बाबा हवन, बाकी पता ना का बाति रहे कि मन कसकि–कसकि के रहि जात रहे।

"अब का गायकी होई?" तबला हटा के बिलास बाबा कहलन, "सब कुछु खतम हो गइल। बाढ़ि में नाहीं, एह नवका जमाना में बूढ़ि के सब कुछ बिला गइल।"

बइठकी बहुत उदासी में खतम भइलि आ झिरिहिरी वाली बाति ओह दिन फेरु उठत–उठल ले रहि गइलि।

दूसरा दिन सबेरे–सबेरे सगरे रामपुर गाँव में हल्ला हो गइल कि बिलास बाबा झिरिहिरी के ऐलान कइ देले बाड़न आ एह साल शिवपुर में दुलरुआ दुलहा बना के

चली। फेरु तइयारी खातिर झुंड–मुंड में छीट–छाट लुंगी वाला नवहा बाबा का पास जुटलन। मामिला पेंचदार हो गइल। केतना चुप्पी साधसु? केतना के का कहसु? झख मारि के दिन चढ़त–चढ़त ले फाटि के कहि दीहलन, "जो सारे कर तइयारी। बाकी झिरिहिरी अइसन–तइसन ना होखे के चाहीं।"

चउथा दिन घरी भर राति जात–जात ले पूरा जोम का साथे झिरिहिरी के जलूस पानी पर रेंगत बढ़ल शिवपुर का ओर।

गाँव–गाँव से बेमिसाल नाव, नेवता पर जमल रहली सऽ। ओह नावन पर गेस–बत्ती बरति रहे। झालदार चननी टाँगल रहे। झंडी आ रंगीन गुब्बारा सजावल रहे। नाव–नाव पर रंग–बिरंग के मनसायन रहे। चारि गो पटहुआ नाव पर चारि गिरोह नाचि जमल रहे। एगो पर गोंड़ नचवा, हुरुका बाजा वाला। गोपालगंज वाली नाव पर बढ़वन के पुरनकी 'बानी' वाला रामायन के पाटी। कई नाव नवकी रामायन के गवनई, छपरहिया से लेके फिल्मी धुनि पर बइठावल, एगो नाव पर 'सीनरयनी' वाली मीठ गवनई ई नाव चमटोल से आइलि रहे आ सभका ले बड़का तमासा एही नाव पर रहे कि धड़िया धड़ंग बिसना आगे दरी बिछावलि चउकी पर पोति के शंकर जी बनाके ठाढ़ कइल रहे। ऊहे डमरु, ऊहे तिरसूल, मृगछाला, रामलीला वाली जटा, गरदन में साँप लपेटले, जै हो भोले शंकर! पट्ठा का शान से मूरति नियर तानके खड़ा रहे, एगो हाथ ऊपर उठवले जइसे सभका के अभयदान देत होखे! सभ केहू चीन्हत कहाँ बा? लोग झुकि–झुकि के माथ नवावत बा। ऊ आशीर्वाद देत बा। बगल से नाव कटा–कटा के लोग देखे आवत बा, जय–जयकार होति बा, हल्ला होत बा, हँसी के हुरदंग मचल बा! बाकी भगवान–शंकर एकदम गुरु गंभीर बनल ठाढ़ बाड़न। अगली नाव पर बिलास बाबा बाड़न। ओह नाव के एनाउन्सर कुछ कहे चलत बा तबले माइके छोरि के बिलास बाबा खुद बोलत बाड़न, "शिवपुर के मेहरारु लोग सुनि ल जा। तोहन लोगन का शिवपुरी में आजु तलक ले शिवजी ना रहलन हँ। आजु एह बराति का संगे अवढरदानी महाराज आइल बाड़न। अपना–अपना के मनभावन बरदान माँगि लऽ जा!"

बाकी एह अगिली नाव पर से सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणा तब भइलि जब झिरिहिरी के जलूस गाँव का एकदम किनारे चोंहपि गइल। लाउडस्पीकर से आवाज निकललि, "काली बाबू कान खोलि के सुनि लीह हो!"

अइसन जनाइल कि बिलास बाबा के बोली लरखरा गइलि बाकी फेरु खोंखि खँखारि के ऊ अपना के सँभारि लीहलन। आगे कहलन, "सुन ल काली बाबू, हरीकिरिपा से बरिआति चहुँपि आइलि। लगनि कम बा। जनवास के इंतजाम करऽ। सुर्ती बीड़ी जल्दी से भेजवा द।"

ई घोषणा सुनि के नाव पर वाला लोग सजग होखे लागल। नाचि–गान अउरी जमि गइल। अगली नाव के पेट्रोमेक्स वाला हवा देके, पिन मारि के बत्ती तेज कइ दिहलसि। 'दुल्हा' के लोग चुचुकारे–सुहुरावे लगलन। अइसन न होखे कि ऐन मोका पर कूदि जाव! ओकर रंगीन झूल आ माथ क मउरी ठीक कइ दीहल गइल। 'छान' के चेक कइ लीहल गइल।

बैंडबाजा वाला द्वार–पूजा पर चले वाली धुनि बजावे लगलन। धुधुका बाजा धुधुकार बन्हलसि– 'गढ़ जीति लऽ, गढ़ जीति लऽ।' कुछ लोग छाता तानि के सचहूँ..... बरियाती बनि गइलन। रामबिलास बाबा आपन पगरी ठीक करे लगलन।

ओही घरी कौआली वाली नाव पर चलत गाना बन्द हो गइल आ छन भर रुकि के द्वारपूजा के गीति शुरू हो गइलि–

"आपन खोरिया बहार हो काली बाबू
आवेले 'दुलरुवा' दमाद।
बइठे के माँगे 'दुलहा' लाल गलइचा
लड़ने के माँगे मैदान।"

गीति सुनि के रोवाँ खड़ा हो जात रहे। अतना हँसी–खुशी के कोलाहल उठल कि बाढ़ि के दुख हेरा गइल। हारासाँकी लागल रहे कि के अगिली 'दुलहा आ समधी वाली नाव का बगल में काटि के आपन नाव भिड़ा देत बा!' जलसा आँखि आ कान में ना समात रहे। अलबत्त झिरिहिरी उठलि बा। टापि गइलि। अब फेरु का होई अइसन झिरिहिरी? राम बिलास बाबा का चारू ओर दिन मतिन अँजोर भइल बा।

बाकी रोशनी के ई इन्तजाम भारी गड़बड़ कइ दिहलसि। कुछऊ छिपल ना रहि गइल। कुल्हि चीज साफ–साफ लउकि जात रहे। फेरू ओके देखि के केहू कुछु कहे त ना बाकी भीतरे–भीतरे ना जाने कइसन लागे। लोग देखि के ई महसूस करत रहलन कि राम बिलास बाबा का चेहरा में ऊ खुद मौजूद नइखन। ऊ कतहीं हेरा गइल बाड़न। झिरिहिरी के त बरिआई से जोर मारि के जुटा दिहलन बाकी बेचारु ऊ पहिले वाला हुलास के कहाँ से ले आवसु? ●●

सुखिया

उमाकान्त वर्मा

चक्कर खात गोला नीचे गिरत रहे। पानी के तेज धार में बिखरल किरन तेज रोआवे वाली इयाद जइसन चमकत रहे। गाँव के मोजराइल सुखिया के मन से चाह के उज्जर मुर्दा चल फिर के कोना–कोना के झकझोरत रहे। कगार पर खड़ा सुख्यिा के आँख में समन्दर सिमट आइल। ऊ धुँआ के घुटन में रसे–रसे पसरे लागल। पलक ढँप गइल। सिमटल समुन्दर मन के रेगिस्तान में सुकठ गइल आ अचके रेगिस्तान में सूतल अभाग के ढेर सा मनहूस कउआ आ उल्लू, जाग गइलन स।

'ईहो कवनो बात ह। केकर लइकी आँख क पुतरी ना होखे। बाकी अइसनों कहीं होला कि लइकी के मन सिकहर पर चढ़ा दिहल जाय। चढ़ल दरियाव आ उमड़ल मन एक होला। हरियर ककरी के मोल मुड़ला में ह, पातर बेंत के मोल नवला में ह आ गमकत डाढ़ के तब्बे मोल होला, जब ऊ झुक जाय। कहलो गइल बा– "जनमते लइकवा, बियहउते कनियवा, जवने लौ लगाइ, तवने लौ लागी।"

माई के मुर उमड़ल–कटिया सुखिया जुठार देलस त का भइल? ईहो भाग ह सिरपतिया। एकरे खातिर दशरथ जी केतना दिन रोवत रहलन। जसोदा मइया भाखा भाखत रहली। लइका क मन त छन में चिनक जाला। लइका दुखी होला त सुनीं ला देवता–पितर तक खिसिया जालन।

दोसरे दिन।

सिरपतिया अपना बहिन से कहत रहे, "सुनले बहिना। कलमुँही के काल्ह माई मर गइलि। बाप साथ छोड़ देलसं। एगो भाई रहे, ओकरा के पहिलहीं भकोस लेलस। भला केकरा कुकुर कटले बा, जे एकर देख–भाल करे के भार अपना कान्हा पर लेके जानबूझ के जियते माछी निगले के कोसिस करी। पउरा निमन रहित त चलत–फिरत महतारी एतरे ना उठि जाइत आ ई कुलच्छनी अपना कंकाल महतारी के गोद में भूख के मारल निहचिन्त ओकरे छाती में सटल रहित। मुआ रामनाथ ले जाता ले जाय, हमनी के का? कपारे पड़ी त अपने आँटा–दाल क भाव मालूम हो जाई। थोड़ा सा सहर से का गिटिर–पिटिर सीख आइल बा, ओह दिन लेक्चर झाड़त रसे– तू सब न मदद करबऽ त का एगो गरीब के ठेकान ना लागी। बूढ़ रामनाथ अबहीं मरा नइखे गइल। चार आना पइसा बचल बा। आज ना पीही। डोम के दे दी। ना त अपने पीही आ सुख्यिा के माई के गंगा के छाती में सुता आई।"

.... सुखिया के मन मे मुड़ेरी पर गुलाबी चादर गिर गइल। जागल मनहूस कउआ आ उल्लू रंगीन चादर से अपना के सजा के नाचे लगलन। आँख के

समुन्दर फेर पसर गइल। किरन उतर के, अब जूही आ चमेली के गंध से सजा के ओकर कोमल धड़कन के बाँधे लागल।

एक दिन।

राम! राम! के आपन लइका के चूल्हा में झोंक दी। डाइन आ आदमी में कहीं कब्बो गांठ जुरल ह। अपना गाँव क ई लइका सब त दुधमुहां बाड़न स। कवनो के कुछो बुझाला? सब ओकरा खूबसूरती के आँधी में बहत जात बाड़न स। रात–दिन ओकरा घर के चारों ओर घिरनी जइसन नाचत फिरत रहेलन स। ऊ सबके का मालूम जे नागिन कहीं डँस ली त पनियो पीयल दूभर हो जाई। रामनाथ त ओह जनम के जिन्न होई जिन्न, जे अबहीं तक मुसरचण्ड अइसन घूमत–फिरत बा।

कुछ दिन बाद।

नींमन भइल जे चलि गइल। हम त आज मइया के पियरी चढ़ाइब, तुलसी चउरा पर दियरी बारब आ पीपर वाला बरम बाबा के खुस करे खातिर रात भर हरिकीर्तन कराइब। आज गांव के कोढ़ चलि गइल। ई लइका त छुछुन्दर रहलन स जे ओकर सादी काटे खातिर आकास से पाताल एक कइले रहलन स। सादी भइल त लाज–लिहाज छोड़ के ओकरा के पहुँचावे खातिर गाँव के सिवान तक चलि गइलन स आ बेर–बेर उसास ले के गावें स–

कइसे कटी अब रतिया हो राम मैना गइले बिदेस।
के अब अँचरा हिलइहें हो राम हँसि–हँसि भेजिहें सनेस।।

"..... ....पर दिदिया! सोच जिन। लइकन के खुमार ताड़ी जइसन होला। छनि में कपार धरेला त छनि में भुइँया लोटेला। समय त बड़ घाव भर देला। ई त कुछो हइए ना ह। समय आवे द डाइन के मंतर अपने आप उतर जाई। तोहार धनेसरो ठीक हो जाई। मोहब्बत, मोहब्बत कवनो चीज ह। मरद के कवनों साँस चाहीं जे रात में बाँह में बाँध ले आ अपना गरमी से ओकरा मरम के भिगो दे। चहबो करे त भीतर के तनाव से भी जले जाय सुख ना पावे। अरे मरल बेटा क दरद जब खतम हो जाला त तोहार बेटा, भी एक दिन आपन छाती में खिंचल ओकर लकीर के मिटा दी।"

सुखिया देखलस कि बिना आधार के बहत जिनगी जइसन लहर के हिलकोरा में नाव दलकत जात बा। मन के हर डाली पर ओकरा कउआ आ उल्लू के सोर जम के बइठल बुझाइल। घुटन के सेवार के हटा के ऊ मन भर उसास लेवे के कोसिस कइलस।

(उसास...?)

'आज मँगरु आई।'

'चुप।'

'हाँ! तोर देवर। खूब घुल–मिल के बात होला। कहेलिस कि हम त जनमे से टूअर हईं। दुःख सहत–सहत घाठा पड़ गइल, एसे जहाँ इचको सनेह मिलेला, बह जाई लें।'

अठन्नी भर हँसी; 'तूँ ही त, कहे लऽ कि नीमन आदमी हऽ। तोहार जान कई बेर बचवले ह आ इज्जत ओ घरी बचवलस जब आपन लोग मुँह लुका के अँचरा में हँसी के बहार लूटत रहे।'

हँ हँ रुपया भर, एही से त आज छोड़ के जात हईं। रात रही आ ऊ पूँ। गह के बात करिहे। देखिहे पीये में रचिको छूट न जाय।

'हम अकेले.... ....।'

खुलत हँसी आ फेर बोली में भोंपा के तेजी आ तनाव। 'मुँह बन्द रख ना त धौंकनी बना देब। मेहरारु क मोल चुप पियला में ह। सीता–सावित्री सब पियली, ऐसे सती कहल जाला। खुल ओतने जेतना हहीं, ना त हमरा से बुरा दोसर केहू ना होखी।

आ फेर सेर दो सेर गारी बेंत के मार।
सी–ऊ–सटाक, ताला जकड़ गइल।।

(उसास–2)

'केतना बेलस।'

देह लुजुर–पुजुर। चोली के बन्द टूटल। एने ओने खून छितराइल, साड़ी सनल।

भरपूर लात। 'बोलत काहें नइखस। अइसन ताकत बाड़े जइसे सहजे लील जइबे। बूढ़ चाचा रामनाथ के खात त देरिए ना लागल। अब गुमान केकरा पर। केकरा पर गरब के पाँख। उड़े के चाहर बा। तोरा अब बा के। अब ते हई का? गोबर के चोत। जे जब जेने चाहे तोरा के चिपरी जइसन थोप दे। अइसन महँगी में, जब सब चीज आकास छूअत बा रेकसा पूरा दिन खिंचलों पर नइखे जुटत। तोरा के भकोसे के कहाँ से आई?'

फेर लात। 'उठ हाली से पइसा निकाल, नाहीं त खाल उधार लेब। गरीब आदमियो के कहीं इज्जत होला। इज्जत त होला ओकरा जेकरा इज्जत ना होखे जे दोसरो के इज्जत लूट के अपना नंगापन के ढाँप के इज्जत वाला होला। सती बनु, सती। मरद के खिया के खुस रखु। हम कहत हईं। अइसन कइला पर भगवान तोरा के दोसर जनम में खास आपन मेहरारू बना दीहें।'

सप्..... सप्..... सप्।

रात में भोंकार पारत कुक्कुर जइसन फेंकरत आवाज।

धप्..... धप्..... धप्।

खन..... खन..... खन। चानी के पाँच रुपया खन से मुँह पर आ पड़ल। रुपया उठा के हँस के आसमान थामत, 'ओह! पाँच रुपया! भगवान तोरा के रोज बरक्कत देस। ऐसे चोट थोड़े लागेला हमार रानी। लछिमी चाहीं त उल्लू बनहीं के पड़ी। जानस ना कि लछिमी जी के सवारी उल्लू ह। तें कवनो खराब काम थोड़ कइले ह। दोसरा के दान दे, दोसरा के बहत कजराइल गंगा के बाढ़ के अपना में समेट ले ओकरा के जीए के साहस दे, आ ओ घड़ी भर जे समाज के बाढ़ से चाले, ऊ कवनो खराब काम थोड़े कहल जाई। ऊ त पुन्न क काम ह रे। आ अब त तोरा सबके कीमत बहुत बढ़ गइल बा। आज दूगो वकील साहब हमरा रेकसा पर बइठल रहलन। ऊ बतियावत रहलन कि समाज के ठीक से चले खातिर पतुरिया के रहल जरूरी बा। पतुरिया के बिआह के बात सुनि के आ सरकार के कड़ाई से पतुरिया के बिआह कर लेला के कारन आज घर में पतुरिया के राज हो गइल बा। बहिन भाई से, बाप बेटी से, भतीजा अपना चाची से आ बहिन के बेटा आपन मउसी से मरद मेहरारू वाला संबंध रख के उनका के पतुरिया बनावे में दत्तचित्त बाड़न। अइसन समय में तोरा अइसन दानी के कीमत केतना बढ़ जाता। जे ई रोग के फइले में रोकावट डालत होखे आ साथे हमनी जइसन लोग जे महँगाई के भट्टी में जा रहल बा, उनका के मरे से बचा लेत होखे। हम त समझींले काम कामे ह चाहे ऊ देहिं दान के काम काहे ना होखे। भीख माँगल बुरा ह। बाकी कुछ दे के समान लेहल, ई त समान के बनावल चाल के परचलन ह।'

काल्ह राजू आई। तोर सबसे सुन्नर देवर। ऊ तोरा के कम से कम सइ रुपया दी। नया–नया चटकल से आइल बा। अबहीं आपन हीनता के छिपावेला आ ओह लोगन के देखावेला जे ओकरा के पहिले हीन बूझत रहलन। कड़कत कागज के नोट निकाले में ओकरा कवनों दुख ना होखे। अपना आँख से बैंक से निकलल गड़ा नोट के काल्ह देखलीं।

गाँव के बँवारी में रात के करिया साड़ी गिर गइल। बजड़ा के खेत से सियार के आवाज नदी के मुर्दघटिया तक आवे लागल। सुखिया गदहा जइसन दुख के लादी उठवले खड़ा हो गइल। गाँव से जाए वाला आखिरी नाव भी चल गइल। नाव से अबहियो मल्लाह के तान गूँजत रहे–

सबे नचावत राम गुसाईं।
नाच नर मरकट की नाईं।।

सुखिया के बिल्ली जइसन आँख गाँव के ओर टँग गइल। दूर गाँव के टिमटिमात रोसनी ओकरा मुँह बवले लेखा लरकाई में सुनल राछस जइसन लागल।

सोचलस, ई गाँव ना रहित, मठ ना होइत, मठ के सुन्दर राजा जइसन मन रखे वाला महन्थ ना रहितन, ई सुन्दर संस्कृत, तन देला पर हर बात पचावे वाला समाज ना रहित त आज ऊ कहीं के ना रहित।' उसास से गति लेके ओकर पैर पहिले जइसन गाँव के ओर बढ़ चलल। पीपर वाला बरम्ह बाबा के पास पहुँच के ऊ ठकमल।

एगो करकस आवाज पैर के बाँध लेलस।

'के?'

'हम'

'सुखिया माई।' आवाज ठंढा गइल। आँख के नरम सनेह पैर के धो देलस। एगो सुरसुरी छा गइल सुखिया के गोर देह में– "माई, महन्थ बाबा के ईहाँ जा तानी का? जाईं माई! पूजा पाठ में महन्थ जी अपने के छोड़ केहू से मदद थोड़े लेलन। ई त अपने के सौभाग्य बा जे अइसन पिरीत अपने से लागल बा। ऊहाँ के त सब जगह कहीले कि ऊहाँ के अपने में योगमाया के दरसन करीलें।"

कुछ रूक के, 'अपने निहचिन्त रहीं। मइया अब राउर ऊ सहरी खसम राउर कुछ ना क सकी। अबकी आई त ए नदी में ओकर लास हमेशा खातिर

डूब आई। जेकरा पर लाला क किरपा हो जाय ओकर अंगुरी के पोर केहू छू दे त हमनी के ओकर आँख निकाल लीं। गाँव के जमींदार त अब अपने के नाम पर एगो मन्दिरो बनवावे जात बाड़न। अबहिएँ ऊ महन्थ जी के ईहाँ गइलन ह। आज कवनों समाज कल्याण के धरम जग्य बा। हम पाठी आ लबनी पहुँचावे गइल रहनीं हाँ।'

दूनों बढ़ के सुखिया के चरन छू के धूर के माथा पर लगा लेलस। जइसे थरमामीटर के पारा अचानक गिर जाय, सुखिया के लागत जइसे समूचे सरीर के केहू बरफ के पिचकारी छोड़ देले होखे आ ओकर व्यक्तित्व गिर के काफी ठंढा गइल होखे।

तनिके दूर ऊ गइल होई जे दूनों में से एक के स्वर सुनाई पड़ल – "भगवान माई के जुग–जुग जियावस। अगर आज ई गाँवे ना आइल रहती त बड़ महन्थ के मठ कब्बे टूट गइल रहित। ऊ रईस लोग आवल छोड़ दीत जेकरा किरपा से आज ई मठ जियत–जागत बा। रामदुलारी के मुअला के बाद ई माईये हई जेकरा अइला के बाद से ठाकुर बीर सिंह जे हमेसा पायल के झनकार आ आँख के रस में डूबल रहें, आज सब छोड़ के जादे समय मठ में बितावेला आ दिन रात पूजा–पाठ में बाझल रहेला। आपन मउसी के लइकी के कब्बो भगा के ले जाय वाला माई के एक किरपा खातिर हमेसा हाथ जोड़ले रहेला। माई के अइला से गाँव आ मठ दूनों के भलाई भइल, एकरा के के ना मानी।"

ठूँठ पेड़ जइसन सुखिया अब ऊहाँ ना रूक सकल। गति तेज हो गइल। बात इयाद आइल, 'देवता के कुछो आपन ना होखे। लोग भोग जगावेला भोगे खातिर। जेकरा के भोगल जाय, चाहे जेकरा जरिए भोगल जाय, ओकर आपन बिसात का ह, कुछो ना। अगर ह तऽ ईहे कि ओकर कवनों बिसात ना ह।'

मन के कउआ आ उल्लू धीरे–धीरे सूति गइलन स। बिल्ली जइसन आँख आ तनल पंजा ले ले ऊ मठ के नगीच पहुँच गइल। मन के गुलाबी चादर कठिया गइल। रेगिस्तान में हवा जोर से बहे लागल।

देवता जइसन लागे वाला कई दिन पहिले के रघू ठाकुर के बोल सरीर से टकराए लागल, 'ना जाने ई सुखिया माई कइसन बिया। रात में जब केवनों बाँह में बँधेले त कहेले कि भगत खातिर सरीर के कीनल आ बेचल के मोल का ह। मठ चले, हैजा से गाँव बचल रहे आ गरीब के आपन गरीबी के दूर करे खातिर रुपया मिलत रहे त माई सुखिया हमेसा हर रात कवनों बाँह में जाति, बरन, आ समय से परे बँध में कबहीं ना हिचकी। हाँ तऽ एक बार एगो अंक के ऊ गंध से भर सकी। एक बार एक सीता एके गो न अंक में जा सकेले, दूसर अंक के त सुन रहे के पड़ी। एक रात के सधवा आ विधवा होखल सदा बिधवा होखल से कहीं अच्छा होला। कसम ई बदले कि केहू के अगर दुख सुने के मिली त अंक में रहला पर भी अंक छोड़ के चल जाई!

मठ के दरवाजा से जब ऊ मठ में घुसल त मन के तनाव ढीला पड़ गइल आ ओंठ हास से भर गइल। मजबूत पैर आ हृदय लेले आगे बढ़त एतने बात दिमाग में आइल, सचो पहिला खसम के साथ के जिनगी आज के तुलना में कहीं नीमन रहे। ऊहाँ बिना कवनो रहस्य के सब खुलल रहे। समरपन ऊहाँ रहे। खरीद बिक्री के भी बात उहां रहे। पर साथे एगो बिसवास आ गरिमा रहे ओह समय। फरक एतने रहे कि आज जइसन ऊ देवता कह के पूजल ना जात रहे।

सवाल के राजहंसी कतार मन के आकास में बिछ गइल। नाविक के सुर अचानक ओकरा इर्द–गिर्द फिरे लागल।

सबै नचावत राम गुसाईं।
नाचत नर मरकट की नाईं।।

ऊ पहिल जइसन मठ में एने–ओने चक्कर काटत अपना सूते वाला सेज पर निढाल हो गइल जहाँ महन्थ के भेजल क्रम के सुरता करत एगो लोक कथा के धनी राजकुमार ओकर इन्तजार करत रहे। अपने आप अंक में बंधत ओठ खुलल आ गीत के कड़ी फूटल जे कबो ओकरे गाँव के तथाकथित गरीब राजकुमार आपन आकासी उड़त मनवा से अपना राजकुमारी के प्रेम जाहिर करे खातिर गाँव के सिवाने में गवले रहल–

कइसे कटी अब रतिया हो राम, मैना गइले बिदेश।
के अब अँचरा हिलइहें हो राम, हँसि हँसि भेलिहें सनेस।। ●●

देवाल

सुधा वर्मा

आज बारहवाँ दिन ह, जब उ खटिया पर पड़ल बाड़न। खटिया प पड़ल, खटिया के ओरचन नीयर उनकर जाँगरो ढील हो गइल बा। खटिया के ओरचन त कसलो जा सकेला, बाकि उनकर जाँगर? अब त उठहूँ के ताकत नइखे रह गइल। ना त ऊहे रहन जे एक दिन में 6 मील पैदल चलत रहन। हाथ में किताब के बंडल लेले दूकाने दूकान घूमत ना थाकत रहन। तब के बाते कुछ आउर रहे। तब आम के बगइचा से आम आवत रहे; आ आम दूध में घोर के खात रहन। बाकि धीरे–धीरे करके सब बिकाये लागल, छोटकू के डागडरी पढ़ावे में बगइचो बिकाय लागल तइयो अपना देह पर आसरा कइले रहन। उ आपन देह जोरा से बहुते काम कर लेत रहन। कहियो जब मन थाकि जाय त कहस कि उनकरा से अब काम ना होई। तब मलकिनी उनकरा के ढाढ़स बँधावस। मेहरारू के उ मलकिनिये कहत रहन। मलकिनी कहस– "चलें दीं जले चलता, अबहियें से काहे के बेटन.... के मोहताज हो जाइल जाव।" आ फेर उ कइसहूँ काम करे लागस।

मलकिनी.... मलकिनी का इयाद से उनका अँखियन से दू बूँद आँसू चू गइल। मलकिनी उनकरा के अकेले मझधार में छोड़ि के चल गइली। अब त एकदम बे सहारा हो गइल बाड़न, एकदम बेसहारा, केहू कतो ना। बुझाइल कि गरदन में कुछ अँटकल आवता। उ पुकरलन– "बुधना, ए बुधना!"

"का ह मालिक?"

"बुधना!" उ खटिये पर से चिचियइलन। देह त भोथराइये गइल रहे, साँसो बुझाय जे ओढ़ल होखे– "बुधन, उ आपन आँखि के धीरे–धीरे हिलावत कहलन, काहे दो मन नीमन नइखे लागत रे, ई अन्हरिया काहे के कइले बाड़े, तनी आजो त दिया जरा दे।" आ फेर तनी ठहर के कहलन– "आ सुन तनी चिलमिया भर के दे।"

बुधना पायताने बइठल उनकर झुर्रीदार चेहरा के देखत रहे।

"ना मालिक चीलम मत पींही, ना त खाँसी अउरू जोर पकड़ ली, आ फेर देह सम्हारे ना सम्हरी।"

उ उठ के बइठ गइलन आ कहलन, "अरे अब देह में रहिये का गइल बा, जेकर मोह करीं। खँखरी बूट के केतनो रगड़बे त का सतुआ निकली? अरे, पीये दे बुधना, अब ईहे त सहारा बा।"

"हँ मालिक!" बुधना निःसास छोड़ते कहलस आ उ उनकरा के चिलम सुलगा के उनकरा हाथ में धरा देलस। फेर पायताने जाके बइठ गइल। उ समझ गइल कि अब मालिक के अंदर नाव चले शुरू हो गइल। इ त नाव चले का पहिले, दोसर नाववाला सब के मीठ चाल देवे के छोट–मोट हिलकोर रहे।

उ चिलम का रोसनी में देखलस, मालिक का चेहरा पर केतना आड़ा–तिरछा रेखा पड़ गइल बा, जे केतना कहानी, केतना सवाल अपना में छिपवले बा, उ सवाल जेकर जबाब ना होखे, उ सवाल त हवा में टंगल रहेला। उ घबड़ा के आँख मल–मल के

देखे लागल। अन्हार जइसे भूत नीयर बढ़ल आवत रहे। बाहर हवा जोर–जोर से बहत रहे। उ मालिक किओर निहारे लागल। उहो ओकरे ओरि देखत रहन।

अपना ओरि देखत देखि के टोक देलन–

"का सोचतारे रे बुधना!"

"ना कुछ मालिक।"

"ना; कुछ त सोचते बाड़े।"

"मालिक, रउआ बीमार बानी, आ कोई आपन जन पास नइखे।...."

"हँ रे बुधना, बाकि आपन–आपन करम!" उ निःसास छोड़ते कहलन– "ना त जब कमात रहीं त सब केहू साथहीं रहत रहे, आ जब बजार से आईं त छोटकू ब केतना हुलास से पूछे 'बाबूजी, हई चीज ना ले अइनी ह' साँचो कहतानी बुधना, मन में बुझाय जे अगरबत्ती महँकता। आरे, घर अँगना त बाले–बच्चा से नू हँसेला। का से का हो गइल।"

फेर तनी ठहर के कहलन– "तोहरा से का कहे के बा–....। तू त सब जानते बाड़े।"

बुधना बोललस कुछ ना बाकि ओकरा मुँह से जनात रहे कि ओकरा ई सब बात नीक ना लागत रहे।

बुधना कुछ ना बोललस त उ हाथ में के चीलम सिरहाने ताखा पर राखि के फेरू लेट गइलन। बुधना उनकरा सूतल देखि के ओसारा में आके बइठ गइल आ बाहर अन्हार रेला में कवनो चिन्हार परछाँई खोजे लागल।

का दिन रहे, बुधना के दिमाग में सब बात एक–एक करके सनीमा के फोटू खानी उभरे लागल। तब मलकिनी जीयते रही। ओह घड़ी उ साते–आठ साल के रहल होई। बड़कु, बड़कू ब आ छोटकू सब कोई रहत रहे। बप्पा घर के सभे काम करत रहन। उ खाली टहल–टिकोरा करे। बप्पा ओकरा हरमेसा समुझावत रहस– "देख बुधना, हम त पाकल आम बानी, आज बानी काल्ह टपक जाइब। बाकि तोहरा ला कहतानी, नीमक खाके नीमकहराम मत करीहे ना त तोहर कबहूँ निस्तार ना होई। भगवान नीमकहराम के कबहूँ माफ ना करेलन। चाहे लाखों संकट आवे, मालिक मलकिनी के साथ कबहूँ नाहीं छोड़िहे।"

बुधना इ बात के गाँठि पार लिहले रहे। बाकि मलकिनिये पहिले साथ छोड़ गइली। छोटकू के अइला के थोड़हीं दिन बाद मलकिनी चल बसली आ ओकर बप्पा भी। फेर त माई से सून घर छोटकू के काटे दौड़े आ उ जोड़ तोड़ लगा के आ कुछ खेत–उत रेहन रख के बिदेश चल गइलन। बाँच गइलन बड़कू आ बड़कू ब। बड़कु बो भी भागहीं के रास्ता खोजत रही। उ त मलकिनीए से कै टक्कर लड़ चुकल रही बाकि ओह घड़ी छुट्टा साँढ़ ना भइल रही। बाकि अब त उहे सब कुछ रही। छोटकू के बिदेश गइला से आउरो लहरत रहत रही। आ फेर उहे भइल जेकर बुधना के डर रहे।

उ बजार गइल रहे नीमक लावे ला। लौट के अइलस त देखलस कि बड़कू आ बड़कू ब के साज–समान रेक्सा पर चढ़त रहे।

ओकरा के आवत– देख के बड़कू ब गरजल– "हई लीं! आइये गइलन सपूत!" आ कमर से चाभी के गुच्छा निकाल के घूमाके ओकरा ओर फेंक देली–

"हई ले। सम्हार आपन घर–दुआर, हम चलनी।"

उ बात नाहियों समझ के समझ गइल। हाथ में के नीमक जमीन प राखि के हबक के बड़कू ब के गोर पकड़ लेलस– "रउए नू एह घर के मलकिनी बानी, मत जाईं मालिक के अकेले छोड़ि के।"

बड़कू ब झपट के आपन गोड़ खीच लिहली आ तमक के कहली– "हँ–हँ रहे दे इ चोंचला। हम कहाँ के रानी आ कहाँ के राज–पाट। गुलछर्रा उड़ावे ला आउर लोगि आ मरे खपे ला हम। छोटकू क डागडरी पढ़ावे ला सब जर–जमीन बगइचा बेचा–खोचा गइल। जाये लगलन विदेश त खेतबो में से आधा बेंच गइलन। हमनी ला खाली उहे खेतवा रहे। हई मकनवा बुढ़वा नइखे देत। बुढ़वा मरी त करेजा प लाद के ले जाई।"

लोगन के आस–पास भीड़ बढ़ल जात रहे। बडकू एक नजर घर के ओरि देखलन आ फेर रेक्सा प चढ़ि के चल गइलन, त उ रेक्सा के पहिया के निसान देखत रह गइल। बुधना का अन्दर जइसे आग जरत रहे। हइसन बोली। आपन लुगाई रहित त गँड़ासा से मूड़ी काट दित बाकि दोसर के जनाना के का करी। एतना दिन ले मालिक कमइलन आ खाइल लोग आ जब सहर में नोंकरी लाग गइल त मालिक के बोझा कपाड़ पर लोग कहाँले लेबे जाव, त बहाना बना–बना के घर छोड़ दिहल।

लात से कुछु ठेंकल त देखलस कि नीमकवा छितराइल पड़ल रहे। उ मुड़ी लटकवले घर में घुसल त देखलस कि मालिक अँगना में काई का पास बेहोस पड़ल रहस। आ, ना जाने तेही घड़ी से उनकरा कवन रोग पकड़लस कि उ आज ले खटिये धइले बाड़न।

हवा अपना जवानी प रहे। बुधना अपना कान प चदरि लपेट लिहलस। भीतर से उनकर आवाज रेंगत आइल, "अरे बुधना, सुत गइले का रे?"

उ चिहुँक के उठल, "ना मालिक, कहीं का बात ह?" आ उनकरा गोरथारी जाके खड़ा हो गइल।

"अरे बड़ी जाड़ लागता रे, तनी कथरिया ओढ़ा दे।" बुधना कथरिया ओढ़ा देलस, कै जगह पेवन से सीयल।

उ थरथरात कहलन– "अरे, एकरा से जाड़ नइखे जात रे, हड्डी में जाड़ समा गइल बा।"

बुधना के आँखि तनी गील हो गइल– "मालिक एही से नू कहत रहीं कि रउआ छोटकू के पासे चल जाईं। उ त बेचारू कै बेरा वोलवलन। उ त खरचो भेज के कहले रहन बाकि रउए नू बेकार के एह जर–जमीन का मोहे ना गइनीं। ना रहतीं ना जा जान के जँवाल होइत।"

उ गरदन के कथरी खींचत कहलन, "अब तोहरो ला जान के जँवाले नू हो गइलीं रे।"

"ना मालिक!" उ अपना देहि प से चदर उठा के उनुकर देहि प डाल देलस, "रउरे नू हमर बाप–महतारी बानी?"

"हूँ..." फेर तनी ठहर के कहलन, "बुधना छोटकू के चिट्ठी ना आइल ह रे।"

"आइल रहे मालिक परसों।"

"तब तू हमरा से कहले ना," उ खुशी से काँपत स्वर में कहलन, "का लिखले बा, आवहूँ के बारे में लिखले बा? अब त हमार बेरा नजदीके बा, एही से लिखले रहीं कि आ जाइत त भर नजर देखियो लेतीं आ हइहें त एगो मकान बाँचल बा, बाप–दादा के निसानी, से ओकरा हवाले कर देतीं। कब ले आई?"

"दू चार दिन में आवे के लिखले बाड़न।" बाहर हवा राच्छस नियर कान फाड़त रहे। एके बेरा जोर से आवाज भइल, त दूनों आदमी चौंक गइल।

"बुधन, देख त देवाल गिरल का रे? हुनकर चेहरा बड़ा निरीह हो गइल। अब त पइसो नइखे जे मरम्मत करा सकब। अभी परेसाल नू उत्तर वाला देवाल मरम्मत कइले रहीं।"

बुधना तले उठ के चल गइल रहे। उ अपने मने बड़बड़ाइत रहन, "हे भगवान, छोटकू के का मुँह देखाइब। ईहो देवाल गिर जाई त फेंर कहाँ से बनी। ओकरा ला हम कुछु ना रखनी। उ लोग त आपन हिस्सा बरोबर लेके अलगा होइये गइल।"

बुधना हाँफते आके कहलस, "खपरवा गिर गइल।"

"अइसे मत कह बुधना, अइसे मत कह" उ काँपत रहन कि उनकर आवाज बुधना ना समझ सकल।

फेर तनी ठहर के कहलन, "अच्छा खाली छपरवे नू गिरल ह, देवलवा ना नू, बुधना इयाद बा नू इहें देवाल तरे छोटकु हमेशा खेलत रहे, आ फेर पढ़ाइ के दिन में ओहिजे पढ़त रहे। हमरा सन्तोष बा कि हम अपना करेजा के खून सूखा के भी छोटकु के एतना बड़ा डागडर बना देनी। अरे, पढ़ावे त बड़कू के भी चहनी, उ ना पढ़लन त हम का करीं।" 'बुधना', फेर जइसे साँस लेत कहलन, "छोटकू त बहुत बड़ डागडर नू बा। सुननी हँ कि अखबारों में ओकर नाम छपेला।"

"हँ मालिक।"

"बुधना, छोटकू एतना बड़ा आदमी हो गइल, बाकि हमरा के भुलाइल ना। हमरा के देखे आवता। अबकी आई त हम कहबि कि आदमी का अपन घर–दुआर न छोड़ेके, अब एहीजा आके डागडरी करो, एहीजा लोग जान जाई कि हम केतना बड़ा बेटा के बाप हईं। ओ घरी दुआर फेरू चमक जाई, ना रे!" उनकर आँखि चमकत रहे।

बुधना अंदरे–अंदर जइसे कुछ पीअत रहे। उ कतना दिन ले झूठ बोली कि छोटकू दू चार दिन में आ जइहें। साँच बात प कबले रंगीन परदा डाली। कबले छिपाओ कि छोटकु लिखले बाड़न कि पासपोर्ट ना बने से अभी उ 1–2 महीना का बाद आ सकीहें। उ सोचलस कि सब बात साफ–साफ कह दे। बाकी साँचो बात बोलल भट्ठी में चढ़हीं नीयर होला।

उ मालिक के मुँह देखि के चुपा गइल। खाली धीरे से ईहे कहलस कि "मालिक, सुति जाईं! कुछू सोंची मती।"

उ लड़िका अस चुपचाप कथरी ओढ़के पड़ गइलन। बुधना के अंदरो एगो नाव चलत रहे, बिना चाल के। उ बाहर दलान में खड़ा होके अन्दर निहारे लागल। ओकर मन बहुत उदास रहे। बाहर घटाटोप अन्हार रहे। बुधना सोचत रहे, अगर अन्हार फाट जाइत त आसमान के का जाइत?

उ घूम के देखलस, मालिक सूत गइलन, एकदम शांति रहे, बाकी इ शांति मीठ ना रहे, रहे इ कैक्टस उगावे वाला। फेर जोर से आवाज भइल। बुधना जाके देखलस, पीछे वाला देंवाल भी गिर गइल। उ एक छन देवाल के देंखत रहल आ फेर दउड़ के आके मालिक के पायताने खड़ा हो गइल। एक बार फाटल कथरी में से झाँकत उनकर पथराइल देह के देखलस आ फेर खटिया के पाउआ ध के निढाल हो गइल। ●●

दरबा

वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

रजनी के भावना के सहजोर धक्का लागल जब अपना सखी लोग के मुँह से ई बात सुन लेली कि ऊ जवना घर में रहेली, ऊ दरबा ह। कुछ देर ले उनकर हिरदया दरद के धुँआ से भरल रहे आ उजबुजाइल रहली। बाकिर ई हालत बहुत देर ले ना रह सकल। ऊ अपना के बटोर लेली। ऊ दरबा में रहेली त दोसरा के का बिगड़त बा? कोई महल में रहेला, त रहो, उनका खातिर उनकर इहे महल घर महल बा। सीसमहल। ई सोच के रजनी अपना के समझा लेली। काल के जहर बड़ा खराब होला, कुछ सुन लेला पर तकलीफे होला, एह से लोगन से कम मिले जुले के चाहीं। इहे सोच के रजनी पड़ोस में आइल–गइल बन्द कर देली। उनका नमस्ते भर से नाता अगल–बगल के सखी–सलेहर लोग से रह गइल। रास्ता में भेंट भइला पर नमस्ते कर लेस आ हालचाल पुछला पर हाँ–हूँ में जबाब देके आगे बढ़ जास।

रजनी के ठीक से इआद बा कि जब ऊ पाँच बरिस के रहली तबे उनकर बाबूजी ए घर में आइल रहलन। आ तबे से ऊ लोग ए घर में बा। मकान मालिक दत्ता बाबू, उनका बाबूजी के दोस्त हउअन, एही से ए मकान के ऊहे भाड़ा बा जे पहिले रहे। अगर ऊ लोग आज ए मकान के छोड़ देवे त चालीस रुपिया भाड़ा दे के रहे खातिर बहुत लोग तइयार बा। बीस रुपिया भाड़ा देला पर घर के के कहो, एगो कोठरियो मिलल असंभव बा। एगो मास्टर खातिर बीस रुपिया भाड़ा दे के मकान लेहल कवनो बहुत सुविधा के बात नइखे। कम कमाई में खर्चों चलावल आ लइकी के कालेज में पढ़ावल कम हिम्मत आ धीरज के बात नइखे। इहे सब सोच के रजनी अपना मन के समुझा लेली आ अपना के बराबर संतुष्ट रखेली। रजनी के मन में बहुत कम इच्छा जनमे। अगर कवनो इच्छा जनमतो रहे त ऊ आवे वाला काल्ह के मधुर कल्पना में डूब के, इच्छा बिसार देस।

आवे वाला काल्ह के बहुत चिन्ता–फिकिर रजनी के ना रहे। उनका ई पूरा भरोसा रहे कि आवे वाला कान्ह में ऊ, ऊ ना रहिहन जवन आज बाड़ी। आवे वाला हर पल उनकर आपन होई जवना के ऊ मस्ती में भोगिहन। ऊ बी0 ए0 में पढ़त बाड़ी। बी0ए0 पास करते उनका कहीं ना कहीं नोकरी लागिये जाई आ तब ऊ अपना बाबूजी के बोझा हलुक करिये दिहन, अपनो खातिर एगो नया जिनगी पा जइहन, जवना में सुख–आराम के हर चीज मौजूद रही। ऊ मने–मन ए नया जिनगी के सुख करे के योजना बना लेली। जब कमाये लगिहन त एगो लमहर पक्का के घर भाड़ा पर लिहन। ओ घर के सामने वाला कमरा में ड्राइंग–रूम बना के, ओकरा के नया दुलहिन लेखा सजइहन–सँवरिहन। दोसरा घर सब के बहुत बढ़िया से साफ सुथरा करके रखिहन।

ई सब हो गइला पर कवनो ना कवनो बहाना से अपना सखी लोग के आपन घर देखा दिहन। तब ओहू लोग के ई बात समझ में आ जाई कि दरबा में रहे वाला के निमनो घर में रहे आवेला।

ड्राइंग–रूम के सजावट आ दोसरा घर के व्यवस्था के रूप–रेखा, रजनी मने–मने बना लेली। ड्राइंग–रूम में एगो सोफा–सेट रखिहन आ एगो टेबुल रखिहन, जवना पर गुलदस्ता रही। ऊ रोज–रोज गुलदस्ता में ताजा फूल सजइहन। अइसे ऊ अपने कागज के फूल बनावेली बाकिर अपना गुलदस्ता में ताजा फूल लगइहन काहे कि उनका रसहीन, गंधहीन बनावटी फूल से प्यार नइखे। खिड़की आ केंवाड़ी के परदा के रंग आ ओह पर के बेल–बूटा के कढ़ाई के नमूना पहिलहीं तय कर लेली। ई सब बात के साथ अनजान में एगो अइसन बात उनका मन में जनमल जवना से ऊ पल भर खातिर अनचिन्हार सिहरन से भर गइली आ नया–नया सपना उनका आँखिन में टँगा गइल। ऊ एतना चाव से ड्राइंग रूम सजइहन सँवरिहन, पर्दा के बेल–बूटा बनइहन, घर के साफ–सुथरा रखिहन, बाकिर जब उनकर बिआह जोई, त उनको त ससुरा के घर के सजावट आ सफाई नू करे के पड़ी। विआह के बात मन में अइला पर एगो अनचिन्हार रूप मन का आँखिन में उभर आइल, बाकिर एगो सहजोर आँधी अनचिन्हार रूप के उधिआ ले गइल। रजनी उहँवे आके ठहर गइली जहवाँ पहिले रहली। उनका सामने अपना परिवार के अझुराइल स्थिति के साफ चित्र झलके लागल। अगर ऊ बिआह क के चल जइहन, त ए घर के साफ–सुथरा के करी, गुलदस्ता के फूल के बदली आ सब त सब उनका बूढ़ मतारी–बाप के रोटी बना के, के दी? ई सवाल उनका मन में आइल ऊ झँवरा गइली। उनका आँखिन में ठहरल रूप आँधी में उधिआ गइल आ ऊ सोचे लगली कि उनका सिवा ए दुनिया में मतारी–बाप के देखेवाला के बा? अपना मतारी–बाप खातिर उहे बेटा आ बेटी दूनो बाड़ी, उनका दूनो के जिम्मेदारी निभावे के बा। बिआह हो गइला पर उनका अपना पर कवनो अधिकार ना रही, फेरू भला ऊ कइसे मतारी–बाप के सेवा कर सकिहन, कइसे घर के सजा–सँवार सकिहन। ई सोचते–सोचते ऊ घबड़ा उठली। बिना कुछ सोचले फैसला कइली कि ऊ बिआह ना करिहन। जिनगी भर कुँआर रह के बाप–मतारी के सेवा करेके फैसला कर लेली।

कुछ दिन से रजनी के साफ–साफ बुझाये लागल रहे कि उनकर बाबूजी कवनो लमहर गंभीर सवाल में अझुराइल बाड़न। अपना बाबूजी के अझुराहट आ चिन्ता देख के रजनी बहुत घबड़ा गइल रहली। उनकरा घबड़ाये के कारण रहे कि ऊ ई बात ठीक से जानत रहली कि उनकर बाबूजी घरकच झंझट से घबड़ाये वाला अदमी ना रहलन, जरूर कवनो अइसन बात बा जवन उनका बाबूजी के मन के सुख सांति छीन लेले बा। उनका चेहरा पर बराबर उभरल रहे वाला लकीर, रजनी खातिर टेढ सवाल बनल रहे। ऊ हर पल ई जाने के कोसिस करत रहली कि आखिर बात का ह? उनका सवाल के जबाब ना मिलत रहे। खाली असगुन के नया–नया डेरावना सूरत नाचत रहे। असगुन के डेरावना सूरत देख के ऊ भीतरे–भीतरे काँप उठस।

एक दिन अचक्के में ऊ अपना बाबूजी आ माई के बतिआवत सुन लेली। उनका लोग के बतकही से रजनी के मन के बोझा हलुक हो गइल आ उनका दिल–दिमाग के छटपटाहट कम हो गइल। उनका जान में जान आइल जब उनका ई बात मालूम हो गइल कि उनकर बाबूजी, उनके बिआह के चिन्ता से एतना उदास रहत बाड़न, रजनी अपना से बतिअवली– "बाबूजी जब हमरा फैसला के जान जइहन त उनकर सब चिन्ता–फिकिर खतम हो जाई आ उनका मन के तूफान कम हो जाई। हमरा फैसला से हमहीं ना मइयो–बाबूजी के खुसी होई। बिआह हो गइला पर मेहरारू के सब आजादी खतम हो जाला, इहाँ तक कि अपना मन के अनुसार कोई के सेवा तक ना कर सके। जानबूझ के, भला के अइसन गुलामी किनी?" उनका अपना बात पर अपने हँसी आ गइल आ ऊ खूब खुल के हँस लेली।

रजनी बेफिकिर त हो गइली बाकिर उनका बाबूजी के हालत ना बदलल। उनका बाबूजी के उदासी आ दरद के परत मोट होत गइल। उनकर चिन्ता दिन पर दिन बढ़त गइल आ एगो अइसन समय आइल कि ऊ खटिया पकड़ लेलन, उनकर उठल–बइठल, चलल–फिरल सब बन्द हो गइल। रजनी रोज हिम्मत करके, अपना मन के लाज छोड़त अपना बाबूजी के

सोझा ई कहे खातिर जास कि उनका बिआह खातिर चिन्ता कइला के कवनो जरूरत नइखे। बाकिर उनकर हिम्मत बटोरल खतम हो जाय, जब ऊ अपना बाबूजी का आँखिन में पँवरत उदासी देखस, आ ऊ जब ई देखस कि उनका बाबूजी के चेहरा पर के अझुराइल लकीर आउर अझुरा जाय। ऊ अपना बाबूजी के सोझा से भाग आवस। एक दिन जब उनका मन के बेचैनी आ घबराहट बहुत गढ़ गइल त ओही हालत में अपना बाबूजी का लगे गइली आ साफ–साफ कहली–

"रउरा बेकारे फिकिर में पड़ल बानीं। हम फैसला कर चुकल बानीं कि रउरा लोग के छोड़ के कहीं ना जायेब। दोसरा के खूँटा में बन्हा गइला पर, हम रउआ लोग के सेवा ना करेब त हमरा मन के सान्ति ना मिली, हमार धर्म पूरा ना होई। हम बिआह ना करे के फैसला कर लेले बानीं।"

रजनी सब बात बड़ा सहज ढंग से कह गइली। रजनी के सहज ढंग से कहल ए बात के अजब असर उनका बाबूजी पर भइल। उनकर ई बात सुनते उनका बाबूजी के चेहरा के रंग एक–ब–एक उड़ गइल आ उनका आँखिन का कोर में ठहरल लोर बाहर आवे खातिर जोर लगावे लागल। उनकर बाबूजी, उनका के बहुत गौर से देखत, करवट बदललन। ऊ मुसकियाये के कोसिस करत कहलन– "बेटी पराया धन होले। लड़की पति आ सास–ससुर के सेवा करके मुक्ति पावेले, सास–ससुर आ पति के सेवे कइल ओकर धरम ह। तोहार बिआह कर देब त हम निश्चिन्त हो जाएब, हमरा मरे का बेरा कवनो तकलीफ ना होई। मतारी–बाप के जाँघ पवित्र तबे होला, जब ऊ लोग कन्यादान करेला।" कहते कहत उनका बाबूजी उदास हो गइलन आ उनका आँख से एक बूँद लोर टपक गइल। रजनी चकरा उठली। उनका अगर ई तनिको भर मालूम रहित कि उनका ए बात के एतना उलटा असर उनका बाबूजी पर पड़ी त ऊ कबो ई बात ना कहती। ऊ ई बात एह से कहली कि उनका, बाबूजी के खुस करे के रहे, उनका मन के चिन्ता दूर करे के रहे। ऊ लाख ई समझे के कोसिस कइली कि उनकर बाबूजी एतना उदास आ आउर दुखी काहे हो गइलन, बाकिर ऊ कुछ ना समझ पवली। कुँआर लइकी के भला ओह बूढ़ बाप के दरद के थाह का लागी, जेकरा जवान कुँआर बेटी बा आउर अपने लाचार हो गइल बा आ खटिया पकड़ लेले बा। रजनी बाप के सामने से, तेजी से रसोइया घर में चल अइली। ऊ रसोइया घर में आवते देखली कि चूल्हा पर के बोझल पथलकोइला के ताव झँवरा गइल आ ऊ एक बेर चूल्हा के गौर से देखत, चूल्हा पर, फेरु से कोयला बोझे लगली।

रजनी के बाबूजी के बेमारी बहुत बढ़ल जात रहे। रजनी आवेवाला काल्हु के कल्पना से भीतरे–भीतर ओह लकड़ी लेखा जरत रहली। उनका बाबूजी के चेहरा के पिअरइ आ आँखिन के नीचे के करिअइ डेरावन भइल जात रहे। अपना बाबूजी के बेमारी के चिन्ता से रजनी दिन–रात घबड़ाइल रहस। उनका कुछ समझ में ना आवत रहे। उनका दिन–रात ई बुझाय कि घर के पुरान छप्पर, उनका माथा पर झुकल आवत बा आ कब टूट के उनका माथा पर गिर पड़ी कवनो ठीक नइखे। ऊ बरोबर एही डर से डेराइल, सोच में पड़ल बेजान लेखा जहाँ बइठस तहवें बइठल रहस। उनका अपना देह आ पढ़ाई के कवनो फिकिर ना रहे। बुझाय कि ऊ जिनगी ढोअत बाड़ी आ ए जिनगी से इनका कवनो लगाव नइखे।

ऊ रोज–रोज बाबूजी से कहस कि कहीं त कवनो बढ़िया डाक्टर के बोलवा के रउवा के देखवा दीं। बाकिर रोज उनकर बाबूजी ई कह के टाल देस कि– "घबड़ाये के कवनो बात नइखे, सब अपने ठीक हो जाई। सर्दी–खोंखी में भला एतना घबड़इला के कवन बात बा। तुलसी जी के पत्ता आ गोलमिरिच का काढ़े से सब ठीक हो जाई।"

एक महीना से अधिका हो गइल, तुलसी जी के पत्ती आ गोलमिरिच के काढ़ा दिआत आ छाती पर गाय के पुरान घीव मलात, बाकिर कवनो फायदा नजर ना आइल। दिन पर दिन हालत गिरते जात रहे। मिले–जुले आवे वाला लोग से उनकर बाबूजी खाली इहे कहस कि हमरा बेटी के बिआह खातिर लइका खोज के हमरा के उबार ल लोग। सभे उनका के आसरा बन्हा के जाय, बाकिर ना हो सकल। कुछ लोग त एही डरे देखे आइल–गइल छोड़ देसल कि भेंटइला पर फेरू ऊ इहे बात पूछ दिहन।

ई बात सुन–सुन के रजनी के दरद आउर बढ़ल जात रहे। उनका अपना जिनगी पर तरस आवे

आ जब ऊ अपना बारे में सोचे लागस त उनका बुझाय कि उनकर जिनगी बेकार बा, उनका दुनिया में रहला से उनका मतारी–बाप के बहुत दुख उठावे के पड़त बा।

रजनी के जब अपना बाबूजी के बिगड़त हालत आ तकलीफ ना देखल गइल त ऊ एक दिन बिना कोई से कहले–सुनले डाक्टर के बोला ले अइली। डाक्टर उनका बाबूजी के बहुत ठीक से जाँच कइलन– "अबहीं हम कवनो दवाई ना लिखेब, पहिले इहाँ के खून जाँच करावल जाय आ छाती के एक्सरे करावल जाय, तबे हम दवाई लिखेब।"

ई राय दे के डाक्टर चल गइलन आ रजनी चुपचाप खड़ा भइल छप्पर में लागल मकड़ी के जाला निहारत रहली। रजनी के धिआन तब टूटल जब उनकरा बाबूजी के खोंखे के आवाज कान में पड़ल। ऊ घबड़ाइल अपना बाबूजी का लगे खड़ा हो गइली। उनकरा क डबडबाइल आँखि से देखत ऊ कहलन– "कहत नू रहनी हँ कि डाक्टर लोग कमाये खातिर बहुत लमहर–लमहर बात कहेला लोग, अगर एतना बात ना कहितन त उनका के बड़ा डाक्टर के मानित। तोहरा घबड़ाये के कवनो बात नइखे, हम अपने ठीक हो जायेब।"

"ना बाबूजी, अब राउर हम एगो बात ना सुनेब, रउआ आजे खून जाँच करावे आ एक्स–रे करावे चले के पड़ी।" ई कहत बीच में रुक के माई के ओर देखली, फेरु कहली– "माई, बाबूजी के कपड़ा बदलवा दे, हम तइयार होके आवत बानी, आज सब जाँच करा के काल्ह से ठीक से दवाई चली। आज बिहान करत–करत रोग बिगड़ल जात बा।" कहत ऊ उहाँ से झटका से अपना कमरा में चल गइली। अपना कमरा में से तइयार होके जब निकलली त देखली कि उनकर बाबूजी तइयार बइठल बाड़न आ उनका माई देवी–देवता के गोहरावत बाड़ी। ऊ बिना कुछ कहले बाहर निकल गइली।

बाहर लवट के कहली– "रेक्सा बोला ले अइनी, चलीं।"

उनका के भरपूर नजर से देखत उनकर बाबूजी उठलन आ उनका कान्हा पर हाथ रख के गते–गते चले लगलन।

रिक्सा पर बइठल लोग। रेक्सा जब बढ़त त रजनी गते से कहली– "बाबूजी, अपने के कहितीं त हम नोकरी कर लेतीं। बगल के बच्चन के स्कूल में हमरा नोकरी के बात पक्का हो गइल बा।"

ई बात सुनते उनकर बाबूजी कड़ा होके तन के बइठ गइलन। उनकर चेहरा आउर झँवरा गइल आ ऊ काँपत आवाज में कहलन– "हमरा जिअत जिनगी में तोहरा काम ना करे के पड़ी बेटी, जब मर जाइब तब त हम कुछ देखहूँ ना आएब। लोग हमरा के का कही? हमरा बेमारी आ मजबूरी पर केहू हँसी उड़ावे, ई हम सह ना सकीं। तोहरा मन में ई बात आइल कइसे?" ई सवाल पूछ के उनकर बाबूजी, उनका आँखिन में झाँक के उनका मन के भाव जान के कोसिस करे लगलन।

रजनी कुछ कहे के चाहते रहली कि रेक्सा एक–ब–एक 'एक्स–रे–क्लिनिक' के सामने रुकल। अपना बाबूजी के समझावे के चाहत रहली बाकिर उनका मौका ना मिलल। रेक्सा रुकते उनकर नजर एक्स–रे क्लिनिक के दुआरी पर बइठल मरीज के चेहरा पर गइल। मरीज के चेहरन के उड़ल रंग आ आँखिन में फइलल दरद के बदरी देख के रजनी काँप उठली। उनका बुझाइल ऊ रेक्सा पर से बेजान होके ढिमला जइहन। ऊ जल्दी से रेक्सा से नीचे उतर के, बाबूजी के हाथ पकड़ के नीचे उतार लेली। जब ऊ बाप–बेटी रिक्सा पर से उतरल लोग त मरीज सब एगो अजब भाव से उनका लोग के घूरे लगलन सन। मरीजन के अपना ओर घूरत देख के रजनी घबड़ा गइली आ उनका बुझाइल कि तनियों देर ले ओह लोग के सामने खड़ा ना रह सकेली। बाकिर अपना के कड़ा करत आ सब सवाल भरल नजर के चुभन सहे खातिर तइयार करत ऊ गते–गते आगे बढ़ गइली। जब ऊ मरीज लोग के लगे पहुँचली त उनका ओह लोग से अपनापन आ हमदर्दी मिलल। ऊ लोग उनका से तनिये देर के जान पहचान में बहुत बात पूछ लेलस लोग। ओ लोग से बतिअवला पर ई बुझाइल कि सभे एगो अजब निराशा से भरल बा लोग आ सभे के जिनगी के मोह गते–गते छूटल जात बा। ऊ ओह लोग से बतिआवत रहली आ के रह–रह के अपना बाबूजी के चेहरा पर के उभरल भाव के देख लेत रहली। उनका ई साफ–साफ बुझा गइल रहे कि दोसरा मरीज लोग लेखा उनके बाबूजी के मन में उहे सब बात भरल बा, ऊहो निरासा के समुन्दर में डूबत–उतरात बाड़न।

– जारी पृष्ठ- 65 पर

साहित्य अकादेमी कान्फेन्स हाल, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली मे ''भोजपुरी रचना आ आलोचना'' पुस्तक के विमोचन आ परिचर्चा

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी का अध्यक्षता में भइल परिचर्चा में विचार देत डा0 ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, डा0 अल्पना मिश्र, अजित दुबे, डा0 सुशील कुमार तिवारी

जनसत्ता, नई दिल्ली, 31 अक्तूबर, 2019

खबरों में शहर

'भोजपुरी रचना और आलोचना' का विमोचन

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 30 अक्तूबर।

हिंदी-भोजपुरी के लेखक डॉ अशोक द्विवेदी की पुस्तक 'भोजपुरी रचना और आलोचना' का विमोचन वरिष्ठ साहित्यकार और साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य विश्वनाथ तिवारी ने किया।

विश्वनाथ तिवारी ने इसे भोजपुरी साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी बताया। कथाकार डॉ अल्पना मिश्र ने लेखक की बहुआयामी रचनाशीलता और संवेदनात्मकता पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सर्जक-आलोचक की संज्ञा दी। ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने तीन खंडों वाली इस पुस्तक को काव्यशास्त्रीय दृष्टि से संपन्न और भोजपुरी साहित्य की विकास यात्रा से रू-ब-रू कराने वाली पुस्तक कहा। अकादमी सदस्य और विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष अजीत दुबे ने लेखक के चार दशकों के बहुमूल्य अवदान को रेखांकित करते हुए कहा कि भोजपुरी लेखन के समग्र सिंहावलोकन के लिए यह पुस्तक जरूरी है।

भोजपुरी रचना और आलोचना किताब का किया गया विमोचन

भास्कर न्यूज

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी सभागार रवीन्द्र भवन में हिन्दी-भोजपुरी के समर्थ लेखक डॉ. अशोक द्विवेदी की बहुप्रतीक्षित आलोचनात्मक पुस्तक भोजपुरी रचना और आलोचना का विमोचन ख्यातिलब्ध वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व अध्यक्ष साहित्य अकादमी आचार्य विश्वनाथ तिवारी द्वारा किया गया। उक्त अवसर पर परिचर्चा में सुप्रसिद्ध कथाकार डॉ. अल्पना मिश्र, डॉ.ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, संपादक समकालीन भारतीय साहित्य अकादेमी सदस्य एवं विश्व भोजपुरी सम्मेलन राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत दुबे तथा विचारक लेखक डॉ. सुशील कुमार तिवारी आदि ने अपने विचार प्रकट किए। कवि एकथाकार और भोजपुरी पत्रिका पाती के संपादक डॉ. अशोक द्विवेदी की इस पुस्तक को मुकम्मल आलोचना और विमर्श की किताब बताते हुए आचार्य विश्वनाथ तिवारी ने इसे भोजपुरी साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी बताया। डॉ. अल्पना मिश्र ने लेखक की बहुआयामी रचनाशीलता और संवेदनात्मकता पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सर्जक आलोचक की संज्ञा दी। ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने तीन खण्डों

वाली इस पुस्तक को काव्यशास्त्रीय दृष्टि से संपन्न और भोजपुरी साहित्य की विकास यात्रा से रूबरू कराने वाली पुस्तक कहा। अजीत दुबे ने लेखक के चार दशकों के बहुमूल्य अवदान को रेखांकित करते हुए कहा कि भोजपुरी लेखन के समग्र सिंहावलोकन के लिए ये किताब द्विवेदी का महत्वपूर्ण अवदान है। वहीं विषय प्रवर्तनन और संचालन डॉ. सुशील तिवारी ने किया।

डा0 कमलेश राय के उ0प्र0 हिन्दी संस्थान से उनका नया काव्य संकलन पर 'राहुल-सांकृत्यायन' पुरस्कार से सम्मानित कइल गइल

डा0 अर्जुन तिवारी के विद्याश्री-न्यास' वाराणसी से 'पत्रकारिता-सम्मान मिलल

कोलकाता में कुमार सभा पुस्तकालय 'शताब्दी समारोह' में श्री अनिल ओझा 'नीरद' के राज्यपाल-द्वय का हाथे सम्मानित कइल गइल

लाल माटी, गौहाटी (असम) का प्रेक्षागृह में रंगकर्मी महेन्द्र प्रसाद सिंह के चर्चित नाटक ''बबुआ गोवर्द्धन'' के नाट्य मंचन

स्व0 शम्भुनाथ उपाध्याय-जयन्ती समारोह, टाउनहाल, बलिया के कुछ झलकी

रजनी एक्स–रे कराके जब घरे लवटली, तब रह–रह के उनका मन में मरीजन के बात आ मन के उदीस नाचे लागत रहे। एगो अइसन तूफान उनका दिमाग में उठत रहे जवना में उनका आवेवाला काल्ह के सपना आ बिसवास उधिया जात रहे। ऊ अपना के काम में बझवले रहे खातिर, छप्पर में लागल मकड़ी के जाला साफ करे लगली आ किताबन पर जमल धूर के पतर साफ करे लगली।

रजनी एक्स–रे प्लेट आ खून के रिपोर्ट लेके, दवाई लिखवावे डाक्टर किहाँ पहुँचली। डाक्टर के बइठका के दुआरी पर पहुँच के उनकर गोड़ लड़खड़ाये लागल आ ऊ दुआरिये पर रुक गइली। अपना के भीतरे भीतर टटोरली। उनका ई बुझाइल कि उनकर हिम्मत पस्त पड़ गइल बा आ ऊ डाक्टर के सामने ना जा सकस। उनका रह–रह के ई विचार आवत रहे कि उहाँ से भाग जास बाकिर ऊ अइसन ना कर सकली। हिम्मत बटोरत ऊ झटका से डाक्टर के बइठका में बढ़ गइली।

डाक्टर के प्रणाम करत काँपत हाथ से एक्स–रे प्लेट आ रिपोर्ट उनका ओर बढ़ देली। डाक्टर एक्स–रे–प्लेट आ रिपोर्ट लेत भरपूर नजर से रजनी के देखलन आ फेरु रिपोर्ट आ प्लेट के देखे लगलन।

रजनी मने–मन देवी–देवता के गोहरावे लगली, मनौती मांगे लगली। डाक्टर दवाई लिखे खातिर कलम खोलत कहलन– "हम दवाई लिख देत बानी, मरीज के ठीक से इलाज करावे के पड़ी। दवाई से अधिका मरीज के संजम के जरूरत बा। मरीज के दूध, अंडा, फल आ दोसर पुष्टई वाला खाना देबे के पड़ी। एक महीना ले चलल–फिरल, उठल–बइठल सब बन्द रही। सब बात पर पूरा धियान देला पर भगवान चहिहन त उहाँ के बहुत जल्दी अच्छा हो जायेब।" ई सब कह के डाक्टर दवाई लिखे लगलन। उनका बात के कइसन असर रजनी पर भइल, ऊ ई ना देखलन।

रजनी के चेहरा पर करिया रंग के एक परत लेपा गइल आ उनका आँखिन में डर के डोरी तना गइल। रजनी घबड़ाइल काँपत आवाज में पुछली– "डाक्टर साहेब, बाबूजी के कवनो खराब बेमारी हो गइल बा का?"

डाक्टर दवाई लिख चुकल रहलन। ऊ आपन माथा ऊपर उठवलन आ रजनी के उदास आँखिन में झाँकत कहलन– "घबड़ाये के कवनो बात नइखे। दवाई ठीक बेरा पर द आ मरीज के संजम पर पूरा धियान रख, भगवान चहिहन त जल्दी रोग दूर हो जाई।" ई कह के डाक्टर दवाई के पुरजी बढ़ा देलन।

दवाई के पुरजी काँपत हाथ से लेत रजनी अँचरा के छोर से आँखिन के टपकत लोर पोंछे लगली।

उनका के रोअत देख के डाक्टरो तनी देर खातिर उदास हो गइलन। ऊ अपना मन के भाव के दबावत कहलन– "एगो बात कहे के त भुलाइये गइनी हँ।" उनकरा ए बात पर रजनी कुछ बोललीं ना, ऊ खाली नजर से डाक्टर के देखे लगली।

डाक्टर कहलन– "मरीज के साफ–सुथरा हवादार कमरा में रखल जरूरी बा। ई रोग गन्दगी आ धूर–गरदा से बहुत बढ़ेला। जेतना जल्दी हो सके, घर बदल दऽ आ एगो साफ–सुथरा हवादार घर भाड़ा पर ले ल।"

"साफ–सुथरा हवादार घर?" लमहर साँस लेत, रजनी डाक्टर के बात के अजब भाव से दोहरा देली।

अपना बात के अइसे दोहरावत देख के डाक्टर सवाल भरल नजर से रजनी के ओर देखे लगलन। डाक्टर कुछ कहे चाहत रहलन कि रजनी झटका से डाक्टर के बइठका में से निकल गइली। बाहर अइला पर फैरू ऊ मने मन डाक्टर के राय दोहरवली– "साफ–सुथरा हवादार मकान?" ई दोहरावते उनका बुझाइल कि उनका माथा पर उनका घर के झुकल छप्पर अररा के गिर गइल आ उनकरा कान में नोनिआइल भीत के धमाका भर गइल। ऊ डर के मारे अइसन चिंखली कि अगल–बगल के लोग उनका ओर घबड़ा के देखे लागल।

रजनी के डेग आगे ना बढ़त रहे, उनका बुझात रहे कि उनका चारों ओर कुहा बढ़ल आवत बा। ऊ कसहूँ–कसहूँ अपना के बटोरत आगे बढ़ली। कुछ डेग आगे गइला पर फेरु पीछे मुड़ के डाक्टर के बँगला के ओर पथराइल आँखिन से देखली। उनकर नजर बँगला पर से हटल ना कि उनका कान में उनका सहेली लोग के बात गूँज उठल। ऊ घबड़ा के आँख मूँदत बुदबुदइली– "ऊ साँचो दरबा में रहेली। दरबा में, जहाँ से निकले खातिर चिरई पाँख फड़फड़ावत रह जाले।" ●●

मिरिगजल

कन्हैया सिंह 'सदय'

अइसे त मोहल्ला में तीन–तीन गो होटल बाड़े सन। बाकी, हमार मकसद जवना होटल से बा, ओकरा दुआरी प 'अपना होटल' के साइन बोर्ड लटकल बा, उहां जवना दरजा के लोग खालें–पीयेलें ओमे जियादातर कम पइसा पावेवाला करखनिहां भा रेक्सा, टमटम, ठेला बोगैरे जेकरा नांव के उपनाम होला सामिल रहेलें। होटल के मालिक जीतू, तेकरा के उनुकर गाँहक प्यार से 'दा' कहेलें, कबो इंडियन कास्टिंग लिमिटेड के फायरमैन रहलें। एको दिन ओजा के कुपला फरनेस – जेकरा खून के बिना लाल ना होत रहे, कंपनी के गंदा भँवजाल उनुका के केतना लहूलुहान क देहलस, जानत बानी काहें?

ओघरी जीतू के हाले में बियाह भइल रहे। सुनिले, पूर्व जनम के पुन्य से सुन्नर घर आ घरनी मिलेले। जीतू साँचो ओ जनम के बहुत बड़ महात्मा होइहें, ना त चान सूरूज के जोत नियन सूरत के मूरत सोना उनुका कइसे मिलिती। जीतू खुशी से पागल हो गइल रहलें। एक इयोर जहाँ टीस से उनुकर साथी–सँघतिया मरूवाये लागल रहलें, दोसरा इयोर दोस्ती के हाथ बढ़ावत नया लोग बढ़ियाये लागल रहलें। बाकी, जीतू त अपने के बिहगड़ा, ऊ हर हालत में सावधान रहलें।

कुछेक दिन बाद सालाना–तरक्की के समे आइल। जीतू का ई पूरा उम्मेद रहे जे अबकी उनुकर तरक्की होके रही। विभाग में सबसे पुरान आ काम के जानकार ऊहे त बाड़ें। आ साहेबो खुश बाड़ें तब का चाहीं। बाकी, भइल कुछ दोसरे। रउरा सोचत होखब– तरक्की ना भइल होई। राउरो सोचल ठीक बा। बाकी, काहें? ई रउरा ना बता सकीं। रउरा सोचत होखब– हम कहानी बढ़ावे के मसाला तइयार क रहल बानी, जवन बकवास के सिवा आउर कुछ ना होई। खैर, जे सोचीं, हम लाचार–बानी, अब कारन सुनवला बेगर एको डेग आगे ना बढ़ेब।

एक दिन साहेब जीतू के अपना ऑफिस में बोला के कहलें– "जीतू, अबकी तोहार तरक्की हो रहल बा, काल्ह ले कागज तेयार हो जाई। कवनो कुशल कारीगर के तरक्की भइला प हमरा बेहद खुशी होला। आज त हम बहुते खुश बानी, ... सुनऽ हम चाहत बानी जे आज तू सपरिवार हमरा बँगला पर छव बजे साँझि खाँ आवऽ। हम तोहरा लोगिन खातिर एगो भोज के इन्तजाम कइले रहब। आरे, तोहार खुशी हमार खुशी, आ हमार खुशी तोहार खुशी, कहऽ.... ठीक बा कि ना?" जीतू कुछ ना बोललें त थेंथर अइसन फेर उहे कहलें– "....तब, बोल आवत बाड़ऽ नू?" आ सवाली नजर से ताके लगलें।

"बाबू, हमार मेहरारु केहू का घरे ना जाव, कुछ कड़क–मिजाज हीयऽ, ओइसे कहीं त अकेले हमहीं आधा घंटा खातिर आ जायेब, जियादा देर ले हमार

कहीं रोकलो.... ओकरा पसंद ना परे। ओइसे एह सभ के जरूरते का बा, रउरा त खुश बड़ले बानी।" जीतू जबाब दिहलें।

"हम ना जानत रहनी हाँ, जे तूँ एतना घमंड से बात करबऽ ना त बोलवलहीं ना रहितीं। बाकी, अब त तोहरा आवहीं के परी। दू पइसा के मेहर प एतना घमंड.... सोचलऽ एक बेर फेर...." ऊ तमक के आँख चमकावत कहलें।

"बाबू, घमंडी हम अपना के बानी आ निमन केहू अपना के। केहू किहाँ भीख माँगे नइखीं जात।" जीतू के आवाज कुछ तरख रहें।

"अच्छा, अब तू जा सकेलऽ।" साहेब के एह आवाज के साथे जीतू उठके ऑफिस से बाहर चल अइलें। दोसरे दिन पता चलल कि उनका सहायक के तरक्की हो गइल। अब ऊ उनका ऊपर के चार्ज मैन हो गइल रहे। जीतू आग–बबूला हो उठलें। ऊ अपना विभाग के सजे कामगारन के बोला के एगो मीटिंग कइलें। बात अगे बढ़ल आ हड़ताल हो गइल।

एगो सफल हड़ताल! फरनेस के आग बुताये लागल। ढलाई बंद हो गइल। आखिर, आजिज होके मैनेजमेंट का मजदूर यूनियन के नेता से समझौता करेके परल। कंपनी का मजदूरन के कुछ जायेज माँगन के साथे जीतू के तरक्कियो के कागज देबे के परल। दू दिन खातिर मजदूरन में खुशी के लहर दउर परलि। जीतू के इज्जत त देवतो से बढ़ गइल रहे। बाकी उहे भइल– "बरियार हारे मुँह में मारे।" साँझि खां जब ऊ घरे आवे खातिर तइयार होत रहलें, पिउन उनुका हाथ में एगो कागज थम्हा गइल, लिखल रहे– "डिस्चार्ज लेटर....।" ऊ आगे आउर ना पढ़ पवलें। जमीन नीचे से खसके लागल आ ऊ एगो अइसन दूनियाँ में परवेस करे लगलें जहाँ खाली अन्हार रहे, बस चारु ओर अन्हार....। कुछ देर बाद जब होश आइल त ऊ फेर पहिलका बात दोहरावे के सोचलें। बाकी, बुझाइल– अब मजदूरन में ऊ पहिलका जोस नइखे रह गइल। सभे आपन माँग पाके अहथीर हो गइल बा। अब आउर कवनो दोसर उपाय ना देख के ऊ लाचार फेर साहेब के लगे गइलँ आ आपन डिस्चार्ज वापस लेबे के निहोरा कइलें।

साहेब मुस्कियात कहलें– "अब बुझाइल नू हड़ताल के मजा...। जीतू ई डिस्चार्ज अब तोहर मेहरारुवे वापस करा सकेले। ई तोहरा बस के बात अब नइखे रह गइल तूँ इहाँ से जा सकेलऽ।" जीतू खउल गइलें, उनकर मन कइल जे लगले–कुर्सी से खींच के ओह राक्षस के गटा–गटा तूरि देस। बाकी, का सोचके पसेना–पसेना भइल घरे अइलें आ साँचे–सांच सभ बात सोना से सुनवलें। ऊ देखलें फरनेस के सजी लोहा पघिल के खून हो गइल बा। सोना ओमें खाड़ होके चिल्लात बिया– "अगर तूँ साँचो हमार मरद हउव त ओह पिशाच के छट्ठी के दूध इयाद कराके आवऽ ना त हमार मुँह ना देखबऽ.. ..। जवन तोहार अइसन बेइज्जती कइलस ओकरा के तूँ असहीं छोड़ के कइसे आ गइलऽ, आज हम....।" "बस सोना, बस... अब कुछ मत बोलऽ... अब कुछ मत ....।" ऊ चिल्लइले आ जमीन प गिर परलें।

देर कइला से का फायदा? दोसरे दिन जीतू कंपनी से आपन हिसाब–किताब लिहले आ फेर साहेब के ऑफिस में एुकलें। ऊ टेबुल पर गोड़ ध के सिगरेट टानत रहलें। एकरा पहिले कि ऊ कुछ पूछस जीतू चटे उनका के उठाके जोर से जमीन प पटक देहलें। फेर, धोबी जेतना कपड़ा के फिंचाई ना करे, धुनियाँ जेतना रुई के धुनाई ना करे ओतना ऊ अकेले बाई के झोंक में साहेब के क देहलं! अब ऊ होस सम्हरलें त देखलें साहेब बेहोस होत रहलें। ऊ एक चेता थूक उनका मुँह प फेंकत कहलें– "नालायेक, जो अब तोरा के छोड़ देत बानी। बाकी, ई खबर जो पुलिस में चहुँपल त जान ना छोड़ब।" आ सदा खातिर ऊ कंपनी से बाहर निकल गइलें।

जीतू का पाँच बेकतिन के एगो खनहन परिवार बा, जवन होटल के पीछिला ढाबा में रहेलां। सबसे बड़की लइकी दस साल के बिया– जवन महतारी प परल बिया। लड़िका दूनू सात–चार साल के होइहें सन। सोना, जेकरा के देख के कबो हमरो पिकासो के चित्रकारी आ खुजराहो के कलाकारी इयाद परे लागे। सोचीं– दादवा केतना भाग्यशाली बा एकरा टेढ़–बकटेढ़ चेहरा पऽ धसल चेचक के दागन के रूखराई भरे खातिर चंपा के फूल नियर–गुलाबी रंग के केतना सहेके परत होई.... आ एगो बेबुनियादी खिंचाव से हम बदहवास ओने भागल लागे रहनी। केतना अच्छा होइत जो ऊ हमार....।

एक दिन असहीं सोचत रहनी कि चाय के

पियाला हाथ से छूटि गइल। एगो शैतान झनझनाहट के साथ कमार कपड़ा खराब भइल देखके जीतू गुंडेरत कहलें– "हरिकेश बाबू, हम रउरा के जानत बानी। अपना बाबूजी से एह होटल के बारे में पूछ लेब। हम जियादा त ना, बाकी एह होटल के बारे में एतने कहेब– इहाँ 'बाउर नजर' राखे वाला के आँख निकाल लिहल जाला।" आवाज के धमकी से लगाव रहे, हम सचेत हो गइनी।

आपन नाँव उनुका मुँह से सुनके सकपकात कहनी– "जीतू, तू हमरा के गलत समुझ लेहलऽ। तोहरा लगे सुन्दरता मनी बा एकर मतलब ई ना जे तू हर देखेवाला के आँख निकाल लेबऽ। तोहरा मन में सबका खातिर संदेह बा, पाप बा, एह से तूँ दोसरे के अपने अइसन समुझत बाड़ऽ। आज हमरा खातिर तूँ जवना 'बाउर' सब्दी के परयोग कइले बाड़ऽ, ओकरा से ना खाली हमरा अपमान होखत बा, भले एकरा के बनावे वाला ओह महान कलाकारो के हो जात बा जवन दयाबस दुनियाँ से कहले बा– 'जागऽ हे मानव! आँख खोल के देख त सहीं, तोहरा खातिर हम का–का रचले बानी.....।' खैर, छोड़ ई सभ। आज से हम एजा कबो ना आयेब।" आ हम एक रुपिया के नोट उनका गद्दी प फेंकत होटल से निकल गइनी। अब हम आपन राह बदल चुकल रहनी। जो कबो ओने से जइबो करीं, त आँख बचा के झटक जाईं।

बाबुजी बतवनीं– "ओह होटल से पहिले उहाँ जवना शिवा के मनीहारी के दोकान रहे, आज ऊ 'शिवानन्द ज्वेलरी' के मालिक बा। बाप पल्लादारी करत रहे। सामने के छोकड़ा कहाँ से कहाँ निकल गइल आ एगो तूँ लोग बाड़ऽ....।" मन त रहे कह दीं– जिनिगी भर लोअर स्कूल के मास्टरी कइलो प बाबा के ताइदी से बनल घर कबो ममरमत ना करवा सकनी आ हमरा के घूसत बानी। बाप के सुख त जननी ना, जे का होला। होस सम्हरला के बाद चाचा के निस्तानी भइला के फायदा उठवनी। ना त सिंधु, मुन्ना आ नीति अइसन हमहूँ का सतवां से बेसी गइल रहिती? फेर उनुकर सिपारिस..... एल0डी0सी0 के सरकारी नोकरी.... तबादला आ पिता सुख जवन आज जानदार छुटी अस छिलत बा, कल्पनो से दूर हो जाइत। बाकी, आवाज कंठ ले आके अँटक गइल।

ओह दिन ऑफिस से जात रहनीं कि केहू चाल कइल.... "हरिकेश बाबू.... ए हरिकेश बाबू....।" पीछा घुम के देखनी, उहे जीतू के पहचानल आवाज रहे। हम अनसुना अस तनी आउर आगे बढ़ गइनी, तले ऊ फेर चिल्लइले– "ऐ बाबू साहेब, आरे का जी? रउरा त बेलकुले खिसिया गइल बानी.... आईं.... आईं..... एतना खिसियइला से कइसे काम चली।" हम तनी झार के जबाब देहनीं– "जीतू, हम ऊ गँहकी ना हईं, जवना के तोहरा तलास बा.... हम आन्हर नइखीं होखे चाहत....।"

"रउरा के आन्हर के बनावत बा, अच्छा जाये दीं जवन गलती भइल ओकरा के माफ क दीं, असल में नीमन–बाउर के पहचानल आज के दूनियां में बड़ा कठिन हो गइल बा। दूध से ओठ जरला प मट्ठा फूँक के पीयहीं के परेला। मेहरारुवे सभ बउवाल के घर बाड़ी सन। भगवान गरीब के सुनर मेहरारु जन देस, उहे अच्छा....। जीतू के आवाज में नरमी रहे।"

"जीतू मांफी त दरअसल हमरे माँगे के चाहत रहे। बाकी, का कहीं कबो–कबो हमहूँ जरुरत से जियादा कड़क मिजाज हो जाईंले। मंगावऽ चाय आज पीये के जाईं....।" कहत हम होटल में जाके बइठ गइनी।

"मनुवाँ..... जल्दी से चाय बनवाके ले आव, आ माई से कहिहे– बाबू साहेब आइल बानीं।" मनुवाँ भीतर दउर गइल। एतने में बुचिया टेबुल प साफी मारे लागल। हम पूछलीं– "जीतू, ई मनुवां, लखना आ बुचिया तोहरे लड़िका हउवन सन?"

"रउरा एकनी में संदेह बा का?" ऊ मुस्कियात सवाल कइलें। हम लजात कहनी– "हम ई थोरे कहत बानी। हमार मतलब बा एकनी के जिनिगी काहें खराब करत बाड़ऽ, अभी पढ़े–लिखे के समे रहल ह।"

"मजबूरी बा बाबू साहेब, पूरा परिवार जो होटल में ना खटे त जीयल मोहाल हो जाई। सोचनी जे घरहीं कवनो मास्टर जी के राख के कुछ पढ़ा–लिख देब। बाकी केहू पचास से कम माँगते नइखे। एह महँगाई में पचास रुपिया खाली पढ़ाई प कहाँ से खरच करेब। होटल से आमदनी के बिसाधे केतना बा। ई त जीये–जीयावे के होटल ह। रउरा त देखते बानी इहें दोसरा होटल में डेढ़ रुपिया में एक प्लेट खाना मिलत बा, आ हम एक रुपिया में भर पेट खियावत बानी। खाहूँ वाला त उहे लोग बा,

जे जानवर अइसन दिन भर खटेला, तबो खाये भर के पइसा ना पावे।" उनुकर आवाज कुछ भरकल जात रहे। हम बीचे में टोकके कहनी– "जीतू, इहे त आदमी के सबसे बड़ समस्या बा कि लोग बस कसहूँ अपने खातिर– आम आदमी के जिनिगी में बोलेके मोके कहाँ रह गइल बा...।" अतने में मनुवां चाय लेके आइल, आ सामने राख देहलस। अभी चाय पीयहीं जात रहनी कि ओने से सोना आँचर से हवा हाँकत बाबर्चीखाना से बाहर अइली। हमनी के नजर एकबारगी टकराइल आ जे झूकल से फेर–। हम एक कसमकस के तूरे खातिर बात के आगे बढ़वनी–

"अच्छा जीतू, अगर हम एकनी के बिना रुपिया के पढ़ा दीं, त तोहरा कवनो उजुर होई?"

"बे रुपिया के, एह से कहत बानी, काहे कि हम तोहरा मन से ना पढ़ायेब। हमरा जब समे मिली, चाय पीयत–पीयत कुछ पढ़ा दिहल करत। बाकी, चाय त तोहरा अपना तरफ से पीयावहीं के परी। हँ एगो आउर सर्त बा।"

"हम ना समुझनी.... ई सर्त–"

"सर्त ई बा, जे तोहरा आज से हमरा के अपना परिवार के एगो सदस्य माने के परी। काहें कि एकरा बिना ई काम संभव नइखे। आ आज से हमहूँ तोहरा के 'दा' कहब। बोल, मंजूर बा?"

"का कहत बानी बाबू, रउरा अइसन आदमी हमरा कहाँ भेंटाई? ई त हमार अहोभाग बा जे रउरा ऊ पहिलका आदमी मिलनी जे हमरा दुख तकलीफ के समुझल। सोना ठीके कहेले हम एके लउर से सभका के हाँकिले। नीमन बाउर के पहचान पता ना कहाँ भूला गइल बा। ओह दिन हमरा मुँह से जवन 'बाउर' सब्द निकल गइल ओकरा खातिर रउरा जरूर माँफ कई देब।" सोना के हँसी छूटि गइल, हमहूँ हँसे लगनी, फेर उठत कहनी– "हई ल आज के चाय के दाम, काल्ह से ना मिली।" ऊ रोकते रह गइलें आ हम पइसा गद्दी प फेंकत झटक के बाहर निकल गइनी।

लड़िकन के पढ़ाई सुरू हो गइल। हमरा होटल में चहुँपते 'दा' के चट्टानी चेहरा खिलखिलाये लागे। मनुवाँ देखते हाथ के कप प्लेट टेबुल प फेंकत बाबर्चीखाना में जाके संवाद सुना आवे– "माई मास्टर चाचा आइल बाड़ें, अब हम पढ़ेब–।" लखना फरके काम–धाम छोड़के ढाबा में आगहीं डकर परे– "आज पहिले हम पढ़ेब।" बुचिाया अलगे ढुनुके लागे। जीतू समुझावस– "पारा–पारी पढ़ऽ लोगिन, गाँहक के बेरा भइल बा–। हम भीतर ढाबा में जाके बइठ जाईं।" सोना मनुवाँ से चाय भेजत कहस– "पूछ त मास्टर चाचा से, आउर कुछ चाहीं।" ऊ हमार जबाब चटे सुना आवे, आ ऊ खिलखिला परस। कबो–कबो पसेना पोंछत उहो आ जास। "बड़ा धुआँ बा– चाय ले आईं....।" ऊ चुप्पी तूरेके खियाल से पूछस।

"ना– ना– अभिये नू पीयनी हाँ।"

"फेर पी लेब त का होई– बस एक कप हमरा कहला से–।" उनुका मुस्कुराहट के हम पकड़ ना पाईं, जइसे पानी के बुलबुला होखे– एकदम निरदोस, एकदम अथाह–। ऊ बावर्चीखाना में फेर चल जास।

रउरा सोचत होखब, ई कवन कहानी होखे लागल, कहाँ से बात कहाँ चल आइल। 'अपना होटल' के कहानी मोड़ लेके 'प्रेम होटल' में बदल गइल। बाकी, अइसन कवनो बात नइखे। ओइसे प्रेम से केहू दर भागके कहा? जाई। ई त अइसन सास्वत आधार ह, जवना से दूर हटके जिनिगी के महल बनबे ना करी। हँ, कारन के अनुसार एकर रूप जरूर बदलेला। जइसे सोना के चाहे सिंकरी बनाई, हँसुली भा हार बनाई, हर हालत में सोना त सोने ह। अच्छा छोड़ीं ई– आई एक दिन के कहानी सुनाई–

ओह दिन हम जइसे होटल चहुँपनी, देखनी सोना गद्दी प बइठल रहली। 'दा' के जगही उनुका के देख के हम अचरज से पूछनी– "भाभी, 'दा' कहाँ बाड़ें?"

"उहाँ के तबियत कुछ खराब बाटे, भीतर सुतल बानीं।" ऊ इसारा कइली। हम ढाबा में जाके देखनी, ऊ खटिया प कोंहरत करवट बदलत रहले। हम चाल कइनी– 'दा!'

"आईं बाबू– बइठीं; हम बाहर जात बानीं, आरे, मनुवाँ लखना पढ़बसन ना रे...?" कहत ऊ खटिया से उठे लगलें। हम उनकर हाथ पकड़ के बइठावत कहनी–

"आज हम ना पढ़ायेब 'दा' तूँ आराम कर। हमरा बुझात बा, तोहार तबियत ढेर खराब बा.... जाईं, डाक्टर के बोला ले आईं?"

"ना हरिकेश जी..... ना, एतना एहसान मत करीं जे हम दबा जाईं। हमरा कुछ नइखे भइल। असहीं आराम करत रहनी हाँ, आई बइठी।" ऊ अपना के छिपावत सभ हाँफत कह गइले आ बेमार मुस्कुराहट के लकीर एगो चेरा प परा गइल। हम लगे जाके बइठ गइलीं।

"..... 'दा' हम चाहत बानी, तूँ हमरा के कुछ पढ़ावऽ।"

"काहें मजाक करत बानी बाबू, हमरा का मालूम बा जे रउरा लोगिन के पढ़ायेब।"

"..... 'दा', हम तोहरे के पढ़े के चाहत बानी– तोहरा जिनगी के पढ़े चाहत बानी, पढ़इब नू 'दा' – बोलऽ, 'दा'– पढ़इबऽ नू–।" हमरा के ऊ पढ़ गइलें। ऊ हमार दिल दुखावे ना चहलें, एसे पघिलत कहलें–

"बाबू, आज रउवा फेर हमरा जिनिगी के छेड़ देहनी। ना मानब त सुनीं– हमहू'दा' – बोलऽ, कहियों इंडियन कस्टिंग लिमिटेड के फायरमैन रहनी. ...।" आ ऊ एके साँस में आपन सजे कहानी संक्षेप में सुना गइलें। उनुकर आ'दा' – बोलऽ, आँख भर आइल। हम सान्त्वना देत कहनी।

"'दा' तूँ जुग पुरुष कहाये जोग बाड़ऽ। आज के युग पुरुष तहरे अइसन आदमी हो सकत बा, जे आम लोगन के दुरदुरावल संवेदना के जोड़त हर जुलुम के खिलाफ मरे मारे प हरदम तइयार बा। पता चलल हा, तूँ कवनो यूनियन बनवले बाड़ऽ– का ओह लोगन से हमार परिचय ना करा सकऽ– का ओमे हमरा के सामिल ना कर सकऽ...?"

हमार बात सुनके उनुका बुझाइल जइसे रास्ता चलत हीरा मिल गइल होखे। ऊ खुश होके कहलें– "बाबू रउरा के ई सभ ना बतायेब, त केकरा के बतायेब। रउरे सभ त हमार धन बानी। हमरा विचारन के रूप देवेवाला रचनाकार बानी। समाज में फइलल ऊँच–नीच के गड़हा रउवा सभ ना पाटब, त के पाटी। हमार लक्ष्य सरकार से कवनो विरोध कइल नइखे, ओकरा में फइलल गंदगी के साफ कइल–करावल बा। सजे दोष सरकारे प थोपल ठीक नइखे। एह लक्ष्य के पूरा करे खातिर त पहिले आपन निरमान कइल जरूरी बा, फेर नूं.....।" कहते उनकर चेहरा निरोग, चमके लागल। हमरा मोमें आपन सरूप लउकल। अंत में– ".....'दा', जरूरत परे त जरूर खोजिहऽ।" कहके हम घरे चल अइनी।

ओह दिन से जीतू जइसे हमार सहयोगी हो गइलें। लइकन के पढ़वला के बाद यूनियन के सरूप आ सिद्धान्त प काफी चर्चा होखे। सोना हमरा खातिर अब भाभी के रूप में आ गइल रहली। अब ऊ कवनो मजाको कइला प 'बाउर' ना मानस, भले ओमे अपना इयोर से कुछ जोड़िये देस। हमरा के अपना इयोर देर ले ताकत देखके टोक देस– "बड़ी गौर से निरेखत बानी, कुछ भुलाइल बा का...!" हम हँस दीं, आ उहो खिलखिला परस। एगो भरोसा के लकीर चेहरा प खिंचा जाव। जीतू में कुछ खास बदलाव ना भइल रहे, 'हरिकेश बाबू' 'हरिकेश जी' में बदल गइल रहलें। कय बेर टोकले होखब– "'दा' हमरा खातिर तूँ आदरसूचक सब्दन के परयोग काहें करेल? हमरा के आपन ना समुझ का?" आ उनकर जवाब होखे– "बाबू हमार आदत खराब हो जाई, होटल के धंधा बहुत झंझटियाह ह, सभे से मेहिनिये से बोलेके परेला, खुशामदी धंधा ह....। हम उनका तर्क से हार जात रहनी।"

सुक के दिन रहे। ऑफिस पहुँचते पता चलल जे, हमार तबादला हो गइल बा। सोमार के कानपुर में रिपोर्ट करेके बा। हमरा लागल जइसे केहू तेज खपचरा हमरा सीना में घुसा देहल। हम भीतरे चीख के छपटा उठनी। कुर्सी के पाया अन्हार में डूबल जात रहे तले ऑफिस बॉय टेबुल खटखटावत हाथ में एगो सोजहग कागज थम्हा देहलस। लागल जइसे ऊ हमरा मरन के कागज होखे। हम ओकरा के टूट–टूक क देहल चहनी। सरकार से नफरत हो गइल। आखिर, ई काहे अपना कर्मचारिन के 'कहीं के ना' के स्थिति में डालके रखले बिया। हमनी के कवन अपराध बा जे कवनो एक जगे बसल मोहाल बा, जहाँ देखीं, तहाँ उदबेस.... विश्वासघात..... हनन.. ..। एगो विकृत घृना मन में समा गइल। दिन भर मन फोकराइन भइल रहल।

सांझि खां घरे लौटे के मन ना करत रहे, घुमत–घामत होटल चहुँपनी त देखनीं, आजो भाभी गद्दी प बइठल बाड़ी। हम जाते पूछनी– "'दा' काहाँ बाड़ें, तबियत खराब बा का?" ऊ आंचरे आँख पोछे लगली। हम घबड़ा के पूछनी– "भाभी! ई का.... तू रोवत बाड़ू, 'दा' के कुछ हो गइल बा का? 'दा' काहाँ

बाड़ें?"

"उहाँ का हॉस्पिटल में बानी..... सरकारी हास्पिटल में.....।"

"का जियादे तबियत खराब बा?"

"ना उहाँके पुलिस उठा ले गइल....।"

"पुलिस.....! हॉस्पिटल!! आखिर, का बात बा?"

"रामू खोंइचावाला के रउवा जानते बानी, ओकरा से पुलिस के झगड़ा हो गइल हा, उल्टे नाला में खोंइचा उलाट देहल हा। इहाँ के पता चलते फुटपाथ–यूनियन के कुछ लोगन के साथे उहाँ चहुँपनी हाँ, तले लाठी चले लागलि हा। ई सभ लोग निहत्था रहल हा, कुछ देर त वार सम्हारल हा, फेर भाग चलल हा। रउरा 'दा' के कपार प लाठी लगला से उहां का ओहीजा बेहोश होके गिर परनी हां। फेर कुछवे देर में पुलिस गाड़ी आके उहाँ के उठा ले गइल हिया, पता चलल हा, अभी सरकारी हॉस्पिटल में.....।" कहत ऊ सुसुके लगली।

"भाभी! रोवऽ मत, हम अभीं देखत बानी, हमरा प भरोसा राख, हम अभी हॉस्पिटल जात बानी– घबड़ाये के कवनो बात नइखे हिम्मत से काम ल....।" कहके हम चल देहनी।

हॉस्पिटल चहुंपला प देखनी– ऊ एगो मइल–कुँचइल बेड पर परल रहलें। सामने कुछ दूर हटके यूनियन के लोग साँय–साँय बतियावत रहे। ऊ लोग देखते हमरा के घेर लिहल। एक जाना कहलें "डाक्टर खून चढ़ावे के कहत बा, का कइल जाव, बड़ी दोहमत बा। ऊ खून 'दा' खातिर नइखे मांगत। देखत नइखऽ लोग, कइसन खून पी–पीके लाल भइल बा.... हमनी काल्ह इनका के इहां से निकाल के घरे ले चलल जाव, फेर जइसन होई तइसन कइल जाई....।" हमरा 'दा' से मिलेके बेताबी रहे, एह से आगे बढ़ गइनी, ऊ आँख मूंद के साइत कुछ सोचत रहलें। हम जाते कहनी–

"'दा' आँख खोलऽ, देख हम आ गइल बानी।" हमार आवाज सुनते ऊ हहुआके उठ बइठलें।

"बाबू रउवा आ गइनी, अब हमरा के इहां से जल्दी ले चलीं पुलिस आ डाक्टर हमरा के घर के मुँह ना देखे दीहें सन।" हम उनका के सम्हारत फेर सुता के कहनी– ".... 'दा' आज भर इहाँ कसहूँ रह जा, काल्ह हर हालत में तोहरा के इहाँ से ले चलब।"

"..... ना बाबू....ना, काल्ह ले हम ना बाँचब। आजे राति खां डाक्टर हमरा देह के सजी खून निकाल के बोतल में भर लीहें सन। काल्ह हम मुर्दा हो जायेब.... बाबू हमरा के....।" ऊ पूका फारके रोवे चहलें कि हम उनका मुँह प हाथ धरत कहनी–

"..... 'दा' अगर अइसन होई, त हम इहाँ के ईंट–ईंट बजा देब, सभकर छक्का छूटि जाई.... तूँ भरोसा राख..... सब ठीक हो जाई....।"

"आ अगर ठीक ना होई तब! तब का रउवा हमरा परिवार के.... हमरा बच्चन के.... हमरा यूनियन के सम्हार सकब....? .....? ....?"

"..... 'दा' तू हमरा के समुझले का बाड़ऽ। हम सभकुछ क सकिले, हम सभकुछ सम्भार सकिले, तोहरा पसेना के जगही हमार खून बही.... खून।"

"त फेर वादा करीं, हमरा ना रहला प एह अंतिम इच्छा के पूरा करेब।" आ ऊ एकटक देखे लगलें।

"वादा रहल 'दा'। मगर ई सब तूँ काहें सोचत बाड़। तूं बेलकुल.....।" ऊ हमरा बात के जवाब ना दिहलें, बस अब खाली देखत रहलें, हमरा में कुछ खोजत रहलें। हम जवना के सह ना सकनी, एह से समुझा–बुझा के जल्दिये उहाँ से चल देहनी।

"होटल चहुँपला प भाभी देखते रोवे लगली। हम उनका के तरे–तरे से तीहा देहनी, आ घरे लवट अइनी।"

रात के दस बजे हमार, कानपुर के गाड़ी रहे। हम घर से आपन सामान लेके चोर लेखा स्टेशन अइनी। थोरही देर में गाड़ी आइल। बाकी, जसहीं सामान चढ़ावत पवदान प लात धइनी, बुझाइल नीचे जीतू के लाश बा हम चिहा गइनी। तले गाड़ी के सीटी के साथे भाभी के हाहाकार सुनाइल, आ....।

ई कहानी कब खतम होई, हमहूँ नइखी जानत। बाकी, रउरा हर कहानी के अंत खोजिले। लीं, राउर मन राखे खातिर ई कहानी हम इहँवे खतम कर रहल बानीं।

– कार्तिक नगर,
खड़ंगाझार, टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर, पिन 831004

●●

चूल्हा सुनुग गइल रहे

भगवती प्रसाद द्विवेदी

सउँसे रात ऊ करवट बदलत आ मच्छर मारत आँखि में कटलस। होस सम्हरला का बाद से अब ले ऊ जवन मौसम के बदलाव देखत आइल रहे। ओही अनुभव के आधार पर ओकरा भरपूर भरोसा रहे जे जून के एह महीना में पहिले एही तरी उमस होला। सउंसे देह पसेना से सराबोर हो जाले। गाँछ–बिरिछ के एगो पतइयो ना डोले। बाकिर जब गरमी बढ़ेले.... अति क देले, त आकाश के नीचे बदरी आ के नाचे लागेली स.... आ बदरी के एह नाच पर पानी बरिसेला – अतना पानी कि ठंढा का मारे देह के चद्दर में समेटे के पड़ेला। बाकिर ओह रात ओइसन कुछऊ ना भइल। रात–भर ऊ खाली पसेना पोंछत रहि गइल। तनी–मनी बूंदाबांदी भइल जरूर बाकिर 'ऊँट के मुंह में जीरा' से गरमी अउरी बढ़ि गइल। बुझिला पतालो के गरमी ऊपरे आके आसन जमा लेले रहे।

मठिया से पूजा–पाठ के संखनाद सुनि के ऊ 'हरे क्रिसना, हरे क्रिसना....' के पाठ करत, आंखि मींजत उठिके बइठ गइल। जम्हारी ले के ऊ पहिले हाथ के तरहत्थी के भाग–रेखा निहरलस आ फेरु धरती माई के माथा टेकि के पेसाब करे चल गइल।

कोइला के टुक्की के चूल्हा प सजा के ऊ टुटही बेना से 'फटर–फटर' करत आगी सुनुगावे लागल। टीन के ऊ करिखा पोताइल ढाबा धुआँ से भरि गइल आ मच्छरन से सेना बहरो निकलि के भनभनात भागे लगली स। आपन कारिखा में सउनाइल हाथ लेले उठल ता छोट–मोट अल्मूनियम के बरतन माँजे में लवलीन हो गइल। मए बरतन के मटिया के ऊ कल के लगे पहुँचल आ एक–एक कके उन्हनीं के धोवला–खंघरला का बाद 'हर हर महादेव' के पाठ करत नहाए लागल।

जब मालिक के मरिचाई – अस तीत आवजा से ओकर कान परपरा उठल, त ऊ भींजत धोती लपेटत दोकान के ओरि कुलांचत भागल। चुल्हा सुनुग गइल रहे। ऊ पानी गरमावे खातिर केतली के चूल्हा पर धइलस। मालिक के सलाम क के, बहरी ठाढ़ होके बीड़ी धुकधुकावे लागल। फेरु उहँवे बइठि के बीड़ी के सुट्टा मारे लागल।

ना जाने काहें ओकर धुकधुकी बढ़ि गइल रहे। जब कबहीं ऊ अपना मालिक के देखेला, उन्हुका सूरत में ओकरा जइसे अपना चाचा के झलकत लउकेला। चाचा, जवन ओकरा के चौबीसों घंटा बस लताड़त रहत रहलें... बात–बेबात गारी–फजीहत आ थप्पण के बौछार करे लागसु, ठीक ओइसहीं, जइसे लड़ाई के मैदान में गोली, तोप आ बम के बौछार होला। एको सबद अबहीं मुँह से निकसल ना कि चिकरे लागसु। – "साला.... हरामजादा! जवान लड़ावत बाड़ें?" आ फेरू दनादन चटकन बजड़ावे लागसु। ऊ हट्टा–कट्टा रहे, चाहित त एके दांव में चाचा के छाती प चढ़ि बइठित। बाकिर ऊ चुपचाप एगो बैल नियर सब कुछ सहत रहे– ओह बैल नियर, जवना के नाथि के किरिन फूटला से साँझ ढलला ले बेमोह–दया के जोतल जाला.... जवन ना सींग से हुरपेट सकेला आ ना छान–पगहा तुरा सकेला... जवना में लातो मारे के आ गोहार लगावे के कूबत ना बांचल रहेला। दुपहरिया के बेरा गीतवा एगो चिरकुट में

सातू बान्हि के ले आवति रहे। तब ले बेरि–बेरि ओकरा पापी पेट के भूख बाज–अस झपट्टा मारे, आ खाएक माँगे। ऊ तिलमिला के इनार के ढेंकुल से पानी खींच के पीए। बाकिर ओह हकर–हकर पानी पियला से भला क्षुधा जुड़ाव!

तलहीं मालिक गुरनइले, "अरे बुधुवा, बइठि के माँछी मारत बाड़े– हरामखोर?"

ऊ उठल आ केतली में से चाय छानि के 'चा गरम.... गरम चा....' के राग अलापत प्लेटफारम के ओरि बढ़ि गइल। पछिला दस बरिस से एह सबदन का संगे ओकरा जिनिगी के अइसन तालमेल बइठ गइल रहे कि मुसाफिर पर नजर पड़ते ओकर मुँह घड़ी के सूई–अस टिकटिकाए लागे– 'चा गरम.... गरम चा....'।

ना जाने काहें ओह दिन ओकर मन एकदम उखड़ल–उखड़ल अस लागत रहे। रहि–रहि के माई के निरीह चेहरा ओकरा आगा मंड़रात रहे। ओकरा के जनमावे वाली माई! उहे माई, जेकरा के बेइज्जत होत ऊ अपना आँखी देखत रहि गइल रहे.... जेकर गोहार ऊ अपना कान से सुनले रहे, बाकिर कुछ करे के ओकर हिम्मत–बउसाव ना भइल रहे। माई आर्त्तनाद करत रहे– "छोड़ि दे हमरा के.... बचावऽ ए लोगे!"

भँवर में फंसल महतारी के उबारे के आवेसो ओकरा मन में आइल रहे। चहलस कि कृष्ण बनि के दुरोपती के चीर बढ़ा देउ, पापी चाचा दुहसासन के गरदन प चढ़ि के घांटी टीप देउ, बाकिर ऊ खाली केवाड़ खटखटा के रहि गइल रहे.... आ फजीरे होते, अन्हाधुन्ह अतना थुराइल रहे चचवा के हाथे कि बेहोसो हो गइल रहे।

आज रहि–रहि के इहे बात ओकरा दिल–दिमाग के सालत रहे– कास!

"बाकिर चाह बेचे वाला आ जूठ धोवे वाला नोकर के सेन्ह लगावे के खेमाता कइसे पड़ी? हमरा त कुछ सक बुझाता– जरुर कुछ दाल में करिया बा!" हरखुवा लिलार प के चुहचुहात पसेना पोंछत कहलस।

तलहीं मालिक के दूगो बरियार झापड़ बुधुवा के गाल प बजड़ल, "बताउ नमकहराम, कहवां चोरवले बाड़े सेठ जी के जेवर....?"

"हम कुछऊ नइखीं जानत माई–बाप! मलिकार, हमरा के बचा लीं...." ऊ बिलखे लागल।

"ले जाके बन्न क दीं हरामजादा के! दिमाग ठेकाने लागि जाई!" मालिक हांफे लगलन।

अब पारी आइल एगो सिपाही के। सिपाही जी बेंत से ओकरा गोड़ के तरवा फोरे लगलन, "सूअर के बच्चा! तोरा के खोजे में हमनीं के कहां–कहां के खाक छानि मरनीं जा आ तें इहवा'चा गरम.... गरम चा....' आके लुकाइल रहले हा? कुकुर के पिल्ला....!"

"हमरा कुछऊ मालूम नइखे सरकार! हम आज ले केहू के कुछ नइखीं बिगड़ले....." ओकरा सबका आंखि में अपना चाचा के दइत–अस तसवीर नाचत लउकत रहे।

"ले चलु ससुरा के थाना में.... बड़ा सातिर बुझात बा, नायब साहेब के हुकुम पावते दूगो पुलिस के जवान ओकरा के कुकुर अस घसटेरत कोतवाली के ओरि ले जाए लगलन।"

कोतवाल साहेब ओकरा से दू–चार गो बात पूछलन। ऊ रोवत–बिलखत अपना जिनिगी के सउँसे कहानी सुनावे लागल।

कोतवाल साहेब चोर के तस्वीर से ओकरा सूरत के मिलान करे लगलन। फेरु दाँत के बीच में कलम दबावत कहलन, "चोर ई ना ह। कवनो दोसर बुधुआ होई।" आ ऊ एगो अनेरिया कुकुर–अस छोड़ि दिहल गइल।

ओकरा मन में आइल जे ऊ सभका सोझा डँकरि–डँकरि के पूछो कि जब ऊ चोर ना ह, त फेरु काहें ओकरा के बिना चिन्हले–जनले बेमोह–दया के मूंजि नियर थूरल गइल? एही से नूँ कि ऊ गरीब बा, ओकरा में केहू के खिलाफ कुछ करे–धरे के हिम्मत नइखे.... काहे से कि ऊ जूठ धोवे वाला एगो अदना नोकर ह। जब ऊ तनखाह बढ़ावे के निहोरा मालिक से कइलस, त उहो ओकरा के चोर–बटमार मानि लिहलन। ओकरा पथराइल आंखिन से भर–भर लोर के बूनी चूवे लागल।

ओकरा अचक्के में खियाल परि गइल, ओकर अइसने हालत एक दिन मालिको बनवले रहलन। हिसाब में पाँच रुपिया घटि गइल रहे। मालिक हमहूं अपना माई खातिर कुछ कइले रहितीं! गनेश जी त अपना महतारी खातिर बाप सिवोजी से घमासान लड़ाई ठानि देले रहलन, बाकिर डेग पाछा ना हटल रहे। जिनिगी के आखिरी घड़ी ले अपना बाप प होत लुजुम–अतियाचार के, अलचार होके ऊ टुकुर–टुकुर देखत रहि गइलन फेरु दलदल में फंसल विधवा महतारी के उबार ना पवलस.... मजधार में बिलखत माई के चाचा के नरक–कुंड से ना निकालि पवलस। अपने भागि–परा के इहवाँ आ गइल।

ओकर मन ओकरा पर सवालन के बिखिधर

बान छोड़े लागल– "का कइले तें अपना राँड़ महतारी खातिर? बेवस माई के कामुक चचवा के फंदा से काहे ना छोड़ ले तें? एही से नूं कि ऊ तोर जान लिहित, मारित गरियाइत। बुजदिल कहीं के! डरपोक पाजी....!" खुद अपना करतब पर ओकर मन बजबजा उठल आ महतारी के फिकिर में ओकर माथा ठनकें लागल।

"ए चाह वाला! हेने आवऽ...!" एगो मुसाफिर टोकलस आ ओकरा इयाद के मोतिन के लरि टूटि के छितरा गइल। भरूका में चाय ढसरत ऊ अतीत से वर्तमान में लौट आइल।

टन–टन–टन! रेलगाड़ी के आवे के घंटी बाजि उठल। ऊ मने–मन बुदबुदाए लागल– "बुझात बा कि आज पसिंजर ठीक टैम पर आवत बिया।" आ 'चा गरम. ... गरम चा....' के राग अलापत ऊ आगा बढ़ि गइल।

भीड़ ठकचल रहे। शहर के सवारियन के आवाजाही ठप हो गइल रहे। सभ केहू एक–दोसरा के अचरज आ कौतुक भरल निगाह से ताकत रहे आ आपुस में कानाफूसी करत रहे कुछ लोग के बुधुवा के अपराधे के प्रामाणिकता प सक रहे, बाकिर ढेर लोग त ओकरा खिलाफे लउकत रहलन।

सिपाही लोग बुधुवा के ताबड़तोड़ पीटत रहलन। दोकान में कोहराम मचल रहे। ऊ 'माई–बाप' चिचियात रहे। तमाशा देखे वाला तमासबीन लोग आपन डफली, आपन राग अलापत रहलन।

"कुछुओ कहीं, बाकिर बुधुवा चोर–अस ना लागत रहल" हरखुवा खँखारि के बोलल– "अरे बुढ़ऊ, केहू के लिलार प चोरी भा ईमानदारी के तख्ती थोड़हीं लागल बा!" एगो नवहा अपना मोंछ प ताव देत बोलल। ओकरा के बोलवलन आ लगलन चटकनवसे, "काहे रे बुधुआ, काहें चोरवले पइसा, बोलु?"

ओकरा त कठया मारि दिहलस। चुपचाप गाल सुहुरावत ऊ मालिक के मुँह ताके लागल। एह पर मालिक अगिया बैताल होके ओकरा कपार पर जब जूता बरिसावे लगलन, "नमकहाराम! जवने थरिया में अतना दिन ले खइले, ओही में छेद करत बाड़े? बदजात! पानी में रहिके मगर से बैर.... .....।"

ऊ हाथ जोड़ि के चिरौरी कइलस, "हम एको पइसा नइखीं चोरवले, मालिक! हमरा माई किरिये जे हम.....!"

"माई–बाप त तोर चूल्हा–भाड़ में गइले स.... कमीना!" मालिक ओकर कपार टीन के देवाल के कोना में लड़ा दिहलन। खून के पवनारा बहे लागल। ओकर मए देह लोहूलोहान हो गइल आ ऊ माथ पर हाथ ध के उहंवे बइठि गइल। ओही घड़ी माजिलक के दुलरुआ बेटा आके बतवलस कि सबेरे ऊहे खजाना में से पाँच रुपिया काढ़ि लेले रहे। तब जाके मालिक ओकर जान बकसले रहलन।

ओकर मन कड़वाहट से लबालब भरि गइल। ओकरा पर जरिए से अतियाचार होत आइल बा, होत रही– घर पर चचवा के अनेति, इहाँ मालिक के जुलुम आ अब....!

घवाहिल देह के बाथा से तिलमिलात ऊ कोतवाली से बहरी आइल लोर से सराबोर ओकरा आंखिन में खून के थक्का जमल रहे। ढेर लोग लुगाई कौतुक आ अचरज से ओकरा ओरि ताकत रहलन।

ऊ मूड़ी गड़ले लँगड़ात दोकान के ओरि बढ़े लागल। बाकिर दोकान के नियरा जाते ओकर गोड़ जबाब दे दिहले स। दोकान में ढूके के ओकरा हिम्मत ना भइल। सोझा कुरसी पर बइठल। मालिक के रोखी ओकरा के सोगहगे लीले खातिर तय्यार रहे। ऊ छन–भर मालिक के ओरि तकलस। मालिक के देहि खाली मालिके ना लउकल। ओमें ओकरा चाचा के परिछाही झक–झक झलकति रहे। संगे–संगे सटासट बेंत बरिसावे वाला सिपाहियों खिलखिलात रहे। ओरा जनाइल, जइसे कवनो 'काला–नाग' आपन जीभि लपलपावत जमुना नदी के चीरत निकलस आ 'फों–फों' करत ओकरा ओर लपकल।

पल–भर खातिर ऊ सहमि गइल। बाकिर कब ले सहमी, डेराई आ बेरि बेरि मूई ऊ? ओकरा भीतरी विद्रोह के बुढ़िया आन्ही आ बवण्डर उठल आ ओकरा गतर–गतर के नस तनतना गइली स। ऊ धुआँत चूल्हा के पंजरा धइल कराही में से छनवट उठा लिहलस आ लागल ताबड़तोड़ मालिक के मुँहे पर मारे। ऊ दनादन हाथ चलावत रहे, हफर–हफर हांफत रहे आ बड़बड़ात रहे– "हम चोर हईं.... हमरा माई के तें असहाय बूझत बाड़े.... ओकर आबरू हमरे सोझा.... तोर खून पी जाइब हम तें हमरा पर बेंत बरिसइबे नूँ, मारु त तनी.... अब ना मरबे..... हरामजादा....!"

चूल्हा अब सुनुग गइल रहे आ धुआं के बदरी छँटत जात रहली स।

– पोस्ट बाक्स–115, पटना, 800001

(पाती, अंक–9, जून, 1993) ●●

पोसुआ

डॉ. अशोक द्विवेदी

दूबि ने निकहन चउँरल जगत वाला एगो इनार रहे छोटक राय का दुआर पर। ओकरा पुरुब, थोरिके दूर पर एगो घन बँसवारि रहे। तनिके दक्खिन एगो नीबि के छोट फेंड़ रहे। ओही जा ऊखि पेरे वाला कल रहे आ दू गो बड़–बड़ चूल्हि। दूनों पर करहा चढ़ल रहे। एगो में रस खउलत रहे, दुसरका में सिमसिमात रहे।

रस फफाइल देखि के चनरी पतई झोंकल कम क देले रहे। ओकर नौ बरिस के लरिका भिखरिया इनारा का जगत पर बइठि के लवाही चूसत रहे। चनरी के लइकी, अपना बाप बटेसरा का पाछा पतई सरकावत रहे। चनरी अपना कराह में खउलत रस के तजबिजलस, फेर बोलल, "का हो, बरधमहिया ना मराई?" बटेसरा टीन आ छनौटा लेके, करहा का किनारा खाड़ हो गइल। चार पाँच हाली छनौटा खउलत रस पर छलकवलस आ रस का किनारा फेंकत मइल महिया मारे लागल।

टीन पर छनौटा ओठँगाइ के ऊ ताबरतोर खैनी ठोंकलस आ ओठे दाबि के फेरु पतई झोंके लागल। ओकरा कराह के रस अब सोंसियात रहे। आजु फजिरही से ऊ मरद मेहरारू ऊखि काटे, छीले, ढोवे आ पेरे में लागल बाड़न स। दुपहर में त घुघुनी–रस पर काम चलि गउवे, बाकि गते–गते पेट कुल्हुरे लगुवे।

– "का रे, अभी महिया ना आइल?" छोटक राय के चिल्हिकल सुनते सबितरी धीरे से हुनकल, "ए बाबू हमहूँ महिया लेब!"

बटेसरा ओकरा के अनसुन क के चनरी का ओरि तकुवे।

– "जो रे भिखरिया! मलिकार के घर ले बल्टी माँगि लियाउ।" चनरी टुभुकुवे। बाँचल–खुचल लवाही बीगि के भिखरिया ओसारा का ओरि दउर गउवे।

– "ए माई सुपेली लियाईं? हमहूँ महिया खाइब!" सबितरी माई का पाछा आके फेर हुनुकवे।

– "मटिलगवनी! पिटवइबे? पहिले मालिक के घरे जाई। जो तबले बँसवारी में से सुपेली ओकाच लियाउ।" चनरी लइकी का चेहरा के उतार–चढ़ाव नापत बोलुवे। तबले भिखरिया बटेसरा का पाछा बल्टी ध के बहिन का पाछा सुपेली ओकाचे बँसवारि का ओर भागल।

"हरे रसारे तोरी.... आके पतई झोंकु, पाग उतर जाई। ओनिया का अपना अठराजी किहाँ जात बाड़े?" कहि के बटेसरा बल्टी लेके चनरी का कराह में से महिया फरियावे लगुवे।

"तनी सबितरी के पतइया पर दे दिहऽ।" चनरी के गिड़गिड़ाइल बटेसरा जइसे सुनबे ना कइलस। मुड़ियो ले घुमा के ओने तकलस।

"कइसन कठकरेज हउवऽ हो तू? लइकी दुपहिरये से संगे सती भइल बिया आ तोहरा इचिको मोह माया नइखे?" बटेसरा छनौटा टीन पर धइलस आ बल्टी लेले मलिकार के घरे चल दिहलस। चनरी खीसिन गुड़ेरत रहि गइल। भिखरिया चोर आँखी देखत आ

सुनत रहे। ऊ चूल्हि झोंकल छोड़ि के उठल आ छनौटा से खउलत सीरा उठा के सबितरी का सुपेली में चुवा देहलस"

"भाग मरकिलौना! तोर दुसमन बाप आवते होई!" चनरी पाछा ताकत ओके धिरवलस। भिखरिया फेरू जाके चूल्हि झोंके लागल।

"ह रे भिखरिया! सुन हेने!" छोटक राय के आवाज सुनते सुनरी के छाती धड़के लागल, आ सुरसतिया के महिया लागल अँगुरी मुँह ले जाके रूकि गइल। भिखरिया रोआँ गिरवले उठल आ ओसारा का ओर चल दिहलस।

"का रे स्सारे, चुल्हिया से काहे उठले हा रे?" बटेसरा बोलल

"अरे बेहूदा जो तें आपन काम करू, एके हम बोलवली हँ।" ओके डाँटत छोटक राय ओकरा लइका भिखरिया से बोललें, "घरे जाके चाह बनावे के कहि आउ। बबुआ आइल होइहें त उनहूँ के बोला लिहे आ सुन तेहूं अपना के रोटी वोटी माँगि लिहे, जो!"

भिखरिया जब मूड़ी हिला के घर का ओरी चलल त कनखी से ताकत चनरी के जीउ में जीउ परल। ऊ सोचे लागल हाय रे अभाग, अब रात ले गूर बनी तबले सबितरी सूते लागी। कब घरे जाइब आ खायेक पकाइब? एकर बाप त राती खा गोहूँ में पानी बरावे जाई आ हम अन्हारे बगइचा का मड़ई में। कई दिन से इहे होत आवत बा।

भिखरिया लवटि आइल। "आउ रे सबितरी, ले रोटी से खो!" सबितरी सुपेली छोड़ के हहास बन्हले दवरल।

"जा हो हमार बाछी, तहरो करमे जरल रहे जे मुसहर का घरे जनमलू।"

चनरी बुदबुदाइल।

"का रे कुछ कहले हा?" बटेसरा पुछलस।

"कुछु ना! गुर बनावत, ढेर रात हो जाई। कब घरे जाइब आ कब खयका पकाइब?"

"तोरी अठराजी मुओं, हऊ देखत नइखी दूनों रोटी खा के पानी पियत बाड़न सऽ। आ हम एहरे खा–पी के टीबुल पर चल जाइब।"

"हँ हँ अउर केहू थोरे बा?" चनरी रोवाइन मुँह क लिहलस।

दू घण्टा रात बितला का बाद चनरी लरिकन के लिहले घरे चोंहपलि। मड़ई के चाँचर में लटकल ताला में, अँचरा का खूंटी गँठियावल चाभी घुसारत खा दिक बरत रहे। ताला खोलत भुसुराइल, "कूल्हि मर बिला गइल बाड़न स। देखऽ ना एही बेरा कइसन सुत्ता परि गइल? बाह रे देवरानी? एकर भतार मलिकार के दुलरुआ ह; कुछऊ बोलब त एही बेरा डाँक डाँक चिचियाए सुरु करी। ऊ अन्हारे टोइ के दिया बरलस आ फुफुती में खोंसल गुर के पिड़िया मेटा में डलला का बाद बसहटा बहरा घींचि लियाइल। सुरसतिया निखहरे ढहि गइल त ऊ भिखरिया के धसोरलस, "ह रे मलेछवा, तूं लेउवो ना बिछा सकेले। हमार रोवाइन परान हो गइल बा तोहनी से।"

भिखरिया एगो फटही कथरी लिया के बसखट का ओनचना डललस आ मुँहकुरिए ढहि गइल। थाकल माँदल चनरी के खायेक पकावे के बेलकुल मन ना करत रहे, बाकिर होत फजिरहीं लरिका खायेक माँगे सुरू करिहलन स। ईहे सोचि के ऊ उठल आ थरिया में दू पहँत आटा निकार के, ताबरतोर सनलस। फेरू तावा सिउँठा लेले बहरा निकरि आइल। फेंड़ का जरी चारि गो धुँवाइल ईंटा रहे। चनरी ओके सरिया के चूल्हि बनवलस आ ऊखि के खोइया जरा के तावा चढ़ा देहलस।

आटा के बड़–बड़ लोइया काटत आ तरहत्थी पर पीटत खा ऊ भुसुरात रहे, "ई हरजाई सिलिया चाहित त हमरा लरिकन के दू गो रोटी ना पकाइत। हम जिनिगी भर एकरा मरद के गूह कछनी; पोसनी–पलनी आ अब ई भतार वाली भइल बिया। ऊहो मरकिलौना एक्को बेरि जो भउजी भा भइया के पूछित। कब दो आई आ आड़हीं लीलि–ठेंसि के पसरि जाई।"

.... चार पाँच बरिस पहिले जब ऊ खेदन राय का बगइचा से खेदात रहलन स त महँगुआ सँगहीं रहे। राय साहब आ उनकर लइका जब लाठी गोजी लेके ओकर छान्ह उजारे लागल त भिखरिया का बाप का संगे इहो रम्मा लेके खड़ा हो गइल। ओह घरी बटेसर छोटक राय किहाँ नोकरी ना करत रहे। भइँस आ पाड़ी रखाव आ सूखल लकड़ी तूरि के दूनों भाई कस्बा में बेचे। कबो–कबो चइली फारल आ छोट मोट मजूरी क के जब दू–चार रुपिया घर में आवे त बुझाव कि नियामत आइल बा। बाकि हाय रे करम! ए हरजाई का आवते देवर महंगुआ के का जाने का हो गइल....?

चनरी मोट–मोट हथरोटिया सेंकि के परई में धइलस आ चूल्हि बुता के सिउँठा से तावा उठवले मड़ई में चलि आइल। खायक खाँची से तोपत खा ओकरा मन परल कि लरिका बहरे बाड़न स। ऊ हड़बड़ाइल बहरा निकसल। उन्हनी के देंहि सीति से सिमसिमा गइल रहे। दूनों के जगा के बाँहि धइले भितरी लियाइल आ पुअरा का चटाई पर ओठँगा दिहलस। भिखरिया के मुँह देखि माया जागल त जोर से झकझोरि के जगवलस, "ए बबुआ, हरे हईं देख तोरा के का बनवले बानीं? हइ देखु जाउर आ सोहारी रे।"

भिखरिया निनियाइल आँखि उघरलस; चारू ओरि तकलस आ परई पर हथरोटिया गूर देखि के आँखि मून लेलस। चनरी भेली फोरि के रोटी पर फइलवलस आ चउँवा बना के ओकरा मुहें डाल देहलस, "ले रे बबुआ, लेंडुवा! काटु, जोर से काटु!"

दू चार काटा बरियाई कटवला के बाद भिखरिया फेर सूति गइल। बाँचल रोटी के चेउँवा काटत खा, चनरी के बटेसरा के खियाल आइल... सभ सूतल होई आ ऊ बिहिटी लपेटले गोहूँ में पानी बरावत होई। का जने कहिया ले छोटक राय क करजा उतरी? भइंस बियाइल त उनहीं का दुआरे चलि गइल। जवन पइसा मिलल ओसे पाड़ी किना गइल। सौ पचास बँचबो कइल त दवा–वीरो में....। केहू तरे गूजर नइखे। राम जाने कइसे निस्तार होई।

आजु काहें दो चनरी के नीन नइखे आवत। भितरे–भितर मन दोचित बा। आपन गरीबी आ दलिदरपन पर ओकरा भित्तर सवाल पर सवाल उठि रहल बा! ईमानदारी के जिनिगी जीये का चलते लुटहाई आ लात–जूता ओहू से आगाँ बढ़ल त जेहल। कूल्हि ए मुसहरने खातिर बा।

जेहल के मन परते, ओके आपन देवर महँगुआ फेरु इयाद परल। दू हाली ओकरा के पुलुस वाला घिसिरा के ले गइलन स। एक बेर त ऊ दस दिन जेहले में रहे। ओघरी ई हरजाई सिलिया रात होते छोटक राय का टीबुल पर निकल जाव आ भोर भइला पर आवे। राय साहब दू दिन पर साँझि खा पूछे आवसु, कवनो बात नइखे नू रे? जवन घटी–बढ़ी आके घरे लेले जइहे। घबड़इला के जरूरत नइखे। हजार दू हजार जवन लागी, हम बानी नू! महँगूवा के दू तीन दिन में छोड़ा लियाइब।

महँगुआ के काल्ह फेर पुलुस वाला पुछत रहुवन स। बहेंगवा दू दिन से नइखे लउकत। ओ बेरी पइसा का जोर पर छूटि गइल बाकि ए बेरी धराई त ना छूटी। छोटक राय आ उनका ओकील लइका के कवन ठेकान? बनला के सब सँघतिया होला। उप्पर से पुलिस वाला बात आ भितर से करिया बीखि। गरीबन के ढेर ददखाह बा लोग त चोरी चमारी काहें करावेला? दोसरा के खेत कटवाई, बैल खोलवाई त का होई? जेहल मुसहरे नू जाई। ऊपर से ई हरजाई सिलिया ओही जा छिनरझप खेले जाई। भक्खर परऽ सन, ओकरा से का मतलब?

..... बटेसरा का छाती पर ओह घरी, जो ऊ सवार ना रहित त उहो दोगलऊ जेहल जइतन आ पुलुस के लात जूता खइतन। देबी पांड़े के बैल खोलला में इहो रहलन। बेटा के किरिया ना धरइतीं, जहर माहुर खाए के धमकी ना दीतीं त का जाने का होइत? दोसरका हाली कहीं जाए के नउबते ना आइल। छोटक राय डेरवावते रहि गइलन। हम साफ–साफ कहि दिहलीं मलिकार रउवा सरन देहलीं ठीक बा, रोआँ–रोआँ तूरि के राउर खेती बारी कटिया–बिनिया, गोबर–गोसार कूल्हि करब जा, बाकि ई काम ना होई हमनी से....।

एही बोलला पर राय साहब खिझिया के चल गइलन आ बटेसरा ओकर झोंटा घिसिरा के लाते–मूके खूब कचहरलस, बाकि ऊहो अड़ि गइल रहे..... "चाहे भुजुड़ी–भुजुड़ी काटि द, बाकि हम तहरा के चोरी चकारी ना करे देब।" मन परते चनरी मुस्कियाये लागल; जइसे ओह दिन का बिदरोह आ जीत पर ओकरा आजुओ गरब होखे। आ एगो ओकर देवरान सिलिया बिया। ओठलाली, साड़ी बेलाउज आ साबुन सोटा खातिर मरद के भकसी झोंकवावेले। मरद ना रहेला त वकील बाबू से मुस्किया–मुस्किया अइँठेले।

बहरा कवनो मरद के खँखरला के अवाज सुनाइल। चनरी सजग होके उठल। दुआरि पर आवते बोली सुनाइल "ले धरु, एकदम ताजा ताड़ी हऽ। का बनवले बाड़े ए बेरा?"

– "मछरी आ रोटी!" ई अवाज ओकरा देवरान सिलिया क रहे।

..... त ई हरजाई जगले रहलि हा। चनरी धप्प से बइठि गइल..... आ ई डोमवा एह बेरा कहाँ से लबनी लेले आवऽता? काम–धाम कवनो हइये नइखे। छोटक राय के पोसुआ कुक्कुर भइल बा। भोगी मुँहझउँसा!

थोरिके देरि में देवरान के खिलखिलाइल आ नासा में दूनों के धसोरा धसोरी शुरू हो गइल। चनरी कुड़बुड़ात उठल आ लड़िकन का लग्गे आके ओठँगि गइल।

अभी अन्हुन्हार रहे। हउँजार आ जोर के हाला सुनि के चनरी उठल। बहरा निकलि के देखलस कि छोटक राय के खिलाफ पाटी वाला लोग महँगुआ के गारी–फजिहत करऽता। दूगो पुलुस वाला कान्हि पर बनूखि लेले ठाढ़ बाड़न स। महँगुआ भुइँयाँ ढहल बा, ओकरा मुह से खून चूवऽता।

खेदन राय, अवध चौधरी, रामसरन पाँड़े आ खेदन राय के दूनो लरिका लउर लेले खाड़ा रहलन स। खेदन राय लाते ठोकरियाइ के महँगुआ से कहत रहलन, "का रे स्सारे? तोर अवकात अब अतना बढ़ गइल कि गाँव का बड़कनों के नइखे छोड़त? अब तोर गाँव छूटि जाई!"

अतने में सिलिया छोटक राय के लड़िका ओकील साहेब के लेले पहुँचि गइल! पाछा–पाछा बटेसरा आ छोटक राय का पाटी के चार पाँच अदिमी लउर लेले धावल पहुँचुलन स।

"का भइल बा? काहे मारत बाड़ऽजा? ढेर अन्हेरगर्दी जिन मचावऽ जा!" सुदर्शन बाबू सिलिकन के

कुरुता क बाँहि चढ़ावत बोलुवन।

– "ए वकील, ई तहरे पलिवार क देन ह कि हर महीना गाँव में कुछ न कुछ खुराफात होता।" खेदन राय के ना रहाइल।

– "एह चोर स्सारे के हमनी का अब एइजा ना रहे देब जा!" अवध चौधुरी लउर पटकलन।

– "ढेर जोर मत फाटो ए चउधरी! तहन लोग का छान्ह तर नइखे बसल। खेदन राय त पाँच बरिस पहिलहीं इन्हनी के उजार देहलन। उ त भला होखे बाबू के कि एह मुसहरन के निम्मन जिनिगी जीये के रस्ता देखवलन। हमनी का बारी में रहत बाड़न स, हमार काम–ध ाम करत बाड़न स, त तोहन लोग के करेजा फाटऽता। ए सिपाही जी, रउवा दुअरा चलीं। बाबूजी का सोझा फैसला होई। तें का ढहल बाड़े रे महँगुआ? उठ तोर बेटी मुओं केहू का सेन्हे पर धराइल बाड़े? कि तोरा मड़ई में केहू के धनसुकिया चोरावल बा?" सुदर्शन बाबू एक सुरुकिए बहुत कुछ बोलि गउवन।

महँगुआ खून पोंछत उठ गउवे। ओकरा अगल–बगल सुदर्शन बाबू के अदिमी केदार चौधुरी आ बलेसर चउधरी खाड़ हो गउवे लोग।

"चलीं सभे, चलीं राय साहेब का दुआरे पर चलीं सभे। रउवा सभ रपोट कइये देले बानी। महँगुआ पर केस चलबे करी। ओइसे अपुसे में समुझ बूझि के एही जा निपटारा हो जाव त कवना नोकसान बा?" एगो सिपाही बोलत आपन साइकिल घुमा लेहलस। दुसरहो ओकरा पाछा चल देहलस।

"आरे ओइजा का फैसला होई? उहे त कुल्हि करावत बाड़न।" खेदन राय के लइका गाभी बोलल।

"अछरंग जिन लगावऽ, ढेर जरतपन ठीक ना ह ए बाबू!" ओकील सुदर्शन बाबू बोललें।

– ठीक त ईहो ना हऽ जेवन तोहन लोग करत बाड़ऽ जा।

– होस में रहऽ!

– नाहीं त का क लेब? ऊ दिन गइल जब तहन लोग सभके डोलावऽ लोग।

– मना करऽ खेदन काका इनके नाहीं त .....!

– नाहीं त का लीलि घलब?

"हरे स्साला बटेसरा तोर बहिन मुओ, का ताकत बाड़े रे? मारऽ स स्सारन के लरक के।"

सुनते बटेसरा ठेंगा चला देलस। खेदन राय के लइका भुइँयाँ डगरा गइल। खेदन राय पाछा घूमसु तले एक लउर उनहूँ का पँखुरा पर गिरल। सिपाही कुछ समुझन स एकरा पहिलहीं रामसरन पाँड़े आ खेदन राय का छोटका लइका क लाठी सँगही बटेसरा पर गिरल आ उ फिरिंगी लेखा नाचि के दरहीं उलटि गइल। चनरी रोवत चिचियात धवरल तले देसरहा लाठी महँगुआ का कान्हि पर परल।

"खबरदार! केहू हिलल त गोली मार देब जा!" सिपाहियन क बनूखि हाथ में आ गइल।

सभे थथमि गइल। घाही लोगन के गमछी बान्हि के उठावे लागल लोग। दूनो पाटी के लोग तरनाइल रहे। देवी पांड़े डाँक–डाँक क के रेकसा बोलवले आ अपना पार्टी का लोग के रेकसा पर चढ़ा के चल दिहल लोग। बटेसरा का मुड़तारी चनरी आ ओकर लड़िका फेंकरत रहुवन स।

"ए चउधरी, देखऽ हो मूवल कि जियल? हम जा तानी बाबू जी के खबर करे। अब त इन्हनी के बाई हेठ करहीं के परी।" आ सुदर्सन बाबू फलगरे आगा बढ़ि गइलन।

साड़ी फारि के बटेसरा का कपारे बान्हत चनरी चिचिआत रहे, "अरे हमार रमऊ हो रमऊ! एही से कहत रहनी कि बड़कवन का बीचे जिन परऽ। महँगुआ तोहरो के ले बितल ए हमार रमऊ!" चउधरी ताबर तोर कई अँजुरी पानी बटेसरा का मुँहें छिरिकुवन त बटेसरा कहँरत आँखि खोलुवे, "मलिकार अइलन कि ना? आ फेर ओकर आँख बन हो गउवे। महँगुओ एकोर डगराइल रहुवे बाकि ऊ बेहोस ना परहुवे। सिलिया ओकरा चानी पर तेल चाँपत, सुसुकत रहुवे।"

मोटरसाइकिल के आवाज सुनि के महँगुआ सिलिया से पुछुवे, "मलिकार हउवें का रे?"

"ए चउधरी, इन्हनी के लाद–पाथ के अस्पताले लियावऽ, हमनी के तबले थाना में जात बानीं जा।" ई छोटक राय के दबंग अवाज क कमाल रहुवे कि दूनो सिपाही लोग चट्ट से सलाम करुवे।

"रउवाँ सब के बहुत किरपा बा हमनी पर। हम एके इयाद राखब!" सिपाहियन का ओरी ताकि के छोटक राय अतने बोलुवन आ मोटरसाइकिल चल देहुवे। पाछा से दूनों सिपहियो साइकिल बढ़ावत हुरपेटुवन स, "अरे ससुरा जल्दी चलऽस!"

दूनो चउधरी लोग बटेसरा के टाँगि के रेकसा पर बइठउवे लोग। दोसरका ओरी से सिलिया का कान्ही हाथ धइले महँगुओ आके पवदान पर बइठि गउवे। चउधरी चनरी के हुरपेटुवन, "चल सऽ, जल्दी अस्पताल एकर घाव बहुते गहिर बा, खुन रुकत नइखे। राम जाने का होई?" आ चनरी पगलाइल रेकसा का पाछा धवरे लगुवे। ओकर दूनों लइको ओकरे सँगे फेंकरत धवरत रहुवन सऽ। ●●

भैरोनाथ के अखबार

विनय बिहारी सिंह

पत्रकारिता में गहिर डुबकी लगा के भैरोनाथ के तिसरकी आँखि खुलि गइल बिया। बाह रे पत्रकारिता!! के कहऽऽता कि पत्रकारिता देश के सेवा हऽ? आम आदमी के सुख–दुख से अखबारन के का लेना देना? अब त राष्ट्रीय अँखबारो ऊहे काम करे लागल बाड़न स जवन जिला के कौनो सबसे चलता–पुर्जा अखबार करेला!

भैरानाथ के पत्रकारिता जगत में करीब–करीब कुल्ही लोग जानेला। फिर भी आजु ऊ एह तरी काहे सोचऽऽ तारन। अच्छा– खासा नोकरी पवले बाड़न। एगो बड़ राष्ट्रीय अखबार में। तनखाह कौनों जिला के कलक्टर से कम नइखे। बड़े–बड़े नेता आ अफसर उनका के चीन्हेला लोग। तब?

ना। भैरानाथ के भीतर एगो ईमानदार आदमी बइठल बा। सुख सुविधा में रहला से का आदमी के बुद्धि गिरवी रखा जाला? सोचे–समझे के क्षमता नष्ट हो जाला? जब आदमी संघर्ष के दौर में रहेला त कुल्हि सोचल–समझल छोड़ि के अपना के स्थापित कर में, अपना के स्थित करे में, लागल रहेला। ओह घरी केहू देश–दुनिया आ राजनीति के बात करेला त नीक ना लागे। पहिले रोजी–रोटी घर दुआर रुपया–पैसा तब देश–दुनिया पहिले जीवन थिराउ तब दुनिया–जहान के बाति।

लेकिन थिरइला का बाद देश–या आम आदमी के बारे में हर आदमी सोचेला? अउर धनी हो जाई.... .... अउर नाम कमाई एही फेर में लागल रहेला सब केहूं। बाकिर भैरोनाथ ओमें के आदमी ना हउवन। देश आ दुनिया के बारे में सोचे खातिर ऊ पत्रकारिता में अइले। आपन बियाह ना कइले। बियाह करिहें त जिम्मेदारी बढ़ी। लइका–फइका होइहें स। झमेला बढ़त जाई। झूठ–सांच बोलि के फरेब करेके परी। आ जिनिगी हाय–हाय करत बीति जाई। ओही बीच में बेटा के बियाह करऽऽ, त बेटी के बियाह करऽऽ। आ सतरह गो झमेला। एकरा से नीमन बा कि बियाहे ना करब। इहे सोचि के बियाह नइखन कइले भैरवनाथ।

एगो किसान के बेटा हउवन ऊ। तीन भाइयन में सबसे छोट। बहिन नइखे। दू भाई बढ़िया–बढ़िया नौकरी करेला लोग। एक जाना त रिजर्व बैंक में बड़ अफसर हउवन। दुसरका जाना सचिवालय में अंडर सेक्रेटरी। दूनो भाइन के लगे खूब पइसा बा। कार, बंगला, फ्रिज, वीसीआर... वगैरह... वगैरह। ऊपरी कमाई से आदमी के दुनिए बदल जाला। बाकिर भैरोनाथ के ऊपरी कमाई नइखे। पत्रकारिता में त तनखाहे से सब होखे के रहेला। खाइल, पीयल, मकान के किराया, कपड़ा–लता, दवाई–वीरो, माने सब कुछ। बाकिर अकेल आदमी खातिर पाँच हजार रुपया कवनो कमो नइखे।

त भैरोनाथ पत्रकारिता में एह खातिर गइले कि देश के सेवा करिहें। लोगन के सूचना पावे के अधिकार बा। यानी देश के हर नागरिक के सूचना पावे के अधिकार बा। आ अखबार अधूरा जानकारी दे तारे सन। भैरोनाथ सोचले कि हम पत्रकारिता

में जाइब त सरकारी तंत्र के भीतर के खबर खोजि ले आइब आ अखबार में छापि देब। लोग जनिहें त हल्ला होई, आ देश के व्यवस्था में सुधार होई। बड़ा भष्टाचार बा देश में। हर जगह घूस, अनाचार, भाई–भतीजावाद आ चापलूसई के राज बा। त एकर भंडाफोड़ करे खातिर भैरोनाथ एगो अइसन राष्ट्रीय अखबार में गइले, जवना के देश विदेश में बड़ा प्रतिष्ठा रहे। एक जमाना में सचहूं भंडाफोड़ करे वाला रहे ऊ अखबार। ओहि अखबार के भंडाफोड़ से कतने मंत्री आ मुख्यमंत्री इस्तीफा दे दिहल लोग। बाकिर अब?... ... ना। सब खतम हो गइल।

काहे? एह से कि धीरे–धीरे अखबार उद्योग हो गइले सन। उद्योग माने धंधा। धंधा माने पइसा कमाए के जरिया। अखबार के मालिक लोगन के लइका जब अखबार के अपना हाथ में लिहल त ओह लोगन के मन में अखबारे से पइसा कमाए के साध जागल। काहें? एह से कि नया पीढ़ी विदेश से पढ़ि–लिखि आ जानि के आइल कि अखबार बहुत बड़ हथियार हऽ। लोगन के अखबार पढ़े के आदति बा। जे तरी लोग ई जानि के कि नेता लोग आ सरकार आम आदमी के परवाह ना करे, तबो वोट देबे खातिर लाइन लगावेला, ओही तरी ई जानि के भी कि अखबार आम आदमी के सुख–दुख के भी भँजावे ल सन, अखबार पढ़ल ना छोड़े। अखबारो पढ़ल एगो नासा ह? कई लोगन के त बे अखबार पढ़ल खाना न पचेला, आ अगर अखबार में तरह–तरह के घटना के व्यौरा चाहीं, राजनीतिक जोड़ तोड़ के हत्या आ बलात्कार के शेयर आ बाजार भाव के रेट चाहीं, भरि अखबार अगर आम आदमी के दुखे दुख छपी त केहू पढ़ी? अखबार पढ़ी, ना, तब पाठकगण का....! गैर जिम्मेदार हो गइल बा; एही सवाल के जबाब आजु ले ना खोज पवले भैरानाथ। धीरे–धीरे विज्ञापन प्रमुख हो गइल अखबारन में आ समाचार दोयम दर्जा के चीज। विज्ञापन से पइसा मिली। आ समाचार से? कुछु ना। आ जब आम आदमी के दूख–दर्द आ परेशानी छापी? कई गो मनरसहंग नेता त कहेलन स कि लोग जे तरे हमनी के वोट दे के सूति जाला ओही तरी हमनियों के जीति के सूति जानी जा। आपन भलाई करहीं खातिर जागेनी जा। ढेर होई त आम आदमी चाह का दोकानी पर खीसि में बड़बड़ाई– देश में बड़ा भष्टाचार बा, सब नेता भ्रष्ट हो गइल बाड़न स। जीतला का बाद चिन्हते नइखन स। बस। फेरु, पाँच साल बाद वोट होई त केहू ना केहू के वोट डाले जइबे करी आदमी। घामा में खड़ा होके वोट दी। आ फेरू आम आदमी जहाँ के तहाँ।

त अखबार काहें आम आदमी के बाति सोची? अखबारे बुरबक बा का? जे तरी खूब पइसा लगा के सिनेमा वाला हीरोइन से लंगटे नाच कराके लोगन के सिनेमा हाल पर भीड़ लगवा देलन स। फिल्म हिट करा देलन स। ओही तरी अखबार वाला करिहन स। विज्ञापन जुटइहन स। जे विज्ञापन दी ओकर खबर छपिहन स। जवन नेता भा मंत्री विज्ञापन दियवाई ओकर इंटरव्यू छपिहन स। ओकरा पार्टी के पक्ष लिहन स। आ तू ढेर देश के सेवा करे वाला ईमानदार पत्रकार बाड़ त जा आपन कपार नोचऽऽ। अखबारन के अइसन देश का प्रति सजग आ जागृति जगावे वाला पत्रकार के जरुरत नइखे। संपादक तोहरा के दरकिनार क दीहें। आ तोहरा से कम योग्य आदमी के तोहरा ऊपर बइठा दीही। काहें से कि ऊ पत्रकार अखबार का हित के ऊपर मानता, आम आदमी के हित के ना।

भैरानाथ के तिसरकी आँखि खूलि गइल बा। चालीस साल के उमिर भ गइल। अब ऊ अखबारे में काम करिहें। एह उमिर में उनका के कहाँ काम मिली?

त भैरोनाथ के मन में आइल कि अखबार से महीना दिन के छुट्टी ले के दिल्ली जासु। आ ओहिजा के कुछ सजग आ ईमानदार पत्रकारन के खोजि के एकजुट करसु। ताकि एगो वैकल्पिक मीडिया तेयार कइल जा सके। जवना में आम आदमी के फायदा के बाति होखे।

देश–दुनिया में का होता, एकर साँच तसवीर होखे। कौन नेता का करऽऽता। आम आदमी के साथ कौन छल हो रहल बा? कइसे विदेशी कम्पनी हमनी का देश में हमनी का देश का सरकार के सहयोग से आपन जाल बिछावतिया। कइसे टेलीविजन पर लंगटे नाच हो रहल बा। पाप संगीत के नाम पर। काहे पा संगीत प्रसारित होता। कइसे देश के संस्कृति आ आचार–विचार के पीछा ठेलि के ई बतावल जाता कि विदेशी संस्कृति श्रेष्ठ बिया। हमनी के संस्कृति त पिछड़ल बिया। ई कइसन एगो षडयंत्र बा। जब आदमी के ओकरा संस्कृति से काटि दीहल जाई त ओकर संस्कार विचलित हो जाई। तब ओकरा के एगो मन लायक उपभोक्ता बनावे में सुविधा होई। ऊ ऊहें कुल खरीदी जवन टीवी पर विज्ञापन में देखावल जाई? .... ई एगो घातक अभियान चलावल जा रहल बा। ताकि आम आदमी के भीतर से विवेक लुप्त क दीहल जाउ। आ ओकरा के एह अविवेक में डाल दीहल जाउ कि ज्यादा से ज्यादा सुख–सुविधा

जुटावल आ सुख भोगले जीवन के उद्देश्य होखे के चाहीं। ज्यादा चेतना ले के आ देश–दुनिया के बारे में सोचला के कवन काम बा...? वगैरह वगैरह। अजब बात!

पिछला बीस साल के पत्रकारिता के दौरान भैरोनाथ, अइसन घटना देखले–सुनले ना रहले हऽ। वाह रे खेल? एगो मुसलिम कट्टरपंथी नेता अपना खास आदमी से हिन्दू कट्टरपंथी नेता के विदेश उपहार भेजववले बाड़े। जवना घरी भैरोनाथ हिन्दू कट्टरपंथी नेता के इंटरव्यू लेत रहले, ओही घरी उनका के उपहार मिलल। दुनिया जानेला कि ई दूनों सांप्रदायिक नेवता एक दूसरा के दुश्मन हउवन सन। बाकिर सच्चाई त कुछू अउर बा।

उपहार के रूप में एगो खूबसूरत कलम। नेता जी हज करे गइल रहली हं। सऊदी अरबिया। उहँवे से हिन्दू कट्टरपंथी नेता जी खातिर इ कलम ले आइल बानी। चोर–चोर मौसियाउत भाई। हिन्दू कट्टरपंथी नेता होखसु लोग आ चाहे मुसलमान कट्टरपंथी ऊपर से एक दोसरा के दुश्मन देखावेला लोग। आ भीतरे–भीतरे खान–पान आ दोस्ती। ई उपहार वाली बात कौनो अखबार में ना छपल। भैरोनाथ अपना अखबार में दिहले तबो ना छपल। ई दूनों कट्टरपंथी नेतवा लोगन के उसुका के आ लड़ा देले सन। तब होला साम्प्रदायिक दंगा के नंगा नाच ....। हर तरफ नफरत ....। एही नफरत के नींव पर ई मउसियाउत भइयवा राजनीति करे लं सन। आ एक–दूसरा के सहसान माने ल सन कि रउवा ना रहितीं त ई नफरत फइलित कइसे। लीं एक एवज में हई सउदी अरबिया के कलम लिहीं। रउवाँ अपना सम्प्रदाय के भड़काईं आ हम अपना सम्प्रदाय के।

भैरोनाथ भौंचंक बाड़े। ऊ पत्रकारिता में काहे अइले? अखबार जनता के शिक्षित करऽत रे सन कि अऊरी गुमराह करऽतारे सन? अतना बड़ बैंकन का जरिए आर्थिक घोटाला भइल रहल ह। वित्तमंत्री तक ले एकरा घेरा में आ गइल रहले ह। कुल्हि अखबार ईहे छापत रहि गइले सन कि आर्थिक घोटाला भइल, आर्थिक घोटाला में हिनकर–हिनकर नाँव उछलऽता। आरे भाई, ई आर्थिक घोटाला हऽ का? इ त पहिले बतावऽ जनता के। तब नू लोगन के समझ में आई?

ई अखबार के मालिक आ सम्पादक का चाहऽतारे सन कि जनता के अधूरा जानकारी दिहल जाउ। हद बा। कवन अखबार देश के भीतरी राजनीति के खोलि के जनता के सामने रखेला। कवन? कवनो राष्ट्रीय हिन्दी भा अंग्रेजी चाहे कवनो भाषा के अखबार के नांव लीं त? नेता लोग लोगन के अपान गुणा भाग बा तऽ अखबार के मालिकन के आपन गुणा भाग। सब आपन–आपन हिसाब जोड़ऽता। जनता गइल भाड़ में। आ जनतो तऽ स्वीकार कइले जातिया। हर स्थिति के केहू का लगे फुरसत नइखे सब रोजी रोटी में फंसल बा। का एही तरी चली ई देश?

ना अब चुप ना रहिहें भैरोनाथ। अगर अइसन सांप्रदायिक खिचड़ी पाकि रहल बा आ कुछु अखबार ओह में हवा दे रहल बाड़न स त ओकरा जबाब में एगो अइसन अखबार निकालहीं के परी जवन सच्चाई के उजागर करी।

इहे कुल सोचि के भैरानाथ दिल्ली पहुँचले। अपना नियर विचारधारा के लोगन के एकजुट कइले। तब सवाल उठल कि अखबार निकाले खातिर पइसा कहाँ से आई? भैरोनाथ आ उनकरा संगी–साथी लोगन का लगे अखबार निकाले के योग्यता तऽ रहे बाकिर पइसे ना रहे। आ बे पइसा के एक कप चाहो ना मिली। तब? जवना पइसा वाला आदमी का लगे भैरोनाथ जासु ऊहे कहे कि का पगलाइल बाड़ऽ। चुपचाप दुगो रोटी कमा। ढेर क्रांतिकारी मति बनऽ। बड़े–बड़े अखबारन के आगा तोहरा अखबार के के पूछी? आ मानि ल तूँ कुछ पाठको तेयार कर लेवऽ त जेकरा खिलाफ तूँ छपबऽ ऊ चुप बइठी? भ्रष्टाचार करे वाला के हाथ बड़ा लमहर होला। लमहरे ना मजबूत शिकंजा होला। ओकनी का जाल में तूँ त चँपइबे करबऽ हमार पइसो डूबी।

भैरानाथ तऽ बाड़ा फेर में परले। हर जगह एकही बाति। त एगो सच्चा आ खरा अखबार निकली, सब अपना अपना मौज आ परेशानी में बा, आम आदमी का लगे अतना पइसा नइखकि ऊ मिल–जुल के अखबार निकाल लेउ। हालली कि बूंद–बूद क के पोखरा भरेला। बाकिर आम आदमी कतना दी? एही सोच–विचार में ऊ परल रहले तले एगो चमत्कार भइल। चमत्कार हं, हमनी का देश में अइसने चमत्कार होला। एक जाना सेठ भैरोनाथ के खबर भेजववले कि ऊ अखबार खातिर पइसा लगावे के तेयार बाड़े। उनकरा लगे दस लाख रुपया एही कुल खातिर बा। भैरोनाथ जइसन चाहऽतारे ओइसन अखबार निकालसु। आंय? भैरोनाथ के बिसवासे ना होखे। अपना के चिंउटी काटि के देखले कि कहीं ई सपना त ना नु ह? सपना ना रहे; दउरत भैरोनाथ सेठजी किहाँ पहुँचले। बड़ा आवभगत कइले सेठजी उनुकर।

सेठजी पुछले कि रउवाँ कइसन अखबार निकाले

चाहऽतानी भैरोनाथजी? भैरोनाथ आपन कुल्हि प्रोजेक्ट बतवले। कहले कि एह देश में जनता के खिलाफ जतना काम हो रहल बा ओकरा के छापे खातिर निकली ई अखबार ताकि जनता के भलाई होखो।

सेठजी बड़ा गहिर मुस्की कटले। उनका चेहरा पर शातिर भाव रहे। बोलले... "हूं। अइसने अखबार के सख्त जरुरत बा। बाकिर हमहूं कुछ दू नंबर के धंधा करेनी। त हमरा के अपना क्रोध में ना नू लपेटबि?" सुनि के हँसि दिहले भैरोनाथ। कहले– "अब मालिक के खिलाफ छापि के अखबार बंद कराइब का हम!" हँसि–मजाक में कोको कोला यानि कोक आइल। सब पिहल। सेठजी अखबार के दफ्तर अपना घर के पिछुआरा वाला हिस्सा के बना दिहले। तीन गो बड़–बड़ आ एगो छोटहन कमरा रहे। टेलीफोन आकार के गैरेज वगैरह त रहबे कइल।

सेठजी भैरोनाथ से पुछले कि कौनो बड़ अखबार में अपना अखबार के स्टाफ खातिर विज्ञापन छपवाइब का? त भैरोनाथ कहले कि ना। पहिले रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स किहाँ से अखबार के नाँव पास करा लिहल जाउ। नाँव? सेठजी चकित भइले। भैरोनाथ उनुका के बतवले कि कौनों अखबार शुरु करेके पहिले आठ–दस गो नाँव लिखे के परेला कि हई–हई नाँव हम प्रस्तावित करतानी। अब रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स के दफ्तर ई देखि कि रउवा जवन नाँव पेठवले बानी ओह नाँव के अउरी कौनों अखबार देस में नइखे नू? अगर बा त ऊ दोसर नांव माँगी। अगर नइखे त ऊ नाँव पास हो जाई। अब रउवा ओह नाँव से अखबार निकालीं।

सेठजी मुस्कइले। कहले कि इ कौनो भारी बाति नइखे। संबंधित अधिकारी के हाथ में नोट थमा दीं, नांव पास हो जाई। भैरोनाथ एह बाति पर हिचकि गइले। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़े जा रहल बानी आ हमहीं भ्रष्टाचार के बढ़ावा दीं? ई का सम्भव बा? सेठजी कहले कि ई कुल सोचे लागला पर छवो महीना में अखबार ना निकली। तबो भैरोनाथ के मन ना कहे कि रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स में धूस दिआउ। तब सेठजी कहले कि रउवाँ आठ–दस गो नाँव लिखि के दीं। आ नाँव पास करावे के जिम्मा हमरा पर छोड़ि दीं। हमार काम आजु ले नइखे रुकल।

राजधानिए में अखबार निकले के रहे, आ ओहिजे रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स के दफ्तर रहे। बीस दिन के भीतर–भीतर का जाने कइसे सेठजी ओहिजा से अखबार के नांव पास करा ले अइले। अखबार के नांव रहे 'रोशनी के किरन'। तय भइल कि 'रोशनी' खूब बड़ अक्षर में रही आ 'के किरन' छोट अक्षर में। यानि लोग समझे कि अखबार के नाँव 'रोशनी' हऽ। सेठजी कहले कि देखीं कौनो चीज में कट्टर पंथ बहुत बाउर ह। अखबार निकाले जा तानी त एकदम हठ कइल उचित नइखे। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ीं। खूब लड़ीं। बाकिर कहीं–कहीं रणनीति से काम लीं। हर जगह लाठी, हठ आ जिद्द ना काम आवे। एगो सफल आदमी होखे खातिर तालोमेल बइठावे सीखीं। खासतौर से तब, जब रउवां विचारधारा के बहुत कम लोग समर्थन देउ। रउवां सम्पादक के संगे–संगे एगो कुटनीतिको बने के परी। तब रउवां आपन लड़ाई लड़ि सकेनी। भैरोनाथ के बुझाइल कि सेठजी ठीके कहऽतारे।

तय भइल कि बड़ अखबारन में सम्पादकीय सहकर्मी लोगन खातिर विज्ञापन ना दियाई। भैरोनाथ के संगिए साथी लोग अखबार निकाल ली। बाकी स्टाफ खातिर भी विज्ञापन नाहिए दियाउ। सेठजी के पीए तीन गो लइकी बाड़ीसन। ओह में से एगो भैरोनाथ के पीए हो जाई। चपरासी वगैरह भी सेठे जी देबि। विज्ञापन आ प्रसारो विभाग में सेठ जी के आदिमी रहिहें।

यानि एगो अखबार के दफ्तर के जौन ढाँचा रहे चाहीं तौन बनि के तेयार हो गइल। भैरोनाथ अखबार निकाले के उत्तेजना में जीए लगले। पहिले हई छापब, त हई छापब। एह भ्रष्ट व्यवस्था के चूल हिलाके राखि देब। एह देश में जौन दलाल आ सफेदपोश बाड़न ओकनी के बखिया उधेड़ के छोड़ि देबि। उनका लागल कि जोवन के ईहे सबसे सुखद क्षण आ सुनहरा मोका आइल बा।

भैरोनाथ के रात के नींद ना आवे। आदमी जब अपना इच्छित मनोरथ के लगे पहुँचेला त एहीतरी उत्तेजित हो जाला। आ कुछ– कुछ कवों में उड़े लागेला। कई लोग एह स्थिति में अपना के सूरमा बूझे लागेला। बाकिर भैरानाथ तनी समझदार रहले, एसे ना ऊ हवा में उड़ले आ ना अपना के सूरमा समझले।

'रोशनी.....' के पहिला अंक सचहूं बड़ा धमाकेदार निकलल। भैरोनाथ ओहमें विस्तार से व्यौरा देले रहले कि आजादी के बाद कुल केतना बड़ योजना बनली सन। आ ओकनी पर कुल कतना खर्चा भइल आ कइसे ऊ कुल पइसा अफसर आ नेता लोगन के जेब में चलि गइल। देए के आम आदमी जहाँ के तहाँ रहि गइल। का इहे लोकतंत्र ह? का एही खातिर भगत सिंह, चन्द्रशेखर

आजाद आ रामप्रसाद बिस्मिल जइसन लोग आजादी के लड़ाई लड़ल लोग?

एक पन्ना पर ईहो रहे कि हर साल स्वास्थ्य खातिर सरकार कतना खर्च करेले आ तबो लाखन आदमी दवाई का अभाव या जरूरी दवा–दारू के बगैर मरि रहल बाड़न। आंकड़ा एह तरीका से दिहल रहे कि लोग बोर ना होखसु। बतियावे वाला अंदाज में कुल्हि बात कहि दीहल रहे।

भैरोनाथ जब अखबार के पहिला प्रति अपना हाथ से छुअले त उनका आनन्दातिरेक के अनुभव भइल। आ जीवन के साध पूरा होखला पर आदमी छने भर में केतना संपूर्णता के बोध करे लागेला।

लगभग हवा में उड़त भैरोनाथ अखबार के कुछ प्रति लेके अपना परिचित दायरा में घूमि अइले। उनुका लागत रहे कि अब लोगन के लागी कि हँ एगो अखबार बा, जवन केहू से ना डेराला। दूध के दूध आ पानी के पानी छापि देला। बाकिर उनुका लागल कि आम आदमी के उनुका अखबार में कौनो दिलचस्पी नइखे। सब निनानबे के चक्कर में पड़ल बा। भ्रष्टाचार बा त होखे, आम आदमी के साथे अन्याय हो रहल बा त होखे, सब अपना–अपना निजी सुख–दुख के अहमियत दे रहल बा। देशव्यापी भ्रष्टाचार के अच्छा खासा प्रभाव हर आदमी पर पड़ि रहल बा। आम आदमी क चेतना आ विवेक काहें पत्थर नियर हो गइल बा? एहो सवाल कइल गइल रहे अखबार में?

भैरोनाथ के हित, मित्र, परिचित आ सेठजी अखबार के खूब तारीफ कइल लोग। भैरोनाथ के लागल कि मेहनत सुकुलान भइल। ठीक बा कि आम आदमी आजु सूतल बा। लेकिन ओकरा के 'रोशनी.....' के जरिए जगावे के परी। आम आदमी जरुर जागी। आजादी मिलला के तुरन्ते बाद एह देस के शासन तन्त्र में हिस्सेदार लोग सबसे पहिला षड्यन्त्र आम आदमी के सुतावे खातिर कइल। आम आदमी के अज्ञान आ भ्रम के स्थिति में रखले रहला पर कवनो दुख ना होई। खूब चानी काटे के मिली। आ ई हजार–हजार गो जवन सेक्स के पत्रिका निकलऽतारी सन ईहो त एगो षड्यन्त्र हऽ। ताकि नई पीढ़ी सेक्स के छद्म मीठ रहस्य में डूबल रहो। ओकरा में राजनीति आ सांस्कृतिक चेतना ना जागि पाओ।

सचहूं भैरोनाथ धमाका पर धमाका छोड़े लगले अपना अखबार के जरिए। रोशनी के चर्चा होखे लागल अचानके एक दिन 'रोशनी.....' के एगो उपसंपादक के सेठजी अपना घरे बोलवले। उपसंपादक के नांव रहे त्रिपुरारी नाथ। त्रिपुरारी जी पहुँचले सेठ जी का घरे। सेठ जी उनुकर खूब आव भगत कइले। अपना कमरा से नोकर–चाकर लोगन के कवनो बहाना से बाहर भेजि दिहले। जब सेठ जी आ त्रिपुरारी जी अकेला रहि गइल लोग तऽ सेठ जी पुछले कि अखबार कइसन निकलि रहल बा? त्रिपुरारी जी कहले कि अखबार त धूम मचा देले बा। सेठ जी तनी गंभीर हो गइले। कहले कि धूम मचवला के माने?

त्रिपुरारी जी के समझ में ना आइल कि सेठ जी के ऊ का बतावसु। कहले कि हर आदमी 'रोशनिए....' के बात करऽता। सेठ जी कहले कि के करऽता? त्रिपुरारी जी फेरु अचकचा गइले। हिचकिचाते बोलले कि आम आदमी। सेठजी तड़ से पूछले कि कौन आदमी? अब त त्रिपुरारी जी के कुछु बुझइबे ना करे। ऊ का कहसु? तब सेठजी कहले कि मानि लीं कि सब अखबार के तारीफे करऽता, त हम का तारीफ लेके चाटबि? अब एकर जबाब त्रिपुरारी नाथ का देसु? कहले कि एकरा बारे में रउवां संपादक जी से बात करीं। 'संपादक? कौन संपादक?' सेठ जी डपटि के पुछले। मिमिअइला अंदाज में त्रिपुरारी नाथ कहले 'भैरोनाथ जी!!' सेठ जी नकारात्मक मुस्की कटले। ओह मुस्की में व्यंग्य, उपेक्षा आ दम्भों के मिलल जुलल भाव रहे। कमरा में गहिर सन्नाटा उतरि गइल। पाँच मिनट ले सेठ जी चुपे रहि गइले। फेरु अचानक सेठ जी त्रिपुरारी जी का ओर मुड़ि के कहल– "रउवां लेखन में एगो धार बा। कई हाली, हमरा बुझाला कि रउवां अपना संपादको से ज्यादा बढ़िया लिखेलीं" एकरा बाद सेठजी फेरू पाँच मिनट चुप रहले। गहिर सन्नाटा फेंरु ओह कमरा के अपना जद में ले लिहलसि। लागल कि एअर कंडीशनरो अब आवाज नइखे करत। अचानक सेठजी पुछले– "रउवां के अगर हम रोशनी..... के संपादक बना देबि त अखबार निकाले में कवनो परेशानी ना नू होखी?" त्रिपुरारी नाथ चिंहुँकि गइले। चिहाइल पुछल– "जी?" सेठजी कहले– "अब हम रउवां के संपादक बनावल चाहतानी।" त्रिपुरारी नाथ कहले– "ई त कृपा बा।" सेठजी पुछले– "बाकिर भैरोनाथ त राउर दोस्त हउवन"। "हँ। अच्छा दोस्त हउवन।" सेठजी ई सुनि के लगले नकारात्मक मूड़ी हिलावे। त्रिपुरारी नाथ के बुझइबे ना करे कि एकर माने का। तले सेठ जी बोलले ए तरीका के दोस्ती रउवाँ के

कहीं ना ले जाई। रउवां के संपादकीय विभाग में आपन गुट बनाईं। हम अबे से रउवां के संपादक के अधिकार दे रहल बानीं बाकिर भैरोनाथ के एक–बा–एक हटाइयो दिहल ठीक नइखे। पहिले उनुका के अपमानित करे खातिर रउवाँ महीन उपाय खोजीं। जब अपमान कइला के पराकाष्ठा हो जाई त अपने ऊ छोड़ि के भागि चलिहें। चाल्हांक आदमी केहू के पद से ना हटावेला। कूटनीति के जरिए अइसन माहौल बना देला कि ऊ आदमी खुदे पद से हटि के भागि जाउ।

अगिला दिन भैरोनाथ के दफ्तर के माहौल बदलल लागल। उनुकर पीए उनुकर कहले ना सुने। जवन चीज टाइप करे के देसु ओकरा के फाइल में दबा के घूमे फिरे चलि जाव। ओकरा के बोला के जब भैरोनाथ डंटले त ऊहो उनुका के जबाबा दे दिहलसि। ककहलसि कि 'हम का राउर गुलाम हईं? जब हमरो मन करीं टाइप क के देबि।' भरल आफिस में उनका के अपमानित क दिहलसि। भैरोनाथ– तमतमा के कहले 'आजु से तोहार नोकरी एहिजा से खत्तम।' बाकिर पीए लक्ष्मी कुमारी पर कौनो असरे ना परल। ऊ ठाठ से अपना सीट पर बइठि के त्रिपुरारी नाथ से हंसि–हंसि बतियावे लागलि। भैरोनाथ तमतमाइल सेठ जी के दफ्तर में पहुँचले। देखले कि सेठजी अपना रोजाना कामकाज में बाँझल बाड़े। संकुचाइले भैरोनाथ कहले कि रउवां से हम कुछु बतियावे के चाहतानी। सेठजी रुखर बोली में कहले– "राति खा आईं.... एह बेरा हमरा लगे टाइम नइखे" आ जब भैरोनाथ राति खा गइले त सेठजी कहले कि रउवां से भेंट करे के हमरा लगे टाइम नइखे। भैरोनाथ के बुझइबे ना करे कि आखित उनुकर गलती का बा? अखबार खूब नीक निकलि रहल बा। सब तारीफ कर रहल बा। विज्ञापनो धीरे–धीरे मीले लागल बा। अचानके अइसन का हो गइल कि जवन पीए उनुकरा से अदब से बाति करति रहलि ह, ऊ पलटि के उदंडता से जबाब दे तिया त्रिपुरारी नाथ उनुकरा से दुश्मन नीयर व्यवहार करतारे। आखिर बाति का बा? भैरोनाथ अपना चैंबर में जाके पहिले अपना पीए के बोलवले। लक्ष्मी कुमारी तुरन्ते ना आके आधा घंटा बाद अइली। भैरोनाथ पुछले कि एतना देर बाद काहें अइलू ह? त उनुका के जबाब मिलल–चाह पीए गइल रहली हं? भैरोनाथ उनुका के समुझवले जे अखबार के दफ्तर का होला। बिना अनुसासन के कवनो दफ्तर के कामकाज ना हो सकेला। आखिर में भैरोनाथ लक्ष्मी कुमारी से पुछले– 'हमरा से का गलती हो गइल बा कि तू आजु एह तरे व्यवहार करतारु?' बाकिर लागल कि लक्ष्मी कुमारी क भैरोनाथ के कौनो बतिए नइखे सुनात। जतना देर भैरोनाथ उनुकरा से बतियवले। ऊ शून्य में ताकत का जाने का सोचत रहली। भैरोनाथ भीतरे–भीतर बहुत बिचलित भइले। अगिला दिन अजबे अखबार निकलल। हेडिंग कुछु बा आ मैटर कुछ। भैरोनाथ संपादकीय विभाग के सबका के बोलवले। माने मीटिंग कइले आ सबका के खूब लतड़ले। ओकरा अगिला दिन अजबे हो गइल। अखबार में संपादक के नाँवे गलत छपि गइल। यानि भैरोनाथ के जगह पर पैरोनाथ छपि गइल। ओहि दिने भैरानाथ इस्तीफा दे दिहले। संपादक बन ले त्रिपुरारी नाथ। बाकिर अगिला दिन अखबार ना निकलल। आ अखबार त कबो ना निकलल। अब त्रिपुरारियों नाथ के बुझाइल कि सेठजी उनुकर बड़ा खूबी से इस्तेमाल कइले हा। हफ्ता भर में सेठजी के आदिमी त्रिपुरारियोनाथ के खूब अपमानित कइले सन। बाकिर ऊ संपादक के कुर्सी ना छोड़ले। जनम जन्मांतर के साध पूरा भइल रहे। अगर केहू कहे कि ए त्रिपुरारीनाथ तूँ आपन रीढ़ के हड्डी दान दे द त, तोहरा के हम आजीवन संपादक बना देबि। त त्रिपुरारीनाथ दे दीहें आपन रीढ़ के हड्डी। आ बिना रीढ़ के जीवन भर रहिहें। पुरुषार्थ, विवेक आ चेतना जइसन शब्द त्रिपुरारीनाथ के शब्दकोश में नइखे। उनुका शब्दकोश में बा केहू तरी धन, प्रतिष्ठा आ सुख पावे के निर्लज्ज उपाय। बाकिर अब एकर का कइल जाउ कि सेठजी अखबार ना निकलल। त्रिपुरारीनाथ के मन के साध मने में रहि गइल।

एने भैरोनाथ नया भैरोनाथ बनि गइले। उनुका भीतर पहिले तुलना में कई गुना आत्मविश्वास बढ़ि गइल। सेठ लोगन के एह चरित्र से ऊ अब गहराई से वाकिफ हो गइल रहले। आ सेठ जी काहें? हर शासन करे वाला आदमी के चरित्र में सेठ जी वाला चरित्र रहेला। शासक लोगन के मन में योग्यता के अर्थ कुछु और होला। रउवां बड़का लेखक, बड़का पत्रकार आ बड़ प्रतिभावान बानीं त रहीं.... रउवां हमरा खातिर कुछु नइखीं। रउवां हमरा खातिर बानी एगो शतरंज के गोटी। जबले रउवां शासक लोगन के पालतू बनि के रहब, ऊ राउर प्रतिभा के महत्व दी लोग, आ जहिया रउवाँ तनि के बतियावे लागबि आ चाहे जबे शासक लोगन के ई बुझाई कि रउवां पांखि जामता, बस एके दिन में रउवां कौड़ी के तीन हो जाइब। आ शासक लोगन के कारण

रउवां के प्रतिभाहीन साबित क दिहे सन। भैरोनाथ लवटि के अपना गांवे चलि गइले। गांव वाला उनुका के पहिलहीं से इज्जत करत रहल लोग। गांवे लवटि के उनुका बड़ा संतोष मिलल। ऊ ठानि लिहले कि अखबारों के चुनौती देवे वाला एगो सशक्त माध्यम ऊ तैयार करिहें। ऊहो बिना पइसा खरचा कइले। काफी सोचि–विचारि के ऊ गांव के बेरोजगार लोगन के जुटा के एगो शुद्ध सामाजिक संस्था बनवले। नाम रखाइल 'लोक संघ'। एमें जवान, बूढ़ सब तहर के लोग रहे। ऊ गांव–गांव में घूमि के लोगन के समुझावे लागल कि अखबार का ह? राजनीतिक दल का हउवन सन आ देस एबेरा कहवां बा? अपना बाति के प्रभावशाली ढंग से कहे खातिर भैरोनाथ एगो नुक्कड़ नाटक तेयार कइले, राति खा तबला, ढोलक आ हारमोनियन पर लोक धुन दिल के गहराई में उतरि जाउ। आ गीत के भाव मनुष्य के जगावे वाला। गलब के ताकत भरि देबे वाला। कहे के ढंग एतना सरल कि लोगन के लागे कि गहिर–गहिर बाति के सरल बोली में समुझावे के गुन अगर एह दुनिया में केहू के लगे बा, त ऊ भैरोनाथ छोड़ि के अउर दोसर केहू ना हो सकेला। भैरोनाथ लोगन से कहसु कि रउवां सब सवाल करीं। हम जबाब देबि। कौनो सवाल के स्वागत बा। एह ढंग से सभा से लोग मुग्ध रहे।

लोकसंघ के नवहा लोग एगो अउरी काम करे लागल। जवन अफसर भ्रष्टाचार में डूबल रहे। आम आदमी के काम करे खातिर पइसा मांगे, ओकर लोकसंघ के युवा मोर्चा घेराव क देउ। भ्रष्ट आ चोर अफसर कर्मचारी, लोकसंघ के नाँवे सुनत डेरा जा सन।

भैरोनाथ के नांव अब जवारे में ना जिलों में हो गइल। उनका लागल कि आजु एगो तेज–तर्रार आ समझदार सामाजिक संस्था के निहायत जरुरत बा। अब ऊ एगो बैकल्पिक मीडिया तैयार क सकेलन। ई मीडिया ह लोक सम्पर्क। अब जब ऊ अखबार निकलिहन त ओह में सजग, ईमानदार आ जुझारू लोग भागीदार रही। ओही लोगन का पइसा से अखबार निकली। पोल खोले वाला अखबार बाड़न सन कहाँ? अचानक अनुका लागल कि सेठजी उनका जइसन लोगन के मनोबल तूरे खातिर अखबार निकाले के नाटक कइले। बाकिर मनोबल तूरे वाला के मनोबल के औकाति का?

– **"पाती" मीडिया–विशेषांक, अंक–10, सितं0–94 से। ●●**

अशोक कुमार तिवारी

हँसी मरुवा रहल बाटे, खुशी मुरझा रहल बाटे,
पता ना जिन्दगी में दौर कइसन आ रहल बाटे।

सम्हरि के खाड़ होखे देइ ना अन्धड़ समस्यन के,
फसल सपनन के जइसे बेवजह खउरा रहल बाटे।

बचावल जाय कइसे खुद के, इज्जत–जात दुनिया में,
फिकिर के घून जिनिगी के तखत के खा रहल बाटे।

कठिन हालात से अउरी कठिनतम होत जाला नित,
कि सझुरावे में कठिनाई अउर अझुरा रहल बाटे ।

गनीमत बा त अतने बा भरोसा बा अभी कायम,
तनी दूरे सही मंजिल नजर में आ रहल बाटे।

❑ सूर्यभानपुर, लालगंज, बलिया 277001

माई

✍ सुभाष पान्डेय 'संगीत'

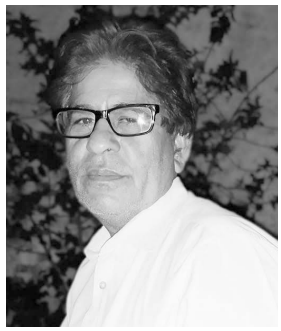

माई जइसन होली माई।

सारी, झुमका, टिकुली खातिर
मेहरि करे लड़ाई।
बाइक खातिर रूसल लरिका,
हिस्सा खातिर भाई।

स्वारथ साधत हीत-मीत सभ
जे के आपन बुझनीं,
बबुआ काहें मुँहवाँ सूखल
पुछलसि खाली माई।
माई जइसन होली माई।
चढ़ल उधारी घरखरची के,
करजा लेइ दवाई।
कबहूँ सूखा, कबो बाढ़ि से
खेती गइल बिलाई।
सबहिन जाने हूक हिया के,
पलटि हाल ना पूछे,
उरिन काहि बिधि बबुआ होइहें ?
गहिर सोच में माई।
माई जइसन होली माई।

धइ माथे पर हाथ असीसे
आँखिन लोर बहाई।
अँचरा से पोंछे लिलार के
देव-पितर गोहराई।
बबुआ हो दुबराइल बाड़ै,
आवै कुछऊ खा लै,
पीढ़ा दिहली, पानी दिहली,
ममता-मूरति माई।
माई जइसन होली माई।

कहवाँ गइले, कहाँ लुकइले,
के अब पता बताई?
जूरी तपन धमस तन लागे
सेवत राति बिताई?
के बहरी से आवत बोधे,
जल्दी घर आवे के,
सूनी अँखियाँ, सोचे मनवाँ,
अब ना बोली माई।
माई जइसन होली माई।

मुसहरी, गोपालगंज-841426

फँसि गइलऽ तू

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

जोन्ही जइसन दमकत छूँछी
साँवर भरल पुरल चेहरा पर
मुसकी लहरे
मन डूबे उतराए
बबुआ फँसि गइलऽ तू।

नीसन्ह पाँव
परे धरती पर
दलके मन
हलुक बरन के साड़ी में जब
झलके तन
आँतर गहरे
मदन मृदंग बजावे
बबुआ फँसि गइलऽ तू।

लामी केश खुले जब सनके
शीत पवन
ईंगूरी ओठन पर पँवरे
जब जोबन
नीनि निखहरे
सपना में अझुरावे
बबुआ फँसि गइलऽ तू।

मातल अँखियन में अब
शोखी अङड़ाले
नेहिया के गोदी अब
प्रीतम बइठा ले
अँखिया मिलते
जब आँचर सझुरावे
बबुआ फँसि गइलऽ तू।

कइसे मीत बनाईं तोहके

कइसे मीत बनाईं तोहके अपना आङन के तुलसी
हमरो माटी में देंवका के आगम होखे लागल बा।

गुमसुम बइठे चान कपारे हाथ जमल बा मन ऊड़ल
हमनी के बिबेक पर केकर नजर लगल बा सब बूड़ल
काहें अमिरित बरिसाईं जब भाप बनी उड़िए जाई
अब तऽ पनियो में अगिया के हलचल होखे लागल बा।

गलियन में अब कुक्कुर भूँकल छोड़ि दहाड़े लागल बा
शहरी भइल सियार न डर अब दाँत चियारे लागल बा
का होई जब गहुँअन पलटी आ लागी फुफकार भरे
अब तऽ सिधवो साँढ़ खुरी से माटी खोदे लागल बा।

गमला का अपनापन से बगिया कइसे उजड़े लागलि
जिनिगी के गीतन से अब जिनिगी कइसे बिखरे लागलि
मन चिंता में परल बहाईं कइसे नेहिया के गंगा
फलगू नीयन धार रेत के नीचे-नीचे भागल बा।

प्रधान संपादक,'सँझवत'
२ध६, जी.पी.रोड,पार्वती कंप्लेक्स,प्रथम तल,
पार्वती नगर,पोस्ट- बंगाल एनमेल,
जिला-२४परगना(प.बं.) पिन-७४३१२२

पतझड़ भइल अनंत

रमकलिया के गाँव से
रूठ गइल मधुमास ।

कोकिल से कंत बसंत रूठल
थापन से मिरदंग
कलियन से अंगड़ाई रूठल
फागुन भइल बेरंग ।

परबतिया के पाँव से
लूट गइल अनुप्रास ।

हरिया से होरी रूठल
हल्कू से सब खेत
छठिया से चूड़ी रूठल
बुधिया मर गइल सेंत ।

करिया कगवा के काँव से
असवा भइल निरास ।

फूलन से भौंरा रूठल
मोजर से रूठल सुगंध
फुलवारी से तितली रूठल
पतझड़ भइल अनंत ।

बीच भँवर में नाव से
उठ गइल बिसवास ।।

डॉ० हरेश्वर राय

कविता

ना एने के ना ओने के

अपने ही देशवा में भइनी बिदेशिया रे
जाके कहाँ जिनिगी बिताईं ए संघतिया

खेत खरिहान छूटल, बाबा के दलान छूटल
दिल के दरद का बताईं ए संघतिया

तीज तेवहार गइल, जियल मोहाल भइल
मनवाँ में घुलत बा खँटाई ए संघतिया

दक्खिन में दुर दुर, उत्तर में मार मार
कहाँ जाके हाड़वा ठेठाईं ए संघतिया

गाँव घर मुँह फेरल, नाहीं केहु परल हरल
रोकले रुकत ना रोवाई ए संघतिया

एहिजे के भइनी ना ओहिजे के रहनी रे
मन करे फँसरी लगाईं ए संघतिया

बी-37, सिटी होम्स कालोनी, जवाहरनगर सतना,
म.प्र., 09425887079

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बाबूजी

पुरबुज के इज्जत पर पानी, रोज फिरत हौ बाबूजी।
बबुआ सोझे पान कचरि के, बात करत हौ बाबूजी।

घरे बहुरिया माजा मारे
माई ओकर पाँव पखारे
दुअरे गोतिया शतरंज के, चाल चलत हौ बाबूजी।

आगु देखीं खुलल किताब बा
पाई-पाई के हिसाब बा
घरहीं के लइकन में रोजे, रार मचत हौ बाबूजी।

काम-धाम कुल परल कपारे
जे देखे ऊ ताना मारे
जड़मतियो अब हमरै छाती, मूँग दरत हौ बाबूजी।

सबही उझिलत बिष के गगरी
बाचल कहवाँ माथे पगरी
चारो ओरी चकर-चकर बस, गाल बजत हौ बाबूजी

गयल जमाना पहिले वाला
अब कहाँ चउपाल भेंटाला
परधानन के खिस्सा छोड़ा, माल बनत हौ बाबूजी।

आइल बाटे नया जमाना
चोरन लग्गे बाटे थाना
समझउता खातिर गइला पर, जेब कटत हौ बाबूजी।

गाँव-गाँव आ डगर-नगर में
आफत डोलत शहर-शहर में
हँसी कि रोईं अपना उपरी, देश जरत हौ बाबूजी।
बबुआ सोझे पान कचरि के, बात करत हौ बाबूजी।

सी-37, सेक्टर-3, चिरंजीव बिहार,
गाजियाबाद (उ०प्र०)

राजीव उपाध्याय

(एक) ओरहन

गड़हा के पानी
नाद में भरि आइल बा
मोथा, भर खेत अंखुआइल बा
दूबि कोठा पर चढि आइलबा
सीढी टूटि छितराइल बा
के ओरिचीओरचन अब ?
कि बाध लटक के
माटी में लसराइल बा

चारूओर इहे हाल बा
नगर-नगर बउराइल बा
घर चानी बनि जाव
दुआर पर देवाल जोड़ाव
अउरी बांचल खुंचल जेवन बा
घूरा पर सरि जाओ
एतने बस जिनगी के दउड़
बापो-माई अघाइल बा

ओरहन सभकर इहे बा
हीत-नात सभ बिलइलें
कि नेवता ले बस हितई बा
पोखरा सूखि गइल गँउवाँके
पलस्तर झरि गइल इनरा के
बाकिर एक ढेकुल
ना केहू पानी खींचे
किबगइचा ले उजराइल बा।

(दू) कह! आखर केवन लिखीं

कह! आखर केवन लिखीं
कि बात तोहरा ले चहुँपे
अउर अझुराइल गिरह
सभ खुल जाव
कि हम मन के पाँख पसार
आसमान अँजुरी में भर लीं।

भरि लीं हम उहो कोना
अँकवारी में
जहाँ ले ना जाव
सूरूज के दँवक
अउरी पानी बरखा के
कि सूखल बा मन
जाने कबसे।

कुछ आई
सोखी हमके
जइसे कागज सोखे
सियाहीके
पर ईआँखि
कबले जागी
उहाँ ई लागत बाअब
कहऽ त देर थोरी
एही माटी में सूति लीं।

(तीन) ई बाँस के बँसवार

ई बांस के बँसवार हऽ
जेवन सुखे-दुखे
कामे आवेला।
ई बांस के बँसवार हऽ

मजल छवाला
माड़ो बन्हाला
झंडा मंदिरके लहराला।
ई बांस के बँसवार हऽ

फोंफी बनि लइका खेलावेला
बनि पुतला घोपड़ाड़ऽभगावेला
चांचर बनि आँखि लगावेला।

ओइसहीं जिनगी के तरकुल
ताड़ी नियर सरवेला-चूवेला
बेरा से दवाई, कुबेरा मुआवेला।
ई बांस के बँसवार हऽ

बांस के पुलई बनि मन
मांटा नियर धऽ लेला
कि बरिसन सरि के अंखुआला।
ई बांस के बंसवारहऽ

❑ ग्रा०- बाराबाँध, पो० रतसड़, बलिया - 277001

मन नाहीं दस बीस

डॉ. आशारानी लाल

ऊ हिम्मती रही, साहसी रही, उनका लगे अपन हौसला रहे, ऊ अपना जुबाने के ना, अपना विचारों के पक्का रही। उनकर नाँव सुखिया रहे, एहिसे ऊ अपना रोवाँ–रोवाँ से निकसल दुःख के – अपना मुँह से बहरियाइल आह के आगी में हरदम स्वाहा कइल करत रही। कबो, केहू से कुछु कहतो ना रही। अपना बाप–माई क पगड़ी क खियाल उनका हरदम बनल रहत रहे। अपना दुनू कुल नइहर आ ससुरा क भलाई में ऊ अपन भलाई देखल करत रही। उनका मन में उम्मीद क एगो दिया हरदम जरत रहत रहे, जवना के देख–देख के ऊ अपन दिन–रात काटत रहत रही। ऊ इहे सोचत रही कि– एक न एक दिन एहू डाढ़ पर फूल–फुलाई आ बसंत ऋतु जरूर आई। आई नाऽ अइबे करी। उनकर इहे उमीद उनका जिनगी क दीया में तेल बनके उनका मन का बाती के हरदम जरावत रहत रहे।

ऊ अपना ससुरा के जिनगी में चोट पर चोट खइली। कइ बेर गिरली आ उठली। कइ बेर आहि–आहि क–के साँझ से बिहान कइली, बाकी केहुए से अपना चोटाइल जिनगी के कथा–कहानी कबो ना सुनवली। ऊ भितरे–भीतर सुनगत रही, धुधुआँत रही, बाकी उनका भितरी मन क ई लहर कबो बहरियाइल नाहीं। ऊ कबो इहो ना बतवली कि उनकर मरद उनका साथे का कइलन। ससुरा से उनकर 'ऊ' उनके भगवले रहन कि ना। उनकर नाँव अवते ऊ लजा जात रही। उनकर मुँह लाज क मारे लाल हो जात रहे। आपन आँख ऊ एने ओने चोरावे लागत रही। उनकर लुकाइल अनबोलता पियार उनका ओठवा पर आके नाचे लागत रहे। कबो कबो अँखियों में उनकर मोह–माया उमड़े लागत रहे। साँचों भितरी से ऊ छितरा गइल रही।

एक बेर ऊ बतवले रही कि उनकर सास–ससुर आ भसुर सब मिलके, उनका बाप के बोलाके उनके नइहर पेठा देले रहे। ऊ इहो कहले रही कि ससुरा से ऊ एहिसे दुरदुरावल गइली कि उनका न नीक खयका बनावे आवत रहे, नऽ केहू से सहूर से बोले–बतियावे आवत रहे। ठीक से साड़ियों–लुग्गा पहिरे ऊ जानते ना रही, नऽ केहू से लजाए–बिजाए आवत रहे। ससुरा में सब इहे कहे कि– एकरा कवनो गुन ढंग आ सहूर हइए नइखे। ई ससुरा में रहे लायक मेहरारू नइखे। इहे कुल बतिया उनका मनवा के हरदम बेचैन कइले रहत रहे आ सतावल करे। छनो भर उनके चैन ना भेंटात रहे। नइहर में रहलो पर उनके अपना जिनगी क सोच क धुआँ मन में हरदम धुँधुआत रहत रहे, जवन लहर बनके निकसे खातिर उनके बेचैन कइले रहत रहे।

एक दिन जब ऊ अपना भउजी के अकेले में ठिठोली करत पवली तब उनका भितर के आगी ज्वालामुखी बन गइल, ऊ फूट गइली आ लगली कहे कि– "भउजी हो! ओह घड़ी हमार उमिरिए कतना रहे? अबे तऽ हम मेहरारूवो ना बनल रहीं। माई तऽ हमके चुहानी में जाही ना देत रहे– कहे कि– ससुरवा जाई तऽ उहाँ तऽ रोजे खयका ई बनाई– अबे खेल लेव। हम खेलते रह गइनी, फेरू एकही साँसे कहे लगली– भउजी हो, तूँहीं न हऊ गितवा गावत रहलू कि–

खेलत रहीं मों बाबा क अंगनवाँ, कि आई गइलें ना
लेके डोलिया कहाँर कि आई गइलें ना,

ऊ जे भसुरू निरमोहिया कि आई गइलें ना।"

"डोली कहाँर के अवते तऽ तूँ हमके चुनरी पेन्हा के हमरा ससुरा भेंज देले रहू। हम चिघरत–चिल्लात–रोवते–फेंकरते माई के छोड़के ओइजा चल गइलीं।"

– "ओइजा जाके घूंघ काढ़ के, हम सबका गोड़े पर गिरलीं, बाकी सब अपना बोलिए–बात से हमके हरदम लतियावे लागल रहे। पुचकारे चाहे कबो दुलारे केहू ना।" उत्तेजना में ऊ लगली हाँफे, तबो चुपइली ना। ऊ बूझ गइल रही कि ओही बेरा उनकर किस्मत फूट गइल रहे, तबे त दुइयो साल ना बीतल रहे कि उहाँ के लोगवा उनके उनकरा माई के घरे पठा देलस।

ऊ भउजी से कतनो आपन बात कहत रही बाकी तनिको थाकत ना रही। उनका मन के आगी अवरी लहर मारे लागत रहे। उनका मन में दुःख क अइसन तूफान उफनात रहे जेके ऊ रोक ना पावत रही, "ई घरवा त हमार आ हमरा माई के घर रहे बाकी अब तऽ लागते नइखे कि हमार बा। ई तऽ हमरा भउजी लोगिन के घर बन गइल बा। काहें?"

ए भउजी तोहने लोग न कहेलू कि– "जे ससुरा में ना खपल ऊ नइहर में का खपी।"

ओह दिन ऊ खुल्लमखुल्ला अपना भउजी से कहि दिहली कि ऊ चुप्प बाड़ी, बाकी उनकर मनवाँ कबो चुप ना रहेला। अपना मनवें से ऊ हरदम दुख–तकलीफ बतियावत रहेली। ऊ मने–मन कबो कँहरेली, त कबो डँहकेली। ऊ कब सुखिया से दुखिया बन गइली इहो केहू के ना जनवली। कबो–कबो त उनकर आपन भउजियो लोग उनके अपना घर से बहरिया देत रहे– ई कहिके कि उनकर भार कहिया ले ऊ लोग ढोवत रही। ओही घड़ी उनका बुझा जात रहे कि उनकर जिनगी अब एगो दुर्गम पहाड़ भऽ गइल बा। एतनो पर ऊ अपन हिम्मत हरली ना।

अचक्के में एक दिन ऊ सुनली कि भीटा पर वाली फुआ बहुते दिन बाद अपना नइहर आइल बाड़ी। लागल कि उनका मन क बुताइल दिया भक्क् से बर गइल होखे। कुछे महीना पहिले के त बात रहे कि फूफा के एगो अइसन बेमारी भइल कि राती में ऊ खाके सुतलन तऽ फेरू उठलन ना। फूआ कइसे होइहन? उनकर चमकत–दमकत चेहरा अब सेनुर बिना कइसन सुन्न भऽ गइल होई। आजे फुआ ओसही हँसत–खिलखिलात होइहन कि ना– इहे कुल देखे–सुने आ उनसे भेंट करे ऊ चल दिहली भींटा ओरी।

फुआ क दुःख का सोझा तऽ आपन दुःख ओसहीं भुला गइली जइसे दिन उगला पर रात। ऊ सोचत रही कि फुआ के त लोग अब बेवा कही, विधवा कही, ऊ तऽ सधवा बाड़ी, बाकी एकही दुःखवा दुनू ओरी बा। फुआ भर हाथे चुड़ियो ना पहिनले होइहन, लिलार पर टिकुलियों ना सटले होइहन, लाल–पियर लुग्गो उनका देंही पर ना लउकी – तऽ का भइल, बाकी ऊ तऽ ई कुल्ह सिंगरवा करियो के उनसे ढेरे दुखिया बाड़ी। उनकर देंहिया के कुल अंग फुआ घरे चलल जात रहे तबो एह दुःख–सुख क ढबराइल नदिया के झिलमिल पानी में उनका कुछऊ लउकत ना रहे। कबो अपना ओरी ताकत रही– तऽ कबो फुआ ओरी। मनहीं–मन ऊ देखत आ सोचत चलल रही कि ऊ त् कुल सिंगरवा करियो के, टिकुली, चुनरी आ आलता लगाइयो के अपना फुआ से ढेरे दुःखिया लउकऽतारी। लगली सोचे विचारे कि फुआ लगे पहुँचते ऊ उनके बतइहन कि फुआ हो ऊ अब सुखिया ना हई, उनकर नाँव अब दुःखिया पर गइल बा। ऊ जानत रही कि फुआ के मन अब बुता गइल बा। अब कबो मन में दीया ना जरी। अब ना से हँऽ ना होई, बाकी ऊ का करँस जे नऽ 'न' में बाड़ी, नऽ 'हँ' में। ऊ भर रास्ता बस इहे सोचत रही कि उनसे 'ऊ' का बतियइहन? का–का कहिहन आ का ना कहिहन। इहे कुल सोचत–सोचत ऊ पहुँचियो गइली। उहाँ पहुँचते फुआ के अपना अँकवारी में धके लगली भेंटे। रोवते–सुसुकते राग धके खूबे न भेंटली। एही भेंटला में इहो कहत जात रही कि फुआ हो– "अब हम केनियो क नइखीं– ना घरे के, ना घाटे के।"

ईहो कहली कि ऊ ससुरा तऽ गइल रही, उहाँ रहबो कइली, बाकी सभे ओइजा उनके भिने–भिन्न कइले रहत रहे। भर दिन ओइजा घूंघ काढ़ के कुल काम करत रहत रही। अपन जाँगर हरदम ठेठावल करँस, तबो रात भर अकेले बिछौना पर छटपटात रहत रही। रात के धुप्प अन्हरिया उनके साँप बनके हरदम डँसत रहत रहे। कबो उनका देंह आ मन के चैन ना भेटात रहे, ओहिसे ससुरा से उनकर मन ओसहीं फाट गइल– जइसे जतन ना करे से दूध फाट जाला।

फुआ से ऊ इहो कहली कि– "फूआ हो! तूँ ई बतावऽ कि हमार माई त हमके कुछऊ सिखवलस नाही, तऽ कवन कहीं कि उनकरे माई यानी हमार सासे अपना बेटा के कवनो ढंग सहूर सिखवले रही। सास तऽ हरदम इहे सुनावल करँस कि मरद त छुट्टा साँढ़ होला, जेने चाँहीं रात–दिन घुमल करी, मेहरारू गाय कहाले जेके खूँटा पर बान्हे के परेला।"

– "बतावऽ फुआ मरदो के त बियाह के बाद एगो मेहरारू भेंटाले नऽ। तऽ ओकरा साथे कइसे जिनगी बितावे के चाँही– ई बात माई अपना बेटा के काहें ना सिखावेली? मरद के छुट्टा साँढ़ कहिके ऊ अपना बेटा के आखिर का बनावल चाहेली?"

– "हम जनितीं कि एही के बियाह कहल जाला– तऽ गड़ही–गुड़हा में जाके डूबि धँसि मरिती, बाकी कबो

बियाह ना करितीं।"

फूआ से रो–रोके बोले लगली। चुपाए के नाँवे ना लेत रही– ई बियाह उनका जिनगी में एगो अइसन सुच्चा गेहुँअन साँप बनिके आ गइल बा कि ऊ रोजे–रोजे उनके डँसऽता तबो ओह जहर से ऊ नऽ मरतारी, नऽ जीयतारी। उनकर मनवाँ हरदम करकराता, डँहकता आ छटपटाता। एतना भइलो पर ई बात केहू जान नइखे पावत। ऊ डँहक–डँहक के कहली कि– "ससुरा से खेदइली तऽ नइहर अइलीं, अब नइहरो से दुरदुरावल जा तानी।"

"भउजाई लोग तऽ गेना नियर हरदम उनके एने से ओने डगरावत रहऽता", कहऽता लोग कि– "जे ससुरा के ना भइल ऊ नइहर के का होई?" हम का करीं ए फुआ?

ऊ सोचली कि फुआ शहर में रहेली त उनका ढेर गिआन होई– अपना करकराइल मनवाँ के उनसे तनी ढंढ़ई भेंटा जाई। एहि चलते करिक्की बदरिया नियर उनका सोझा एक–ब–एक फाट के बरसहीं लगलीं। फुओ ओह दुःख का फाटल बदरी से खूबे नहइली। लोग साँचो कहेला कि एगो दुखिए नऽ दुसरा दुखिया के बूझेला।

सुखिया कऽ कुल बात फुआ सुनली जवन उनकरो देंही में काँटा नियर गड़े लागल, तब एके बेरी जज बनिके अपन फैसला सुना दिहली।

"बचिया हो! तूँ एतना काहे कलपऽतारू? अब तऽ रोजे–रोजे बेटी लोग क दूसरो बियाह भइल करता। केहू अकेल नइखे रहके डँहकत। अबे तऽ तूँ कुँआरे न बाडू। कवनो बाल–बच्चा तऽ बा ना। माई–बाप मरिए गइल बा। अब तोहरा पर कवन बंधन बा। तोहरा कपारे पर केहू के हाथों नइखे। तूँहू एगो लायक लइका देख के लपक लऽ आ दूसर बियाह कइ लऽ। इहाँ केहू तोहार आँसू के पोंछवइया नइखे। तूँ अपना मरद सँगे हँसऽ–बोलऽ आ घूमऽ–फिरऽ। शहर में तऽ ई कुल रोजे होत रहऽता। ई नया जमाना बा। एह जमाना में अब कवनो मेहरारू तोहरा नियर दुखिया ना रही, न बनी।"

फुआ के उपदेस सुनते ऊ चुपा गइली। लगत रहे कि कवनो मंदिर क मूर्ती बनि गइल बाड़ी। फेरू उनका भितरी से एगो आवाज निकसल "हमार नइहर–ससुरा आ गाँव–घर क लोग हमके का कही? इहे न कही कि फलाना क बिटिया चाहे बहिनिया उढ़रि गइल। ऊ सबकर नाँव डुबा देलसि हऽ। हमार बिरादरी त हरदम खातिर हमनीं के जतिए से ना, गँउवों से बहरिया देई। जब ससुरवा वाला सुनिहन सन् तऽ जर–बुता जइहन सन् आ लाठिए–लउर से मार–मार के हमके मुआ दिहनसन। एकरा बादो ए फुआ! हमरा ओह सास के साँढ़ बनल बेटा के– का हाल होई? ऊ तऽ कहीं अपन मुँहवो देखावे लायक ना रहि जाई।"

फुआ बूझ गइली कि एह सुखिया से दुःखिया बनल बबुनिया क मन अबो आ आजो अपना ओह बियहल मरद आ ससुरा खातिर केतना गहिर नेह से लबालब भरल बा। ई ससुरे–नइहर के बचावे में डूबत–उतरात बिया। अपना जिनगी क गेना के एने से ओने डगरा रहल बिया। फुआ चुकली ना, कहली कि– "ए बबुनिया अब तऽ कोर्ट–कचहरी में ई बियाह हो जाता आ केहू जानियों नइखे पावत। तूँ डेरा मत। केहू कुछ ना करी। गँउवे के लोगवा ई सब सोचेला। शहर में तऽ केहू के एह सबसे मतलबे ना रहेला कि केकरा सँग के नाचता–गावता आ झूमऽता। गाँव क लोग चिल्ला–चिल्ला के अपन इज्जत बचावेला, बाकी ए बचिया तूँ तऽ जानते बाडू कि बियहवा भइला पर उहो लोग ई सब बात कुछ दिन में ओसहीं भुला जाई– जइसे सूरज क उगला पर चाँन।" फूआ देखली कि उनकर बबुनिया बेजोड़ माटी से बनल रहे। थोरही देर में बबुनिया क तन्द्रा भंग भइल। सोझा बइठल मूरत हिलल तऽ ओमें से आवाज आइल– "फूआ हो हम तऽ नऽ घर क बानी नऽ घाट कऽ – अब धोबिया के कुकुरा क हाल हो गइल बा।"

मने–मने ऊ सोचे लगली कि दू जगहा से तऽ उनके दूरदुरावल जाते बा, जब उनका किस्मतिए में सुख नइखे लिखल– तऽ बियहवा भइलो पर आ तिसरकी जगहिया गइलो पर ऊ रानी बन पइहन कि ना। कहीं अइसन ना होखे कि माथे पर दुसरकी ललकी चुनरियो के लोग अपना नजरिए से गुरेर के हवा में उड़ा देव। तब उनकर केनियो ठेकाना ना भेंटाई।

ई बात उनका चारों ओरी एने–ओने से मँडराए लागल कि एह दुसरका बियहवा के भइला से उनका बाप–माई क जवनो इज्जतिया बाँचल बा उहो धोवा जाई। अवरी ना– तऽ उनकर गाँवों जवार रात–दिन उनके सरापे लागी।

अइसने कुल सोच के ऊ कहि दिहली कि – "फूआ हो अब जिनगी भर हम उनकरे नउवाँ के सेनुर लगावत रहब बाकिर दूसर बियाह ना करब। उनकर माई त उनके साँढ़ कहलहीं बाड़ी। अब ऊ घुमन्ता साँढ़ हो गइल बाड़नऽ। घुमे दऽ। जब ले बल–बूता बा आ बउराइल मन बा तबे ले न घुमिहन। हो सकेला कि कबो हमार सुध आवे तब घुमत–घुमत एनिओ आ जाँस, चाहे अपना कवनो उधव के हमार खेजी करे के भेंजस।"

सुखिया ओह घड़ी ले उनकरे राह ताकत रहिहन। जब उधव अइहन तबो ऊ उनसे तकरार ना करिहन– बस एतने कहिहन कि उनको लगे एकहीं मन बा, दस–बीस गो नइखे, जेके ऊ एने–ओने बाँटत फिरिहन।.... एक हुतो सो गयो स्याम सँग... उनकर मन त एक्के रहे, एक बेर जहाँ लाग गइल, त लाग गइल। ●●

कइसे छिपाइब

विजय शंकर पाण्डेय

दू दिना से जमुना देवी खाली पानी पर रहलिन। ऊपर से दिन रात जागे के पड़ै। नींद कहाँ से आई। जेकरे दिल क टुकड़ा दरद से कराहत होखे, ओके नींद कहाँ से आई। आज नन्दलाल के अइले तीसरा दिन और घुटना के नीचे ओकर पैर काटे के पड़त हौ, काँहे से कि गैंगरीन होवे क डर बा, डाक्टर कहलन 'मैं इतना रिस्क नहीं ले सकता'।

हारगुन के बाप के हैसियत से हनुमान प्रसाद के रजामन्दी के फार्म पर 'एकेसेप्टेंस फार आपरेशन' दस्तखत करे के पड़ल।

सात बजे रात के बाद पेसेंट के साथ एक तीमारदार के अस्पताल में रहे क इजाजत हौ। एसे हनुमान प्रसाद के वार्ड से बाहर जाये के मजबूरी रहे।

बहुत कहले पर जमुना देवी एगो ब्रेड चाय के साथे लेहलिन आ नन्दलाल के लग्गे रखल स्टूल पर बइठ गइलिन। ओके बेहोशी के सूई लगल रहे। खून के एक बोतल चढ़इले पर दूसर दवाई के बोतल चढ़त रहल। जमुना देवी स्टूल पर बइठल–बइठल मरीज के बेड पर मूड़ी धर के पड़ल रहलिन। नर्स मना कइलस, 'नीचे बिछा कर सोओ, मैं मरीज देखने के लिए हूँ नऽ''।

नन्दलाल के हाथ–गोड़ बन्हल रहे जवने से करवट बदलले में ऊ कवनो गड़बड़ न कर दें। तब्बो रात के एक बजे जमुना देवी देखलिन कि ओनके हाथ पर गरम–गरम कुछ गिरल बा।

भाग के नर्स के पास जाके बतौलिन, नर्स दउड़ के आइल त देखलेस कि सूई में से पाइप निकल गइल बा।

'हाय राम, हाथ बाँधने के बाद भी कैसे छुड़ा लिया!' ऊ फेर से नली जोड़लेस।

कुछ देरी स्टूल पर बइठले के बाद जमुना देवी कम्बल पर फिर सुत गइलिन। बाकिर नींद काँहे के आवे? जिनिगी के पुरनकी इयाद सिनेमा के रील नियर मन में घूमे लागल।

आज से अट्ठाइस–बीस बरिस पहिले नन्दलाल के बाबू के सँग अइसहीं भरल सावन के महीना रहे। मऊ घोरावल बजार से तीस–चालीस लोगन क जत्था में बैजनाथ धाम जात रहलन। मुगलसराय टीशन पर गाड़ी पकड़े। अपने सबके बाद में बइठैं, तब तक अइसन भयल कि गाड़ी चल दिहलेस। एन देखत रह गइलन कि केहू छूटल तऽ नाहीं बा। तब तक गाड़ी क रफ्तार तेज हो गइल। दउड़ के कवनो डब्बा क हैण्डिल पकडत–पकड़त छूट गइल, एन धड़ाम से नीचे गिर गइल रहलन। गोड़ प्लेटफार्म पर गाड़ी के सीढ़ी से रगड़ के कट गयल। ऊ चिहुँक के उठ गइल। देह पसीना से तर बतर हो गयल।

गाड़ी धड़–धड़ करत आगे निकल गइल। साथे क संघतिया लोग सब डिब्बन में छितरा गयल रहलन। चाहे कवनो डिब्बा हो बोल बम, बोल बम चिल्लात चढ़ गयल रहलन। जइसे बोल बम क कवनो ओनके पास मिलल हो। केहू बोले वाला नाहीं, चाहे टी.टी. आवें चाहे केहू अफसर। सब कर जबाव 'बोल बम'। ओह दुर्घटना के इयाद आवते उनकर कलेजा जोर–जोर से धड़के लगल। एनके रेलवे क अधिकारी अस्पताल में भरती करा दिहलन। रेलवे पुलिस क घोरावल थाना में फोन आयल तब हम लोगन के पता चलल।

ओ समय हमार जमाना रहल। कोल्हू, आँटा चक्की, कपड़ा, बरतन, परचून क दुकान सब रहल। एकरे अलावा जंगल से लोग गल्ला लिया के हमरे इहाँ से समान ले जात रहलन। ओमिन दोहरा लाभ रहल। ओकरे बदले सरसों क तेल, मिट्टी क तेल, साड़ी, कपड़ा, मसाला, बरतन आदि समान ले जात रहलन। एही क बदौलत हमरे पास सौ बीघा जमीन हो गयल। लेखपाल, ग्राम प्रधान के मिला के तहसील में खरचा–बरचा कइके जेतना चाहा ओतना ग्राम समाज क जमीन पट्टा करालै। तीस–चालीस बरिस पहिले नन्दलाल क बाबू काम के तलास में घोरावल आयल रहलन, काम न मिलले पर एक छोट दुकान पा गइलन। हम लोग बनियाँ आदमी दूसर काम ना कर पाइत। कबो–कबो हम सोचीला कि गरीबन क हम लोग बेइमानी कइली एही से ओनहन क पाप लगल का?'

'नन्दलाल के बाबू क गोड़ काँवरियन के चक्कर में कटल, नन्दलालो क गोड़ काँवरियन के चक्कर में कटल। नन्दलाल क बाबू जब काँवरियन के लेके जाँय अउर लउट के आवें तऽ शेखी बघारैं कि 'जहाँ हम लोग (बोल बम) करत जाइला, रस्ता साफ हो जाला। कवनो ट्रेन हो, कवनो डिब्बा हो 'बोल बम' कइके घुस जा। केहू बोले वाला नाहीं। अब तई एक फैशन हो गयल हौ, न त एनके कुछ धरम से लेना–देना हौ न करम से। लोग दुर्गा पूजा, सरस्वती पूजा, विश्वकर्मा पूजा, कृष्ण जन्माष्टमी, रैदास जन्म क का–का पूजा करेल।

'नन्दलालो के हम मना कइले रहली कि 'तू बचवा काँवरियन के चक्कर में मत पड़े, मुला मनलेस नाहीं राती के चोरी से भाग गयल काँवरियन के साथे। प्रारब्ध इहै रहल तऽ का होई।'

'ओ दिन क संजोग देखा, मुख्यमंत्री जी जमीन के विवाद के लेके भयल नरसंहार क तहकीकात करे आ गइलन। भारी पुलिस बल जनता पार्टी के लोगन क जमावड़ा घोरावल बाजार में रहबै कयल काँवरियन क भीड़ शिवद्व ार मन्दिर पर जल चढ़ावे बदे घाव में खाज क काम कर दिहलेस। बजार में तिल रखे क जगह नाहीं। सोन नदी से शिवद्वार मन्दिर तक काँवरियन क ताता लगल रहल। बजार क हुलवाई दूर से पानी ढो–ढो के ड्रम में अपने ग्राहकन बदे भर के रखले रहलन। गरमी के मारे अदमी क जिनगी बेहाल रहल, असाढ़, सावन एक दम सूखल बीत गयल, नदी, तलाब, कुवाँ, सब सूख गयल रहल। कवनो–कवनो हैण्डपम्प में पानी रहल। पानी क भारी तबाही। बस मुख्यमंत्री के उतरे वाले जगह पर एक पानी क टैंकर खड़ा रहल।

काँवरियन लोग एक जने पाव भर जलेबी लेके दस–दस लोग पानी पीवे वाला, ओही में केहू मुँह धोवत बा, केहू गोड़ धोवत बा, केहू आपन कपार ठण्डा करत बा। एके लेके दुकानदार अउर काँवरियन में झंझट होवे लगल। देखतै–देखतै कहा–सुनी मार–पीट में बदल गइल।

काँवरिया दुकान पर क समान निकाल–निकाल बहरे फेके लगलन, दुकान क शीशा तोड़ दिहलन। हलवाई लोग लाठी–डण्डा, सड़सा, बेलचा, गरम तेल चलावे, फेके लगलन। एही बीच कुछ काँवरिया हलुवाई के जरतै चूल्हा सिलेण्डर सहित लिया के सड़क पर पटक दिहलन। देखतै–देखतै चूल्हा आग पकड़ लेहलेस। बहुत भीषण अवाज के साथे सिलेण्डर फट गयल। ओ घटना स्थल पर पाँच लोग मौके पर दम तोड़ दिहलन अउर 6–7 लोग घायल अस्पताल में दम तोड़ दिहलन।

हमरे नन्दलाल के टोली ओही समय पहुँचल रहल। झगड़ा छुड़ावे के चक्कर में नन्दलाल बीच में फंस गयल। जिनिगी आपन चौपट कइलेस, हमके जियते तक क दुख दे देहलेस। बाप–पूत बैसाखी पर हो गइलन। एतना धन दौलत रहके का करी। नन्दलाल क अपने बिरादरी में केहू बियाह करे के तइयार ना होई। उर्मिला से बियाह हो जात त अच्छा होत। भले ऊ भड़भुजा हौ त का से। अपने जाति वाले, का हमके काम अइहैं।'

सुबह–सुबह अस्पताल में सफाईकर्मी आइल तब जमुना देवी क आँख खुलल। ऊ कहलेस–

'उठो जी, कितना सो रही हो? मरीज का बोतल खत्म हो गया है, देख नहीं रही हो, जाओ सिस्टर को बुला

लाओ'।

जमुना हड़बड़ा के उठ गइलिन, ओनके लगल कि ऊ सूतल ना रहलिन। सिस्टर त कहले रहलिन कि 'तुम सोओ, मरीज को देखने के लिए हम हैं न।'

दूसरे दिन अस्पताल में नन्दलाल के देखे बदे उर्मिला अपने बाबू साथे आ गइल। रस्ते भर सोचत रहल कि 'कइसे बरसात के दिन में हम नन्दलाल दउड़–दउड़ के पानी में कागज क नाव बनाके डालत रहीं। ओपर चिउटा, ग्वालिन, ललकी हाथी, छोटा केचुआ के बइठा जाये, सरपट्टरा खेल में नन्दलाल के हम जरूर छू देहीं। जब नन्दलाल क नाव डूबे लगे तब ओपर के यात्री लोगन के हम अपने नाव में करीं।

सुबह नन्दलाल के पास हनुमान प्रसाद आ गइलन। जमुना देवी बहरे चल गइलिन। नन्दलाल के चाय, ब्रेड, खिचड़ी खियावे क इजाजत डाक्टर दे दिहलन। दो तीन दिन अस्पताल में रह जाये पर अगल–बगल वाले मरीजन से परिचय हो जाला। बातचीत होवे लगेला। तब हालचाल, घर–गृहस्थी, घटना के विषय में एक–दूसरे से जानकारी होये लगेला।

अइसहीं हनुमान प्रसाद से बगल वालन से बातचीत होवे लगल। नन्दलाल के बगल में एक लइका कार एक्सीडेंट कइके आयल रहल। ओके काफी चोट लगल रहल। ओकर बाबू रजिस्ट्री आफिस में क्लर्क रहलन। लेकिन ओनकर ठाठ–बाट सेठ, महाजन के तरह रहल। दसों अंगुलियन में एक–एक दू–दू ठे अंगुठी, गरे में सिकड़ी, उनकर मेहरारूओ गहना से लदल जइसे कवनो पार्टी में आइल हौं। बगल वाले मरीज आपस में बतियावत रहलन कि देखा ई भ्रष्टाचार क कमाई हौ। अस्पताल के बहरे बइठके इहै सब बतकही तीमरदारन में होत रहल। एक जने कहलन जब हमरे देश क नेता चोर, बदमाश, गुण्डा, होइहन त ओ देश क कवन हाल हो सकेला। तहसील, थाना तऽ भ्रष्टाचार क अड्डा हौ। दूसर जने कहलन, भ्रष्टाचार ईहाँ नस–नस में बसल हौ। जे जहाँ बा, ओही ठिहाँ अपने शक्ति के अनुरूप करत बा। ऐमिन जनता मुख्य दोषी हौ।'

हनुमान प्रसाद से उर्मिला क पिता रघुनाथ प्रसाद हालचाल लेत रहलन। बातचीत में हनुमान प्रसाद कहलन कि नन्दलाल क बियाह एक जगह करीब–करीब तय रहल अब त ओन बियाह न करिहन। ओनके फोन कराये रहली। लेकिन देखहूँ ना अइलन।

कई लोग के रहले पर सिस्टर मना करेलिन। उर्मिला नन्दलाल के पास अकेले बइठल रहिल। नन्दलाल के आँख में उर्मिला के देख के आंस आ गयल। उर्मिला ओकर हाथ पकड़ के समझावे लगल। डॉक्टर राउण्ड से जा चुकल रहलन ऐसे अब ओतना सख्ती ना रहल। उर्मिला अपने छाती पर पत्थर रखके अपने आंसू के अन्दर पी जात रहल। नन्दलाल उर्मिला क खाली मुँह देखत रहल। रोवत रहल। नन्दलाल उर्मिला क हाथ जोर से पकड़ लेहलेस। अब उर्मिला अपने के रोक नाहीं पइलेस आँखिन से जइसे सावन क झड़ी लग गइल। मुँह से दूनो कुछो नाहीं बोलेन, बाकी आंखी से सब बात होत रहल।

हनुमान प्रसाद आ रघुनाथ जवने पेड़ के नीचे बइठके बतियावत रहलन ओहि ठिहाँ बगल वाले आके बइठ गइलन। पूछलन कि भइया ई बतावा कि आपके ईहां जवन घटना भयल रहल ओमिन का सच्चाई हौ?

हनुमान प्रसाद कहे लगलन कि 'घोरावल चाहे पूरे दक्षिणांचल में जंगल विभाग क अउर ग्राम समाज क बहुत जमीन हौ। जवने के चलाक राजनीतिज्ञ बड़े–बड़े अफसर पट्टा कराके हजारन बीघा जमीन पर कब्जा कइले बाड़न। एक फरजी सोसाइटी बनावेलन, ओकर बहुत उद्देश्य देखावेलन। गरीबन क उत्थान, शौचालय, शिक्षा, पानी, सड़क, बिजली, अस्पताल सब बनावे के उद्देश्य देखावेलन करतन कुछ नाहीं। ई कुल सरकारी अफसरन के मिलीभगत से होला। भ्रष्टाचार के बल पर सब कुछ सम्भव हौ। जियादातर नेतवन, बड़े बड़े अफसरन सबके पास फार्म हाउस हौ। कुछ जमीन हमहूँ ए तरह से पट्टा कराये हई।

हमके मालूम हौ एक पारटी क विधायक (शक्तिनगर) पहिले कोल, भील, बैगा, खरवार के उभाड़ के हड़ताल करावेलन ओनहुँ एही जाति क हयन। जवने से जनता एनके पर जियादा विश्वास करे ले। बाद में जब सरकार एन लोगन के जमीन एलाट कर देले त ओनके जमीन पर खुदै कब्जा हो जालन। हजारन बीघा जमीन अइसहीं बना लेहले हयन।

एही तरह मड़िहान में एक बहुत बड़ा नेता हजारन एकड़ जमीन पर कब्जा कइले हयन। एक नहर खाली होनहीं के फार्म हाउस के लिए बनत हौ। इमानदारी से जांच

करावल जाय त सब कर कलई खुल जाई।

मुख्यमंत्री जी आयल रहलन तऽ कुछ लोगन का सिकारत पर, सब कर जांच करावे के कह गइलन। देखा का होला। मुख्यमंत्री जी के आये से ओ दिन बहुत पुलिस फोर्स आइल रहल जवने से तुरन्तै घायल लोगन के अस्पताल पहुँचा गयल। हम लोगन के तब पता चलल जब नन्दलाल के पुलिस ट्रामा सेन्टर में भरती करा देहलेस।

पन्द्रह दिन बाद नन्दलाल कऽ अस्पताल से छुट्टी हो गयल। घाव पूरा भर गयल। बैसाखी के सहारे चले लगल रहलन। हनुमान प्रसाद रापटगंज वाले गुप्ता जी के सन्देश भेजले रहलन। उहाँ मिलले से का फायदा। लंगड़ लइका से हम बियाह न करब। बापो बैसाखी पर लइको बैसाखी पर। बतावा भला केहू का कही। ओनके शरम नाहीं आयल हमें खबर करावे में।

समय क मलहम बड़े से बड़ा घाव के भर देला। तीन–चार महीना बीतत–बीतत सब बात सामान्य हो गयल। नियति क खेल मान के सब दुख बरदास्त कर लेवल गयल। पण्डित जी मिले अइलन त समझा गइलन।

सुनहु भरत भावी प्रबल, विलखि कहेहु मुनि नाथ,

हानि लाभ जीवन मरण, जस अपयस विधि हाथ।

एही बीच उर्मिला क मतारी नन्दलाल के घरे ओकर हाल लेवे आ गइलिन। जमुना देवी अपने दरद के छिपा ना पउलिन। मन क सब बात उगिल दिहलिन। कहे लगलिन कि 'उर्मिला क मम्मी आप से का कहीं, कहे में संकोच लगत हौ।

– नाहीं बहिन जी कहल जाय का बात हौ?

– देखल जाय नन्दलाल के अब सहारे क जरूरत हौ, सहारा देवे बदे एक लइकी क हमके बहुत जरूरत हौ, हम अपने मन में बहुत बिचार कइली त उर्मिला से बढ़िया कवनो लइकी नाहीं देखाई देत हइन। संकोच एही बात हौ कि पहिले त ना कहली जब लइका लंगड़ हो गयल तब कहत हइन।

– खैर ई बात नाहीं हौ बहिन जी, लेकिन हम भड़भूजा ठहरली आप क जाति वाले का कहिहन?

– जाति वाले भाड़ में जायँ, हमके केहू कामे आवत है का?

– तब, जब आप अइसन चाहत हइन, त उर्मिला के बापू से बात करब।

हनुमान प्रसाद क रघुनाथ से व्यापारिक सम्बन्धो रहल। रघुनाथ के पास लाई, चना, चिउड़ा, तिलवा, मूंगफली, गुड़ आदि क दुकान रहल। हनुमान प्रसाद तऽ घोरावल क बड़ व्यापारी रहलन। रघुनाथ के बहुत खुशी भयल कि ओन हमरे इहाँ बियाह करल चाहत हयन।

हनुमान प्रसाद के एके लइका रहल, धन अपार रहल। हमार उर्मिला सबकर मलकिन रही, हमरो गरीबी कट जाई। कवनो एक दुकान हमहूँ देखब। ई सोच के ओनकर मन कुप्पा हो गयल। दूसरे दिन एनके घरे आ गइलन।

– कहलन भइया! का हुकुम हौ, उर्मिला क मतारी कुछ बात हमके बतौलिन का ऊ सच हौ?

– हाँ रघुनाथ भइया हम चाहत हई कि उर्मिला क बियाह हमरे नन्दलाल से हो जाय। तऽ बड़ा अच्छा होत।

– त का जाति क भेद भाव आड़े न आई?

– आवे दऽ। केहू हमके कामे आवत हौ।

ई बात क चरचा घरे में होत हौ तऽ उर्मिला आ नन्दलाल दूनो जान गइलन। एक दिन नन्दलाल क उर्मिला के फोन आयल।

'उर्मिला तोसे एक बात पूछल चाहत हई?'

– कवन बात?

– ई कि हमार बाबू तोहरे बाबू से हमार–तोहार बियाह क बात करत रहलन।

– नाहीं हमके ना मालूम। हँसतै उर्मिल 'भक' कहके मोबाइल बन्द कर दिहलिन।

नहा–धो के ओह दिने उर्मिला शंकर भगवान के मन्दिर गइलि। पूजा कइलेस, ओकरे खुशी क कवनो ठिकाना नाहीं। ओकर त मन पहिलहीं से मिलत रहल अब ऊ मन क मीत मिल गयल।

– प्रीत न देखे जात–कुजात, नीन न देखे टूटी खाट।

गुंजन कुटिया, नारायणी बिहार कालोनी
चितईपुर, वाराणसी वार्ता– 9140105881

कूँचा के कमाल आ हैण्ड पाइप के पानी

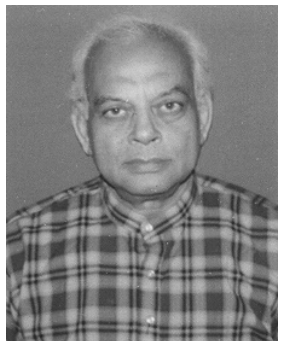

राजगुप्त

हमार हैण्ड पाइप खराब रहे। कब्बो पानी पकड़े त कब्बो छोड़ि–छोड़ि देउ। हैण्ड पाइप में मोटर लगववले रहली। चलत–चलत पानी छोड़ दे त मोटर एतना आवाज करे कि कान ना दे जाउ। कपार बत्थे लागे। हारि पाछि मिस्त्री के बोलववलीं। केहू तोर हैण्डल मारि–मारि चला दे देखलसि। जाँच परताल क के बतवलसि हैण्ड पाइप के वासर खराब होई भा लट्टू। जवन पानी आड़त नइखे, छोड़ि छोड़ि देता। जदि इ दुनू ठीक होई त जाली जाम होई।

मिस्त्री के बाति सुनि हम सवंचली– "तब का होई?"

मिस्त्री बतवलसि "अकेले के काम नइखे तीन आदमी लागी। चाँपाकल की लगे कोड़े के पड़ी। जदि वासर भा लट्टू खरा होई त एक घण्टा के काम बा। जदि ओहजा कवनो खराबी ना मीली त पाइप उखाड़े के पड़ी। कोड़ऽ, उखाड़ऽ, फेरू गाड़ऽ, दोहरा काम, दिन भर से अधिका लागी। अढ़ाई हजार रुपया मजूरी लागी।"

"हजार के बाति सुनि मिस्त्री से कहली। नव पइसा के मुर्गी, नब्बे रुपया चोंथाई?"

हमार गाभी सुनि मिस्त्री बोलल– "कवना दुनिया में बानी मलिकार! मोका पर लाखों रुपया के जयमाल सेट सजावे के पड़ेला। कुछ आगा–पाछा सोचीं। उखाड़े–गाड़े में समय शक्ति लागी। मेहनत देखब मलिकार? चाहे घण्टा दू घण्टा करी काम भा अधिका, मजूरा दिन भर के मजुरी लीहें।"

"हम अंदाज लगा के मिस्त्री से कहलीं, "हम पनरह सौ रुपया से अधिका ना देइब।"

मिस्त्री आपन हरबा–हथियार के झोरा उठावत कहलसि कि "सतुआ के पेट सोहारी से ना भरी। हम खाली पेट भराऊ मेहनत के दाम मँगले रहली हँ। मेहनत देखि मजूरी देइब। एक्को कउड़ी अधिका नइखीं मँगले।"

"मेहनत त सभ करेला। ओतना में ना करबऽ त जा।"

हमार खरा जबाब सुनि के मिस्त्री चलि गइल। तब सोचलीं अब का होई? जवन चलि गइल ओकरा बारे में सोचि के का चिन्ता? बाजार भरल पूरल बा। एगो खोजीं हजार मिलिहें। ओकरा बाद कइगो मिस्त्री अइले। देखले सुनले। बहुत तजबीज के केहू तीन त केहू चारि हजार ले बता गइले।

पानी बिनु बहुते परेशानी होत रहे। हारि पाछि पहिलके मिस्त्री के दोहरउवा बोलववलीं। ठोक ठेठा के कहलीं, "जबले पानी ठीक से ना पकड़ी तबले एगो रुपया ना देइब।"

मिस्त्री हमार टका सा बाति सुनि कहलसि– "अरे महराजा हमनी का मजूरा हईं जा। रोज इनार खोने के बा, रोजे पानी पिये के बा। पेट पर लात मारि कइसे

काम करब जा। बाल बच्चा कइसे जीही? कुछ ना चाहीं, खोराकी त चहबे करी। हँ एतना के गारन्टी बा कि जब पानी पकड़ि ली तब्बे हिसाब करब।"

हम पुछलीं कि "कई दिन के काम बा कि रोज–रोज खोराकी चाहीं।"

"ए साहेब! हम का गारण्टी दे सकींला। धरती माई के किरपा पर निर्भर बा। जइ दिन में सपरा दीं।"

"का बखानताड़ऽ मिस्त्री? दिन भर में त चाँपाकल गड़ा जाला।"

मिस्त्री हमार बाति सुनि कहलसि। खाली गाड़े के नइखे उखाडहूँ के बा। करिहाँइ बरोबर गड़हो खोने के पड़ी। अब देखीं– हाथ कंगन के आरसी का पढ़ल लिखल के फारसी का? ए नउवा केतना बार? अब त काम लगावे जात बानीं। पाँच सइ पेशगी देईं।

"हम पाँच सइ पेशगी दे के सलहन्त हो गइली। जइसे घोड़ा बेचि के सूति गइल होखीं।"

दूगो मजूरा एगो मिस्त्री बारह बजे के लागल सांझि खा गड़हा खोनि के हैण्ड पाइप निकलले सँ अबेर हो गइला के कारन माटी सनाइल गोड़ हाथ धो के लगे आके मिस्त्री बोलल। आधा काम हो गइल। कान्हु खूब सेकराहे आ के काम ओरिया देइब।

दोसरा दिने मिस्त्री अइले। काम में जूटि गइले। जाली निकालि के लगे लेके आइल। कहलसि, "वासर–लट्टू ठीक बा। जाली सड़ि गइल बा। बदले के पड़ी। रउरा अगुताई होई त ओही के ठीक क के पानी पकड़ा देइब। बाकिर आन्ही मानी दोस बुढ़िया भरोस। कऽ दिन चली एकर गारन्टी ना देइब।"

"मरले बा, फेरू मारे के बोलवले बा। ओखर में मूड़ी परल बा। कइसे इनकार करीं। सस्ता रोवे बार–बार, महँगा रोवे एक बार। माहुर कुँचत कहली, "का का लिआवे के पड़ी लिखवा द। मिस्त्री लिखववलसि। सामान के लिस्ट देखि चकरा गइलीं। नव के लकड़ी नब्बे खरचा।"

मिस्त्री धिराइ के कहलसि– "जवना कम्पनी के लिखववले बानीं। ओही कम्पनी के सामान चाहीं। मंहगा कीनब हँसत रहबि।"

सुनले रहलीं। कवनो डाक्टर पेट के आपरेशन करे खातिर पेट चीरेले त पेट में एगो अउरी नुक्स निकालि में तिमारदान के आपरेशन कोठरी में बोलववले, कहले "एही माड़े भाते इहो आपरेशन करा लीं ना त एही के आपरेशन करे खातिर फेरू ओतना पइसा खरचा करे के पड़ी। ना त अब्बे हेतना अउरी में सज्जी सुधार हो जाई।"

"रउरो त खूब कहलीं डाक्टर साहेब। अल्ट्रा साउण्ड में खाली एपेन्डिक्स आइल रहे। छने में इ गाँठ कहाँ से आपरूपी आ गइल। ओकरा बादो तिमारदार हारि पाछि के कहबे करी कि पइसा के चिन्ता जनि करी। उहो निकालि दीं।" से बाति कबो सुनले रहली, आजु उहे बाति चांपाकल पर सदेहे ऊपरिया गइल।

एही बीचे मजूरा लिस्ट के दाम लगवा के आ गइल। चारि हजार के बिल देखि चकरिया गइलीं। आकास से भूइंया गिरलीं। तब मिस्त्री समझावत कहलसि, "बिल मति देखीं मलिकार, दिहाड़ी मति नोकसान करीं। जल्दी करीं। हेतना काम कम जनि बूझीं। दस बरिस के छुट्टी समझीं।

पइसा दिहलीं। सामान आइल। मिस्त्री कई घण्टा काम कइला के बाद हमके हाँक लगवलसि। मलिकार आके पानी के धार देखि लीं।

हम चहकत कल का लगे गइलीं। चाँपाकल चलवली। पानी पकड़े बाकिर मोटर चलवला पर पानी पकड़बे ना करे। मिस्त्री कई तोर कोशिश क के थाकि गइल। मिस्त्री के बुद्धि चकरा गइल। पाकिट में से अध्धा निकललसि। गट गट क के कई घोंट दारू पी गइल। कमर में बान्हल अंगौछी कपार पर बन्हलसि। फेरू मोटर चलवलसि। बाकिर कामयाबी हाथे ना लगल। तब हारि पाछि के कहलसि, "मलिकार मोटर में खराबी बा। पानी टानत नइखे। मोटर मिस्त्री की लगे ले जाये के पड़ी। एतना कहि के हाबुर–ताबुर मोटर खोललसि। कान्ह पर मोटर राखि मिस्त्री की लगे लेके चलि गइल। अपना आदमियन के छोड़ि दिहलसि।

दू दिन तकले मिस्त्री के हाल–चाल ना मिलल। तिसरा दिने मिस्त्री मोटर कान्ह पर धइले मोटर लेके आइल। तब होकरी मेहनत पर हमरा गर्व भइल। दुसर कवनो मिस्त्री रहित त भारी मोटर रेक्सा पर ले जाइत आ रेक्सा पर लिआइल रहित। सैकड़न रुपया रेक्सा भाड़ा बचा दिहलसि। जहिया पच्चीस सइ मजूरी मँगले रहे। तहिया बड़ी नीच नियत से देखले रहलीं। आजु ओकर करनी देखि पानी पानी हो गइली। आजु मने मने बड़ी बड़ी शर्मिन्दा भइलीं। जेतने मिस्त्री के छोट समझत रहली आजु ओतने उ हमरो से बड़ बुझाइल। मिस्त्री के काम करत पाँच दिन हो गइल। जो ओकर मजूरी जोड़ल जा त पचीस सौ रुपया हो गइल। मजूरन के दू

दिन के मजूरी अलगा बा।

मिस्त्री बनावल मोटर जोड़लसि। कई तोर पानी के धार देखे खातिर नीचे–ऊपर दउड़वलसि। पानी के फोर्स देखे खातिर हम दउड़त दउड़त हाँफि गइली।

तब्बो पानी ना पकड़लसि। घबड़ा के मिस्त्री पाकिट में से फेरु अध्धा निकललसि इची भुइयाँ गिरा के कई घोंट पी गइल।

हम अउँजिया के पुछली– "का भइल मिस्त्री?"

अउँजा के मिस्त्री बोलल– "अबे दिक दिकाईं मति।"

"कुछ पूछीं मति तनि सोचे दीं।" जइसे मिस्त्री पर कवनो भूत–प्रेत चढ़ल होखे। अइसे हाव–भाव बनावत रहे।

हम मिस्त्री के बाति सूनि उल्टे गोड़ लवटि अइलीं। एक घण्टा बाद मिस्त्री आइल। ओकरी हाथ में सींच वाली नया कूँचा रहे। मिस्त्री के हाथ में कूँचा देखि हम चिहा गइलीं। हमसे कहलसि, "आई देखीं पानी पकड़ावे के दवाई ले के आइल बानीं। हमके लेके चापाँकल की लगे गइल। हाथ जोड़ि चाँपाकल का ओरि मुँह कके कहे लागल– "हे धरती माई, जल माई, काहे गरीब के पेट पर लात मारत बानीं। हे धरती माई जल छोड़ीं। कहि–कहि कूँचा चाँपाकल के लगे पीटे।" इ काम कई तोर कइलसि।

हम मिस्त्री के तमाशा देखि एकसवी सदी में दंग रहि गइली। सांप छछुन्दर के हालि करीं त का करीं? हमहूँ छप्पनो कोटि देवतन के गोहरावे लगली। पानी खातिर बतासा के परसादी भंखलीं। मिस्त्री सलहन्त होई हमसे कहलसि– "जाई लाइन देई।" जा के मोटर में लाइन दिहलीं। हरहरा के पानी आवे लागल। जइसे भूरि फूटि गइल होखे पतालतोड़ इनार?

– राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया, फोन : 9415659456

लघु–कथा

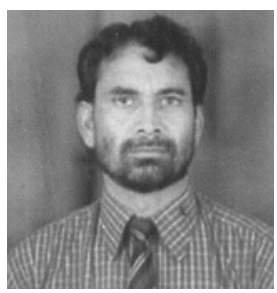

बदलाव

विनोद द्विवेदी

रेल का ओह डिब्बा में ,दू गो छोट–छोट लड़िका ,उछाह में कूद–फान मचवले रहलें स ।एह सीट से ओह सीट पर कूदत ,ऊपर वाला बर्थ पर चढ़े का कोसिस में एक–दुसरा के धकियावत दोसरा जात्रियन के चौन में खलल डालत ,जब सोच में पड़ल अपना गार्जियन का लगे पहुचँ से ,त ऊहो उन्हन का ओर ताक के मुस्किया देसु ।उनकर हँसत मुँह देखि के लड़िकन के जोश अउरू बढ़ जाव ।फेर ऊ दूना उछाह से भागल–दउरल आ कूद–फान करे लागें से ।

डिब्बा का ओह भाग में , अगल–बगल का दू गो जात्रि यन का खीसि बरत रहे ।ऊ लड़िकन का चंचलता से ढेर गार्जियन का ब्यवहार पर खिन्न रहलन स ।लड़िकन का आपुसी झगरा आ धक्का मुक्की से झल्लाइ के एगो जात्री आखिर बोलिये दिहलस,। कइसन गार्जियन आ पिता बानी जी आप ? ई दूनों लड़िका कबसे शैतानी कर रहल बाड़ें स –आ रउआ डँटला के बजाय ,मुस्किया के रह जात बानी !'

डिब्बा में अउरियो जात्री खुश भइले कि केहू, एह खातिर बोलल तऽ। दो जात्री बोलल, 'का 'मतलब ? ई रउरे लड़िका नू हउवन से ? बोले वाला जात्री चिहाइल। 'बात दरसल ई बा कि हम अपने एह लड़िकवन के कइसे सम्हारीं ? तीन दिन पहिले ,हमार पत्नी एगो कारक्रम में अपना नइहरे आइल रहली ...काल्हु खबर मिलल कि कवनो एक्सीडेंट में,उनकर देहान्त हो गइल ..आज लड़िकन के लेके, उहवाँ जात बानी। हमरा इहे नइखे समुझ में आवत कि लड़िकवन के का बताईं आ कइसे सहेजीं ?.'.....कहत कहत उनकर आँख ढबढबा गइल।

जात्रियन के सुनते मातर साँप सूँघ गइल ।सन्नाटा पसरि गइल। सबका भीतर ओह चंचल लड़िकन खातिर छोह उमड़ आइल ।अब सबका भीतर ओह उतपाती लड़िकन का प्रति सहानुभूति के भाव रहे।

आर.के.पुरम, न्यू ककरमत्ता कॉलोनी, वाराणसी

नेह–नाता के अबूझ खेला

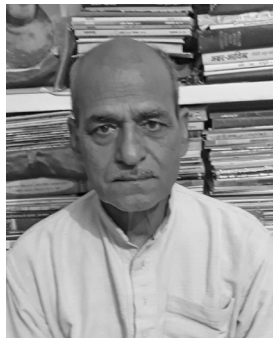

विजय मिश्र

साँझि खा, तितछाह–धुआँ में
लोराइ गइल रहे आँखि
गोंइठा के आँच सरिहावत
तावा पर रोटी पलटत
अउँजा गइल रहे मन....
एही बिचे इयाद आ गइल
फजिरहीं के कहल, चेलवा के बात :
"रउआँ बहुत भगमान बानी
राउर कुल्हि लड़िका एक से बढ़ि के एक
सभे भरल–पुरल, कमासुत
आपन–आपन सम्हरले त बा
बोझा नइखे नु बनल लोग!
न ऊधो के लेना
न माधो के देना
कवनो झंझट ना झमेला
आ रउओ निफिक्किर, अकेला।
साँचो भागमान बानीं रउआ।"

हमरा फेफरियाइल ओठ प
हँसी फूट परल
सोचनीं.... "जेकर हम जिनिगी भर"
भागि जँचनी तवने चेलवा
आजु हमार भागि बाँच गइल!
देखि गइल बड़–बड़ कमाई
दे गइल हमरा मउज–मस्ती के दुहाई।

ऊ भला कहाँ जानि–पवलस
हमरा भागि के दुख?

इहाँ तऽ ई हाल बा
कि दुख से सरीर निढाल बा!
एक बेरा बनाईं त दू बेरा खाईं
कबो–कभार बासिये से काम चलाईं...
अब हम का बताईं कि
ई बुढ़उती के सुनहट आ खालीपन
जोगवल आस के भारीपन
बेमरिहा देंहि से
अतना लचार कि कुछू कर ना सकीं
दरकत–टूटत विश्वास में
कुहुँकत मन के पीर
कहाँ बूझि पवलस चेलवा?
हम खुदे ना बूझ सकनी
बुढ़ापा के ई साँच
अकेल परला के टीस
नेह–नाता के ई कइसन

गजल

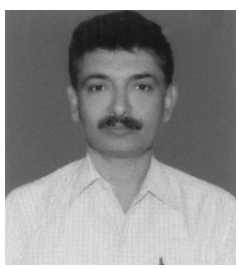

शशि प्रेमदेव

'जोड़ क तोड़ ओकरो जवानी रहे !
आग–पानी क' एक्के कहानी रहे !

धूर – माटी–उदासी का ओह् गांव में
रंग , खुशबू क' ऊ राजधानी रहे !

भोर होखो कि होखो धवल चांदनी
ओकरा सोझा सभै नौकरानी रहे !

भेद ऊहो ना कइलसि उजागर कबो
ऊहो हमरे मतिन खानदानी रहे !

देंहि के जबले ओमें दखल ना भइल
नेहि गंगा क' निरमल रवानी रहे!

का कहीं के भरल मांगि ओकर 'शशी'
का बताईं उ' केकर दिवानी रहे !'

प्रवक्ता, अंग्रेजी, कुँवरसिंह इन्टर कॉलेज, बलिया

निरगुन गीत

शशि प्रेमदेव

'गजबे इयरवा क', हमरा, जवानी !
कबो आगि जइसन,कबो लागे पानी!!

केहू कहेला– नरम फूल जइसन !
केहू बतावे जे तिरसूल जइसन !
—— जानल जे चाहेता,पाता लगावो
केतना बा सांच ए' में, केतना कहानी !!

हमरा इयरवा क' बाबू ना माई !
काका ना काकी ना बहिन ना भाई!
—— टूअर जो ओकरा के बुझबू समुझबू
मुरुखे कहइबू तुहूं ए, फलानी!!

कोई ना थाहल इयरवा क' माया !
जेतने उ आपन हऽ, ओतने पराया!
——जेतना उ हिंदू, मुसलमान ओतने
मानो भा ना मानो मुल्ला,गियानी !!

जहिया से ओकरा से नेहिया लगवलीं!
चेतन, अचेतन में ओकरे के पवलीं!
—— सूरुज में ऊहे,चनरमो में ऊहे
ओकरे बदौलत नदी में रवानी !!

आनन्द संधिदूत के दू गीत

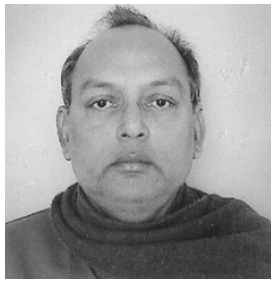

एक-

बरफ नदी प' नदी
अगिन अंगार
ढुकब कइसे पिया तोर
अगम दुआर।

मुँह बोले मिठकी
हृदय बोले तितकी
जीव दुइ मुँहवा
कवन गली भटकी
धरे के मदारी दउरे
मुकुती हमार। ढुकब कइसे

ससुई से पुछलीं
ननदिया से पुछलीं
जहाँ तक बस बा
जगतिया से पुछलीं
केहू नाहीं मोर दुख
सुने के तेयार। ढुकब कइसे

काल्हि आजु काल्हि
के हिसाब नाहीं रखली
आगे आगे देखीं
ना पिठिया बचवलीं
खुदही लिलात हम
लिलिले शिकार। ढुकब कइसे

तोहरा महल से
लवटि नाहीं आवे के
केहू ना भेंटाला, घटल
सचकी सुनावे के
कल्पने के गीत गाईं
हमहूँ लाचार। ढुकब कइसे

दू-

कठिन सफर दूर जाये के परी।
सखि, कसि–कसि बन्हिहऽ
सरीर–गठरी !

जिनि लऽ सवदिया क सिसिया–बोतलिया
तेल, घीव, मरिचा,
मसाला, नून–तेलिया
ढेर कुल चुवे लागी, भर डहरी!

कौनो ओरी रखि लिहऽ
मधुर–बचनिया
फेंकि दिहऽ कठिन–
कठोर अभिमनिया
सुनियो के बनि जइहऽ गूँग–बहिरी !

खबर–खबर जग
पढ़ेला खबरिया
पढ़ि पढ़ि कोड़ेला—
दिमाग के कियरिया ..
अबले जो नाहीं, अब का कबरी?

सखि, कसि–कसि बन्हिहऽ
सरीर–गठरी !!

❑ पदारथलाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

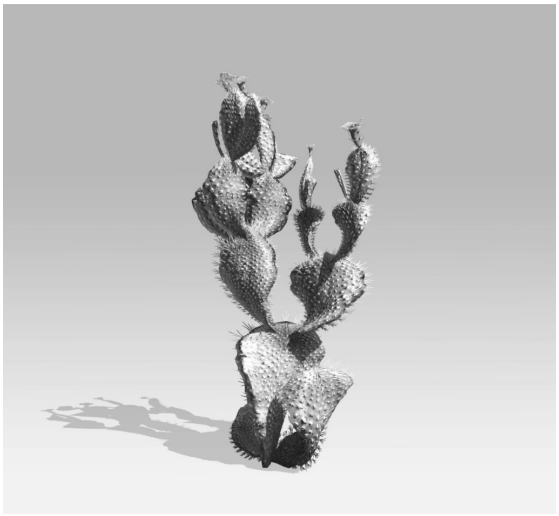

दिनेश पाण्डेय

पाँच गीत

दिनपथ

बन अउँघल,
बन जागल।

भोर किरिन पसरल
सगरी जग।
झिलमिल तरुअर
अगिन रंग नग।
कवन झरोखे
बइठ चितेरा
सपन सँगोरे लागल।

दिन भरी पंखी
चुगले चारा,
धावल कने–कने बनिजारा।
साँझ भइल लौटल
पथहारा,
अँखियाँ कुछ अनुरागल।

कुररे काग भदेस

अबके सगुन कही
मोरी सखिया,
कुररे काग भदेस।

ना अँगनइया गाछि चनन की,
सास–ननद परबीना।
कबके मरल आँखि के पानी
लोकलाज कतहीं ना,
ईरिखे गोतिन जरिन बुताली,
उलटा सब परिवेस।

बन टेसू की छाँहि कटीली
अस बस जिया बुझाला।
भुतहा पीपर छाँहि चुरावे,
बरगद उमटा जाला,
बिरिछ–बिरिछ पर बदुरी झूले
उलट पंथ दरवेस।

बिसर रहल गनगौर महादेश
मनता कवन पुजावे।
सबहीं ढेल–ढुकुर महँ कारे,
पर ले पीठ खुजावे,
नदियन के अमरित पानी में,
माहुर केरि अनेस।

खर–खरिहानी दंड मुसरिया
परल बढ़ावन ताने।
बिसुन चुटकिया केहु न बूझे
पवनी–जन के जाने?
भूखे पेटे आल्हा गावे,
रगरे मोंछ सरेस।

गबर–गुसइयाँ बात न समुझल
होत परात पराइल।
जीअन मरन रहन रहवासू
अब लेख बरन आइल।
कइली जोग जोगिनी कवनो
किया बनवली मेस।

सखिया,
कुररेकागभदेस।

मूस

मुसवा चालल सगरी भीत।

कंकर जोरि घरौना पारल।
नीसन धरन छान्ह सहियारल।
तुंग अटारी चढ़िके मनुआँ,
गावे मनसल गीत।
मुसवा चालत रहलसि भीत।

सघन गिलावा भरक रहल अब।
ईंटा के सन्ह दरक रहल सब।
भर घर छितरावल मुसकइला,
लेंड़ी परल पछीत।
मुसवा खोंखड़ कइलसि भीत।

ऊपर से गवदी अस लागस
तरे निछोही घावे दागस
अनकर अनपऽडीठ गड़ावल
इनिके इह ईरीत।
मुसवा चालत गइलसि भीत।

बीअर कइलसि कोने–सानी।
कतिना केहू डाली पानी?
हूरत–मूनत बुद्धि हिरानी।
कइलसि हदे अनीत,
मुसवा चालल टटको भीत।

मूँड़ सूँढ़ गनगौर अकारथ।
थोथवे कुतुर रहल परमारथ।
घर–घरवैयो, सुटुकबि लैयो,
बतिया थोरे तीत।
मुसवा चालत बड्डवे भीत।

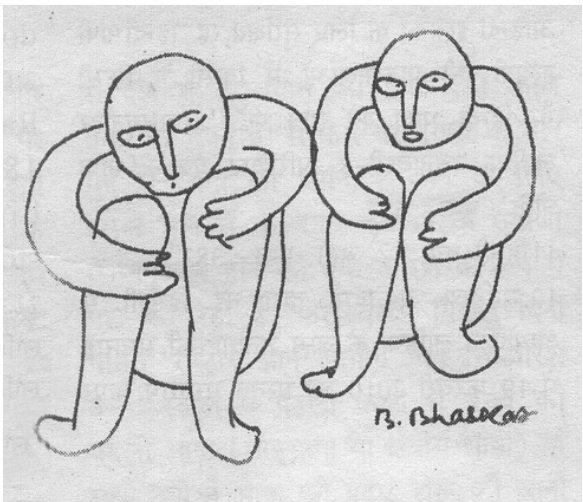

रात पाछिल

मंदिर के बुर्ज केहू
चाननी छिरिक गइल।
लिख गइल ह ताड़ पात प
कवन बियोगगीत?
झरक–सरक गिर गइलसि
भुइ से जमीन प।
ईर बने एक अउरि
दोसरकी मीर बने,
मनगुपुते दुइपंखी
आतुर अधीरमनें,
चलि दिहले बेबस अस
राह अंतहीन प।
बँसवारी पाछु कवन
नट्टिनी थिरिक गइल?

जिनिगी

घुप अन्हियारे एक दरीचा
केहू खोल गइल।
चुटकी भरि इंजोर खाँच भर
असरा तोल गइल।

अनवट झोंपा चक्कर रहता
कहईं अंत न सूझे।
छनिको ना बिसराम बरध के
छूटत ना दे लूझे।
पलकन में कुछ नीनिम दालस,
पुरवा डोल गइल।

चउरंची मकरी अस जाला
चारू ओरि तनाइल।
मुँह पऽ हरियर अतई–पतई
ओते खंत खनाइल।
गफलत परल मूढ़ मकुना मन
सहते मोल गइल।

निप जल कतिने ना बबूर बन
ऊसर जिनिगी माँझे।
ओटत बितल कपास दिनों भरि
परल उचाटी साँझे।
पछिमाही में सूरज के मुँह
ओनत गोल भइल।

चढ़त रहल अभिलाख बाँस भर
बे पतई बिन सोरी।
झरकल देह अलम के सूखे
नयन फुलाइल तोरी।
कवन लुकारी निसबदता में
सब कुछ झोल गइल।

❑ सरकारी आवास-100 / 400, राजवंशीनगर,
रोड-2, पो० शास्त्रीनगर, पटना-23

जवन देखऽतानी

शारदा पाण्डेय

आजु काल्ह राजनीति में राष्ट्रीय शांति के परिप्रेक्ष्य में 'संवेदनशील' शब्द बड़ा बोलल जाता। का जाने काहें एह शब्द के बोलते बुझाता कि कतों से राष्ट्रीय सद्भाव में कमी आ गइल बा, आकि सभके बड़ा सावधान रहे के चाहीं। एकरा के उचारते साधारण जन में एगो भय–डर व्याप जाला आ राजनीतिक हलका के लोगन के कान खड़ा हो जाला। बुझाता ई शब्द आपन मूल अर्थवत्ता भुला देले बा आ अलगाव के लक्ष्मण–रेखा में प्रवेश कऽ लेले बा। मन कसमसा जाता। काहें कि एह शब्द के चारों ओर अवरू कई गो शब्द आ भाव घुरुमे लागता।

केहू के बहुत भावुक बतावे खातिर पहिले एह शब्द के प्रयोग कइल जात रहल हा। साहित्य में संवेदना आ संवेदनशीलता के संबंध मार्मिकता से जुड़ि जात रहल हा बाकिर अब तऽ ई शब्द भयवाची हो गइल बा। देश के कई क्षेत्र 'संवेदनशील' हो गइल बा। ओजू बसे के, के कहो ओजू के नाँव लिहल जनसामान्य उचित ना समुझे। ओह क्षेत्र में रात में गइल तऽ प्राण खातिर आशंकाजनित बड़ले बा; दिनों में ओजू प्रवेश कइल भयकारक बा। ओह स्थान पर पुलिसो जल्दी ना जाए के चाहे। ओजू खातिर कुछ विशेषे नियम संहिता बनि जाला।

हमरा नइखे बुझात अइसन काहें भइल? केकरा शह दिहला पर भइल आ साधारण जनता एकरा के काहें स्वीकार कइलस? काहें केहू खातिर कुल्ही मुहल्ला–गली गम्य रहे जोग बा आ दोसरा खातिर ऊ प्राणग्राहक, सम्मान–अवशेषी बा? एगो देश में रहि के कुछ प्रदेश, कुछ जिला, कुछ मोहल्ला अचानक संवेदनशील हो जाता; जहाँ बम बने आ फूटे लागऽता, शीशी–बोतल फोरल जाए लागता। ओजू रहे वाला दू समुदायन में एगो के जीव साँसत में परि जाता आ दोसरका हँकड़े लागता; अइसन काहें हो जाता? ऊ 'कैराना' बरेली बनि जाता। ओजू 'मकान बिकाऊ' के तख्ती लाग जाता?

सोचते मन आशंकित आ उदास हो जाता। का एह देश के अवरू लोग संवेदनशून्य बा? ओकरा जीवन के, भाव के कवनो मूल्य नइखे? ई कब तक चली? एह शब्द के चलत कुछु अवरू शब्दन के प्रयोग अनिवार्य हो जाला, जइसे– अल्पसंख्यक, साम्प्रदायिकता, सेक्यूलर (धर्म–निरपेक्ष)। ई कुल्ही शब्द अब रुढ़ार्थी हो गइल। अल्पसंख्यक में सामान्यतः मुस्लिम, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध आ सिक्ख सम्प्रदाय पहिले गिनल जात बा, बाकिर एह शब्द के प्रयोग करते विशेषतः मुस्लिम आ ईसाई सम्प्रदाय खड़ा हो जाला काहें कि एही दू सम्प्रदायन के चलते देश में दंगा, बलवां, अशांति आ हिंसा के वातावरण बनि जाला। पारसी, जैन, बौद्ध आ सिक्ख सम्प्रदाय अपना धर्म के पालन करत, कवनो अवरू सम्प्रदाय खातिर बाधा उत्पन्न नइखे करत, बलुक देश के विकास के धारा में जुड़ल बा, विकास अपने ना समाजो के करऽता। बाकिर एकरा विपरीत मुस्लिम आ ईसाई दूनू समुदाय के लोग ना जाने कवना खोट सोच में

सामाजिक विकास के स्वाभाविक गति में बाधा उपस्थित करे में तनिको कोताही नइखे करत। ई दूनू सम्प्रदाय के लोग जहाँ रहेला ओजू कुछ षड्यंत्र आ अलगाव के गंध समा जाला। ओजू सौमनस्य तनी कमे लउकेला, काहें कि ई दूनू सम्प्रदाय अपना धर्म के प्रचार–प्रसार में 'मिशनरी' भाव से संलग्न रहेला। इनकर कुछ विशेष मिशन होखेला, जइसे अपना धर्म के कइसे विस्तार कइल जाउ? एकरा खातिर दूनू सम्प्रदाय 'मिशनरी' भाव से हिन्दू समाज के बहुसंख्या पर सेंध मारे के काम करेला। मुसलमान दलित वर्ग से लेकर कमजोर आ निर्धन लोगन के आपन लक्ष्य बनावेला। एह सम्प्रदाय में नया 'लव जेहाद' के महत्वपूर्ण भूमिका बा। हिन्दू कन्या के छल–बल से, कुछ प्रलोभन देके मुसलमान बना लिहल जाता। ओकर नाँव–धर्म कुछ आपन नइखे रहत। मुसलमान से बिआह होते ऊ अइसन कट्टर मुसलमान बनि जातिया कि ओकरा देश–इतिहास आपन संस्कृति–संस्कार जादू के छड़ी से तुरंते भुला जाता, आ अब ओकरा हिन्दुअन से, महतारी–बाप से डर लागे लागता, ओकर लइका 'तैमूर' हो जाता। जे एहीजा जन्म लिहल, नाम कमइलस हिन्दू जनता जेकरा गुण–योग्यता, प्रतिभा के सम्मान कइलस धन–सम्पत्ति यश से लादि दिहलस, ऊ लोग 'सोशल मीडिया' में, 'विदेश' में अपना के 'भयभीत' कहे लागल, चाहे ऊ नसीरूद्दीन शाह, आमिरखान, शाहरुख, मुनव्वर राणा होखस, शबाना आजमी, जावेद अख्तर होखसु। ई अतना महान लोग हऽ कि एही देश के अन्न–जल से पालन–पोषण भइल, बाकिर देश के लज्जित करे में इनिका इचिको लाज ना लागल। हामिद अंसारी देश के उपराष्ट्रपति बनावल गइलन, राजसी सुख भोगलन बाकिर अवकाश लेते ऊ 'असहिष्णु' भारत में डेरा गइल। मुसलमान लइकी जदि हिन्दू लइका से बिआह कऽ लिही तऽ हिन्दू लइका के 'लिचिंग' कइ के मारि दीहल जाई। ई मुसलमान के सहिष्णुता के प्रमाण हऽ। मंदिर के पुजारी के जीभ काटि दीहल जाई काहें कि ऊ 'गो–वध' के विरोध कइलस ई 'सहिष्णुता' हऽ मुसलमान के। एकरा विरोध में कवनो नेता, 'मानवाधिकार' वाला के मुँह से बकार ना फूटी। जहाँ इनकर मस्जिद बा ओजू से कवनो हिन्दू धर्म के जुलूस ना निकल सके ई 'कुफ्र' हो जाई आ बम फूटे लागी, छूरा भोंका जाई। ई 'सहिष्णुता' हऽ। जहाँ इनकर आबादी बढ़ल ओजू मंदिर तूरि दीहल जाई, भगवान–देवी के प्रतिमा के अंग–भंग कइ दीहल जाई। ई धार्मिक 'सहिष्णुता' हऽ जेकर उदाहरण अबहीं भारत के राजधानी दिल्ली में हाले में देखल गइल। जइसन हिंसक उत्पात कइके आग लगावल गइल, ई स्वतंत्र भारत के गंगा–जुमनी तहजीब के ज्वलन्त उदाहरण बा। डेराये वाला एह युग में का जाने कतना पुरान मंदिरन के ई सम्प्रदाय बलि ले लेले बा। कतना आश्चर्य बा कि जब से देश स्वतंत्र भइल हजारन मस्जिद बन गइल आ मंदिर टूट गइल। तब जब ई वर्ग आक्रांता रहल ओह घरी जतना एह देश के प्रमुख आस्था केन्द्र रहल कुल्ही के ध्वंस कइके, ओजू आपन मस्जिद बनवलस; चाहे भगवान श्रीराम के जन्म स्थान अयोध्या होखो, चाहे कृष्ण के जन्मभूमि मथुरा होखो आ चाहे भगवान त्रिपुरारी शिव के धाम काशी होखो; तऽ एमें अचरज भा झूठ कइसे बा? ई प्रमाण बा ध्वंसात्मक वृत्ति, रक्त लोलुप प्रवृत्ति के। आक्रान्ता ओह कालखण्ड में तीन हजार से अधिका मंदिर के विनष्ट कइलनस् आ भारतीय संस्कृति– जन के अपमानित करे में आपन बड़प्पन समुझलन। आजुओ रउआ आसपास धिआन दीं, कुछ विशेष बिन्दु लउकी जवना से प्रमाणित होला कि ई जाति बड़ा अनेतिआह हऽ। जहवाँ सड़क पर कहीं राउर छोटी मुकी मंदिर होई ओजू देखते–देखत का जाने कब कवनो मुसलमान का जाने काहें प्राण त्याग देला, हमरा प्रभु के शरण में आके; आकि अपना पाप के प्रायश्चित कऽ लेला आ तुरंते ओजू एगो कब्र भा दरगाह बनि जाले, हरिअर रंग से पोता जाले। ऊ मंदिर से ढेर स्थान घेरेले। एहजू के आर्य संस्कृति के आत्मजन के देखीं कि केहू एकर विरोध ना करे, बलु कबो फूलो चढ़ा देला, अगरबत्ती जरा देला ओह अनजान अनासे उपस्थित कब्र पर। सरकारो कवनो विरोध ना करे कि लाश मंदिर के लगे काहें दफनावल गइल कब्रिस्तान में काहें ना गइल? ई तऽ स्थानिक सुन्दरीकरण के भाव के अपमान बा। वातावरण के शुचिता के प्रतिकूल बा। स्थान हथियावे के हथियार बा, नगरीय नियम के प्रतिकूलो बा। तबो हिन्दू 'असहिष्णु' बा। ओजू खोदल जाउ तऽ कवनो हड्डी ना मिली। अवरू तऽ अवरू ई वर्ग संख्या में आ अनखुन खोजे में अतना कुशल हो गइल बा कि सरकारी जमीन पर बिना सरकार के अनुमति के मस्जिद बना लेता, केहू के कुछ कहे के हिम्मत नइखे। सड़क पर आ पार्क में नमाज पढ़े लागता, लाइन के किनारे पढ़े लागता फेरू गँव देखि के ओजू मस्जिद बना लेता। तहरीर देता कि

अतना संख्या लोगन के आ जाता कि मस्जिद छोट पड़ि जा तिया। जुम्मा के नमाज के विशेष महत्व होखेला। ओकर मुख्य उद्देश्य हऽ मजहब खातिर मुसलमानन में जोश भरल। अपना के बड़ आ महत्वपूर्ण समझे के। परिणाम होखेला पत्थरबाजी, औरंगजेब अइसन सरकारी अधिकारी के लिचिंग। ई इनका सहिष्णुता, मानवता आ देश प्रेम के प्रमाण हऽ।

ई मजहब लगभग चउदह सौ साल पुरान हऽ। भारत में एकर छः सात सौ साल पुरान आगमन मानल जाई। जवना के आवते देश के पाँच हजार साल से भी पुरातन भारतीय संस्कृति के विनाश के खेल प्रारम्भ भइल, रक्तपात भइल, बहिन–बेटी के अपहरण, बलात्कार के करिया काण्ड के 'डिक्शनरी' तैयार होखे लागल। मंदिर, देवालय, ऐतिहासिक किला, महल के विध्वंश के पैशाचिक कार्य कइल जाए लागल। गाँव के गाँव जरावल गइल, तलवार के जोर पर करोड़न लोग मुसलमान बनावल गइल। ई धार्मिक उन्माद के चलते भइल, ईहे सहिष्णुता हऽ। नालन्दा के पुस्तकालय जरा दीहल गइल ई इनिका ज्ञान–पिपासा के प्रमाण बा। बाबर के नाँव पर, जे ना भारत में जनमल ना मुअल ना कवनो देश के उत्थान के काम कइलस ओकरा नाम पर एजू के तथाकथित जनूनी मुसलमान आजुओ खून बहावे के तैयार बा। पीढ़ी दर पीढ़ी झूठ, मिथ्याचार क्रूरता के पाठ पढ़त–पढ़त इहनी में उदारता–सदाशयता के ह्रास हो गइल बा। दोसरा के दुःख दीहल, हत्या कइल, बहू–बेटी के अपहरण, रेप कइल, बलात् धर्म परिवर्तन कइल, मंदिरन में देवप्रतिमा के ध्वंस कइल, इहनी के खून में समा गइल बा। मेहरारूअन के व्यक्ति ना वस्तु बूझेलन सऽ। 'हलाला' रेप करवावल धर्म मानेलन। कुछ साल पहिलहीं 'गौतमबुद्ध' के सभले बड़ प्रतिमा के तालिबान तूरि दिहलस। इहनी के कवनो सुन्दर मूर्ति–भवन के देखि ना सकेलन। या तऽ तूरि दीहन स ना त आपन कब्जा कइके ओकरा के मस्जिद बना दीहन। ई कुल्ही देखतो कवनो राजनीतिक दल बिरोध ना करे। बुझाता इहनी के स्वाभिमान 'वोट' के बन्हकी बनि गइल बा। ईहे हाल ईसाइयन के बा। उहनी के बनवासी, आदिवासी आ गरीब जनता के निर्धनता के, सरलता के चलत घर, शिक्षा देबे के प्रलोभन पर ईसाई धर्म के प्रचार करत। उनकर धर्म परिवर्तन कऽ देता। उनुका देवी–देवता के अपमान करऽता। मुसलमान जहाँ हमरा वास्तुशिल्प आ धर्म पर प्रहार करऽता ओजू ईसाई हमरा संस्कृति आ साहित्य पर प्रहार करऽता। जे0एन0यू0 आ ए0एम0यू0 अइसन संस्थान अब शिक्षा के आधार कम, भारतीय ज्ञान, शिक्षा, संस्कृति आ धर्म के विरोधी आ विनाशक अधिक हो गइल बा। कवनो नेता एह विषय में बोले के तैयार नइखे, स.पा., ब.स.पा. अइसन दलो कम्यूनिस्टिक विचारधारा आ छद्म कांग्रेसी नेतन के पीछे चलिके दलित–सवर्ण अइसन वर्ग भेद में जनता के बाँटि के, देश के अहित करे में पीछे नइखे।

हाफिज हुसैन अइसन चित्रकार हमरा देवी–देवता के अश्लील चित्र बनावता तब कवनो नेता के विरोधी स्वर नइखे सुनात। इहनी के आँखि में मोतियाबिन्द हो जाता, जबान पर लकवा मारि जाता, बुद्धि पर पाला पड़ि जाता, स्वाभिमान आ राष्ट्रीय गौरव के बेहयाई के दीमक चाट जाता। ई नेता अपना वोट आ कुर्सी के लालच में कतना नीचे गिर जाता। परिणाम होता कि मुसलमान आ ईसाई आपन धर्म–प्रचार के अनधिकृत कार्य साधन कइले जाता आ हिन्दू संघर्ष बचावे खातिर सहिष्णु ना अइसन कायर बनल जाता, जेकरा के ऐरा–गैरा ई धर्म गुरू बहका देता ओकरा के घर से बेघर कर देता। बाकिर एह समाज के आँखि नइखे खुलत। एही प्रवृत्ति के चलते मुस्लिम संस्था शरीयत के नाँव पर दूरदर्शनी चैनल पर आके कहीं धर्म के नाम पर, कहीं विशेषाधिकार के नाँव पर देश में विभाजन के बीज बोअता। ईसाई वनवासी–आदिवासी क्षेत्र में जाइके हमरा साहित्य, देवी–देवता सभके तुच्छ बतावत लोगन के बहकाइ धर्मान्तरण करऽता। बाकिर धियान रहो कि ऊ कतनो एह धर्मान्तरित लोगन में प्रचार करसु कि हमरा धर्म में अइला पर सभ समान हो जाई। ई कबो ना होला। उनुका उच्च वर्ग के लोगन में एह धर्मान्तरित लोगन के समान आदर आ अधिकार ना मिले। भलहीं अपना के करिआ अँग्रेज मानसु। अइसहीं एह देश के मुसलमान कतनो पाकिस्तान के गीत गावसु उनुका के पाकिस्तान में मुहाजिर कहल जाला। ना अधिकार मिलेला ना सम्मान। ई कुल्ही जानतो जदि भारतीय समाज ना चेतल तऽ जवन साँप चारो ओर स्वतंत्र घूमऽतारन ओही में कवनो डँसबो करी, कुंडली में कसबो करी, खाली फुँफकारिये के ना रहि जाई।

●● बाघम्बरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम्, प्रयागराज

लोकगीत–संगीत : परिचय, परम्परा आ प्रभाव

डा0 जयकान्त सिंह 'जय'

गीत प्रकृति प्रदत्त उपहार ह। वेदना–संवेदना के स्वर–शब्द अवतार ह। ई उमगल भाव के आकृति ह। संगीत एकर संस्कार आ संस्कृति ह। ई परम्परा में पलाइल, लोकमानस में लपटाइल अउर लोककंठ में पोढ़ाइल बा। एकरा में प्राकृतिक नदी के पानी–प्रवाह अस सहज लय होला । ई बनफूलन जस सुगंधीमय बा। बाकि एह के महसूसे खातिर भावनाइल मन चाहीं आ अदद आदमियत के निसोख धन चाहीं। गीत–संगीत टूटल मन के जोड़ देला । ई जड़ भइल अहिल्या के हिया में ममता के हिलोर देला। फेर ऊ मनई हर लय–ताल के बुझेला आ ओकरा नजर का प्रकृति के हर गतिविधि में गीत–संगीत सूझेला। तब ओकरा हवा के सरसराये में, झरना के झरझराये में, नदी का पानी के खलखलाये में, गाछ का झरत पतई का पताए मे, गाय के रम्हाए आ भइंस का पगुरिआए में, घोड़ा के हिनहिनाए आ चिरई के चहचहाए में, नाचत–बोलत मोर केका में आ कोइल का कूक में, पपीहा का पिहकारी में, भूंजा भरभरात घुन्सारी में, गाड़ीवान का टिटकारी में, पहाड़ से कवनो नदी के शोख जलधार टकरइला से गूँजल ध्वनि में आ कवनो विरहिन की हहरल–सिहरल हिया का कनकनी आदि में गीत –संगीत दरस होला आ तब ब्रह्मानंद सहोदय परमानंद के परस होला। सउँसे सौर–मंडल के ग्रह–उपग्रह में एही सांगीतिक गति के लय बा। जहिया ई लयबद्ध गति थम्ह जाई, समझीं ओही छन एह भू–मंडल के प्रलय बा। आवत–जात साँस जीवन–संगीत के आरोह–अवरोह भरल लयदारी ह आ एकर लड़ी टूटल जाए के तइयारी ह।

ई गीत–संगीत आदमी के सबसे बड़ उपलब्धि ह। पुरखन का बानी के पहिल दरसन एही गीत रूप में भइल रहे। आदमी का भावनात्मक स्पंदन से जेतना स्वाभाविक रूप से बानी के गीत रूप जुड़ल होला, ओतना आउर कवनो रूप ना जुड़ल होखे आ ना ओतना असर करे। जवना आदमी में भावुकता के आवेग जेतने तेज उठेला ऊ ओतने पशुता से दूर होला। ई भावावेग अन्दर से लयबद्ध होके फूटेला। ताल ओकरा के हृदय से मिलावेला आ आदमी के परिचय सबसे पहिले एही लय – ताल से जुड़ल स्वर से होला। स्वर ओकरा सोहाला आ महसूसल सुख–दुख से जुड़के ओकरे सहजात नीयन उमगेला अउर एकरा मात्रा के हिसाब से ओह लय–ताल में चढ़ाव–उतार मतलब आरोह–अवरोह पैदा होते अभिव्यक्ति का ढ़ंग में अन्तर आवे लागेला। कबो स्वर काँपेला त कबो भारी हो जाला। कबो तेज होला त कबो मंद पर जाला। एह सहज–स्वाभाविक प्रकृत–स्वरूप से ई बोध होता कि स्वर के जनम पहिले भइल आ ओकरे सङे लय–ताल लागल। फेर ओकरा में शब्द के पइसार भइल। शब्द के पैदाइश स्वर से अलग उपादनन आ जरूरतन का बीच भइल। मनई में सार्थक अभिव्यक्ति का विकास के बाद शब्द के मोल–मरजाद बढ़त गइल। आज के लोकगीतन में स्वर–शब्द आपुस में गुंथाइल रहेलें आ एह प्रक्रिया में अवसर के अनुकूल कहीं स्वर के प्रधानी रहेला त कहीं शब्द के। फेर अइसन प्रसंग खड़ा हो जाला कि इहो सवाल पैदा होला कि लोकगीत स्वर प्रधान ह कि शब्द प्रधान।

स्वर आ आवेग में जन्य–जनक के भाव होला, बलुक इन्हन के सहजातो कह सकीले। एक का सङे दोसरका खुदे हाजिर होला। आवेग जेतने उमगेला, लोकगीत में ओतने स्वर के प्रधानता होत जाला। कबो–कबो त शब्द क्रम एकदमे अलोपित हो जाला आ स्वर–संगीतिए रह जाला। एही तरह से कुछ जाति के प्रकृति मानव–विकास के खास अवस्था में भइला के चलते आवेग प्रधान रहेला। एहू मानव समुदाय में स्वर के प्रधानता रहेला। एह से कह सकिले कि जहँवा जेतना आवेग पूरा होई, उहँवा ओतने स्वर प्रधान हो जाई। अधिक विकसित जातियन में, जेकर सभ्यता–संस्कृति एहो खास ऊँचाई पा लेवेला त आवेग आ अर्थ अउर स्वर आ शब्द आपुस में गुंथ जालें। तब ओह के खास तौर पर अलग–अलग क के ना देखल जा सके। आवेग के मात्रा ऊपर उठला पर स्वर के गरिमा बढ़ल बा आ सामान्य अवस्था में अर्थो गौरव स्वर गौरव का साथे रहेला। गीतन का फुटकर रूप में स्वर–गौरव के खासियत रहेला त प्रबंध रूप में शब्द–गौरव बढ़ जाला। फुटकर गीतन में अर्थ भा शब्द गीत के भा स्वर–गौरव का रीढ़ के काम करेला त प्रबंध गीतन में स्वर शब्दन में जान डाल देला।

अपना देस में गीत–संगीत के सूझ–समझ आ पहचान, प्रयोग आ प्रभाव के परख बहुत पहिले हो गइल रहे। वैदिक साहित्यन में जहाँ–जहाँ गाथा शब्द के उल्लेख मिलेला उहाँ–उहाँ गीत–लोकगीत के बीज नजर आवेला। ई गथे गीतन–लोकगीतन के पुरान प्रतिनिधि हवें। गीत के अर्थ में श्गाथाश के आ गावेवाला के अर्थ में 'गाथिन' शब्द के बेवहार रिग्बेद में जगहे–जगहे भइल बा। अनेक ब्राह्मण, आरण्यक, गृहसूत्र, पालिजातक, रामायण, कालिदास काव्य, तुलसी काव्य आदि में एह गाथा–गीतन का विविध रंग–रूपन के मनोहारी दरसन होला। कवि लोग एह गीतन–लोकगीतन के अपना काव्यन में खूबे बेवहार कइले बा। बाल्मीकि कवि रामजी के जनम के समय गंधर्व लोग के गावल गीत आ अप्सरन का नाचे के बरनन अपना रामायण में कइले बाड़न –

'जगुरू कलं च गन्धवार्रू, ननृतुश्चाप्सरोगणारू।
देवदुन्दुभयो नेदुरू पुष्पिवृष्टिश्च खात्पतत्।।'

बारहवीं सदी के वज्जिका कवयित्री धान कूटत मेहरियन के अजब रोचक बरनन गीतन में कइले बाड़ी। जवना के भाव बा कि जनानी स धान कूट रहल बाड़ी आ सङे–सङे गीतो गा रहल बाड़ी। मूसर उठावे आ गिरावे–धमसावे के चलते चूड़ी खनक रहल बा। उन्हन के उभरल उर–स्थल (छाती) हिल रहल बा। मीठ रसाह गीतन के आवाज, चूड़ियन के खनखनात शब्द आ वक्ष स्थल के हिल–डोल मिलके उनकर गीत अजब आनंद पैदा कर रहल बा –

'विलास मसृणोल्लसन्मुसललोलदो कन्दली–
परस्परपरिस्खलद्वलयनिरू स्वनोद्बन्धुरारू।
लसन्ति कलहुंकृतिप्रसभकम्पितोररूस्थल–
त्रुटद्गमकसंकुलारू कलभगण्डनी गीतयरू।।'

गोसाईं जी मानस में राम का जनम के समय मेहरारू लोग के गीत गावे के उल्लेख कइलें बाड़न–

'गावहिं मंजुल मंगल बानी।
सुनि कलरव कल कंठ लजानी।।'

गोसाईं जी सोरह छंद में 'रामललानहछू' रचके लोकगीतन के मान–मरजाद बहुते बढ़ा देले बाड़न।

एह तरह से अपना किहाँ गीत, लोकगीत आ लोकसंगीत के परम्परा बहुत पुरान आ प्रभावी रहल बा। गीत–संगीत के महातम अपना इहाँ एतना बतावल बा कि आदित्य पुराण में भगवान के मुँह से कहवावल बा कि हे नारद ! ना हम बैकुंठ में बसिले आ ना जोगी का हिरदय में रहले। हमार भक्त जहँवा गावेलें, हम ओही जा बास करिले –

'नाहं वसामि बैकुंठे योगिनां हृदयेन च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद।।'

इहो कहल गइल बा कि पूजा से करोड़ गुना गुन स्तोत्र में बा। स्तोत्र से करोड़ गुना गुन तप में बा। जप से करोड़ गुना गुन गीत–गान में बा। गीत–गान से उत्तिम कुछुओ नइखे–

'पूजा कोटि गुणं स्तोत्रं, स्तोत्रात्कोटि गुणो तपरू।
जपात् कोटि गुणं गानं, गानात् पर तरंनहि।।'

भर्तृहरि त साहित्य–संगीत से हीन आदमी बिना पोंछ–सींघ के जानवर कहले बाड़न–

'साहित्य–संगीत कलाविहीनरू
साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनरू।।'

भारत में मानल जाला कि गीत–संगीत दैवी उपहार ह। एकर जनमदाता देव–देवी लोग ह। भगवान शिव, कृष्ण आ नारद त संगीत के देवता मानल जालें। सरस्वती आ पार्वती संगीत के देवी ह लोग। भगवान के डमरू वादन आ तांडव नृत्य के, कृष्ण का बांसुरी वादन के, नारद आ सरस्वती का बीना वादन आ माई पार्वती का लास्य नृत्य के कवन गीत–संगीत के मर्मी मरम–महिमा ना जानस। भगवान शिव वाद्य संगीत के जनमदाता मानल जालें। बतावल जाला कि शिवजी तांडव नृत्य के अंत में चउदह बेर डमरू बजवलें, जवना से चउदह सूत्र निकलल। एही चउदह सूत्रन के आधार पर पाणिनि अपना महाव्याकरण 'अष्टाध्यायी' के

रचना कइलें। एही से भगवान के नृत्य आ वाद्य संगीत के जनक कहल जाला –

'नृत्यावसाने नटराजराजो,
ननाद ढ्क्कां नवपंचवारम्।
उद्धर्तुकामरू सनकादिसिद्धये,
एतत् विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।'

व्युत्पत्ति के अनुसार ई 'संगीत' शब्द 'गै' धातु में 'सम्' उपसर्ग आ 'क्त' प्रत्यय के मेल से बनल बा। जवना के अर्थ होला – सहगान, सामूहिक गान, एके सङे गावल। एह संगीत के बीज सामेबेद में मिलेला। जहँवा रिसि लोग द्वारा सामवेद का रिचन के समवेत स्वर में गावे के चर्चा बा। ई साम गान चार तरह के बा– वेय गान, आरण्य गान, ऊह गान आ ऊह्य गान। ग्राम गान भा प्रकृत गान के वेय गान कहल जाला– 'ग्रामे गेय गान' मतलब गाँव के आम जन के गावेवाला गीत। एकरे के बाद में लोकगीत कहल गइल। शांत–एकांत बन में गवाये वाला गीत आरण्य गान कहल जात रहे। कवनो खास मोका पर गवाये वाला गीत ऊह गान रहे ऊह्य गान सामान्य जन से ऊपर उठल लोग के रहस्य गान के कहात रहे। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार 'एह चारो वैदिक गान में से वय गान आ आरण्य गान के योनि गान आ ऊह गान अउर ऊह्य गान के विकृत गान स्वीकार कइल गइल बा।' (वैदिक साहित्य और संस्कृति – आ. बलदेव उपाध्याय, पन्ना– 143–48)

ईसा के पहिला सदी में आचार्य भरत मुनि अपना श्नाट्यशास्त्रश में संगीत पर विचार करत ओकर तीन गो अंग मनले बाड़न– गीत, नृत्य आ वाद्य। आचार्य शार्ङ्गदेव 'संगीत रत्नाकर' में लिखले बाड़न कि गीत, वाद्य आ नृत्य का सम्यक् तालमेल के संगीत कहल जाला –

'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं, त्रयं संगीतमुच्यते।
नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं, वाद्यं गीतानुवर्ति च।।'

मतलब गीत, वाद्य आ नृत्य के संगम ह संगीत। शुरू में नृत्य संगीत के अभिन्न अंग रहे। जवना में अलग–अलग भाव के अनुसार देह का अलग–अलग अंग सबके संचालन के क्रिया नृत्य कहाइल आ ताल अउर लय के अनुसार अंग सबके संचालन मात्र के नृत्त कहल गइल –

'अन्यत् भावाश्रयं नृत्यं, नृत्तं ताल लयाश्रितम्।'

एह तरह से नृत्य आ नृत्त के दूगो प्रकार हो गइल।

संगीतो के दूगो भेद कइल गइल – मोक्ष पावे के उद्देश्य से गंधर्व आ देवता लोग के कइल साधना–पद्धति के मार्गी संगीत आ देसी आम जन का बेवहार का संगीत के देसी संगीत भा गान कहल गइल। एह देसी संगीत गान के दूगो प्रकार बा। ताल का सङे गावे–बजावे वाला गान के निबद्ध गान आ ताल का बंधन से मुक्त गान के अनिबद्ध गान कहल गइल। फेर गीतन के गेयता मतलब ओकरा सरलता आ कठिनाई के आधार पर संगीत के दूगो भेद भाव संगीत आ शास्त्रीय संगीत कइल गइल। आम जन के गावल–बजावल लोकगीत, भजन, निरगुन, रेडियो–टेलीविजन पर गवाये वाला गीत भाव संगीत आ अलग–अलग स्वर, राग, ताल आ लय के नियम से नियंत्रित गायन के शास्त्रीय संगीत के कोटि में राखल गइल।

अब तक का अध्ययन के आधार पर कहल जा सकेला कि सामवेदी वय गान, आरण्य गान, भाव गीत–गान आदि के सम्बन्ध लोकगीत–संगीत से बा। जवना में जटिलता आ कठोर नियम–नियंत्रण का जगे सहजता, , सरलता आ स्वाभाविकता के महत्व बा। शास्त्रीय संगीत विविध स्वर, राग, ताल आ लय के नियम में बन्हाइल होला।

लोक संगीत के तीन गो भेद होला– लोकगीत, लोकवाद्य आ लोकनृत्य। इहाँ गीत, वाद्य आ नृत्य में 'लोक' विशेषण जुड़ल बा। जवन एकरा आम जन में प्रचलित रहे के सबूत बा। लोक माने लोग, आम जन समुदाय आदि। एह से लोकगीत माने आम जन समुदाय में परम्परा से प्रचलित लोक के रचल आ लोक विषयक लय–राग में गवात आइल गीत। जवना में आम जनता का जीवन के हर छन के जीअल, भोगल, भुगतल अनुभव के महसूसल जा सकेला। लोकगीत के परिभाषा देत डॉ. सत्येन्द्र लिखले बाड़न कि 'ऊ गीत जे लोक मानस के अभिव्यक्ति होखे चाहे जवना में लोक मानसाभास भी होखे, लोकगीत के अन्तर्गत आई।' लोकगीत के विषय में डॉ. श्याम परमार के कहनाम बा, 'श्लोकगीतन में भावन के अभिव्यक्ति स्वाभाविक आ हिरदय से निकलल लय का सङे होले। जंगल में जइसे पंछी उन्मुक्त होके गावेलें, ओइसहीं स्वाभाविक रीति से हिरदय से फूटके निकलेलें। एकरा में सरल काव्य होला, भावन के खींचतान ना होखे।' (लोकगीतों के संदर्भ और आयाम– डॉ. शान्ति जैन, पन्ना– 02)

लोकगीत लोक भावना के उजागर करेला। ओकर रचना केहू लोककवि करेला। बाकिर लोक ओकरा के अपना में आत्मसात करत समय, समाज आ संदर्भ के अनुसार स्वाभाविक रूप से कांटत–झांटत आ जोड़त–बदलत जाला। एह से एकरा पर केहू कवि आपन निजी अधिकार ना थोपे आ सामान्य जन का आभास होला कि ई लोकगीत अपने आप बन जाला। एही से ग्रिम जइसन विद्वान कहलें कि लोकगीत अपने आप बनेला – '। folk song composes itself-

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, भाग – 4, पन्ना–445)

राल्फ वी. विलियम्स कहले बाड़न कि 'लोकगीत ना पुरान होला ना नाया। ऊ त जंगल के एगो गाछ जइसन ह, जवना के जड़ त जमीन में धँसल बा, बाकिर जवना में नाया–नाया डाढ़, पत्ता आ फल लागेलें।'

'। Folk Song is neither new nor old] it is like a forest tree with its roots deeply burried in the past] but which continually puts forth new branches] new leaves] new fruits-' (Encyclopaedia Brittanica] Vol &4] page& 445)

एह लोकगीत गायन के खूबी ई होला कि एकरा गायक ला कवनो पिंगल का नियम के पालन करेके के मजबूरी ना होखे। ऊ अपना सुविधा के मोताबिक गावे में कहीं ह्रस्व स्वर के दीर्घ आ कहीं दीर्घ के ह्रस्व कर देला। अक्सरहाँ लोकगीतन में हर पद के उपरांत स्वर के दीर्घ उचारन होला। बाकिर अंतिम स्वर स्वल्प रूप में उचारित होला। भोजपुरी लोकगीत विरहा के गायन में देखल जा सकेला–

'बने बने गइया चरावेला कन्हइया,
घरे घरे जरेला पिरी ऽ ऽ ऽ ति ।
अनका ही मउँगी के सानि मारि अइलें
आखिर त जाति के अही ऽ ऽ ऽ र।।'

एह विरहा में पिरीत आ अहीर के उपान्त्य स्वर 'री' आ 'ही' के उचारन दीर्घे स्वर में ना प्लूत स्वर में होला 'ति' आ 'र' के उचारन स्वल्प मात्रा में कइल जाला। लोकगीत गायन में पिंगल का नियम के कठोर अनुशासन ना होखे से कवनो पंक्ति बड़ त कवनो छोट हो जाला आ गायक गावत समय मात्रा अउर अक्षर घटा–बढ़ा लेवेला। जवना से छंदभंगता के बोध ना हो पावे। फेर एगो आउर विरहा के देखीं–

'झूठ भइलें सधुआ, झूठ बियफइया
झूठ भइलें कागवा के बोल।
झूठ भइलें बाभना के पातरा आ पोथी
कि सइँया नाहीं अइलें हो मोर।।'

एकरा में दीर्घ ऊकार वाला झूठ आ नाहीं के उचारन ह्रस्व रूप में होता। ई लोकगीत आउर गीतन से अलग होला। आउर गीत केहू खास कवि–गीतकार के रचल ऊ गीत होला जवन कवनो खास मानस का खासियत से युक्त होला। जवना पर कवनो खास व्यक्ति के अपना शैली, दर्शन आ ज्ञान–कोश के प्रभाव रहेला आ जवना के पढ़ते–सुनते ई सवाल खड़ा होला कि ई गीत केकर ह, फेर ऊ केहू के निजी कृति हो जाला। ऊ लोक का सङे एकमेव ना हो सके। उहँवे लोकगीत के शब्द, शैली आ ज्ञान–कोश सउँसे लोक के शब्द, शैली आ ज्ञान–कोश होला। एही से कहल जाला कि लोकगीत लोक समूह के रचना होला। अइसे लोकगीत कहाये वाला गीत त केहू खास आदमी रचेला, बाकिर ओह व्यक्ति के लोक से अइसन अटूट सम्बन्ध होला कि रचे के समय भा ओकरा बादो ई केहू ना बता सके कि ओकर गीतकार के बा। कबो–कबो अइसन होला कि गीत शुरू एक आदमी करेला आ दोसर तीसर ओकरा में कड़ी जोड़त जालें। ई लोकगीत केहू कवि भा संतकवि के दार्शनिक आ आध्यात्मिक रहस्यवादी गीतन से अलग होला। जवना में कवि भा संतकवि के आपन दार्शनिक रहस्यानुभूति के अभिव्यक्त करेलें।

लोकवाद्य के चार गो प्रकार बा – तत्, अवनद्ध, घन आ सुषिर। तंत्र आ तार से बनल वाद्य के तत् कहल जालाय जइसे– सारंगी, सितार, बीना आदि। चमड़ा से छवावल वाद्य अवनद्ध कहल जालाय जइसे– ढ़ोलक, खंजरी, मृदंग, हुड़का, टिमकी, नगाड़ा, तबला आदि। आपुस में रगड़ के भा पिटके बजावे जाये वाला वाद्य घन कहालाय जइसे– झाँझ, छाल, जोरी, ताली आदि। मुँह से फूँक के बजावे वाला वाद्य के सुषिर वाद्य कहल जाला य जइसे – मुरली, बाँसुरी, बीन आदि।

लोक नृत्य के विविध प्रकार बा। जवना में प्रायरू क्षेत्र आ भासा भेद के चलते अन्तर आ जाला। भोजपुरी क्षेत्र में लोक नृत्य खातिर आम जन 'नाच' शब्द के बेवहार करेलें। जवन अवसर, गीत, जाति आदि से जुड़ल होलेंय जइसे – पँवरिया नृत्य, कहँरऊ नृत्य, धोबिया नृत्य, गोंड़ऊ नृत्य, भाँड़ नृत्य, नेटुआ नृत्य, हुड़का नृत्य, डफरा नृत्य, पखावज नृत्य, छोकड़ा नृत्य, झूमरिया नृत्य, कठघोड़वा नृत्य, कठपुतरिया नृत्य आदि।

लोक संगीत के कए गो आपन धुन होला य जइसे– आसा, भाड़, झिझोड़ी, पहाड़ी आदि। एही आधार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कए गो राग के जनम भइल बा। लोक संगीत के बेवहार में आवे वाला स्वर सब के बारे में प्रो. महेश नारायण सक्सेना के मत बा कि 'लोकगीतन में अधिकतर सार स्वर आ दूगो विकृत कोमल गान्धार अउर कोमल निषाद स्वरन के प्रयोग मिलेला। मतलब, ओकरा में मुख रूप से विलावल, खमाज, काफी थाटन के स्वर आवेलें। शास्त्रीय संगीत के दिसाईं भी एह थाटन के राग अपेक्षाकृत अधिका सरल आ सुग्राह्य होलें। कुछ गीतन में अन्य विकृत स्वर सब के भी प्रयोग होला य जइसे– कोमल धैतव आ कोमल ऋषभ। एकरा में से कोमल ऋषभ के प्रयोग कोमल धैतव से कम मिलेला। तार्व

मध्यम युक्त गीत त कदाचित द चार गो मिलिहें।' (सम्मेलन पत्रिका– लोक संस्कृति अंक – संवत 2010 विक्रमी, पन्ना –345)

लोक संगीत के विषय में समर बहादुर सिंह के मत बा कि लोकगीत के बंदिश प्रायरू मध्य सप्तक में ही सीमित होलें। उहो पूर्वार्ध में, उतरार्ध के स्पर्श कबो–कबो ही होला। तार आ मन्द सप्तक एकरा सीमा घेरा के बाहरे रहेलें, कुछ अपवादन के छोड़ के। एह से एकर गायन श्रमसाध्यो ना होखे। अइसे त एह बंदिसन में सब बारह स्वरन के प्रयोग होला, बाकिर बहुलता शुद्ध स्वरन के ही होला। दोसरे, अधिकांश लोकगीत कहरवा, दादरा जइसन, बाकिर प्रवहमान तालन में निबद्ध होलें। चाल इनकर प्रायरू मध्य लय में ही होला। विलंबित आ द्रूत लय में बहुत कम लोकगीत गावल जाला। तीसर, एह लोकगीतन के स्वर विन्यास आ लयदारी में सहज प्रवाह होला, कवनो बनावटीपन ना होखे। ओकर सहजता आ भावप्रवणता ही ओकरा के चुटीला आ मर्मभेदी बना देला। केतने लोकगीतन के बंदिश कुछ गिनल–चुनल लोकप्रिय राग पीलू, भैरवी, तिलक, कामोद आदि के मोहक स्वरगुच्छन में होलें।

लोकगीतन के खास धुन सब कलाकारन का कल्पना के कुरेदले होई आ ऊ स्वर (आरोह अवरोह) आ वर्ण 'रोचक गायन प्रक्रिया) से विभूषित करके ओकरा के जन चितरंजक बना के 'राग' के जामा पहिरा देले होई। कुछ रागन के नामय जइसे– भूपाली, जौनपुरी, पहाड़ी आदि एह तथ्य के परिचायक बा कि ई राग ओह जगह के लोकप्रिय लोकधुन सेही बनल बा।' (लोकगीतों के संदर्भ और आयाम– डॉ. शान्ति जैन, पन्ना–7)

लोक संगीत में एकल आ समवेत स्वर में गवाये वाला दूगो गायन पावल जाला। भोजपुरी लोकगीतन के कए गो वर्ग बाय जइसे– भक्ति गीत, निरगुन, पराती, देवी गीत आदि। जवन प्रायरू पीलू, दुर्गा, काफी आ भैरवी आदि राग में गवाला। मौसम गीत– होरी–फगुआ, चौता, कजरी आदि के अलावे विदेसिया आदि कामोद आ झिंझोरी राग में गवाला। संस्कार गीतन के गावे में सात विशुद्ध स्वर(नोट्स) के प्रयोग होला। काफी आ खमाज थाट का स्वरन के भी प्रयोग कइल जाला।

भोजपुरी लोकगीतन में राग का तुलना में ताल के परिलक्षित कइल आसान बा। कहरवा, जत, दादरा, खेमटा आ दीपचन्दी आदि कुछ लोकप्रिय ताल बाड़ें स। सोहर आ जनेऊ गीत में जत ताल, खेलवना में कहरवा आ विदेसिया में दीपचन्दी के प्रयोग होला। भोजपुरी के अस्सी प्रतिशत गीत कहरवा ताल में गवाला। गीत आ भाव के अनुसार कहरवा ताल के गेयता में बदलाव होत रहेला। एही से ई कबो द्रूत त कबो विलंबित लय में गवाला। सोरठी, विरहा, सोहनी, पूर्वी, निरगुन आदि भोजपुरी गीत कहरवे ताल में गवाला। एकरा बाद दीपचन्दी लोकप्रिय बा। कबो–कबो एके गीत के दू ताल में गावे के परम्परा बाय जइसे– झूमर दादरा आ कहरवा दूनों ताल में गायक गावेलें।

ताल आ लय लोकगीत के गावे में महत्त्वपूर्ण होलें। एकनी के बिना लोकगीत बेजान हो जालें। कहरवा, दीपचन्दी, दादरा, जत, खेमटा आदि भोजपुरी लोकगीतन खातिर प्रमुख ताल बाड़ें त द्रूत आ विलंबित दूगो लय मुख्य बाड़ें। भोजपुरी लोकगीत गावे में विलावल, खमाज, काफी आ भैरव चार थाटन के प्रयोग होला।

भोजपुरी लोकगीतन में प्रायः सोहर, खेलवना, जनेऊ गीत, बिआह गीत आदि मेहरारू लोग गावेला आ विरहा, होरी–फगुआ, चइता, चइती, घाटों आदि मरद लोग गावेला। एकरा में होरी–फगुआ, चइता, सोहर, जनेऊ गीत, बिआह गीत आदि समवेत स्वर में आ विरहा, आल्हा, गोपीचन, सोरठी आदि एकल स्वर में गवाला।

लोकगीत में संस्कारन के आत्मा होला। श्रुति परम्परा का एह विधा में बनावटीपन खातिर कवनो जगह ना होखे। एकरा में संवेदना के ऊ तपिश होला कि ओकर आँच हर हिया का लागेला। एकरा में अनुभूतियन के ऊ शीतलता होला, जवन श्रम–संघर्ष से जूझत व्यक्ति खातिर अमरित बन के बरसेला। एकरा में कहीं श्रृंगार रस से लबालब गीत बा त कहीं इंतजार आ बियोग के करुणा भरल बा त कहीं जड़ में परान फूँके वाला ओज स्वर बा। एकरा नैसर्गिकता के अलौकिक प्रभाव होला।

एह तरह से लोकगीत सहज उद्भूत संगीतात्मक शब्द–योजना ह। ई संवेदनशील मनुष्य के रागात्मक प्रवृति ह, जवना के सरसता ओकरा भीतर पनकल भावावेग का चलते तरंगित हो उठेला। इहे भावगीत के रूप में बदल जाला। भावमय स्वर लहरियन के जब नियंत्रित आ बेवस्थित कइल जाला चाहे जब इन्हन के खास भाव के अनुरूप रूपाइत कइल जाला त ऊ सार्थक लोकसंगीत बन जाला। लोक संगीत शास्त्रीय अनुशासन से परे सहज गति, लय, स्वर, छंद आ धुन से सजल–संवरल होला। एकरा लयात्मकता आ धुन के संयोजन बहुते मनमोहक होला। रोचक, सजीव आ मार्मिक विषय वाला लोकगीतन में सउँसे जनजीवन के जीवन्त चित्र भरेला। ई भावमय अमृतकलश होला। एकरा में जनजीवन के हर्ष–विषाद आ सपना–कल्पना के अनंत आकाश के चित्रण पावल जाला।

भोजपुरी रचना आ आलोचना

डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

लेखक-डा० अशोक द्विवेदी, प्रकाशक-विजया बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 मूल्य-500/-

श्री अशोक द्विवेदी भोजपुरी के समर्थ रचनाकार, आलोचक आ सम्पादक हउवन। भोजपुरी के महत्पूर्ण आ स्तरीय पत्रिका 'पाती' के पछिला चालीस बरिस से सम्पादन करत, ऊ भोजपुरी भाषा–साहित्य के उन्नयन खातिर, लगातार काम कर रहल बाड़न। भोजपुरी भाषा–साहित्य के इतिहास में जब कबों पत्र–पत्रिकन पर चर्चा होई, त 'पाती' के ओम्मे शामिल कइल जरूरी होई। अपना निजी प्रयास से, एतना लम्बा समय तक कवनो पत्रिका निकालल, कवनो जगि (यज्ञ) से कम नइखे। अंक–50 का बाद 'पाती' के रूपाकारो बदलल आ ऊ नया रूप–रंग में, रंगीन आवरण आ साज–सज्जा का साथ प्रकाशित हो रहल बिया।

कवनो पत्रिका के सम्पादन बहुत विशिष्ट आ परिश्रम के काम होला। सम्बद्ध भाषा के समर्थ आ सिद्ध रचनाकारन का साथ, विकसनशील नई रचनात्मक–प्रतिभा के पहिचानल आ उकसावल सुजोग सम्पादके के करे के पड़ेला। 'पत्रिका' नया उभरत रचनाकारन के स्थापित करे वाला, सक्षम मंच के भूमिका अदा करेले। भोजपुरी 'पाती' अपना एह काम आ भूमिका के निबाह पूरा निष्ठा आ जिमवारी से कइले बिया आ एह पत्रिका में प्रकाशित कतने नया रचनाकार, आगा चल के, भोजपुरी का साहित्यिक–जगत में आपन विशिष्ट पहचान बनावल लोग।

कवनो साहित्यिक–पत्रिका के सजग–सम्पादन के लाभ इहो होला कि ओह भाषा के समूचा साहित्यिक–लेखन पर सम्पादक के पैनी नजर बनल रहेले आ विभिन्न विधा में हो रहल लेखन आ रचनात्मक साहित्य में हो रहल बदलाव आ नवोन्मेष के सम्पादक बहुत पहिलहीं से देख पावेला आ ओकरा प्रस्थान–बिन्दुअन के पहिचानो कर पावेला। फिराक गोरखपुरी के सब्दन में कहीं त "ऊ बहुत पहिलहीं रचनात्मक बदलाव का आहट के जान लेला.... (बहुत पहले से उन कदमों की आहट जान लेते हैं।)"

भोजपुरी में, अशोक द्विवेदी के, कवि–कथाकार का रूप में विशिष्ट पहिचान आ स्थान बा। सुरूआत में ऊ हिन्दी में लिखत रहलन, लेकिन कवि त्रिलोचन के प्रेरना–प्रोत्साहन से भोजपुरियो में कविता, कहानी आ निबंध लिखे शुरू कइलन, सँगे–सँग समीक्षा आ आलोचनात्मक लेखन करत रहलन। 'पाती' संपादको का रूप में, ऊ भोजपुरी रचनाकर्म आ ओकरा समालोचनात्मक पड़ताल में सतत् सक्रिय रहलन।

अशोक द्विवेदी के नव प्रकाशित पुस्तक 'भोजपुरी रचना आ आलोचना', भोजपुरी साहित्य आ रचना कर्म पर समय–समय पर लिखल अलग–अलग आलेखन के संग्रह हवे। खुद लेखक के शब्दन में, "चार दशक से भोजपुरी साहित्य आ ओमे हो रहल लेखन से लगातार जुड़ल रहला का कारन, जवन थोर बहुत लिखनी, ओही सब के बटोर के, तीन खण्डन में ई किताब 'भोजपुरी रचना आ आलोचना' दे रहल बानी।" जाहिर बा कि ई पुस्तक कवनो व्यवस्थित–योजना का अनुसार तइयार कइल कृति ना

होके, समय–समय पर, भोजपुरी–साहित्य पर लिखाइल कविता आ ओकरा प्रतिनिधि कवियन पर केन्द्रित बा, दुसरका भोजपुरी के गद्य आ कथा–साहित्य पर, आ तिसरा खण्ड भोजपुरी समालोचना पर। एह तीनों खण्ड से गुजर के केहू भोजपुरी–साहित्य के सिंहावलोकन जरूर कर पाई, साथे–साथ भोजपुरी साहित्य के विकास–क्रम, ऐतिहासिकता आ ओकरा विविध प्रवृत्तियन से नीक तरह से परिचित हो सकेला।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एह कृति के भोजपुरी रचना आ आलोचना के एगो मूल्यांकन ग्रंथ मनले बाड़न। पुस्तक में "दो शब्द" में ऊ लिखले बाड़न– "भोजपुरी रचना और आलोचना" अशोक द्विवेदी की नई पुस्तक है, जिसमें उन्होंने भोजपुरी–साहित्य की विविध विधाओं का ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें भोजपुरी कविता–गीत, ग़ज़ल, निबन्ध, कहानी, लोककथा, उपन्यास, समालोचना आदि पर वैचारिक निबन्ध हैं साथ ही इसमें कबीर, राहुल सांकृत्यायन, मोती बी0ए0, धरीक्षण मिश्र, कवि बावला, रामनाथ पाण्डेय, पाण्डेय कपिल, नरेन्द्र शास्त्री, अनिल ओझा 'नीरद', आनन्द संधिदूत आदि रचनाकारों के लेखन को तथा कुछ विशिष्ट साहित्यिक कृतियों को अलग–अलग निबन्धों में रेखांकित किया गया है।

प्रथम खण्ड के सुरुआती लेखन में अशोक द्विवेदी लोकभाषा आ संस्कृति के चर्चा कइले बाड़न। भाषा आ संस्कृति एक्के सिक्का के दू–पहलू हवे आ हर भाषा–समाज के आपन संस्कृति होला। भोजपुरी लोकसंस्कृति के चर्चा करत द्विवेदीजी कृषि संस्कृति के किसान आ ओकरा से जुड़ल श्रमजीवी आ शिल्पी समाज के संस्कृति मानत बाड़न, जवन आपुसी सहजोग आ भाईचारा पर आधारित रहे। एह संस्कृति के नष्ट करे में, ऊ सामन्ती व्यवस्था आ औद्योगिक पूँजीवादी संस्कृति के अहम भूमिका मानत, लोकसंस्कृति के सबले बड़हन विशेषता ई मानत बाड़न कि ई कवनो तरह के वैचारिक–अतिवाद के शिकार ना भइल आ समन्वय पर बल देत रहल।

अशोक द्विवेदी काव्यशास्त्री लेखा कविता, खासकर लोकभाषा–काव्य के मूल्यांकन का कसौटियन पर बिचार करत ई स्पष्ट करे के प्रयास कइले बाड़न कि कल्पनाप्रसूत, बनावटी काव्यानुभूति आ कवनो खास सिद्ध ान्त पर रचल जाये वाली कविता समय का मोताबिक भले नई हो सकेले, बाकिर मौलिक संवेदना का अभाव में सुभाविक ना रहला का कारन बनावटी कविता कहल जाईं। अशोक द्विवेदी भोजपुरी कविता के समझे में, पाश्चात्य निकष आ विचार–दृष्टि अपनवला से असहमति जतावत, समालोचक के कविता के भाव–भूमि पर उतरे खातिर आपन सौन्दर्यदृष्टि आ तद्नुकूल मानक अपनावे के सलाह देत बाड़न।

प्रथम खण्ड में पाँच गो आलोचनात्मक आलेख अइसन बाड़न सऽ, जवन भोजपुरी कविता के विकासक्रम के, ओकरा ऐतिहासिक परिदृश्य में समझे में सहायक बाड़न सऽ। "भोजपुरी कविता के शुरुआती दौर", "भोजपुरी कविता के दुसरका दौर", "गजल : अन्दाजे–बयान के असर", "भोजपुरी गीत के भाव–भंगिमा" आ "नया लयदारी : नवविन्यास के गीत" जइसन अध्यायन से भोजपुरी कविताई के सोगहग रूप देखे समझे में सहूलियत मिलत बा। "भोजपुरी कविता के सुरुआती दौर" में अशोक द्विवेदी तीन काव्य–रूपन के उल्लेख कइले बाड़न : पहिला सिद्ध–नाथ आ सन्त कवियन के रचल कविता, दुसरा वाचिक–परम्परा के, लोककंठ से निकलल गीत आ तिसरा भोजपुरी के ज्ञात–अज्ञात कवियन के रचल कविता। लेखक के कहनाम बा कि भोजपुरी कविता–लोकभाषा आ लोकजीवन के कविता रहल आ एही कारन– नगरीय–बोध आ आधुनिकता के बजाय ओमें ग्रामीण–चेतना आ संस्कृति के मूल तत्त्व समाहित बा। लेखक के निष्कर्ष बा कि भोजपुरी बहुत पहिलहीं, काव्य–भाषा के दर्जा पा चुकल रहे।

भोजपुरी कविता के आरंभिक–रूप के पहिचान, गोरखनाथ के बानी, भरथरी के गीत आ सिद्ध–नाथ–सन्तन के रचनन से कइल गइल बा। आगे जाके, कबीर, धर्मदास, धरनीदास, दरियादास (बिहार), गुलाल साहब, भीखा साहेब, लक्ष्मी सखी जइसन अन्य सन्त कवि भोजपुरी–कविता के पीठिका बनावल लोग। अधिकांश कवि अपना अध्यात्मिक अनुभूतियन आ लोक–जीवन–संवेदन के अभिव्यक्ति खातिर भोजपुरी भाषा के आश्रय लेत लउकत बा लोग।

एमे शक नइखे कि भोजपुरी के लोक–काव्य बहुत समृद्ध बा। ऊ जनपदीय भोजपुरिया–क्षेत्र का लोक–कण्ठ में बसल बा। एमे लोकजीवन आ परिवेश जीवन्त बा। जीवन के सुख–दुख, प्रेम–विरह, प्रकृति के राग–रंग, पारिवारिक जीवन के हास–परिहास, संघर्ष आ वेदना प्रकट भइल बा। लेखक के अनुसार, "बिरहा, चइता, कजरी, फगुआ, कहँरवा, बारहमासा आदि पुरुष–प्रधान प्रकृत गीतन का साथ सोहर, झूमर, कजरी,

संझा–पराती, जेवनार, जँतसार, छइ–बहुरा, बियाह, संस्कार आ परब–त्यौहारन पर गवाये वाला नारी प्रधान गीत लोकजीवन के भावपूर्ण सोगहग रूप खड़ा करे में समरथ बाड़न सऽ।" – भोजपुरी–काव्य के नेइँ आ देवाल खड़ा करे वाला प्रतिनिधि कवियन में महेन्द्र शास्त्री, दण्डी स्वामी विमलानन्द, धरीक्षण मिश्र, प्रसिद्ध नारायण सिंह, राम विचार पाण्डेय, मोती बी0ए0, जगदीश ओझा 'सुन्दर' चन्द्रशेखर मिश्र, प्रभुनाथ मिश्र, रामजियावनदास बावला, जइसन प्रमुख लोगन के नाँव लेत बतावल गइल बा कि स्वतंत्रता–पूर्व, आ स्वतन्त्रता प्राप्ति का बाद ग्राम्यांचल के दशा आ राष्ट्रीय चेतना के अंकन का साथ प्रकृति के जियतार बिम्ब उरेह भइल। एह सुरुआती दौर के कवियन के रचनात्मक वैशिष्ट्य बतावत ई विश्लेषित कइल गइल बा कि कइसे भोजपुरी काव्यधारा के विकास भइल। शिल्प–शैली का आधार पर कवियन के वैयक्तिक अवदान का रहे? एही में प्रबन्ध काव्य आ खण्डकाव्यन के चर्चा भइल बा। महेन्द्र शास्त्री के गीतन में लोकधुनन के पहिचान बा, उहें मोती बी0ए0 आ बावला अपना गाँव के जीवन–जगत आ रस–गन्ध के कइसे अभिव्यक्ति देले बा लोग।

अशोक द्विवेदी भोजपुरी कवियन पर हिन्दी कविता के प्रत्यक्ष–परोक्ष प्रभावो के रेखांकित कइले बाड़न। अनिरूद्ध, प्रशान्त, भोलानाथ गहमरी आदि के काव्यानुभूति आ बनावट में छायावादी संस्कार के पहिचान करत बतावल गइल बा कि हरिराम द्विवेदी घर–गृहस्थी आ ग्रामजीवन के सिद्धहस्त कवि बाड़न।

भोजपुरी कविता का दुसरका दौर में अशोक द्विवेदी, कविता के नव–शिल्प आ फ्री–वर्स के चर्चा मूल्यहीनता, संत्रास आ विविध सरोकारन वाला लेखन के चर्चा करत, पाण्डेय सुरेन्द्र, स्वर्ण किरण, ब्रजकिशोर, शशि भूषण लाल, विश्वरंजन आदि के नामोल्लेख करत बतवले बाड़न कि एह कवियन के अभिव्यक्ति कौशल नयापन लेके उभरल। शहरी माहौल का मशीनी तन्त्र से उपजल संवादहीनता का स्थिति का साथ गाँव से पलायन आ शहर पहुँचल लोगन के मोहभंग, स्वार्थ–स्वहित, ईर्ष्या–भितरघात आ विचार–प्रदूषण के उल्लेख एह समय का नया कविता में चित्रित बा। खुद लेखक का शब्दन में– "समाजिक टूटन, जातीय विद्व ेष, इरिखा–डाह आ सम्प्रदायिक दुर्भावना का अन्दरूनी सुरंग से गुजरत भोजपुरी कवि जवन परत–दर–परत देखत बा ओके कहीं कलापूर्ण, कहीं तंज–लहजा में कहत बा। गाँव आ शहर का दू–पाट में लथरात–कुँचात गाँव के आदमी नया जुग का बदलत माहौल में पनाह खोजत अपना के कतहूँ ठीक से "एडजस्ट" नइखे कर पावत।" भोजपुरी कविता के कथ्य आ भाव–परिदृश्य के लेखक, श्रीराम तिवारी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, पाण्डेय कपिल, सत्यनारायण, कैलाश गौतम, अशोक द्विवेदी, आनन्द संधिदूत, परमेश्वर दुबे शाहाबादी, गंगा प्रसाद अरुण, कमलेश राय, निलय उपाध्याय, सूर्यदेव पाठक आदि कवियन का कविता–पंक्तियन के उदाहरण से उजागर करत एह दौर का कविता के विषय–बस्तु आ कथ्य पर विश्लेषण करत विचार करत, कविता का भाषा–शिल्प आ शैली पर भी गहनता से विचार प्रगट करत बा। भाषाई–बुनावट, तेवर, नाटकीयता, संकेतिकता आ टटका बिम्ब–योजना आदि प्रतिमानन पर विचार देत लेखक, गीतन में उभरत घनीभूत पीड़ा आ संवेदन के अभिव्यक्ति–प्रक्रिया के व्याख्यायित कइले बा।

पुस्तक में एगो छोट आलेख भोजपुरी ग़ज़ल पर बा। छठवाँ दशक का बाद ग़ज़ल काव्यरूप का दिसाईं भारतीय भाषा सब में रुझान बढ़ल बा। ए घरी दर्जन भर से अधिका भाषा आ लोकभाषा में ग़ज़ल लिखल जा रहल बा आ प्रेम–विरह का साथ–साथ, समाज के जथारथ आ असंगतियन पर धारदार अभिव्यक्ति हो रहल बा। इहे ना, सत्ता आ राजनीतिक विद्रूप आ आमजन का संघर्ष के भाव–भंगिमा के रूपायित कइल जा रहल बा। भोजपुरी का एह ग़ज़ल काव्य–परम्परा में जगन्नाथ, अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, पाण्डेय कपिल, मोती बी0ए0, गणेशदत्त किरण, अशोक द्विवेदी, जौहर शफियाबादी, दिनेश भ्रमर, आसिफ रोहतासवी आदि अनेक कवि सशक्त ग़ज़ल लिखत आइल बा। लोकलय का छान्दसिक–विधान में भोजपुरी ग़ज़ल एगो नया तेवर दे रहल बिया।

भोजपुरी गीत–नवगीत के अशोक द्विवेदी दू अध्याय में समेटले बाड़न आ 'गीत' के पारिभाषित करत, ओकरा शिल्प–संरचना में भाषा के सार्थक–सुनियोजित प्रयोग के रेखांकित कइले बाड़न। संवेदना आ अनुभूति के प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति में, लेखक का अनुसार गीत में आन्तरिक संगति, सहजता, सांकेतिकता, लय आ ध्वन्यात्मक–अनुगूँज से ओकर सम्प्रेषणीयता बढ़ि जाले। भोजपुरी लोकगीतन के लोकप्रियता, चेतना आ स्वीकार्यता त पहिलहीं से रहल बा। एहसे पारम्परिक लय–धुन में नया कथ्य भरल समीचीन बा। गीत–ढाँचा आ बिन्यास में नया प्रयोगो भइल बा। अशोक जी स्वतंत्रता आंदोलन

आ ओकरा बाद के भोजपुरी–गीति–धारा के सम्यक् विवेचन कइले बाड़न आ ओमे राष्ट्रीय चेतना का सँग गृहस्थी, दाम्पत्य, खेत–खरिहान, प्रकृति, ऋतु–चक्र, प्रेम, विरह, वेदना आ पीड़ा के अभिव्यक्ति के विश्लेषण करत भक्ति आ दर्शन के स्वरों के रेखांकित कइले बाड़न। प्रतिनिधि विशिष्ट कवियन के गीत–पंक्तियन के उद्धृत करत भोजपुरी गीत के वैशिष्ट्य के उजागर करत, उनकर निष्कर्ष बा : "भोजपुरी गीत के अपना भावभूमि, काव्य–प्रतिभा, दृष्टि आ रचना–कौशल से नया–नया भंगिमा आ ऊँचाई देबे में कतने पुरान आ नया गीतकार लागल बाड़न.... एह लोगन में कैलाश गौतम, पाण्डेय आशुतोष, माहेश्वर तिवारी, रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी', परमेश्वर दूबे शाहाबादी, अशोक द्विवेदी, आनन्द संधिदूत, ब्रजभूषण मिश्र, प्रकाश उदय, रिपुंजय निशान्त, दयाशंकर तिवारी, कमलेश राय, गंगा प्रसाद अरुण, भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि के नाँव लिहल जा सकेला।"

"नया लयदारी : नव–बिन्यास के गीत" चैप्टर नवगीतन पर केन्द्रित बा। एह में, नई लयदारी लोकगीतन के अनुगूँज समेटत अभिव्यक्ति के नया पैटर्न अपनावत, आंचलिक रस–गंध के चित्रात्मक आ प्रतीकात्मक शब्द–विधान से सजावत गेयता के नवरूप से गीति–रचना संभव होता बा। विषय–वस्तु के वैविध्य आ अनुभूति के गहनता से, अइसन गीत अलग प्रभाव छोड़त बा। अशोक द्विवेदी कुछ महत्वपूर्ण गीतकारन के गीतन के वैशिष्ट्य के दरसावत बाड़न। एमें कैलाश गौतम, परमेश्वर दूबे शाहाबादी, गंगाप्रसाद अरुण, ब्रजभूषण मिश्र आ कमलेश राय के रचना विधान पर गहिराई से विचार कइल गइल बा।

रचना आ आलोचना के प्रथम खण्ड में, कुछ विशिष्ट प्रतिनिधि कवि लेखकन पर अलग–अलग चर्चा कइल गइल बा, जवन विश्लेषणपरक बा। कबीर, राहुल सांकृत्यायन, मोती बी0ए0, धरीक्षण मिश्र, रामजियावनदास 'बावला' पर। आनन्द संधिदूत पर अलग अध्याययन में लिखल गइल बा। 'बावला' पर तीन आ मोती बी0ए0 पर दू गो समालोचनात्मक निबन्ध। भिखारी ठाकुर आ महेन्दर मिसिरो पर अगर दू गो अउर आलेख जोड़ल रहित तऽ पुस्तक के संपूर्णता मिल गइल रहित। दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के महाकाव्य 'बउधायन' पर एगो आलेख बा। अइसहीं 'बलिया जनपद का काव्य–परम्परा' पर उहाँ का प्रतिनिधि कवियन पर लिखल गइल बा।

पुस्तक का दूसरा खंड में भोजपुरी कथा–साहित्य आ कथेतर गद्य पर केन्द्रित विवेचनात्मक अध्याय बाड़न सऽ। कुछेक में कहानी के सैद्धान्तिक विवेचना आ "हिन्दी–भोजपुरी कहानी के अन्तः सम्बन्ध" के विवेचन बा। एगो अध्याय 'समकालीन भोजपुरी कथा–साहित्य' पर बा। एम्मे कुछ अलग अध्याय प्रमुख उपन्यासन पर बा, जवना में ओह औपन्यासिक कृति के विश्लेषण–विवेचन कइल गइल बा। भोजपुरी का एह प्रतिनिधि उपन्यासन विन्ध्यांचल राय 'अचल' के उपन्यास "सुन्नर काका", जगन्नाथ प्रसाद सिंह के "घर–टोला–गाँव", नरेन्द्र शास्त्री के "ऊसर के फूल", अनिल ओझा 'नीरद' के तीन उपन्यास– "बेचारा सम्राट", "कहत कबीर" आ "आचार्य जीवक", रामदेव शुक्ल के "ग्राम–देवता" आ पाण्डेय कपिल के "फुलसुँघी" का साथ रामनाथ पाण्डेय के "महेन्दर मिसिर" के समालोचनात्मक विवेचना बा। एगो अध्याय जवन भोजपुरी निबन्ध–साहित्य के रूपरेखा प्रस्तुत करत बा। एगो छोट अध्याय भोजपुरी नाटक आ एकांकी पर संक्षिप्त प्रकाश डालत बा।

पुस्तक के तिसरका खण्ड भोजपुरी समालोचन–समीक्षा के लेके बा। पहिल अध्याय में भोजपुरी समालोचना के ऐतिहासिक विकास आ ओकरा स्वरूप पर बा। लेखक समालोचना का विकास में पत्र–पत्रिकन का योगदान के महत्वपूर्ण मनले बा। अन्य आलेख रचना–आलोचना के सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्ष के लेके बा। एह खण्ड के आलेखन से गुजरत भोजपुरी का रचनात्मक साहित्य का साथ–साथ भोजपुरी समालोचना के रूपाकारो उजागर होत बा लेखक के आलोचनात्मक दृष्टि आ समझ सराहे जोग बा।

कुल मिला के हम कह सकीला कि भोजपुरी रचनाधर्मिता आ ओकरा विकास–यात्रा से रु–ब–रु होखे आ नीक से परिचित होखे खातिर "भोजपुरी रचना आ आलोचना" एगो जरूरी पुस्तक बा। एह पुस्तक से गुजरत खा एगो बात स्पष्ट होता कि लेखक ऐतिहासिक विकास के क्रम में, रचना आ रचना–यात्रा के देख सकत बा आ ओकरा पास समालोचना का साथ इतिहास–दृष्टि बा। हम अशोक द्विवेदी से अपेक्षा करब कि ऊ भोजपुरी–साहित्य के एगो अद्यतन सुव्यवस्थित इतिहास लिखसु। उनका में ई क्षमता बा। एह महत्वपूर्ण पुस्तक खातिर अशोक द्विवेदी के बहुत–बहुत बधाई!!

– सम्पादक, "समकालीन भारतीय साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली",।

काशी महिमा

पं. गौरी शंकर तिवारी 'तृप्त'

मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान खानि अध हानि कर।
जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइअ कस न।।

गोस्वामी तुलसीदास जी का अनुसार कासी मुक्ति देबे वाली, ज्ञान देबेवाली आ पाप के नास करे वाली नगरी हऽ। एह से इहाँ बसला पर सरीर धारण कइला के सब अभीष्ट पूरन हो जाला। इतिहासो–पुरान के अनुसार कासी नगरी सभ तीर्थन के तीर्थ–स्थान रहे, माने कुल्हि तीरथ इहाँ आके बसल रहल। भोले बाबा के एह आनन्द बन में केहू खातिर कबो, कवनो रोक–टोक ना रहल। जदी कवनो रोक–छेंक रहित तऽ बन के आनन्द कइसन? ईहे कारन हऽ कि देवन के देव महादेव जी के आनन्द बन के कासी कहल गइल बाटे। 'काशवे प्रकाशते इति काशी'। प्रकास के जरि हरदम भितरे रहेला। प्रकास के महिमा तऽ दृष्टि सम्पन्न, सचेत आ जागत अदिमिये खातिर मानल जाला। एही से भीतरी प्रकास के ज्ञान कहल गइल बा।

कासी नगरी अइसने ज्ञानी लोगन के पवित्र भूमि हऽ। इहाँ रहे वाला लोग सुख– साधन का पाछा ना भागे, बलुक चना, चबेना आ गंगा जले के अन्नपूरना माई कऽ परसाद मानि के मस्ती से जीवन–यापन करत रहेला। आनन्द तऽ मस्तिये में हऽ, बाकिर एह मस्ती वाला आनन्द खातिर ब्यर्थ–अभिमान के त्याग करे के पड़ेला। ई बात दोसर बा कि भोलेनाथ बाबा के एह आनन्द बन में शिवत्व के महत्व के अनुरूपे रहला पर आनन्द के अनुभूति हो पावेला। ई तथ्य अन्तरात्मा से स्वीकार कर लेला पर कुल्हि भेद भाव अपनहीं दूर हो जाला, आ तब लोग सहजे में मुक्ति पावे के हकदार बनि जालन।

अनेकता में एकता आ एक ही सत्ता के अनेकता, एहिजा के जीवन–दर्शन कऽ बिसेसता हवे। एह धरती पर मरलो, मंगलकारी मानल गइल बा। एही से कतने लोग मुअे से पहिलहीं कासी आके मुमुक्ष भवन में डेरो डालेला। एह नगरी में निवास करे वालन खातिर कासी खंड के स्पष्ट निर्देश बाटे कि अपना मुअला का बारे में कबो जनि सोचऽ बलुक स्वस्थ आ दीर्घ जीवन खातिर चिन्तन करऽ। विविध–बिरोधन के सामंजस्य कऽ, ई अलौकिक भूमि मानल जाले। एही बिसेसता के कारन इहाँ कऽ लोगन के फक्कड़पन नीमन लागेला।

बनारस, बाबा बिस्वनाथ के अइसन नगरी हवे, जवना पर गंगा माई के आँचर बा। ई संकटमोचन हनुमान जी के पवित्र स्थान हऽ। अनेकन ऋषि–मुनि इहाँ रहि के तप कइले बाड़न। बुद्ध भगवान एहिजे स सगरी दुनियां के करुना आ दया के संदेश दिहले रहले। एही पावन धरा पर संत कबीर, तुलसी, रैदास आ बाबा कीनाराम रहिके समावेसी–जीवन जीए के राह देखवले रहलन। जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान पार्श्वनाथो के जन्म–स्थली कासिये हऽ। पूरा भारत के सांस्कृतिक विविधता के साथ

इहाँ रहे वालन का कारन, एके सर्व विद्या के रजधनियों कहल जाला। कासी में गंगा जी के दरसने कइल, मुक्ति पावे के माध्यम बनि जाला।

कासी खाली नगरिये ना, बलुक जीवन–संस्कृति हऽ। बाबा विस्वनाथ के मंदिर आ गंगाजी के घाटन के अनुपम छटा पर्यटकन के आकृष्ट करेले। बनारसी साड़ियो अपना बनावट में गंगा–जमुनी के तहजीब के ताना–बाना समेटले रहेली सन। इहां के धरती स्वाधीनता–आन्दोलन में हर कदम पर स्वतंत्रता सेनानियन के सम्बलो बनत रहल हऽ। चन्द्रशेखर आजाद, झाँसी के रानी आ हेमूकलानी जइसन देस भक्त लोग एही पवित्र भूमि के माटी के तिलक लगाके देस खातिर, जान निछावर कइले बाड़न। पंडित मदनमोहन मालवीय जी 'कासी हिन्दू बिस्वविद्यालय' जइसन अनोखा बिद्या केन्द्र स्थापित कइके पूरी दुनियां में सर्बबिद्या के अलख जगवले रहन। हिन्दी के पढ़ाई के सुरुआत कराके, ऊ कासी के महिमा अउरी बढ़ा दिहलन। गंगाजी में पवँरि के अध्ययन करे खातिर जाये वाला भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री जी कासिये के लाल रहन।

ज्ञान के एही नगरी में स्व. मुंशी प्रेमचंद, बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, सीताराम चतुर्वेदी आदि साहित्यकार लोग आपन कर्मभूमि बनवले। हिन्दी पत्रकारिता इहँवे से खूब फरल–फुलाइल हऽ। कबो इहँवे से 'आज', 'संसार', 'गांडीव', 'सन्मार्ग' जइसन दैनिक अखबार निकलल शुरू भइल रहे। कबीरचौरा मठ में एहिजे रहिके संत कबीर धूनी रमवलन। ओकरा आस–पास का सड़क आ गलियन में बसिके एक से एक महापुरुष लोग संगीत के धार बहावल। ओह लोगन के साधना स्थल भइला के कारन आजुओ दुनियां में कासी के नावं बड़ा आदर के साथ इयाद कइल जाला।

अइसन इतिहासिक, आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक नगरी के दरसन के व्याकुलता भला कवना अदिमी का मन में ना समा जाई? पर्यटकन आ दरसनार्थियन के जानकारी आ सुविधा खातिर इहां के विशिष्ट मंदिर, मस्जिद, शिक्षा संस्थान, चिकित्सालय, गंगा–पुल, रेलवे स्टेसन, घाट, मेला, नर्तक, वादक, संत आ साहित्यकारन आदि के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीहल समीचीन आ सार्थक होखी। एह सब पर दृष्टिपात कइल जा सकत बा–

दरसनीय मंदिर– बाबा कासी बिस्वनाथ मंदिर (दसास्वमेध), अन्नपूर्णा मंदिर (ढुंढिराज गली), कालभैरव बाबा के मंदिर (कोतवाली आ प्रधान डाकघर का पीछा), संकटमोचन हनुमान जी के मंदिर (दुर्गाकुण्ड से लंका जात घड़ी सड़क के दहिनी ओर), दुर्गाजी के मंदिर (दुर्गाकुण्ड पर सड़क के बाँई ओर), ज्ञानवापी मंदिर (बिस्वनाथ मंदिर के उत्तर ओरि), कासी करवट मंदिर (ज्ञानवापी मंदिर के पासे एगो मकान में), संकठा जी के मंदिर (संकठा गली में), आत्मा बिसेस्वर मंदिर (संकठाजी मंदिर के पीछा), राम मंदिर (दुर्गाघाट पर), लक्ष्मण बालाजी मंदिर (लक्ष्मण बाला घाट पर), बेनीमाध ाव मंदिर (पंचगंगा घाट पर), त्रिलोचन महादेव मंदिर (त्रिलोचन घाट पर), आदि केशव मंदिर (काशी रेलवे स्टेशन के ओह पार), लाट भैरव मंदिर (शहर के बाहर जलालीपुर गांव में), पिशाचमोचन मंदिर (लहुराबीर से कैन्ट जात समय बाईं ओर रोड पर), मृत्युंजय महादेव मंदिर (विश्वेश्वर गंज मंडी के पास), बड़े गणेशजी मंदिर (लोहटिया), यज्ञेश्वर गुहा गंगा मंदिर (ईश्वरगंगी के पास), पंचकोशी मंदिर (गोला गली में), आदि विश्वेश्वर मंदिर (ज्ञानवापी के पास), सत्यनारायण मंदिर (आदि विश्वेश्वर मंदिर के आगे), भोलेनाथ बाबा के मंदिर (मीरघाट पर), लक्ष्मी मंदिर (गोदौलिया से लक्सा रोड पर), बटुक भैरव मंदिर (सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल गुरुबाग के पास), तिलभांडेश्वर मंदिर (बंगाली टोला स्कूल के पास), केदारेश्वर मंदिर (केदारघाट पर), त्रिदेव मंदिर (अस्सीघाट से लंका रोड पर दहिनी ओर), तुलसी मानस मंदिर (दुर्गाकुंड–लंका रास्ते पर बायें हाथ), संत रबिदास मंदिर (नगवां मुहल्ला में), आदि विश्वनाथ मंदिर (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के परिसर में)।

विश्वविद्यालय– काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (लंका), सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय (चौकाघाट), महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ (सिगरा कैन्ट रास्ते पर दाईं ओर), तिब्बतियन विश्वविद्यालय (सारनाथ)।

कारखाना– डीजल रेल इंजन कारखाना (मडुआडीह)

किला– काशी नरेश के किला (गंगा तट पर रामनगर)

रेलवे स्टेशन– वाराणसी सिटी (पूर्वोत्तर रेलवे), वाराणसी कैन्ट (उत्तर रेलवे), काशी (उत्तर रेलवे) मडुआडीह (पूर्वोत्तर रेलवे)

गंगापुल– श्री मदनमोहन मालवीय पुल, लाल

बहादुर शास्त्री पुल, विश्वसुन्दरी पुल

प्रमुख गंगा घाट– दशाश्वेध घाट, राजेन्द्र घाट, रत्ना मिश्रा घाट, बाजीराव घाट, तुलसीघाट, जानकी घाट, वात्सजघाट, शिवाला घाट, दंडी घाट, हनुमान घाट, हरिश्चंद्र घाट, लल्लीघाट, केदारघाट, चौकीघाट, सोमेश्वर घाट, मानसरोवर घाट, राजा घाट, चौसट्टीघाट, पाण्डेय घाट, राणा घाट, मुंशी घाट, अहिल्याबाई घाट, मानमंदिर घाट, मीरघाट, ललिता घाट, श्मशानघाट, मणिकर्णिका घाट, सिंधियाघाट, संकठा घाट, गंगा महल घाट, भोंसला घाट, अवनीश्वर घाट, रामघाट, लक्ष्मण बाला घाट, पंचगंगा घाट, दुर्गाघाट, ब्रह्माघाट, राजमंदिर घाट, लाल घाट, गायघाट, मेड़ताघाट, त्रिलोचन घाट, नया घाट, प्रह्लाद घाट, राजघाट।

फ्लाईओवर– ककरमत्ता से मडुआडीह बजार, महमूरगंज से मडुआडीह बाजार, कचहरी से पाण्डेयपुर, चौकाघाट से लहरतारा, अतुलानन्द विद्यालय शिवपुर से बाबतपुर रोड पर।

पंचकोशी यात्रा के पड़ाव– कंदवा, भीमचंडी, रामेश्वर, पाँचो पंडवा, कपिलधारा।

पर्यटन–स्थल– बौद्धस्तूप, म्यूजियम, हिरन पार्क (सारनाथ में)।

मेला– भरत–मिलाप (नाटीइमली), रथयात्रा (रथयात्रा चौराहा पर), नक्कटइया (चेतगंज), नागनथइया (तुलसीघाट), लोलार्ककुंड मेला (भदैनी)

रामलीला– विश्वप्रसिद्ध रामलीला (रामनगर)।

खिलाड़ी– स्व. सुरेश गोयल (बैडमिंटन), विश्वम्भर सिंह (कुश्ती), स्व. गुलजारा सिंह (दौड़), स्व. मो. शाहिद (हाकी)।

संगीतज्ञ– स्व. गिरिजा देवी, राजन मिश्र, साजन मिश्र।

बादक– स्व. बिसमिल्ला खाँ (शहनाई), स्व. किशन महराज (तबला), कंठे महराज (तबला), अनोखे लाल (तबला), पं. रामजी मिश्र उर्फ गुदई महराज (तबला), राजेश्वर आचार्य (जलतरंग)।

नर्तक– बिरजू महराज, गोपीकृष्ण (कत्थक)

अभिनेता– स्व. कन्हैया लाल चौबे, स्व. लीला मिश्रा, स्व. कुमकुम।

फिल्म गीतकार– स्व. लल्लन पांडे (अनजान), समीर।

चिकित्सालय– ट्रामा सेन्टर, कैंसर अस्पताल, आयुर्वेदिक अउर एलोपैथी (बी.एच.यू.), हेरिटेज (लंका), ग्लैक्सी (महमूरगंज), कौड़िया (लक्सा), अपेक्स (भिखारीपुर), मारवाड़ी अस्पताल (गोदौलिया), सेवा–सदन (चौक), भाभा कैंसर इन्स्टीट्यूट (लहरतारा)।

प्रमुख शिक्षण संस्थान– डी.पी.स्कूल, आर्यन, सनबीम, सनराइज, सेंट मेरी, सेंटजान्स, डी.ए.वी, हरिश्चंद्र, अग्रसेन, बसंत कन्या मंदिर, आर्य महिला।

दर्शनीय स्थल– माधव राव का धौरहरा, नागरीप्रचारिणी सभा, टक्साल घर, नदेसर कोठी, सेन्ट्रल जेल, जिला जेल, भास्करानन्द स्वामी के समाधि, कबीर मठ, भिनगा के कोठी, विजयानगरम कऽ कोठी, वाटर वर्क्स, विलास भवन, अजमतगढ़ पैलेस, हथुआ कऽ कोठी, टाउनहाल, क्लाक टावर, जंगम के मठ, पावर हाउस, भारतमाता मंदिर, कश्मीरी मल्ल के हवेली (चौखम्भा), गोपाल मंदिर (चौखम्भा), विश्वम्भर दास के हवेली, प्रधानमंत्री कार्यालय (गुलाब बाग)।

पर्व–स्नान– बसंत पंचमी, मकर संक्रांति, महाशिवरात्रि, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, गंगा दशहरा, कार्तिक पूर्णिमा।

लोकोत्सव– बुढ़वा मंगल, रंगभरी एकादशी, देवदीपावली।

कुंड– दुर्गाकुंड, लक्ष्मीकुंड, लोलार्क कुंड।

बिख्यात संत– कबीर, रैदास, तुलसी, बल्लभाचार्य, करपात्री जी, देवरहा बाबा, मधुसूदन सरस्वती, कंकड़ाचार्य सरस्वती, बाबा कीनाराम, विशुद्ध ानन्द, भास्करानन्द स्वामी।

नामचीन साहित्यकार– स्व. बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, कबीर, तुलसी, पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. सम्पूर्णानन्द, श्यामसुंदरदास, सुधाकर पांडे, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, मनु शर्मा, श्रीकृष्ण तिवारी, सीताराम चतुर्वेदी, कुशवाहा कान्त, बेढब बनारसी, चोंच बनारसी, नजीर बनारसी, रूद्र काशिकेय, डॉ. शम्भूनाथ सिंह, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, बच्चन सिंह, धर्मशील चतुर्वेदी।

वर्तमान रचनाकार– सर्वश्री चन्द्रभाल सुकुमार, डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी, ओम प्रकाश चौबे (ओमधीरज), हरिराम द्विवेदी (हरि भइया), सूर्यप्रकाश मिश्र, महेन्द्र कुमार सिंह (नीलम), रामप्रवेश तिवारी (रागेश), सुरेन्द्र वाजपेयी, हीरालाल मिश्र (मधुकर), धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल', ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी (शैलेश), शम्भूनाथ मिश्र (पंकज), नरोत्तम शिल्पी, सिद्धनाथ शर्मा, डॉ. वेदप्रकाश पांडे, जितेन्द्र प्रकाश श्रीवास्तव (भिखारी), शिवपूजन लाल

(विद्यार्थी), योगेन्द्रनारायण चतुर्वेदी (वियोगी), धर्मेन्द्र कुशवाहा, विजय शंकर पाण्डेय, गौरी शंकर तिवारी (तृप्त), संतोष सिंह, बिमल बिहारी, भोलानाथ त्रिपाठी (विह्वल), डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र, डॉ. रामसुधार सिंह, डॉ. श्रद्धानन्द, डॉ. इन्दीवर पांडे, प्रो. अनूप वसिष्ठ, प्रो. सदानन्द शाही, अशोक द्विवेदी, प्रकाश उदय, श्रीमती नीरजा माधव, डॉ. मुक्ता शुक्ल, मंजरी पांडे, रजनी अग्रवाल, संध्या श्रीवास्तव, झरना मुखर्जी, भगवन्ती सिंह, डॉ. नसीमा 'निशा', करुणा सिंह, डॉ. सुमन सिंह।

नामी मस्जिदें– आलमगीरी मस्जिद (पंचगंगा घाट), ज्ञानवापी मस्जिद, चौखम्भा मस्जिद (रंगीलदास फाटक के लगे), बकरिया कुंड के मस्जिद (फकीरुद्दीन मौलवी के दरगाह से पूरब), लाटभैरव आ मस्जिद (लाट भैरव मंदिर के बीच में), ढाई कंगूरा मस्जिद (सबसे सुंदर), आलमगीरी मस्जिद (वृद्धकालेश्वर के लगे)।

आदर्श गाँव– जयापुर, नागेपुर, ककरहिया, डोमरी।

विभिन्न संप्रदाय के स्थान– कबीर मठ (कबीरचौरा), गोरखनाथ के टीला (कम्पनी बाग के लगे), गरुसंघत (ठठेरीबाजार के पीछा), रामानुजाचार्य मठ (अस्सी संगम पर), बैरागी अखाड़ा (अस्सी घाट), राधास्वामी संत संघ (किंग ऐडवर्ड अस्पताल के बगल में), वैष्णव संप्रदाय (चौखंभा मुहल्ला में गोपाल मंदिर का नांव से), जैन संप्रदाय (कंपनी बाग मैदागिन), खत्री संप्रदाय (गढ़वासी टोला टेढ़ीनीम), आर्यसमाज (बुलानाला), थियोसाफिकल सोसायटी (रथयात्रा), गोशाला आ पशुपालन (कोतवाली के पीछा), अपारनाथ मठ (बिशेश्वरनाथ मुहल्ला), भिनगा डंडी आश्रम (संकटमोचन का लगे), बुद्ध गया मठ (बैजनत्था), राजराजेश्वरी मठ (ललिता घाट), श्री शंकराचार्य मठ (कैलाश पर)।

प्रख्यात वैद्य– स्व. पंडित सत्यनारायण शास्त्री, पंडित शिवकुमार शास्त्री, पंडित राजेश्वर दत्त, पंडित यदुनन्दन उपाध्याय।

एही सब विशेषता के चलते 'काशी' के दुनियां भरि में आपन एगो खास पहचान बनि गइल बा। एहिजा के विविधतो`मं एकता के झलक मिलेला, जवन राष्ट्रीय क्षितिज पर आपन विशेष छाप छोड़ रहल बा। ईहे कारन बा कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी एह नगरी के अपना कर्मभूमि के रूप में अपनवले बाड़े आ भोले के किरपा से एकरा विकास खातिर तन–मन–धन से लागलो बाड़े। एह नगरी के मूल स्वरूप बरकरार राखत, विकास कइल बड़ा भारी चुनौती तऽ बा, बाकिर असम्भव नइखे।

गोकुल नगर, डी.एल.डब्ल्यू.
वाराणसी
वार्ता– 9451229093

पूर्वी उत्तर प्रदेश के शाक्त आस्थापीठ : कामाख्या धाम, गहमर गाजीपुर

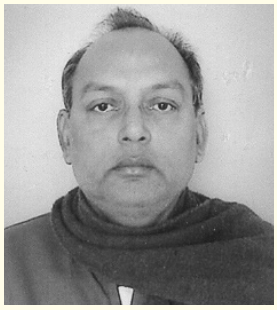

आनन्द संधिदूत

आस्था प्रमाण के मोहताज ना होले। ऊ अनेकन बेर का उपकार आ कृपा का चमत्कार से उपजेले। गहमर का कमइछो माई के धाम अइसने आस्था में निर्माणल ह। एके खोजे खातिर पुराण इतिहास आ तर्क का फेरा में फँसे का जगहा पर एक पसर लचिदाना भा बतासा आ अँजुरी भर फूल माला का साथ भगवती का चरन पर माथा नवा लिहल जादा सान्तिकारी होला। गहमर में कमइछा माई के पुनर्स्थापना भइल रहे। एकरा पहिले ऊ कहाँ स्थापित रहली, एकर ठीक–ठीक जानकारी नइखे। लेकिन मुँहे–मुँह फइलल दन्तकथा से अइसन लागत बा कि खानवाँ के लड़ाई (सन् 1526 ई.) का बाद उनकर पुनर्स्थापना एहिजा भइल। खानवाँ का लड़ाई से पहिले ऊ कहीं अउर स्थापित रहली। खानवाँ का लड़ाई में बाबर का खिलाफ आ राणा सांगा का पक्ष में अनेकन राजा, महाराजा आ राव–रावल लड़ल रहलन। एकर विस्तार से वर्णन कर्नल जार्ज टाड का पुस्तकन में बा। ओही सेना में सामन्ती नरेश धाम सिंह जूदेव लड़ल रहलन। दुर्भाग्य से आपसी फुटमत का कारण राणा साँगा ऊ लड़ाई हार गइलन आ सेना का सुरक्षल स्थान

का ओर भागे के परल। ओह भाग–पराह में धामो सिंह अपना राजपुरोहित गंगेश्वर उपाध्याय, दीवान वीरनाथ ठाकुर, दरबारी भाँट आ सैकड़न गो परजा पवनी का साथ पुर्नवास खातिर चललन। ए लोग का साथ माता कामाख्या के एगो भव्य प्रतिमो रहे जवन विधर्मी का हाथ में पड़े का अशंका से संगे–संगे लेके चलत रहे लोग। कथा के तार जोड़त अइसन लागत बा कि ए लोग के निवास स्थान वर्तमान उत्तर प्रदेश के जिला फतेहपुर का आसपास कहीं रहे आ खानवाँ से अपना गृह क्षेत्र में आके माई के प्रतिमा अपना साथ में ले लेले रहे। फतेहपुर आ ओह से लागल मध्यप्रदेश का क्षेत्र में अबहियों सिकरवार राजपूतन के उपस्थिति बा। एकरा अलावे दीवान वीरनाथ ठाकुर के जन्म स्थान कड़ेमानिकपुर, फतेहपुर जिला में बा। राजपुरोहित गंगेश्वर उपाध्यायो प्रतापगढ़ भा फतेहपुर जिला का आसपास के रहलन।

सम्भवतः ए लोग के पीछा अपना सैनिकन का साथ बाबर के सेनापति मीरबाकी करत रहे। धाम सिंह के सैनिक टुकड़ी मीरबाकी के अइसन चकमा दिहलसि कि ऊ पूरब का बजाय उत्तर ओर बढ़ गइल आ अयोध्या पहुँच के राम मन्दिर तोड़ के बाबरी–मस्जिद बनवलस आ एहर धाम सिंह अपना सेना का साथ बिन्ध्यांचल पर्वत का आरी–आरी चल के पूरब में गंगा–कर्मनाशा का जंगल में सुरक्षा शरण पा गइलन। ओह घरी कर्मनाशा का जंगल में चेरो जाति के वर्चस्व रहे आ एगो मुस्लिम गवर्नर कुतलुब खाँ (लोक नाम) व्यवस्था का शीर्ष पर रहे। ऊ आधुनिक सेवराई गाँव में माटी के एगो विशाल किला बनवा के रहत रहे। एह क्षेत्र पर कब्जा जमावे खातिर सिकरवारन के जरूरी रहे कि कुतलुब खाँ के पराजित कइल जाव भा केहू तरे भगावल जाय आ स्वाभिमानी चेरो जाति के या त परजा–पवनी बनावल जाय या बगेदल जाव। चेरो जाति के त ई लोग आसानी से पलामू–सोनभद्र का ओर खदेड़ दिहल, बाकिर कुतलुब खाँ के हरावल आसान काम ना रहे। कुतलुब एगो टिटिहरी पलले रहे जवन ओकर अंरक्षके नियर रहे। टिटिहरी कवनो खतरा देखत टिर–टिर बोले लागे आ कुतलुब खाँ सजग हो जाय। एह तरे टिटिहरी धाम सिंह का हरेक आक्रमण के निष्प्रभावी क देत रहे। अन्त में धाम सिंह के पुत्र सैन्यूमल एगो जुगति लगवलन। ऊ सबसे पहिले टिटिहरी मारे के प्लान बनवलन आ बाद में कुतलुब से भिड़े के सोचलन। सैन्यूमल कुछ विश्वासी बीरन का साथ, आधी रात के सेवराई किला का पनरोह पड़े अन्दर घुसलन आ टिटिरी कुछ समझ पावे, ओकरा पहिलहीं ई लोग टिटिहरी के मर्दन मरोड़ के मार दिहल। ओह घरी कुतलुब खाँ गहिर नींन में सूतल रहे। सैन्यूमल के दल लउर से खोद के ओके जगावल आ युद्ध खातिर ललकारल। दूनो ओर से भयंकर लाठी युद्ध भइल। युद्ध में कुतलुब बीरतापूर्वक लड़त मारल गइल आ वर्तमान जमनियाँ आ सेवराई तहसील पर सिकरवान के कब्जा हो गइल।

कमइछा माई के स्थापना गंगानदी का किनारे एगो माटी का ढूह पर भइल रहे जवना के कवनो चेरो राजा भा जमींदार के छोड़ल कोट भा गढ़ी कहल जाला। धनाभाव से बहुत दिन तक मन्दिर के स्थापना ना हो पावल रहे। बाद में एगो पत्थल व्यवसायी के सहजोग से मन्दिर के निर्माण भइल। कहल जाला कि अपना स्थापना से पहिले कमइछा माई सपना देखवली कि जहाँ नीब का फेड़ तर बाघ दहाड़त मिले, ओहिजे हमार स्थापना होखे। ई अजगुत ओही नीब का फेंड़ तर भइल जवन माटी का किला का ढूह पर जामल रहे।

आपन जीवन समेत सबकुछ कमइछा माई के सुपुर्द कइके आ उनकर जय बोल के भयंकर से भयंकर रण में कूद परल एह क्षेत्र का नौजवानन के वीरतापूर्ण परम्परा रहलि ह। गहमर क्षेत्र सैन्य फसल का लिहाज से एगो उपजाऊ खेत रहल। एहिजा वीरता आ हुंकार के खेती होखे। एह क्षेत्र के कवनो गाँव–मोहल्ला–जाति होखो ओहिजा सेना के फसल तइयार मिली। एहिजा के नौजवान सेना में भरती नाहिये भइला पर मजबूरी में कवनो अउर विभाग में नोकरी ढूँढ़ेला। एह क्षेत्र में अइसनो महापुरुष भइल बाड़न जे कमइछा माई के जय बोल के हजार कष्ट सहलन, बाकिर पीछे ना हटलन आ बिजयी होके इतिहास पुरुष बन गइलन। अइसन वीर पुरुषन में अवधूत राव (या अद्भुत राय) आ मैगर सिंह के नाँव अग्रणी बा। राजशाही खतम भइला का बाद अवधूत राव गहमर के चउधरी रहलन। सिकरवारन के ई पहचान रहे कि उन्हन का बर्चस्व वाला क्षेत्र से कवनो राजा महाराजा भा बादशाह के लगान ना दियात रहे। कर्नल जार्ज टाड लिखले हउअन कि– "सिकरवार कबो राजा बनल पसन्द ना कइलन आ केहू के भूमि के लगानो मालगुजारी देत ना लउकलन।" बाबर का बाद दिल्ली का गद्दी पर केतने प्रतापी सम्राट् बइठलन, बाकिर केहू गहमर क्षेत्र से लगान ना पावल। जब अवधूत राव गहमर के चउधरी रहलन, ओह घरी दिल्ली का तख्त पर शाहजहाँ या औरंगजेब के शासन रहे। एह क्षेत्र का लगान रजिस्टर में गहमर के ना कहीं नाम रहे ना खाता

खुलल रहे। ई बड़ा अचरज के बात रहे कि सैकड़न साल से गाँव बसल रहे, बाकिर एक पइसा टैक्स दिहला के कहीं जिकिर नइखे। शासन का ओर से एह लगान अनुपस्थिति के गम्भीरता से लिहल गइल आ एगो मुगल सरदार के एगो सैनिक टुकड़ी का साथ वास्तविकता के पता लगावे खातिर गहमर भेजल गइल। गहमर आके ऊ मुगल पता लगवलस कि एहिजा के चौधरी के हऽ? आ पता जब चलल कि एहिजा के प्रधान अवधूत राय हउअन त उनके अपना अड्डा पर बोलवलस। हाजिर भइला पर पहिला प्रश्न अवधूत राव से पुछलस, "तूँ लोग लगान काहें नाहीं देत हउअऽ?"

"हमनी का सिकरवार हईंजा लगान लेहींलेजा, देहीं जा ना।" अवधूत राव निर्भीक मन से जबाब दिहलन।

"तूँ केकरा सामने बोलऽ ताड़ऽ सोचलऽ हऽ?" मुगल क्रोध में आके बोलल।

"सत्य बोलल आ अहिन्सात्मक रहल हमार धर्म हऽ, एमें सोचे के का बा?"

"त तूँ तय कइ चुकल बाड़ऽ कि लगान नइखे देबे के?"

"हम राजपूत हईं एकबेर जवन कहि देहीला ओपर कायम रहीला।"

अब आगे बातचीत के सम्भावने ना रहे। मुगल सरदार के एतना निडर आ दबंग आदमी जीवन में ना लउकल रहे। ऊ अपना सैनिकन के हुकुम दिहलस कि तसला में पानी खउलावल जाय आ ओही पानी से अवधूत राव के नहवावल जाव। हुकुम के तामील भइल। अवधूत राव माता कामाख्या के स्मरण कइलन आ खउलत पानी से नहा लिहलन।

मुगल सरदार मुस्कात पुछलस, "अवधूत राव कइसन लागल?"

अवधूत राव ओकरे तेवर में मुस्कात जबाब दिहलन, "जइसे गंगा जल से नहात रहलीं, अइसन लागल।"

मुगल सरदार हुकुम दिहलस कि बइरकन्टी के बिछौना बनावल जाय आ इनके ओपर सुतावल जाय।

हुकुम के तामील भइल। अवधूत राव हँसी–खुसी से बइरकन्टी का सेज पर सूत रहलन। सरदार फेर पुछलस कि "कइसन लागत बा?" अवधूत राव हँसत जवाब दिहलन "जइसे माई का कोरा में सूतल होंखीं।"

एह आश्चर्य से हताश मुगल सरदार का तरकस में आखिरी तीर बाँचल रहे। ऊ सैनिकन के हुकुम दिहलस कि इनका हाथ–गोड़ का नाखून में बाँस के खपचाल ठोंकल जाव। अवधूत राव इहो पीड़ा हँसत–हँसत बरदास कइ लिहलन। आ पुछला पर मुगल के जवाब दिहलन कि जइसे अँगूठी पहिनत होखीं।

अवधूत राव जइसन महावीर से मुगल सरदार हार चुकल रहे। ऊ बिना लगान लिहले खाली हाथ जाये लागल रास्ता में ओके एगो कानू बगइचा के पतई बहारत मिलल। मुगल सरदार ओही से ठमक के पुछलस, "का हो तोहार चउधरी कवना धातु के बनल बा कि नऽ तऽ ओकरा खउलत पानी से डर लागत बा ना बइरकन्टी गड़ति बा आ नहिंये नाखून में खपचाल ठोंकले दुखात बा। का कारन बा?"

सरल मन के देहाती कानू कमइछा माई का ओर हाथ उठा के कहलस, "कुल इनहीं के कृपा बा।"

"अच्छा!" मूँड़ी हिलावत सरदार मन्दिर का चउतरा पर चढ़ गइल आ प्रतिमा के खंडित करे के हुकुम दिहलस। देखते देखते मुरती के भुजरी–भुजरी काट दिहल गइल।

कहल जाला कि मुरती जब खण्डित कइल जात रहे ओह घरी मन्दिर में से करिया–करिया भौंरन के एगो विशाल झुण्ड निकलल आ मुगल सेना पर हमला कइल दिहलस। माता कामाख्या का कृपा आ उनुकर भक्त अवधूत राव का वीरतापूर्ण संघर्ष से गहमर गाँव मुगलन के लगान देबे से एक बेर फेर बँच गइल आ अवधूत राव के वीरता के कथा चाँद–सितारा जब तक रही तबतक खातिर अमर हो गइल।

सिकरवार राजपूत कमइछा माई के आपन आराध्य भवानी मानेलन। आज भगवती के कृपा पूरा जवार पर बा। भगवती जन–जन के देबी हई। भक्त कवनो जाति आ कवनो गाँव के होखो सब पर कमइछा माई के कृपा बरसत बा। माता का जयकारा का बल पर 1857 ई. के क्रान्ति पुरुष मैगर सिंह अंगरेजन से भइल झड़प में विजयी होके अमरकथा के नायक भइलन। अभी आजुओ युद्ध का मैदान में कमइछा माई के जयकारा लगा के केतने सैनिक विजयश्री हासिल करेलन। कमइछा माई एह क्षेत्र के जीवन्त–शक्ति हई। इनका नया धाम का निर्माण आ पर्यटन स्थल का विकास में जन–जन के सहयोग आ सरधा रहल हऽ।

गहमर, पटना–मुगलसराय (पी.डी.डी.यू.) मेन लाइन पर एगो प्रमुख रेलवे स्टेशनों ह। ऊ सड़को मार्ग से जुड़ल बा। मन्दिर में भीड़ त बरहोमाह होले बाकिर चइत का नवरात्रि में विशेष पूजा होला।